राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन

(राजस्थान विश्वविद्यालय की पी-एच.डी. डिग्री के लिये स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

लेखक

डॉ० मनोहर शर्मा

एम. ए., पी-एच. डी.

□

भूमिका

डॉ० नारायणसिंह भाटी

निदेशक

राजस्थानी शोध संस्थान

चौपासनी, जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

प्रकाशक :
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संस्थापित
राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी, जोधपुर

मूल्य : बीस रुपये
सन् १९७६

मुद्रक :
हरीदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
जोधपुर

विषय - सूची

• चतुर्थ खण्ड

भाषा - शैली

समर्पण

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के

मनीषी

डा० कन्हैयालालजी सहल को

भूमिका

पिछले दो दशकों में राजस्थानी गद्य की अनेक विधाओं पर प्रकाश पड़ा है। इन विधाओं में वात-साहित्य सबसे विस्तृत व अनेक दृष्टियों से महत्व रखने वाला है।

स्वाधीनता से पहले डॉ० टैसीटरी तथा सूर्यकरण पारीक व रामदेव चोखानी आदि ने इस साहित्य की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया था। टैसीटरी ने जोधपुर व बीकानेर के कतिपय ग्रंथों के सर्वेक्षण में अनेक वातों के उद्धरण भी प्रस्तुत किये थे। परन्तु स्वाधीनता के पश्चात राजस्थानी शोध-संस्थान चौपासनी, साहित्य संस्थान उदयपुर, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर और अन्य छोटी मोटी संस्थाओं व व्यक्तिगत प्रयासों से न केवल अनेक बातें प्रकाश में आई हैं अपितु हस्तलिखित ग्रंथों के रूप में सैकड़ों की संख्या में विविध बातों का संग्रह भी हुआ है।

पहले जहाँ इतिहास की खोज व अध्ययन के लिए केवल राजस्थानी ख्यातें ही महत्वपूर्ण मानी जाती थीं वहाँ अब बात, विगत, हकीकत व रुक्के परवानों आदि का भी महत्व स्वीकार किया जाने लगा है क्योंकि इतिहास केवल शासकों के सन्धि-विग्रह और चढाईयों तक ही सीमित न रह कर समाज की नाना प्रवृत्तियों और उनमें परिवर्तन लाने वाली प्रेरक शक्तियों का परिचय प्राप्त करना भी अपना उद्देश्य समझता है। वास्तव में जनजीवन के समीप पहुँचने और पूरे समाज की गतिविधियों को समझने-जोखने का यही सही रास्ता है।

इस प्रकार बात-साहित्य का महत्व और भी अधिक बढ जाता है और इतिहास व साहित्य की खोज व समझ एक दूसरे के पूरक हो गये है।

इस विशाल एवं विविधतामय बात-साहित्य में दो प्रकार की बातें स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। कुछ बातें तो विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक हैं जिन

में इतिहास-पुरुषों अथवा कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का वृत्तान्त मिलता है। ये बातें वास्तव में यहाँ के राजवंशों को लेकर लिखी गई ख्यातों की पूरक है। यद्यपि ख्यातों में शासकों के जन्म, युद्ध-विग्रह, विवाह, सन्तति आदि का विस्तृत ब्यौरा संवत आदि सहित अंकित मिलता है परन्तु इसके बावजूद भी उनके जीवन की कई महत्वपूर्ण घटनाओं और चारित्रिक विशेषताओं से सम्बन्धित वृत्तान्त उनमें नहीं आ पाते है और उनके भाई-भतीजों तथा सामन्तों आदि द्वारा उस काल की राजनीति में निभाई गई भूमिका आदि की विस्तृत जानकारी अंकित करने के लिये वहाँ स्थान नहीं रहता। ऐसे विशिष्ट वृत्तान्त ऐतिहासिक बातों में ही प्राप्त होते है। इस दृष्टि से 'परम्परा' में प्रकाशित 'ऐतिहासिक बातां' शीर्षक विशेषांक अवलोकनीय है।

दूसरी बातें सामाजिक कही जा सकती है जिनमें मध्यकालीन राजस्थान के समाज की विभिन्न प्रवृत्तियाँ अपने जीवन्त रूप में चित्रित हैं। इन बातों में प्रेमकथाओं की संख्या बहुत बड़ी है। इनके अतिरिक्त सेठ साहूकारों, बन-जारों, गूजरों व किसानों से सम्बन्धित बाते भी मिलती हैं। ये सब बातें मिलकर मध्यकालीन राजस्थान के समाज का एक चित्र प्रस्तुत करती हैं राजाओं, सामन्तों वणिकों व निम्न स्तर के समाज की जानकारी हमें इनसे मिलती है।

कथाओं का इतना विस्तृत क्षेत्र होते हुए भी कथाकारों का मन विशेष रूप से वीर-गाथाओं और प्रेमगाथाओं में रमा है जो उस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ होने से पद्य-साहित्य में भी अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। परन्तु यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि वीरता और प्रेम उनके प्रमुख विषय होते हुए भी उनमें समाज की अनेक मान्यताएं स्वाभाविक रूप में प्रकट हुई हैं। वीरगाथाओं में जहाँ वीरों की कर्तव्यबद्धता, स्वामिधर्म, गौ-ब्राह्मण रक्षा, मन्दिरों की रक्षा, धरती का प्रेम और स्त्री के मान की रक्षा, आदि सिद्धान्त साकार हो उठे हैं वहाँ उनके क्रिया-कलापों में अस्त्र-शस्त्रों, अश्व की विशेषताओं, रण-वाद्यों, युद्ध के तौर-तरीकों, दर्पोक्तियों, परम्परागत जातीय मान्यताओं, शौर्य को प्रकट करने वाली काव्योक्तियों आदि की बहुलता भी मिलती है जो उस समाज की जीवन-शक्ति को ही प्रकट नहीं करती, हमारी संस्कृति के उत्थान व पतन की अनेक उलझनों पर भी प्रकाश डालती है। इन उलझनों में यहाँ की

शासकीय जातियों के आपसी संघर्ष के कारणों पर जहाँ प्रकाश पड़ता है वहाँ उनकी मानसिक स्थितियों को समझने का अवसर भी मिलता है, जिनमें उनकी अदूरदर्शिता, पग पग पर नीति को विचलित करने वाली कुलाभिमान की मरोड़ और एक दूसरे को नीचा दिखाने की लालसा आदि घातक प्रवृत्तियाँ भी शामिल हैं। इन संघर्षों में शासकों व सामन्तों के अलावा साधारण राजपूतों व भील, मीणा, गूजर जाट आदि लड़ाकू जातियों का चरित्र भी अनेक प्रसंगों में व्यक्त हुआ है।

इन बातों में सबसे बड़ी बात यह भी प्रकट होती है कि उस समय का जीवन कितनी अनिश्चितताओं में पलकर भी बाह्य शक्तियों से लोहा लेता रहा और समझौते से अधिक उन्होंने अपनी सस्कार जन्य शक्ति पर भरोसा किया, यही भरोसा आगे जाकर अंग्रेजी शासन काल में ह्रास को प्राप्त हो गया।

जहाँ तक प्रेम कथाओं का सम्बन्ध है, वे उस संघर्षशील समाज को रसमय बनाने का साधन रही हैं। एक ओर वीरों ने नारी के शील और मर्यादा की रक्षा के लिये जहाँ हर सम्भव जोखिम उठाया है, वहाँ उसने उसका जी भरकर उपभोग भी किया है। संकटापन्न परिस्थितियों में जीवन कितना मूल्यवान और मधु की एक एक बूंद के लिए तृषित हो उठता है उसका जीवन्त प्रमाण हैं ये बातें।

इन में स्त्री-समाज की अनेकविध जानकारी प्राप्त होती है जैसे—बालविवाह प्रथा, बहुविवाह प्रथा, अनेक पत्नियों में से किसी एक पत्नी से विशेष प्रेम, पर्दा-प्रथा, दहेज, सौतिया डाह, आभूषणों के प्रति मोह, सती प्रथा आदि।

परन्तु इन सामान्य तथ्यों के अलावा नारी की पराधीनता, समाज में उसका एकांगी स्वरूप और रूढ़िवादिता से जकड़ा हुआ उसका भाग्य भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

पुरुष ने नारी सौंदर्य के उपभोग के अनुरूप ही उसके सौंदर्य का बखान भी किया है और उसमें यहाँ की सौंदर्यगत धारणाओं के साथ स्थानीय उपमाओं और वातावरण का बहुत सुन्दर सामंजस्य हो गया है। इन बातों में सबसे महत्व का तथ्य जो बिना किसी लाग-लपेट के प्रकट हुआ है वह यह कि प्रेम की उत्कृष्टता के आगे जाति और समाज के सभी बंधन टूटते हुए

नजर आते हैं यहाँ तक की ऊँच-नीच का भेद भाव भी उनके बीच खड़ा रहने में अपने को असमर्थ पाता है। रूढिवादी समाज ने भले ही इस प्रकार की घटनाओं को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा हो पर बातकारों ने उन्हें इस कला-त्मक खूबी के साथ प्रस्तुत किया है कि उनका महत्व इतना समय बीत जाने पर भी बना हुआ है और ये बातें समाज के हर वर्ग में पढ़ी-सुनी जाती रही हैं।

जलाल बूबना, वीरमदे सोनगरा आदि बातों में मुस्लिम समाज की मान्यताओं का भी अच्छा चित्रण हुआ है तथा इन बातों से दोनों संस्कृतियों के एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभावों व संस्कारों के निर्माण आदि की जान-कारी भी पाठकों को होती है।

इन बातों की विषय-वस्तु का चयन केवल राजस्थान तक ही सीमित नहीं है अनेक बातें सिंध, पंजाब, मध्यप्रदेश व गुजरात आदि भू-भागों की घटनाओं से ली गई हैं और वे अब यहाँ के साहित्य और संस्कृति में इतनी घुल मिल गई हैं कि उन्हें अलग करके देखना सम्भव नहीं है। मूमल महेन्दरा; सोनी महीवाल, बींझा सोरठ आदि बातें इसी श्रेणी की हैं। इन बातों में इन प्रान्तों की संस्कृति और भाषा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। इतना ही नहीं बात-साहित्य का यदि गम्भीरता से अध्ययन किया जाय तो इन में अनेक बातों के सम्बन्ध-सूत्र प्राचीन भारतीय कथा साहित्य से भी जोड़े जा सकते हैं और मध्यकाल में हमारी सांस्कृतिक एकता में इस प्रकार के साहित्य ने जो भूमिका निभाई उसके बड़े दिलचस्प और उपादेय उदाहरण देखे जा सकते हैं।

वीर-रसात्मक और प्रेम सम्बन्धी बातों के अलावा धार्मिक, नीति सम्बन्धी और पौराणिक कथाओं की भी राजस्थानी में कमी नहीं है और उनका प्रचलन भी जनजीवन में शताब्दियों से रहा है। इस विशाल बात-साहित्य का अध्ययन डॉ० मनोहर शर्मा ने बड़े मनोयोग, सूझ-बूझ और विद्वतापूर्ण ढंग से किया है। अनेक बातों के उद्धरण देकर उन्होंने अपने प्रत्येक कथन को सप्रमाण प्रस्तुत ही नहीं किया, उनका वैज्ञानिक वर्गीकरण करके इस विषय का गहन अध्ययन करने वालों के लिये बहुत उपयोगी और सुलझी हुई रूपरेखा भी प्रस्तुत कर दी है। इस ग्रंथ को पढ़ने से यह भली भांति

स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ के जनजीवन का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिये इस साहित्य में कितनी विविधतामय सामग्री सुरक्षित है ।

आवश्यकता इस बात की है कि यह समूचा साहित्य प्रकाशित किया जाय, परन्तु ऐसा करते समय संशोधक के लिये यह बात पूर्णतया ध्यान में रखने योग्य है कि इन वार्तों की प्रतियां अनेक संग्रहालयों में विद्यमान हैं उनका समुचित प्रयोग कर वार्तों के प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किये जावें और आवश्यकतानुसार पठान्तर आदि लगाये जावें । कुछ वार्तों के छोटे और बड़े संस्करण भी मिलते हैं उनके अंतर को भी सकारण स्पष्ट किया जाय । इस प्रकार का प्रामाणिक कार्य ही समाजशास्त्रीय अध्ययन और हमारी साहित्य-परम्परा के अनुशीलन के लिये आधारभूत सामग्री का काम दे सकता है, वरना इन वार्तों को खण्डित, अस्पष्ट अथवा परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करने से न केवल इस मूल्यवान साहित्य के साथ अन्याय होगा अपितु आगे आने वाली पीढ़ियों को भ्रम में डालकर हमारी संस्कृति के सही मूल्यांकन से उन्हें वंचित करना होगा ।

—नारायणसिंह भाटी

परिचय एवं परम्परा

प्रथम खण्ड

प्राचीन परम्परा

भारतवर्ष में कहानी की अति प्राचीन परम्परा है। ऋग्वेद संसार का सब से प्राचीन ग्रंथ है। उस में भी कहानी के सूत्र प्राप्त हैं। इसका प्रमाण ऋग्वेद में प्राप्त पुरूरवा,[1] ययाति,[2] यदु,[3] एवं तुर्वसु[4] आदि राजाओं से सम्बन्धित आख्यानों के संकेत है। निश्चय ही ये आख्यान वैदिक काल में जनप्रिय रहे होंगे। वेदों के पश्चात् उपनिषद् साहित्य में कहानी का सहज ही दर्शन किया जा सकता है। उपनिषदों की कहानियां रूपकात्मक हैं और इन मे प्रायः प्रश्नोत्तर शैली है। उदाहरणस्वरूप नचिकेता की कथा[5] और देवताओं की शक्ति-परीक्षा की कथा[6] द्रष्टव्य है।

उपनिषदों के बाद रामायण महाभारत का नाम सामने आता है। रामायण में मूल कथा के साथ ही कहीं कहीं अन्तर्कथाएं भी जुड़ी हुई हैं, जैसे नृगकथा,[7] वृत्रासुर कथा[8] आदि। इसी प्रकार महाभारत में मूलकथा कौरव-पाण्डवों से सम्बन्धित है। परन्तु साथ ही इस में अनेक उपाख्यान भी हैं, जैसे शकुन्तलोपाख्यान[9] नलोपाख्यान,[10] सावित्र्यु-पाख्यान,[11] विदुलोपाख्यान,[12] आदि। इन उपाख्यानों ने कथासाहित्य को बड़ी प्रेरणा दी है और अनेक साहित्यकारों ने इनको आधार मान कर अपनी रचनाएँ तैयार की हैं। इसी प्रकार भारतीय कथा साहित्य में पुराणों का भी बड़ा महत्व है। इन में अवतारों, सूर्य-चन्द्रवंशी राजाओं तथा उत्सव-पर्वों आदि की कथाएँ बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं।

बौद्ध जातक-कथाएँ तो विश्व-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। इन में लोक प्रचलित कथाओं का सम्बन्ध गौतमबुद्ध के अनेक पूर्वजन्मों के साथ जोड़ कर उन्हें नया रूप देने की सरल तथा सफल चेष्टा हुई है। शीलधर्म के प्रचार की दृष्टि से ये कथाएं बड़ी उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं। इनमें वर्णनात्मक तथा कथोपकथनात्मक शैली की

---

१. ऋग्वेद, १०/६५. २. ऋग्वेद, १०/६३. ३. ऋग्वेद, १०/६२. ४. ऋग्वेद, १०/४६. ५. कठोपनिषद् ६. केनोपनिषद् ७. वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड ८. वही ९. महाभारत, आदि पर्व १०. महाभारत वन पर्व ११. महाभारत वन पर्व १२ महाभारत उद्योग पर्व।

विशेषता सहज ही देखी जा सकती है। जातक-कथाओं के बाद बौद्ध साहित्य में अट्ठकथाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस कथासाहित्य ने पाली भाषा को गौरवान्वित किया है।

वसुदेवहिंडी (वसुदेव चरित) प्राकृत का गद्यबहुल कथाग्रंथ है, जिसके प्रथम खंड की रचना संघदासगणि ने एवं मध्यम खंड की रचना धर्मसेनगणि ने की है। इस में वसुदेव के पर्यटन एवं उनके सौ (२९+७१) विवाहों का वर्णन किया गया है।

संस्कृत का पंचतंत्र कथाग्रंथ अत्यधिक प्रसिद्ध है। इसका नाम विश्वविख्यात है और इसने अनुवाद के रूप में संसार भर की यात्रा कर डाली है। नीतिशिक्षा की दृष्टि से पंचतंत्र की कथाएं बड़ी महत्वपूर्ण हैं। यह ग्रंथ बालकों के लिये परमोपयोगी है। इसमें छोटी-छोटी घरेलू कथाओं को भी बड़ी कुशलतापूर्वक नीतितत्व से सम्पन्न कर दिया गया है। यही स्थिति संस्कृत कथाग्रंथ हितोपदेश की है।

कथासाहित्य की दृष्टि से गुणाढ्य की बड्ढकहा का सर्वाधिक महत्व है, जो मूलरूप में पैशाची भाषा में लिखी गई थी। अद्यावधि इसका मूलरूप प्राप्त नहीं हो सका है परन्तु इसके आधार पर विरचित बृहत्कथाश्लोकसंग्रह (बुद्धस्वामी), बृहत्कथामंजरी (क्षेमेन्द्र) तथा कथासरित्सागर (सोमदेव) प्राप्त हैं। इसका नाम कथासरित्सागर यथार्थ ही रखा गया है। इसमें बहुसंख्यक भारतीय लोककथाओं का सरल संस्कृत-श्लोकों में सुंदर संग्रह हुआ है। इस ग्रंथ से भी अनेक साहित्यकारों ने प्रेरणा ग्रहण की है।

सस्कृत का दशकुमार चरित (दण्डी) एक अत्यन्त रोचक कथाग्रंथ है। इस में दश–कुमार विभिन्न प्रदेशों की यात्रा पर निकलते हैं और फिर मिल कर अपनी अपनी कहानी सुनाते हैं। ये कहानियां बड़ी ही कौतूहल पूर्ण हैं तथा इन में तत्कालीन समाज के विविध वर्गों के यथार्थ चित्र प्रकट हुए हैं। इस ग्रंथ की लेखन-शैली का सुबंधु विरचित वासवदत्ता एवं बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी नामक कथाग्रंथों में अत्यन्त उज्वल विकास हुआ है।

संस्कृत में वैतालपंचविंशतिका, शुकसप्तति एवं सिंहासनद्वात्रिंशिका आदि भी कथासाहित्य के श्रेष्ठ ग्रंथ हैं। इनके नामों से कहानियों की संख्या प्रकट की है। प्रथम ग्रंथ में शव में प्रविष्ट वैताल राजा विक्रमसेन को कहानियां सुनाता है। द्वितीय ग्रंथ में एक शुक वक्ता है। तृतीय ग्रंथ में विक्रमादित्य के सिंहासन में लगी हुई पुतलियां राजा भोज को कहानियां कहती हैं। असल में इन ग्रंथों में भी लोककथाओं का एक विशेष प्रकार से संग्रह किया गया है। शुकसप्तति ग्रंथ में त्रियाचरित्र विषय पर प्रचुर सामग्री दी गई है।

अपभ्रंश कथासाहित्य बड़ा विशाल है। यह अधिकांश रूप में जैन साहित्य है। इसमें अनेक पुराणों (स्वयंभू विरचित हरिवंशपुराण एवं पुष्पदंत प्रणीत महापुराण आदि) तथा बहुसंख्यक चरितग्रंथों (पुष्पदंत कृत जसहरचरिउ एवं धनपाल रचित भविसत्तकह आदि)

के अतिरिक्त बहुत से कथाकोशों की रचना हुई है जिन में नयनंदी का सयलविहिविहाणकव्वु (सकलविधिविधानकाव्यम्), श्रीचंद्र का कहकोसु (कथाकोश) तथा दंसणकहरयणकरंडु (दर्शनकथारत्नकरण्डक), हरिषेण का धम्मपरिक्ख (धर्मपरीक्षा), अमरकीर्ति का छक्कम्-मुवएसो (षट्कमोपदेशः) श्रुतकीर्ति का परमिट्ठपयाससारू (परमेष्ठिप्रकाशसारः) आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं[1]।

अपभ्रंश के बाद आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास प्रारंभ होता है, इन्हीं में राजस्थानी भी सम्मिलित है।

बात का स्वरूप एवं परिभाषा

राजस्थानी गद्य-साहित्य प्राचीन तथा सुविस्तृत है। चौदहवीं शताब्दी से अब तक इस में अनेक प्रकार की बहुसंख्यक रचनाएँ होती रही हैं[2]। अभी तक राजस्थान के ग्रंथ भण्डारों की पूरी खोज नहीं हो पाई है। जब यहाँ समुचित खोज का कार्य सम्पन्न हो चुकेगा तो बहुत अधिक साहित्य-सामग्री प्रकाश में आएगी, इसकी पूरी संभावना है। राजस्थानी गद्य का पूर्ण वैभव भी तभी प्रकट होगा। अद्यावधि जो सामग्री प्रकाश में आई हैं, उसकी विविध विधाओं का संक्षिप्त परिचय आगे दिया जाता है[3]।

राजस्थानी गद्य की विधाएँ

१ ख्यात :—ख्यात शब्द संस्कृत के ख्याति का विकसित रूप है। ख्यातग्रंथों में इतिहास के लिए उपयोगी सामग्री पर्याप्त रूप में प्राप्त होती है। अनेक ख्यातें राजकीय व्यवस्था में लिखी गई हैं तो कई व्यक्तिगत रूप से भी तैयार हुई हैं। इन में मुंहता नैणसी की ख्यात, बाँकीदास की ख्यात और दयालदास की ख्यात आदि प्रसिद्ध हैं। इन तीनों की अपनी अपनी विशेषताएँ हैं। प्रथम में संग्रह की वृत्ति है, द्वितीय में फुटकर टिप्पणियाँ हैं और तृतीय में क्रमबद्धता है।

---

1. जैन परम्परानुं अपभ्रंश साहित्यमां प्रदान (डा. ह. चु. मायाणी), आचार्यविजय वल्लभ सूरि स्मारक ग्रंथ।

२ राजस्थानी भाषा और साहित्य (डॉ० मोतीलाल मेनारिया), सं. २०१७, पृष्ठ ३६०।

३ राजस्थानी गद्य साहित्य, उद्भव और विकास ग्रंथ द्रष्टव्य है।

२ बात :— बात (अथवा वात) शब्द संस्कृत के वार्ता का विकसित रूप है। राजस्थानी में यह कहानी का वाचक है। यहाँ मौलिक बातें तो अगणित हैं परन्तु लिखित बातें भी कम नहीं हैं। वैसे तो ख्यातों के विभिन्न अध्यायों को भी 'बात' नाम दिया गया है परन्तु ये बातें दूसरे प्रकार की हैं। साहित्यिक बातों में कल्पना तत्व की प्रधानता रहती है और उन में ऐतिहासिकता पर कम ध्यान दिया गया है। ये बातें सरल सामग्री के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। फिर भी अनेक बातों द्वारा ऐतिहासिक महत्व की सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। कई बातें सर्वथा कल्पित हैं। राजस्थानी में गद्य-प्रयोग के लिये भी अनेकशः 'बात' अथवा 'वार्ता' (वारता) शब्द लिखे हुए मिलते हैं[२]। पुरानी हस्तप्रतियों में 'बात' शब्द के लिये 'वात' रूप का प्रयोग भी देखा जाता है।

३ वचनिका :— यह गद्य-पद्य मिश्रित रचना है। इस में तुकान्त गद्य की छटा भी दर्श-नीय रहती है। अचलदास खीची री वचनिका, रतनसिंघ महेसदासोत री वचनिका आदि प्रसिद्ध है।

४ दवावैत :— दवावैत की भाषा में खड़ीबोली की प्रधानता रहती है। साथ ही इस में अत्यानुप्रास पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। नरसिंहदास की दवावैत, दुरसादत की दवावैत आदि के नाम इस सम्बन्ध में उदाहरणस्वरूप लिये जा सकते हैं।

५ पीढ़ी, वंशावली, पट्टावली आदि :— भाट लोग 'पीढ़ी' रखते हैं और इसके लिए उन्हें भेंट आदि मिलती है। वंशावली में वंश-विशेष में होनेवाले व्यक्तियों के क्रमानुसार नाम लिखे जाते हैं और विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की चर्चा भी रहती है। 'पट्टावली' में जैन-गच्छों का विस्तृत एवं क्रमिक विवरण रहता है। इसी प्रकार 'उत्पत्ति ग्रंथ' भी लिखे गये हैं।

६ हाल, अहवाल, हगीगत, याददास्त आदि :—इन विविध नामों वाली रचनाओं में घट-नाओं की विस्तार के साथ जानकारी प्रस्तुत की जाती है।

---

२ इस सम्बन्ध में उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

(क) सदैवछ वावयं — दूहा

काची काया कुंभ घट, जतन करंता जाय।
किसो भरोसो रैण रो, उंघत ही विहाय ॥ ११ ॥

वात :—इण भांत सूं मांहोमांहि रांमत ख्याल करै छै। दूहा-गाहा वादोवाद कहे छै। पिण बालक छै। अजेस परपक न छै, सो माहोमांहि रांमत लाग गया छै।

(राजस्थानी प्रेमकथाएं, पृ० १७७)

(ख) फूलजी वायक — दूहा

मारो थारो वस नही, मिलण दई के हाथ।
जाणां वेगा आवसां, दाणा पाणी हाथ ॥ ६० ॥

वारता :—सीख कर नै हेठा उत्तर आया नै डेरे आया। पण फूलजी मैं तो क्यूं ही आवई नहीं।

(रा. प्रे. क., पृ० २५४)

७ विगत :—इसमें विवरण दिया जाता है। गाँव, मन्दिर, बाग, गढ, कुएँ आदि के संबंध में इससे अच्छी जानकारी मिलती है। कई बार ख्यात के लिए भी 'विगत' शब्द का प्रयोग देखा जाता है, जैसे 'राठौड़ वंश की विगत'। नैणसी कृत मारवाड़ रा परगना री विगत एक प्रसिद्ध ग्रंथ है[1]।

८ तहकीकात :—इस में किसी मामले की जाँच-पड़ताल का विवरण रहता है, जैसे 'जयपुर वारदात री तहकीकात'।

९ पट्टा, परवाना, खत, पत्र आदि :—राज्य की ओर से दी गई किसी जागीर के अधिकार पत्र को 'पट्टा' कहा जाता है। इसी प्रकार राजकीय आज्ञापत्र को 'परवाना' कहते हैं। 'खत' का मतलब पत्र से है। कई जगह इसका अर्थ ऋण-पत्र भी होता है। पत्र-व्यवहार के संग्रह को 'हलकावनामा' कहा जाता है। राजस्थान में पत्र-लेखन की बडी ही उन्नत शैली रही है, राजा-रानी आदि के व्यक्तिगत पत्र तथा जैन श्रावकों द्वारा अपने आचार्यों को विहार निमित्त पधारने के लिए भेजे गए विज्ञप्ति-पत्र तो बडे ही कलापूर्ण ढंग से तैयार किए जाते रहे हैं।

१० सिलालेख, तांबापतर आदि :—प्राचीन स्थानों पर अनेक शिलालेख मिलते हैं, जिन में उनके निर्माण अथवा जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में सूचनाएं दी जाती हैं। तांबापतर (ताम्रपत्र) पर दान में दी गई भू-सम्पति आदि का विवरण रहता है।

११ बही, रोजनामचा आदि :—बही की बनावट विशेष प्रकार की होती है और उस में सामान्यतया हिसाब रखा जाता है। पहिले विशिष्ट व्यक्तियों की बहियों में फुटकर जानकारी के अतिरिक्त उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को भी लिख लिया जाता था। इसी प्रकार रोजनामचे में राजाओं आदि के दैनिक जीवन का वृत्तान्त रहता था। यह प्रथा राजस्थान में पिछले समय तक जारी रही है।

१२ टीकाएँ :—विद्वानों द्वारा प्राचीन ग्रंथों की बहुत बड़ी संख्या में टीकाएं लिखी गई हैं। इनमें जैन-साहित्य की अधिकता है। जो टीका अत्यन्त सरल तथा सुबोध होती है, उसे 'बालावबोध' कहा जाता है। इसमें विषय स्पष्ट करने के लिए संक्षिप्त रूप में कथाएँ भी दी जाती है। अत्यन्त संक्षिप्त टीका को 'टब्बा' कहा जाता है। इस में ऊपर नीचे या पार्श्व में विशिष्ट शब्दों का अर्थ लिख दिया जाता है।

१३ कथा :—कथा प्रायः धार्मिक होती है। उसका उद्देश्य धर्मोपदेश रहता है। राजस्थानी में जैनकथाएँ बहुत अधिक लिखी गई है। वैष्णव कथाएं भी काफी हैं। व्रत-उपवासों से सम्बन्धित कथाएँ तो प्रसिद्ध हैं। कई कथाएँ नीति प्रधान भी हैं।

---

[1] प्रकाशक : रा० प्रा० वि० प्रा० सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी।

१४ चरित्र ग्रंथ :—'दळपत विलास' एक ऐतिहासिक चरित्र ग्रंथ का नमूना है, जो अपूर्ण प्राप्त हुआ है। इसका सम्बन्ध बीकानेर के महाराजा रायसिंह के द्वितीय पुत्र दलपतसिंह से है। माणिक्यसुन्दर सूरि विरचित पृथ्वीचंद्रचरित्र में कल्पित पात्र का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। वर्णन की दृष्टि से यह ग्रंथ अनुपम है और गद्यकाव्य के समान सरल है।

१५ वर्णक ग्रंथ :—राजस्थानी में अनेक वर्णक ग्रंथ लिखे गये हैं, जिन में आश्चर्यजनक वर्णन छटा मिलती है। इन में विविध प्रकार के स्थानों, कार्यों, ऋतुओं आदि के विस्तृत एवं चित्रात्मक वर्णन मिलते हैं। इन की कलात्मकता दर्शनीय है। वाग्विलास, कुतूहलम्, सभाशृंगार आदि इसी प्रकार की रचनाएं हैं।

इनके अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, वैद्यक और योगशास्त्र आदि विषयों पर भी राजस्थानी में गद्यरचनाएं हुई हैं परन्तु वे सरस साहित्य का अंग नहीं हैं।

आधुनिक काल में राजस्थानी में नए ढंग की चीजें तैयार होने लगी हैं। इन में नाटक, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, निबंध और गद्य काव्य आदि सभी हैं। परन्तु राजस्थानी 'वात' एक निराली ही चीज रही है, जिसको उपर्युक्त सभी विधाओं की अपेक्षा अधिक जनप्रियता मिली है। बात की संक्षिप्तता एवं सरलता ने उसे विशेष लोकप्रिय बनाया है। साथ ही इसका श्रेय बात कहने वालों की वचनचातुरी को भी है।

बात का स्वरूप

राजस्थानी बात के स्वरूप पर विचार करने से पूर्व सहज ही संस्कृत की कथा एव आख्यायिका की ओर ध्यान चला जाता है, जिसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है :—

कथायां सरसं गद्यैरेव विनिर्मितम् ॥ ३३२ ॥
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके ।
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम् ॥ ३३३ ॥
आख्यायिका कथावत्स्यात् कवेर्वंशानुकीर्तनम् ।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्[1] ॥ ३३४ ॥

इन श्लोकों में कथा को गद्यकाव्य के रूप में ग्रहण किया गया है और उसे प्रधानतया गद्य में लिखी गई सरस वस्तु माना गया है। इसका उदाहरण कादम्बरी है। आख्यायिका को कथावत् बतलाते हुए वंशानुकीर्तन को उसकी विशेषता प्रकट की गई है।

राजस्थानी बात में किसी रूप में सरस वस्तु और वंशानुकीर्तन ये दोनों ही तत्त्व मिलते हैं। बात के स्वरूप पर विस्तार के साथ विचार करते समय उसमें व्याप्त निम्न तत्त्व सामने आते हैं :—

१. साहित्यदर्पण, षष्ठ परिच्छेद।

१. राजस्थानी बात प्रधानतया कहने की चीज रही है और फिर उसे संवार सजा कर लिख लिया गया है। कई बातों की सजावट विशेष रूप से भी हुई है और उनकी भाषा अधिक आलंकारिक बन गई है।

२. राजस्थानी बात और राजस्थानी कथा में अंतर मानना पड़ेगा। कथा का उद्देश्य धर्मप्रचार एवं शीलोपदेश होता है, जब कि बात रसप्रधान होती है इतना जरूर है कि पुरानी परिपाटी के अनुसार कई जगह बात के लिये कथा शब्द का प्रयोग भी देखा जाता है, जैसे दम्पति-विनोद की कथाएँ। ये कथाएं वास्तव में बातें ही हैं।

३. अनेक बातें ख्याततुल्य हैं और उन में सरसता न रह कर इतिवृत्त मात्र मिलता है। परन्तु इस प्रकार की कई बातों में कहीं कहीं सरस प्रसंग अवश्य देखे जाते हैं। जैतसी ऊदावत की बात के 'प्रारंभिक भाग में प्रस्तावना के रूप में सुजाजी से पहिले के मारवाड़ के राजाओं का वृत्तान्त दिया हुआ है, जो कहानी में विशेष महत्व नहीं रखता परन्तु ऐतिहासिक विज्ञप्ति की तरह पाठको को रुचिकर हो सकता है[1]।' इस प्रकार कई जगह ख्यात और बात मिली हुई देखी जाती है।

४. कई बातें ऐसी भी लिखी गई हैं जिनमें पद्य की प्रधानता है और कहीं कहीं थोड़ा सा गद्य भाग मिलता है। चंद्रमेळागर री बात, चंदकंवर री बात आदि ऐसी ही रचनाएं है। ये रचनाएं चम्पूकाव्य (गद्यपद्य मिश्रित काव्य) की श्रेणी की चीजे है परन्तु इन्हें 'बात' ही कहा गया है।

५. कई बातें नीतिप्रधान हैं, जो किसी अंश में धार्मिक कथाओं से मेल खाती है। बालोपयोगी बातों में यह चीज विशेष रूप से देखी जाती हैं। परन्तु धार्मिक कथाओं और इनकी लेखन शैली में कुछ अन्तर रहता है। ये बातें बालकों के लिए सरस बना दी गई है। संस्कृत की नीतिकथाओं में भी कहानी का यही रूप मिलता है।

६. राजस्थानी बातों पर इतिहास तत्व छाया हुआ है। महत्वपूर्ण बातें प्रायः ऐतिहासिक है और उनकी बड़ी संख्या है। परन्तु उन में कोरा इतिवृत्त नहीं है और वहां कल्पना का अच्छा चमत्कार प्रकट हुआ है। असल में ये बातें ही राजस्थानी साहित्य के बात-अंग का प्रतिनिधित्व करती हैं। जिन बातों की वस्तु कल्पित है, उन्हें भी यहाँ ऐतिहासिक रंगत में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, जैसे नानिग छावड़ा की बात आदि।

७. आकार में राजस्थानी बातें अत्यन्त छोटी से लेकर काफी बड़ी तक मिलती हैं। कई बातों में किसी एक प्रसंग मात्र की चर्चा ही देखी जाती है जैसे 'पाहुवां री बात'। इसके विपरीत अनेक बातें काफी विस्तृत हैं, जैसे रावळदे सांखला री वार्ता। यह बात राजस्थानी प्रेमकथाए नामक संग्रह में पृ. ४६ से पृ. १३७ तक छपी है। इसमें विविध

---

१. रा. वा. भू. पा., पृ० २०५।

प्रकार के अनेक प्रसंग हैं। 'पनां वीरमदे की बात' के लिये तो यहाँ तक कहा गया है कि !इस में नवरस की तरंग निजर आवसी'।

८. राजस्थानी बातों में अलौकिक तत्व व्याप्त है। परन्तु सभी बातों में ऐसा नहीं है और वहाँ तत्कालीन (उत्तर मध्यकालीन) जनजीवन का विशद चित्रण हुआ है। अनेक बातों में व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं ने भी स्थान पाया है। उदाहरण के लिए 'मारू सूंथारी की बात' का नाम लिया जा सकता है, जिसमें लाखा के पिता की मृत्यु के बाद उसकी विमाता बलोचणी एक सूंथार (खाती) के साथ निकल जाती है।

९. सभी राजस्थानी बातों में नायक केवल एक ही नहीं मिलता। कई बातों में तो पात्रों की तीन पीढियां तक देखी जाती हैं, जैसे जखड़ा मुखड़ा भाटी की बात में जखड़ा उसका पिता भीवा और भींव की माता तक प्रकट हुए है। वहाँ इन तीनों ने ही बात की वस्तु को आगे बढ़ाया है। फिर भी बातों में मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन का नहीं बल्कि उसके एक ही खण्ड का चित्रण मिलता है।

१०. राजस्थानी बातें अधिकतर घटना प्रधान है। इन घटनाओं का विकास अप्रत्याशित ढंग से भी होता है। उनमें पर्याप्त मात्रा में कौतूहल व्याप्त रहता है। अतः पाठकों की जिज्ञासा बात को रोचक बनाए रखती है। घटनाएं व्यक्ति-केन्द्रित होती है, जिससे उसमें मन रम जाता है।

११. राजस्थानी बात पाठक पर एक प्रभाव डालती है और उसके विभिन्न तत्व प्रभाव की अन्विति मे योग देते हैं। बात के अंत में सारी स्थिति पाठक के सामने स्पष्ट हो जाती है और वह इस से एक प्रकार की तृप्ति अनुभव करता है।

१२. लेखकों द्वारा ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत की गई कई बड़ी बातों के अतिरिक्त अन्य सभी बातों में कार्य की तीव्रता रहती और बात चरम बिन्दु की ओर अग्रसर होकर शीघ्रता के साथ अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेती है। ऐसी बहुत अधिक बातें है, जिन में ओजतेज से परिपूर्ण जीवन उफनता हुआ मिलता है और उन में शक्तिशाली प्रेरणा व्याप्त हैं। यह राजस्थानी बातों की एक अपनी विशेषता है। ऐसी बातों के पात्र अपनी स्वतंत्र सत्ता प्रकाशित करते हुए पाठक की सहानुभूति ही प्राप्त कर लेते हैं।

१३. अनेक राजस्थानी बातें वर्णन की विशेषता से युक्त हैं और वहाँ लम्बा वर्णन चलता है। ऐसी स्थिति में बात की गति मंद पड़ जाती है परन्तु वर्णन की चित्रात्मकता एवं रसात्मकता में पाठक रम जाता है। कई वर्णन तो रूढ़ हो चले हैं फिर उनका प्रयोग कई बातों में लगभग ज्यों का त्यों देखा जाता है। ऐसा प्रयोग लेखकों द्वारा ग्रन्थ रूप में प्रस्तुत की गई बातों में अधिक मिलता है। उदाहरणस्वरूप 'रतना हमीर की बात' का नाम लिया जा सकता है।

१४ बातें अन्य-पुरुष के रूप में प्रस्तुत की गई हैं परन्तु उनके पात्रों का वार्तालाप उन्हें स्वाभाविक रूप में पाठकों के सम्मुख लाकर खड़ा कर देता है और वे मानो उनका प्रत्यक्षदर्शन करते हैं। परन्तु पात्रों के अन्तःसंघर्ष की स्थिति में होने पर भी उन में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का अभाव ही रहता।

१५ राजस्थानी बात बीते हुए समय की चीज है परन्तु उस में आधुनिक कहानी के प्रायः सभी तत्व न्यूनाधिक मात्रा में मिल जाते हैं और इनके अनुसार राजस्थानी बात का विवेचन किया जाना समीचीन ही है।

परिभाषा

उपर्युक्त सभी तत्वों पर ध्यान देते हुए राजस्थानी बात की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :—

परिभाषा :—बात राजस्थानी गद्य-साहित्य की वह विशिष्ट विधा है, जिस में राजस्थानी वातावरण में विविध उपकरणों की सहायता से वृत्त को सरस एवं सम्वेदनीय रूप में प्रस्तुत किया जाता है, कहा जाना जिसका प्रमुख गुण है, घटना और कार्य-व्यापार का जिसके साथ समवाय सम्बन्ध है, जिस में घटनाओं के घात-प्रतिघात के साथ कार्यान्विति का निर्वाह होता है और वृत्त-बाहुल्य के कारण जिसमें यत्र तत्र प्रभाव बिखरता हुआ भले ही विदित हो किन्तु अंत में जहां किसी एक भावना की प्रभावान्विति की छाप पाठक पर पड़े बिना नहीं रहती।

निश्चय ही बात की यह परिभाषा अपने आप में सर्वथा पूर्ण नहीं है और कोई भी परिभाषा इस रूप में नहीं मिलती कि वह मतभेद रहित हो परन्तु फिर भी इस में राजस्थानी बात के प्रायः सभी उपलक्षण सहज ही देखे जा सकते है।

बात-लेखक

किसी भी रचना पर विचार करते समय सहज ही उसके रचयिता की ओर ध्यान जाता है। राजस्थानी बातें बड़ी संख्या में लिखित रूप मे प्राप्त है परन्तु इन में बहुत अधिक बातें ऐसी है, जिन में लेखक का नाम नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में उनकी रचना का श्रेय किसी विशिष्ट व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता। असल में ये बातें मौखिक रूप से भी बड़े सुन्दर ढंग से कही जाती रही हैं, अतः उनको लिपिबद्ध करते समय लेखकों ने उनको अपनी रचना नहीं माना। यह भावना साहित्य जगत में अत्यन्त सराहनीय है। इस से बात-लेखकों का निःस्वार्थभाव व्यक्त होता है। उन्होंने जनता की वस्तु को जनता

की चीज ही बना रहने दिया। इन के अतिरिक्त जिन बातों में लेखकों के नाम मिलते हैं, वे उनकी अपनी कृतियां हैं। ऐसी बातों में अनेक का तो कथानक भी उनकी अपनी कल्पना से प्रसूत है। इसके साथ ही उन्होंने वर्णन को भी अपनी प्रतिभा के बल पर विस्तार दिया है। इस प्रकार की कई बातें किसी विशिष्ट व्यक्ति की प्रेरणा से भी लिखी गई हैं। कहीं कहीं इस प्रकार के प्रेरक-तत्व की चर्चा बातों में मिलती है। कुछ उदाहरण देखिए :—

१ गढ जोधाण सतांल धाम आई बीलाड़े।
पीर पाव कल्याण सुजस गुण गीत गवाड़े॥
भोज चिरत तिण सुणे कहयो कवियण सुख पावें।
व्यास भवानीदास कवित कर बात बणावें॥
सुणो प्रबंध चारण प्रतें भोजराज बीठु कीयो।
कल्याणदास भूपाळ को धर्मधजा धारी थयो॥

(इति श्री भोजचरत पनरमी विद्या री वार्ता संपूर्ण। गंथाग्रंथ श्लोक १०५१ सवत १८४० पोह सुदि ४ वार शनीशर लिखतु मु० सादुला, वाचें जण नुं रांम रांम छै। बांमण वाचें जण नुं पगे लागणा छै। पोथी मु० सादुला री छै। लिखतं श्री जैसलमेर मध्ये। शुभ भवतु कल्याणमस्तु)

२ बात स मुतबदिन री, ढढणी अखी जोड़।
साहजादा ताला कहै, सुणें न दीनें कोडि॥
सुर नर नाग निघटीयां, काले केहरीयां।
जळ पुरीयें पखांण ज्यों, गलां ऊबरीया॥

(इति कुतबदीन री बात संपुरण॥ समापतं[1]॥ संवत १८४३ रा जेठ वद ६

३ परताप सुरतसींघ रो, वाचत सदा सुहाय।
चद बात पूरी हुई, करी सकल कबीराय॥
जोध वस जुग जुग जीवो, घणो (हो)त परवार।
नांम धरयो परतापसी, सब गुणियन को सार॥

(इण तरै सुख विलास करै छै। इती श्री चन्द कुंवर री वात संपूरण[2]॥ सं. १९१५ रा सांवण वद २॥)

---

१ 'भोजचरत पनरमी विद्या री वार्ता' और 'कुतबदिन साहजादा री वात' की हस्तप्रतियां, श्री मोहन लाल पुरोहित बीकानेर।

२ हस्तप्रति, ठा० धारीसिंह जी, बिसाऊ के संग्रह में।

बातों के उपर्युक्त उद्धरणों में लेखक के साथ ही उनके लिखवानेवाले का नाम भी प्रकाशित किया गया है।

इसी प्रकार कई बातों में उस व्यक्ति का नाम भी देखा जाता है, जो बोल कर उसे लिखवाता है। इन बातों की रचना का श्रेय किसी अंश में लिखवाने वाले व्यक्तियों को मिलना उचित ही है। कुछ उदाहरण देखिए :—

१ 'जैतमाल सलखावत काळियां री बात' चारण सूधंर ने लिखाई।[3]
२ 'जैतमाल सलखावत री बात' मोहू गरीबदास ने लिखाई।[4]
३ 'राव लाखै री बात' मुं० सुन्दरदास लिखाई।[5]

इसी प्रकार बहुत सी बातों में लिपिकर्ता का नाम भी प्रकट है। वहाँ कहीं कहीं लिपिकाल एवं जिस व्यक्ति के लिए बात लिखी गई है, उसका नाम भी दे दिया गया है। कुछ उदाहरण देखिए :—

१ शशिपन्ना री नै राणी चोबाली री बात, बीकानेर में सं. १८३२ में मथेन रामकिसन द्वारा लिपिकृत।[6]

२ सुदबुद साळिगा री बात, स. १८४१ मे पाली में मथेन शिवदान द्वारा लिपिकृत। प्रति भावसंघ की है।[7]

३ सुदबुद साळिगा री बात, गढ भिलाय में कंवरीबाई नरुकी द्वारा लिपिकृत।[8]

४ सुदबुद साळिगां री वात, सं. १८८० में रामगढ़ में जोसी गोविंद द्वारा लिपिकृत। प्रति महाराव अजमेरीसिंघ जी की है।[9]

५ महलिमा री वात, सं. १८९३ में बीकानेर में महातमा किस्तूरचंद द्वारा लिपिकृत। देरासरी भीनजीदास की है।[10]

६ जलाल गहाणी री वात, सं. १७२२ में फलवधी में मथेन वीरपाल द्वारा लिपिकृत। महाराजकुमार अनूपसिंघ की आज्ञा से।[11]

---

३ अ. सं. पु. बी. का गुटका संख्या २०८, वात संख्या ८।
४ वही बात सख्या ११।
५ ऐ. रा. वा. पृ० १०९।
६ अ. स. पु. बी., गुटका संख्या १६६।
७ अ सं. पु. बी. गुटका सख्या १७०।
८ अ. स. पु. बी. गुटका संख्या १७२।
९ अ. सं. पु. बी. गुटका सख्या १७३।
१० अ. सं. पु. बी. गुटका संख्या १७५।
११ अ. सं. पु. बी गुटका संख्या १७७।

७ सांई कर रह्यो तैं री वात आदि सं. १८४५ में देशनोक में तथा सं. १८६२ में दासोरी मे रतनू मनरूप द्वारा लिपिकृत।[१२]

इसी तरह अन्य भी बहुत से नाम प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इन लिपिकर्त्ताओं में से कई ने अपनी व्यक्तिगत रुचि से और कई ने पारिश्रमिक लेकर पुरानी प्रतियों की नक्लें की हैं। मथेन लोगों द्वारा विशेष रूप से ग्रंथों की नकल करने का धंधा किया जाता रहा है। अनेक पुरानी हस्तप्रतियों में उनके नाम देखे जाते हैं। इस विषय का उल्लेख ग्रन्थों की पुष्पिकाओं में मिलता है।

विविध लिखित रूप

अनेक राजस्थानी बातें स्वतंत्र रूप से ग्रन्थ के रूप में लिखी गई हैं। इस प्रकार जो बात बड़ी होती है, वह आकार में उपन्यास सा प्रतीत होता है जैसे रतना हमीर की बात, राजा रिसालू की बात आदि। कई गुटकों में अनेक बातें एक साथ ही मिल जाती हैं और इस प्रकार के बहुत से गुटके देखे जाते हैं। गुटका ऐसा संग्रह है, जिसमें कई चीजें लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए अनूप संस्कृत पुस्तकालय (बीकानेर) में सुरक्षित गुटकों का नाम लिया जा सकता है। कई ख्यातों में भी यत्र तत्र बातों को भी सम्मिलित कर लिया गया है। नैणसी की ख्यात में इस प्रकार की कई बातें हैं। उदाहरणस्वरूप देवराज भाटी, सिद्धराज जयसिंह सोलंकी एवं लाखा फूलांणी आदि से सम्बन्धित ख्यात के अंश द्रष्टव्य हैं। राजस्थानी में बात में बात के भी उदाहरण हैं। अनेक बातें ऐसी हैं, जिनमें बीच बीच में अन्य बातों का प्रयोग मिलता है। उदाहरणार्थ चोबोली की बात द्रष्टव्य है। उसमें मूल बात के साथ और भी चार बातें हैं।

इसी प्रकार कई ग्रन्थ ऐसे हैं, जिनमें बड़ी संख्या में बातें दी गई हैं। दम्पत्ति-विनोद ग्रन्थ में ३२ बातें हैं, ऐसी बातें एक सूत्र में पिरोई हुई मणियाँ सी विदित होती हैं। ये संस्कृत कथाग्रन्थों की अवान्तर कथाओं के समान ग्रथित हैं।

प्राप्ति के साधन एवं स्थान

राजस्थानी बातों की हस्तप्रतियाँ राजकीय ग्रन्थागारों, जैन भण्डारों आदि के अतिरिक्त व्यक्तिगत संग्रहों में अधिक संख्या में मिलती हैं। बातें अत्यधिक लोकप्रिय रही हैं, अतः साहित्य-रसिक लोगों ने बड़े चाव से इनको अपने पास संजो कर रखा है। इस प्रकार फुटकर रूप से इनकी उपलब्धि विशेष होती है।

चारणों के घरों में तो बातों की प्रतियाँ पाई ही जाती हैं, इनके अतिरिक्त सेठ-साहूकारों के यहाँ भी ये मिलती हैं। बातों की प्रतियाँ भेंट रूप में भी लोग अपने प्रेमीजनों

---

१२ अ. सं. पु. बी. गुटका सख्या २०६।

को देते रहे हैं। ऐसी स्थिति में इनका प्रचार–प्रसार विशेष रूप से हुआ है। एक ही बात की अनेक प्रतियाँ थोड़े–बहुत रूपान्तर के साथ देखी जाती हैं। इनमें प्रतिलिपि करने वालों ने भी जहाँ तहाँ अपनी प्रतिभा का प्रयोग किया है।

विभिन्न क्षेत्रों में एक ही मौखिक बात अलग अलग रूपों में कही जा सकती है। अतः जब उसे लिपिबद्ध किया गया है तो उसकी घटनाओं आदि में न्यूनाधिकता का रहना स्वाभाविक है। इसी प्रकार कई घटनाएं परिवर्तित भी देखी जा सकती हैं। राजस्थानी बातों का अध्ययन करते समय इन सब चीजों पर ध्यान रखना आवश्यक है।

लोक-महिमा

राजस्थान में बातों की महिमा के सम्बन्ध में अनेक सूक्तियां कहावत के समान प्रचलित हैं, जो विषय की लोकप्रियता की सूचक हैं। कुछ चुनी हुई सूक्तियां इस प्रकार हैं :—

१ भलियूं भलो नरांह; लाबीयूं लांबा नरां।
मुळवां मुंवा पंछाह, वातां रहिसी वोचउत ॥

२ सुर नर नाग निघट्टिया, काळै केहरियां।
थळ पुरियां पाखाण ज्यौं, गल्लां उबरीयां ॥

३ बेटे बाप विसारिया, भाई वीसारेह।
सूरां पूरां गल्हड़ी, मंगण चीतारेह ॥

४ सूरां पूरां वतड़ी, सूरां कांन सुहाय।
भागळ अदवा राजवी, सुणतां ही टळ जाय ॥

५ बात बात सब एक है, बात बात में फेर।
वें ही लो की कुस घड़ी, वें की ही समसेर ॥

६ बात बात सब एक है, बात बात में बैंण।
वो ही काचळ ठीकरी, वो ही काजळ नैंण ॥

७ रहै न तन धन राखियां, कीधां जतन किरोड़।
मांन लहै मरदां भला, महि सुण बात मरोड़ ॥

८ की बरथां धन जोड़ियां, नह चलसी सत्थांह।
मरदां अत्थां मांणियां, जग रहसी कत्थांह ॥

९ हो रावां, हो राजियां, हो सोहड़ भल्लांह।
सूरां सापुरसां तणी, जुग रहसी गल्लांह ॥

१० बातां हुंदा मामला, दरिया हुंदा फेर।
नदियां बवे उतावळी, फिर घिर घाले भेर ॥

११ राव गया म्हालर गई, गया जमीं सें हल्ल।
सूरवीर तो चल्या गया, पण पड़ी रह गई गल्ल॥

१२ राहुब कहै सुण साहबा, हाबू देखण हल्ल।
मर ज्याणा संसार में, पण पड़ी रवेंगी गल्ल॥

१३ सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण की बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात॥

१४ जगमल, नीवें खींवरें, प्रळ राखी प्रखियात।
यों रहसी जग ऊपरां, वीरमदे री बात।

उपर्युक्त सूक्तियों में बात, गल्ल, कथा आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं और ये सब लोक-प्रचलित बातों की ओर संकेत करते हैं।

राजस्थान में बातों को कहने, सुनने एवं लिखकर रखने की अभिरुचि के आधिक्य के सम्बन्ध में रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत का निम्न वक्तव्य ध्यान में रखने योग्य है :—

'यूं तो बात कँवण्यां री कोई खास जात नीं, जो कँय जांणै वो ही कँवै। पण रावळ, मोतीसरा, भाट, बड़वा, रांणीमंगा, ढाढी, नकारची, सरगड़ा, जांगड़ कौम में बात कँवण्यां ज्यादा मिलै। पीढयां सूं याने वातां जबानी याद चाली भावें।........वातां रा कँवण्यां मिनखां नें राजा माराजा प्राछी इज्जत भर रोजगार दे भाप रै भठै राखता। यां री बणी पूछ ही, सभा ने रीझावा ने ये भाप री कळा बताता, इतिहास री शिक्षा घणीकर यां री वातां सूं ही देवता। ....वातां ने लिखाय राखवा रो पैलां घणो सौक हो। केई वातां तो लिखाय भ्रस्या रूपाळा भक्षरां मे जमाय जमाय नें मांड्योड़ी है, मांय नें जगा जगां चित्रांम उतारयोड़ा हैं। बढ़िया पुट्ठो मुखमल री, छींट री चढाय घणो सावधानी सूं राखता। पीढ्यां तांई भंवेर्‌यां राखता, पढ नें सुणता सुणावता। ख्यातां भर वातां लिखावा रो घणो रिवाज हो। राजा माराजा भाप रा घराणां रा जस री, भापरी सोख री कविता, वातां लिखाय नें चितर बणवाय नें भापणै मितरां रे मगा परसंगियां रे भठै भेजबो करता। म्हारै देखणी तक में यो रिवाज यो।[1] '

इस उद्धरण में राजस्थानी बातों के चित्रों की चर्चा भी हुई है। असल में यह कार्य बातों को विशेष रूप से आकर्षक और मोहक बनाने के लिए हुआ है। साथ ही यह बात ग्रंथ तैयार करवाने वालों की अभिरुचि का भी परिचायक है। राजस्थान में बहुत अधिक बातें चित्रित हुई हैं। कुछ चित्रित बातों के नाम नीचे दिए जाते हैं, जो अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर के राजस्थानी-विभाग में द्रष्टव्य हैं :—

१ मांझल रात, भूमिका, पृ. २४-२६।

१. जलाल गाहणी री वात (संख्या १४८)
२. शशिपन्ना री वात (सं. १६९)
३. सुदबुद सालिगा री वात (सं- १७०)
४. पन्ना वीरमदे री वात (सं. १७४)
५. ढोला मारू री वात (सं. १७४)
६. नागजी नागमती री वात (सं. १७४)
७. एकलगिड़ वराह री वात (सं. १७५)

ध्यान रखना चाहिए कि अधिकतर प्रेमतत्व विषयक बातें चित्रित हुई हैं। एक ही बात में अनेक प्रसंगों के चित्र देखे जाते हैं। इस सम्बन्ध में उदाहरण स्वरूप शशिपन्ना की बात के चित्रों की सूची प्रसंग सहित प्रस्तुत की जाती है।

१. पृष्ठ ३ पिंजरो खोलियो धोबी धोवण।
२. पृष्ठ ४ पातिसाह लरकी के माथे हाथ फेरियो।
३. पृष्ठ ५ पातिसाह सौदागर बुलाये हैं।
४. पृष्ठ ७ पन्ना चालियो, ऊंट लदीया।
५. पृष्ठ ११ पन्ना बाग में उतरीयो छै। ससी करहे ने छड़ी वाहे छै।
६. पृष्ठ १२ सस्सी पन्नो बातां करे छै।
७. पृष्ठ १३ सस्सी पन्ने नें पूछै छै।
८. पृष्ठ १५ पन्नो कपरा धोवै छै।
९. पृष्ठ १७ ससी का व्याह होता है।
१०. पृष्ठ १८ ससी गोढण नैं गई।
११. पृष्ठ २० सौदागर पन्नु रे मुजरे गया छै। पनोजी गेरमहलूं छै।
१२. पृष्ठ २१ सौदागर पातसाह पास गये।
१३. पृष्ठ २२ दोय साहजादा हालिया।
१४. पृष्ठ २३ होती मोती कलाळी रे गया।
१५. पृष्ठ २४ पनोजी भायां सेती मिल्या।
१६. पृष्ठ २५ पन्नो हसना दारू पीवता छै। होती मोती पावते हैं।
१७. पृष्ठ २६ पने ने ले गया घोड़े रे पूठे चढाय कर।
१८. पृष्ठ २८ सस्सी बाप ने कहै विरह व्याकुल थकी।
१९. पृष्ठ ३० ससी वन में फिरती है।
२०. पृष्ठ ३२ पनोजी हसन रे खांधे चढिया छै।
२१. पृष्ठ ३३ ससी पनूं री महजीद मेळी बनी है।
२२. पृष्ठ ३४ दो मालाधारी मुल्लां के आगे चौपटा पर किताब है।

(सं. १८३२ फागुन सुदी ९ लिखितम् मयेन रामकिशन चित्रजुक्तेन श्री बीकानेर मध्ये)

इस सूची को देखने से प्रकट होता है कि केवल ३४ पृष्ठों की हस्तप्रति को २२ रंगीन चित्रों से विभूषित किया गया है, जो स्पष्ट ही विशेष अभिरुचि का प्रकाशन है। चित्रों से बात की रोचकता में वृद्धि होती है और वह नयनाभिराम बन जाती है। इससे हस्तप्रति का मूल्य भी बढ़ जाता है और भेंट में देने के लिए निश्चय ही वह एक उत्तम वस्तु बन जाती है।

बातों का वर्गीकरण

एक ही साहित्य विधा की बहुसंख्यक रचनाओं के वर्गीकरण की नितान्त आवश्यकता अनुभव होती है और ऐसा करना सब प्रकार से सुविधाजनक तथा उपयोगी रहता है। इसका स्पष्ट कारण यह है कि एक ही विधा में अनेक उपविधाएं भी हो सकती हैं और उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।

राजस्थानी में अनेक कथानक पद्यात्मक रूप में लिखे गए हैं। उनको 'बात' के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता क्योंकि बात कहने की चीज पहिले है और पढ़ने की बाद में। कई लेखकों ने अपनी बातें केवल पढ़ने के लिए भी लिखी हैं। इसके अतिरिक्त कई 'बातें' खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी में भी प्रस्तुत की गई हैं। इनके उदाहरण कुतुबदीन साहजादे री बात', 'बहलीमा री बात', 'ससी पर्नू 'साहिजादे की बात और 'लैलें मजनूंरी बात' आदि हैं।[1] भाषा के विचार से इन बातों का एक अलग ही वर्ग माना जा सकता है। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि इनमें से कई बातें शुद्ध राजस्थानी रूप में भी प्राप्त हैं। इस प्रकार एक ही बात के राजस्थान में अनेक रूप मिलते हैं।

राजस्थानी बातों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जा सकता है। आगे इसी दृष्टि से बातों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है।

विषयानुसार वर्गीकरण

राजस्थानी बातों का एक वर्गीकरण उनके विषय के अनुसार किया जा सकता है, जो इस प्रकार होगा :—

---

१. इन बातों की हस्तलिखित प्रतियां अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में सुरक्षित हैं।

१. शौर्यप्रधान बातें।
२. प्रेमप्रधान बातें।
३. हास्यप्रधान बातें।
४. नीतिप्रधान बातें।
५. निर्वेदप्रधान बातें।
६. कुतूहलप्रधान बातें।

१. शौर्यप्रधान बातों की संख्या अधिक है और राजस्थानी बात-साहित्य का यह प्रमुख भाग है। उदाहरण के रूप में 'मूळवे सांगावत की बात[१]', कुंवर रणमल री बात,[२] राजा नरसिंघ री बात,[३] पताई रावळ री बात,[४] कूगरें वलोच री बात,[५] हाडुल हमीर री बात[६] और राजा भीम री बात[७] आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इस प्रकार बातों में व्याप्त शौर्यतत्व की आपूर्णता का कारण स्पष्ट है। लम्बे समय तक इस प्रदेश का जनजीवन तदनुरूप ही रहा है। साथ ही जनता ने यहाँ के नरवीरों की जीवन घटनाओं में पूरी रुचि भी ली है। अतः इस प्रकार की बातें बड़ी संख्या में प्रकट हुई हैं।

२. राजस्थानी में प्रेमप्रधान बातें भी कई हैं। ये बातें सर्वाधिक चित्रित हुई हैं। प्रेमप्रधान राजस्थानी बातों में ढोलो मारू,[८] जलाल बूबना,[९] ससी पूंनों,[१०] सदेवछ सावळिंगा,[११] नागजी नागवती,[१२] बीझो सोरठ,[१३] मूमल महेन्दरो,[१४] आदि बातों का नाम लिया जा सकता है।

३. हास्यप्रधान बातें भी राजस्थानी में कई लिखी गई हैं। इस सम्बन्ध में च्यार मूरखां री बात,[१५] खुदाय बावळी री बात,[१६] बिसनी बेखरच री बात,[१७] पोपांबाई री बात,[१८] फोफाणंद री बात,[१९] पंचमार री बात,[२०] और रळै गढवै री बात[२१] आदि बातों के नाम लिए जा सकते हैं।

४. नीतिप्रधान बातें भी राजस्थानी में बहुत हैं। उदाहरण के रूप में भलै भलो बुरै बुरो री बात,[२२] गोदावरी तीर रै जोगी री बात,[२३] बंधी बुहारी री बात,[२४] कांणां रजपूत री बात,[२५] बिणजारा त्रिणजारी री बात,[२६] साहूकार री बात[२७] और अकल री बात[२८] आदि के नाम प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

---

१. बा. मू. प. २. वही. ३. अ. जैं. ग्रं. बी (हस्तप्रति) ४. रा. वा., भाग १. ५. वही. ६. वरदा ७/३. ७. वही. ८. रा. बा. सं. ९. वही. १०. रा. प्रे. क. ११. वही. १२. वही. १३. वही. १४. वही. १५. मरुवाणी १/४. १६. अ. सं. पु बी (हस्तप्रति). १७. वही. १८. बिड़ला विद्या विहार मैगजीन (पांडे अभिनंदन अंक). १९. बा. मू प. २०. रा. वा, भाग ३. २१. वरदा ७/१. २२. रा. वा., भाग ५. २३. मरुवाणी, भाग १, अंक ३. २४. रा. वा., भाग ३. २५. वही. २६. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). २७. वही. २८. वरदा (गद्यांसर) अंक २.

२. राजस्थानी से निर्वेदप्रधान बातों की सख्या अधिक नहीं है। इस विषय में 'कथाएँ' काफी हैं। फिर भी कई बातें इस विषय में मिल ही जाती हैं। उदाहरण स्वरूप रावळ मलीनाथ पंथ में आयो तै री वात'[१] और 'रामदे तुवर री वात'[२] आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

६. राजस्थानी में कुतूहलप्रधान वातें बहुत अधिक हैं। इनमें आश्चर्यपूर्ण कार्य एवं घटनाएँ विशेष रूप से देखे जाते हैं। साथ ही इनमें देवता, अप्सराएँ एवं भूत-प्रेत आदि भी पात्रों के रूप में प्रकट होते हैं। जीजो डाभी री वात,[३] मानधाता री वात,[४] मांडणसी कूंपावत री वात,[५] पदमै चारण री वात,[६] सिखरो चहेळवै गयो रहै तै री वात,[७] और हरराज रै नैणा री वात[८] आदि वातें इस सम्बन्ध में उदाहरण हैं।

ध्यान रखना चाहिए कि इस वर्गीकरण में मिश्रण अवश्य रहा है। जैसे प्रेमप्रधान बातों में शौर्य का प्रकाशन भी देखा जाता है। प्राचीन कथा-साहित्य में प्रेम और शौर्य का तो मानो सहज सम्बन्ध रहा है। यही चीज राजस्थानी वातों में भी चली आई है। जलाल बूबना की बात में जलाल प्रेमी होने के साथ ही वीर भी है। इसी प्रकार कुतूहल प्रधान बातों में भी शौर्य की छटा द्रष्टव्य है। मांडाणसी कूंपावत और सिखरा दोनों इतने वीर एवं बलवान हैं कि वे भूतों को भी परास्त कर देते हैं।

प्रेमप्रधान राजस्थानी बातों के सहज ही दो विभाग किए जा सकते हैं। इनमें से एक विभाग में शुद्ध प्रेम सम्बन्धी वातें आएंगी, जैसे नाग-नागवती की बात और बीभा अहीर की बात आदि। दूसरे विभाग की वातों में वासनामय प्रेम-प्रकाशन हुआ है, जैसे गुलावां भंवर की वात[९] और चंदकंवर की वात[१०] आदि।

कथानक के अनुसार वर्गीकरण

कथानक के आधार पर राजस्थानी वातों का निम्न वर्गीकरण सामने आता है :—

१. ऐतिहासिक वातें।
२. अर्द्ध-ऐतिहासिक वातें।
३. कल्पित वातें।

१. ऐतिहासिक वर्ग में वे वातें आती हैं, जो ख्याततुल्य हैं। राजवंशों विषयक वातें इसी वर्ग में आती हैं। उदाहरणस्वरूप मोहिलां री वात[११] का नाम लिया जा सकता है, जिसका प्रारंभ इस प्रकार होता है :—

---

१. अ सं पु. बी. (हस्तप्रति). २. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ३. रा. मू. प. ४. चौबोली. ५. रा मू. प. ६. वही. ७. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति). ८. वही. ९. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). १०. शोधपत्रिका (उदयपुर) भा. २ अं. ३. ११. हस्तप्रति, श्रीमोहनलाल पुरोहित, बीकानेर के संग्रह में.

'अथ मोहिलां री वार्ता लिख्यते—मोहिल सजानोत, जाति चहुवांण, छापर—द्रोणपुर रो धणी हुवो। तिण री हकीकत। चहुवाण नैं मोहिल विचै इतरी पीढी.......।

इसी बात के मध्य भाग का नमूना भी भी द्रष्टव्य है :—

'यां री पातिसाहजी घणी दिलासा कीवी। या मास१०/११ चाकरी कीनी। यां सुं मेंहरबांन हुवा। यां री कुमुख नुं घोड़ी हजार २५ दीयो। सारंगखांन पठाण विदा कीयो। सारंगखांन नैं मोहिल नरबद राठौड़ वाघो चलाय नैं फतैंपुर-झुंझणी री पाखती आया। रांणो वैरसल पिण आय मेळो हुवो। राव जोधो पिण आपरा माणस हजार ६ लें नैं साम्हो गयो। ऐ पिण फतेपुर नैं छापर रैं वांकड़ आया। दोनुं फोजां दोनुं तरफां आया।'

इन उद्धरणों से प्रकट है कि यह इतिवृत्त के रूप में लिखी गई बात है। इसमें कथारस लगभग नहीं है। इसे ऊपर नाम 'हकीकत' भी दिया गया है। चन्द्रावतां री वात[1] और सांखलां री वात[2] आदि इस प्रकार की अन्य अनेक बातें हैं।

कई ऐतिहासिक पात्रों की बातें भी ख्याततुल्य ही लिखी गई हैं। उदाहरणस्वरूप राव जोधाजी रै बेटा री बात[3] का नाम लिया जा सकता है। इस बात का प्रारंभ इस प्रकार होता है :—

'राव जोधो गया जात पधारिया। उठै आगरा री पाखती नीसरीया। तरै राजा करण राठौड़ कनोज रा धणी नूं राव जोधो मिळिया। तरै राजा करण पातसाहजी सुं गुदरायो, 'राव जोधो मारवाड़ री धणी बडो राजा छै। गुजरात रैं मुंहडै इण रो मुलक छै नैं हजरत गुजरात ऊपर मुहम करण मतै छो तो राव जोधा नूं आपरो करो।' तरै हजरत पातसाहजी राजा करण नूं कह्यो, 'राव जोधा नूं पगे लगावो।' तरै राव जोधो पातसाह सूं मिळियो। पातसाहजी घणा राजी हुवा। मेघाडम्बर छत्र, हाथी, घोड़ा, घणो जवाहर, घणी वस्त पातसाह, दीन्ही नैं कह्यो, 'वळै चाहीजैं सो मांगो।' सु तद गयाजी दांण निपट घणो सिनांन रो लागतो, सु तिण रो रावजी अरज कर नैं गया रो दांण छुडायो।'

इस प्रकार की अनेक बातें है, जो इतिवृत्त के रूप में लिखी गई हैं, भले ही इनमें वर्णित घटनाओं में ठोस ऐतिहासिक तथ्य कम या अधिक हो।

२. अर्द्ध-ऐतिहासिक बातें वे हैं, जिनमे या तो पात्र ऐतिहासिक होते हैं या घटनाएं। ऐसी बातों में पर्याप्त कथारस मिलता है। साथ ही इनमें कल्पना का चमत्कार भी दर्शनीय है। उदाहरणस्वरूप जगदेव पंवार री बात,[4] वीरमदे सलखावत

---

१. अ. जै. ग्रं. वी. (हस्तप्रति). २. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति). ३. परम्परा, भाग ११. ४. रा. वा. सू. पा.

री वात,[१] अचलदास खीची री वात[२] और राजा भीम री वात[३] आदि का नाम लिया जा सकता हैं। इस प्रकार की बातें बहुत अधिक हैं और वे बडी सरस हैं। इनमें प्रयुक्त कल्पना-तत्व के सम्बन्ध में 'राजा भीम री वात' पर ध्यान देने से प्रकट होता है कि बात में गुजरात के राजा भीम (प्रथम) और कर्ण का वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है। परन्तु इसकी घटनाएँ एवं आना बाघेला तथा लूणसाह आदि पात्रों को देखते हुए यह बात वहाँ के राजा भीम (द्वितीय) के राज्यकाल की छाया उपस्थित करतीहै।[४] संभवतःयह मिश्रण नामसाम्य के कारण हुआ है। फिर भी बात बडी रोचक है।

असल में राजस्थानी बातो का यही भाग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसमें प्रबल प्रेरणा एवं ओज तेज है। जिन विशिष्ट व्यक्तियों की जीवनकथा ख्यातों में नहीं आ पाई हैं या नाममात्र को वहाँ दी गई हैं, उसका स्पष्टीकरण इन बातों में मिलता है। साथ ही उसमें चमत्कार भी रहता है। इस प्रकार ये बातें ख्यातों की अनुपूर्ति करती हैं। नैणसी री ख्यात (भाग १, पृ. ३४४-३४५) में 'बात रायसी महिपालोत री' साररूप में दी गई है। यही वृत्तान्त विस्तार के साथ 'कैसे उपाधियें री वात[५] में सरस रूप में प्राप्त होता है। इसी प्रकार इस ख्यात (पृ. ३३५) में 'अरजन हमीर भीवोत' की केवल इतनी सी चर्चा है—'सोरठ माहे दवकेपाटण सोमईयो महादेव बडो जोतलिंग हुतो, तिको संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाड़ियो। तठै गोहिल हमीर अरजन भीव रा बेटा कांम आया, बडो नांव कियो। तिणां साथे वेगड़ो भील पिण काम आयो।' इसी सार सूचना को अरजन हमीर भीमोत री वात[६] में अत्यन्त रोचक रूप में विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है।

३. कल्पित बातों में वे सभी बातें सम्मिलित है, जिनके पात्र और घटनाएं सभी कल्पित होते हैं। ऐसी बातों में कहीं कहीं वीर विक्रमादित्य, राजा भोज आदि जनप्रिय कथानायकों के नामों का प्रयोग भी कर लिया गया है। कल्पित बातों में अलौकिक-तत्व विशेष रूप से देखा जाता है और अनेक पात्रों में पशु पक्षी तक मानव-व्यवहार करते हैं। इन बातों में लोककथाओं को लिखित रूप में सुरक्षित करने की चेष्टा हुई है। इस प्रयास से राजस्थान की बहुत अधिक पुरानी लोककथाएँ लुप्त होने मे बच गई हैं। साहूकार री वात,[७] विणजारे विणजारी री वात,[८] और वाड़ी बारा हाट अठारा री वात[९] आदि बातें इसी प्रकार की हैं। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि ये बातें भी कहने वाले लोग इस रूप में कहते हैं मानों ये किसी समय इसी प्रकार घटित हो चुकी हैं। एक कल्पित बात का प्रारंभिक भाग द्रष्टव्य है :—

---

१. वीरवाण, परिशिष्ट. २. प. वं. द. परिशिष्ट. ३. रा. गू. प. ४. चालुक्याज आफ गुजरात, अंग्रेजी. (अशोककुमार मजूमदार) अध्याय पांच और नौ. ५. अ. जैं. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ६. साधना (दूंगरसोह), कार्तिक अंक ७. अ. जैं. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ८ वही. ९. अ. सं. पु. बी, (हस्तप्रति).

'राजा भोज धार नगरी राज करै। बडो राजा। चवदै विद्यानिधान। सु राजा रै खाफरो चोर चाकर। आगै सहर में खाफरो चोरी करतो। चोरी ठावी न हुवती। ताहरां राजा पड़वो फेरियो—'ओ चोर म्हारे मुजरे आवै तो चोरी री तकसीर माफ करूं। सिरकार रा रोजगार कर देऊं।' तद खाफरो राजा रै दरबार वडै लाजमै पोसाख सूं जाय मुजरो किया।'[१]

असल में यह बात चोरी की चतुराई की कहानी है। परन्तु इसके साथ राजा भोज और खाफरा चोर के प्रसिद्ध नाम जोड़ दिए गए हैं। कहना न होगा कि इनके स्थान पर अन्य नाम भी आसानी से प्रकट किए जा सकते हैं, अथवा इन नामों को हटा कर यह बात 'एक राजा' और 'एक चोर' के सम्बन्ध में भी कही जा सकती हैं। सुप्रसिद्ध लौकिक कथापात्रों का नाम इन बातों के साथ 'अविश्वास की रोक' (Suspension of disbelief) के लिए किया गया है। इस विधि से साधारण पाठक को इसके कथानक के प्रति किसी अंश में विश्वास हो जाता है।

घटना कार्य आदि के अनुसार वर्गीकरण

बातों के प्रतिपाद्य विषय में घटना, कार्य, चरित्र, वातावरण एवं प्रभाव आदि रहते हैं इनके अनुसार भी बातों का वर्गीकरण किया जा सकता है। इस वर्गीकरण के विभाग नीचे लिखे अनुसार होंगे :—

१. घटनाप्रधान बातें।
२. कार्यप्रधान बातें।
३. चरित्रप्रधान बातें।
४ भावनाप्रधान बातें।
५. प्रभावप्रधान बातें।

१. घटनाप्रधान बात में घटनाओं को प्रधानता मिलती है। ये घटनाएँ प्रारंभ से लेकर अंत तक कड़ियों के समान जुड़ कर आगे बढ़ती हैं। इनमें पाठक के लिए कुतूहल की वृत्ति बनी रहती है और ज्यों ज्यों बात आगे चलती है त्यों त्यों उसकी जिज्ञासा भी समाप्त हो जाती है और पाठक एक तृप्ति का अनुभव करता है। ऐसी बातों में घटनाओं के प्रवाह में पात्र बहता चलता है। राजस्थानी में घटनाप्रधान बातों की बड़ी संख्या हैं। इनमें संयोग-तत्व एवं अलौकिक तत्व की क्रिया भी विशेष रूप से देखी जाती है। सांई री पलक में खलक री वात,[२] पलक दरियाव री वात,[३] लालमण कुंवर री वात,[४] मंडाण गांव रै पीर री वात,[५] हंसराज बछराज री वात,[६] ठकुरै साह री वात[७] और माल्हाळी री वात[८] आदि घटनाप्रधान बातों के उदाहरण हैं।

---

१. रा. वा., भाग १, पृ० १०४-१०५. २. रा. वा. सं. ३. वही. ४. राजस्थानी वातां, भाग ४. ५. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति). ६. अ. जै. ग्रं बी. (हस्तप्रति). ७. वही. ८. अ. स. पु. बी (हस्तप्रति)

अपने बच्चों के पास आ जाती है परन्तु कारणवश हरिणी नहीं लौट पाती। अतः उसके बच्चे यह मान लेते हैं कि नाहरी ने धर्मभंग करके उसे खा डाला है। इस पर नाहरी 'सत्यक्रिया' का सहारा लेती है और हरिणी भी लौट आती है। तत्काल वातावरण बदल जाता है और सर्वत्र आनन्द की लहर उमड़ पड़ती है। देखने में बात के पात्र पशुमात्र हैं परन्तु उन पर मानवीय व्यवहार का आरोप कर दिया गया है। बात में सत्य की महिमा प्रकट हुई है, जो विशेष रूप से प्रभावोत्पादक है। इसी वर्ग की अन्य भी कई बातें हैं, जैसे 'तुरत दान महा पुन्न' आदि।

लौकिक तत्व के अनुसार वर्गीकरण

राजस्थानी बातों का एक अन्य वर्गीकरण भी सहज में किया जा सकता है और वह इस प्रकार होगा।

१. लिपिबद्ध लोक प्रचलित बातें।
२. लेखक-प्रणीत बातें।

१. प्रथम वर्ग में वे बातें आती हैं, जिनमें लेखकों के नाम नहीं मिलते। अधिकांश राजस्थानी बातें इसी प्रकार की हैं। इनमें मौखिक बातों को संवार-सजा कर लिपिबद्ध करने की क्रिया फलवती हुई है। ऐसी बातों का आकार विशेष बड़ा नहीं है और ये विविध प्रतियों में सामान्य रूपान्तर के साथ मिलती हैं। एक ही बात की अनेक प्रतियों का अवलोकन करने से उनमें थोड़ी बहुत घटनाओं की न्यूनाधिकता भी सामने आती है।

२. दूसरे वर्ग में वे बातें आती हैं, जो विशिष्ट लेखकों की अपनी रचनाएँ हैं। इनकी संख्या थोड़ी है। इनके लेखकों ने लोक-प्रचलित पद्यात्मक सामग्री का अपनी रचनाओं में प्रयोग अवश्य किया है। कहीं कहीं इनकी कथावस्तु भी लोक प्रचलित हो सकती है, जिसको उन्होंने विस्तार दिया है। ऐसी बातें प्रायः विस्तृत रूप में ही मिलती हैं। इनमें प्रसंगानुसार वर्णन की छटा प्रकट हुई है और भाषा में आलंकारिकता अधिक है। ये मंद गति से आगे बढ़ती हैं और इनमें पद्य-प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक मिलता है। ये विविध विषयों पर लिखी गई हैं परन्तु इनमें प्रेमतत्व पर अधिक ध्यान दिया गया है। ऐसी बातों में कहने के स्थान पर पढ़ने की क्रिया को प्रधानता प्राप्त हुई है। इस प्रकार की कुछ बातों के नाम उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत है :—

१. राजा भोज री पंदरवीं विद्या री वात[1] (व्यास भवानीदास)
२. रावत प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोत री वात[2] (महाराजा बहादुरसिंह)

---

१. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). २. रा. सा. सं. भाग २.
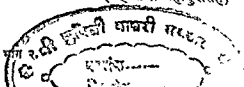
२. कार्यप्रधान बात में पात्रों के द्वारा दिए गए कार्यों को विशेष महत्व मिलता है। ये कार्य उनके चरित्र की कोई विशेषता प्रकट करने की दृष्टि से नहीं किये जाते परन्तु ये कुतूहल में वृद्धि करते हैं और इनसे जिज्ञासा उत्पन्न होती है। ऐसी बातों में पात्र आश्चर्यजनक कार्य करते हैं और उनमें विलक्षणता रहती है। साथ ही कहीं कहीं जादू का प्रभाव भी काम करता है। राजा रिसालू री वात,[1] खींवे वीजे री वात,[2] विक्रमादीत री वात[3] रावळदे सांखळा री वात,[4] हरराज रै नैणां री वात,[5] चंद राजा री वात,[6] और श्यामसुंदर री वात,[7] आदि इसी प्रकार की बातें हैं।

३. चरित्रप्रधान बातों में चरित्र को विशेष महत्व मिलता है और अन्य उपकरण इसके सहायक होते हैं। इस प्रकार की राजस्थानी बातें अधिक है। उनमें विभिन्न परिस्थितियों में पड़ कर पात्र अपने चरित्र को प्रकाशमान करते हैं। परन्तु वहाँ चरित्र का वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं देखा जाता है। वे अपनी निश्चित चारित्रिक विशेता पर दृढ़ रहते हैं। जगदेव पंवार री वात,[8] वीरमदे सोनगरा री वात,[9] कहुवाट सरवहिये री वात,[10] भाटी वरसे तिलोकसी री वात,[11] कुंवरसी सांखळा री वात,[12] पताई रावळ री वात[13] और रेसमिये री वात,[14] आदि इस सम्बन्ध में उदाहरणस्वरूप हैं।

४. भावनप्रधान बात में किसी विशेष भावना से अनुप्राणित वातावरण प्रकट होता है। इसमें बाहरी वातावरण तो सहायक तत्व के रूप में सामने आता है, असल में प्रधानता किसी मुख्य भावना को मिलती है। इस वर्ग की बातों में भीतरी भावना की ओर ध्यान बना ही रहता है। जेतसी उदावत री वात,[15] (वचन निर्वाह की भावना), पीठवे चारण री वात,[16] (प्रतिशोध की भावना), वीरै देवड़ै री वात[17] (आत्म सम्मान की भावना), राजा भीम री वात[18] (देशोद्धार की भावना) और बीरवळ री वात[19] (मित्रता की भावना) आदि बातें इस विषय में उदाहरणस्वरूप हैं।

५. प्रभावप्रधान बात में पाठकों पर पड़ने वाला प्रभाव ही विशेष महत्व रखता है, अतः इनका लक्ष्य एक विशेष प्रभाव पैदा करना होता है। ऐसी बात में किसी चिरंतन सत्य की व्यंजना मिलती है। इस सम्बन्ध में वात नाहरी हरणी धरमे के बाबत[20] एक अच्छा उदाहरण है। वात में नाहरी और हरणी दोनों मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करती हैं और इस कार्य में सूर्य को साक्षी बनाया जाता है। एक सांझ जंगल से नाहरी

---

१. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). २. चौबोली. ३. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ४. रा. प्र. क. ५. अ. सं. पु. वी. (हस्तप्रति). ६. शोधपत्रिका भा. ७ अं. २-३ ७. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ८. रा. वा मू पा. ६. वही. १० वहीं. ११. वा मू. प. १२. राजस्थान भारती भा. ६ अं. ३. १३. रा. वा., भाग १. १४. साधना (डूंडलोद) वार्षिक अंक ७. १५. रा. वा मू. पा. १६. वा. मू. प. १७. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). १८. वा. मू. प. १९. साधना (डूंडलोद). २० अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति).

अपने बच्चों के पास आ जाती है परन्तु कारणवश हरिणी नही लौट पाती। अतः उसके बच्चे यह मान लेते हैं कि नाहरी ने धैर्यभंग करके उसे खा डाला है। इस पर नाहरी 'सत्यक्रिया' का सहारा लेती है और हरिणी भी लौट आती है। तत्काल वातावरण बदल जाता है और सर्वत्र आनन्द की लहर उमड़ पड़ती है। देखने में बात के पात्र पशुमात्र हैं परन्तु उन पर मानवीय व्यवहार का आरोप कर दिया गया है। बात में सत्य की महिमा प्रगट हुई है, जो विशेष रूप से प्रभावोत्पादक है। इसी वर्ग की अन्य भी कई बातें हैं, जैसे 'तुरत दान महा पुन्न' आदि।

लौकिक तत्त्व के अनुसार वर्गीकरण

राजस्थानी बातों का एक अन्य वर्गीकरण भी सहज में किया जा सकता है और वह इस प्रकार होगा।

१. लिपिबद्ध लोक प्रचलित बातें।
२. लेखक-प्रणीत बातें।

१. प्रथम वर्ग में वे बातें आती हैं, जिनमें लेखकों के नाम नहीं मिलते। अधिकांश राजस्थानी बातें इसी प्रकार की हैं। इनमें मौखिक बातों को संवार-सजा कर लिपिबद्ध करने की क्रिया फलवती हुई है। ऐसी बातों का आकार विशेष बड़ा नही है और ये विविध प्रतियों में सामान्य रूपान्तर के साथ मिलती हैं। एक ही बात की अनेक प्रतियों का अवलोकन करने से उनमें थोड़ी बहुत घटनाओं की न्यूनाधिकता भी सामने आती है।

२. दूसरे वर्ग में वे बातें आती हैं, जो विशिष्ट लेखकों की अपनी रचनाएँ है। इनकी संख्या थोड़ी है। इनके लेखकों ने लोक-प्रचलित पद्यात्मक सामग्री का अपनी रचनाओं में प्रयोग अवश्य किया है। कहीं कहीं इनकी कथावस्तु भी लोक प्रचलित हो सकती है, जिसको उन्होंने विस्तार दिया है। ऐसी बातें प्रायः विस्तृत रूप में ही मिलती हैं। इनमें प्रसंगानुसार वर्णन की छटा प्रकट हुई है और भाषा में आलंकारिकता अधिक है। ये मंद गति से आगे बढ़ती हैं और इनमें पद्य-प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक मिलता है। ये विविध विषयों पर लिखी गई हैं परन्तु इनमे प्रेमतत्त्व पर अधिक ध्यान दिया गया है। ऐसी बातों में कहने के स्थान पर पढ़ने की क्रिया को प्रधानता प्राप्त हुई है। इस प्रकार की कुछ बातों के नाम उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं:—

१. राजा भोज री पंदरवीं विद्या री वात[1] (व्यास भवानीदास)
२. रावत प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोत री वात[2] (महाराजा बहादुरसिंह)

१. अ. जै ग्रं. वी. (हस्तप्रति). २. रा. सा. सं. भ्र

३. रतना हमीर री बात (उत्तमचंद भंडारी)
४. सजनां सुजान री वार्ता[२] (देवीसिंह सांगावत)
५. राजा रिसालू री वार्ता[३] (चारण नरबद)
६. रावळदे सांखला री वार्ता[४] (कविराय आनंद)
७. बयान समसेर री बात[५] (चवान नानू)
८. पनां वीरमदे री बात[६] (कुंवर शेरसिंह)
९. सगुणा सत्रसाल री बात[७] (कृपाराम वणसूर)
१०. चदकवर री वार्ता[८] (कवि कलश)

उपर्युक्त बातों में राजा भोज विषयक बात कुतुहलप्रधान है। प्रतापसिंह म्हो-कमसिंह सम्बन्धी बात शौर्यप्रधान है। अन्य सभी बातें प्रेमप्रधान हैं। इनमें कई बातें ऐसी हैं, जिनमें 'परकीया-प्रेम का चित्रण हुआ है, जैसे रतना हमीर की बात, पंना वीरमदे की बात आदि।

असल में ये बातें चम्पूकाव्य का सा रूप प्रकट करती हैं। व्यास भवानीदास की रचना का तो अपर नाम 'भोज चरित' भी है। इसी प्रकार प्रतापसिंह म्होकमसिंह की बात को भी इसकी कई हस्तप्रतियों में 'दवावेत' कहा गया है।

'कुछ विशिष्ट वर्ग

राजस्थानी बातों के कुछ विशिष्ट वर्ग जनसाधारण में अलग भी स्थापित किए गए हैं, जिनका परिचय इस प्रकार हैः—

१. त्रियाचरित्र की बातें—इस वर्ग की बातों में नारीचरित्र की दुर्बलता का प्रकाशन होता है। साथ ही इस प्रकार की बातें भी कम नहीं है जिनमें पुरुषचरित्र की कम-जोरियाँ भी प्रकट की गई है। जोशीराय विरचित 'दम्पतिविनोद' इसी प्रकार का बातसंग्रह है।[९] इसमें सुगे और मैना का विवाद है। सुगा पुरुष का पक्ष लेता है और मैना नारी का। दोनों में से प्रत्येक अपने अपने पक्ष के समर्थन में कहानी कहता है। पंचदंड री बात[१०] भी इसी विषय की है। इसी प्रकार की एक रचना 'बात आठ, बगलै हंसणी

१. खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई से प्रकाशित. २. शोधपत्रिका १४/१. ३. अ. जै. ग्रं. बी. हस्तप्रति). ४. रा. प्रा. क. ५, अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ६. श्री रावत सारस्वत, जैपुर की हस्तप्रति. ७. मरुभारती ७/१.
८. शोधपत्रिका, भाग २ अंक ३। इस बात के लेखक के विविध हस्तप्रतियों में हंस, कुशल, सकल आदि कई नाम देते जाते हैं।
९. श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर से प्रकाशित।
१०. श्री मोतीचंद खजांची, बीकानेर के संग्रह की हस्तप्रति।

रो[१] है। परन्तु इसकी पांच ही बातें प्राप्त हैं, जिनमें भी तीसरी और पांचवीं खण्डित है। राजा भोज की पंद्रहवीं विद्या विषयक बात[२] के रूप को तो कहा ही 'त्रियाचरित्र' गया है। राजा रिसालू री वात[३] में भी यही विषय प्रकट हुआ है।

२. नारी की चतुराई की बातें—इस वर्ग में कई बातें हैं। इनमें नारी की बुद्धिमत्ता तथा साहस का प्रकाशन होता है। विणजारा विणजारी री वात,[४] लूणसाह री बेटी री वात[५] फोफाणंद री वात,[६] रजपूत अर बांहरे री वात,[७] राजा नरसिंघ री वात,[८] और भोज सोनारी राणी री वात[९] आदि बातें इसी श्रेणी की हैं। इनमें नारी के चरित्र को काफी ऊंचा उठाया गया है।

३. चोरों की बातें :—इस वर्ग की बातों में चोरों के चातुर्यपूर्ण कारनामों की चर्चा रहती है। इस प्रकार के बातनायकों में चोरी के साथ ही साहसिकता एवं ठगविद्या भी देखी जाती है। खीवे बीझै री वात[१०], ठग राजा री वात[११], और ब्राह्मण रै चोर बेटै री वात[१२] आदि बातें इसी प्रकार की हैं। बातें संस्कृत कथाग्रंथ 'दशकुमार चरित' का स्मरण करवाती है।

४. बालोपयोगी बातें :—यह वर्ग बालकों के लिए उपयोगी बातों से सम्बन्धित है। इसमें लोककथाएँ लिपिबद्ध हुई हैं, जिनमें कई तो केवल मनोरंजनात्मक हैं और कई नीति-युक्त ऐसी बातें छोटे और बड़े दोनों प्रकार के बालकों के लिए हैं। इनकी लेखशैली में सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है। उदाहरणस्वरूप सिंह रा दांत गदह भांगा[१३], सन री बांधी लिछमी[१४] और बात री सीख[१५] आदि बातों के नाम लिए जा सकते हैं।

५ कहावतों की बातें :—इस वर्ग की बात का शीर्षक किसी कहावत के आधार पर रखा जाता है और वह कहावत उस बात मे प्रतिफलित होती है। इस प्रकार की अनेक बातें लोक प्रचलित हैं। उनमें से कई लिखित रूप में भी मिलती है। कुछ लिखित बातों के नाम इस प्रकार हैं:—

१. कारज तो जाहांरा सरै, जाहांरा मित्र छयल।
२. नय पण ऊंडो अर गुळ पण मीठो।
३ बांळ सोनो जो कान तोडे।
४. जो घी खुटी कुनीयात तु ती परवान।
५. ऊंचे ही विछायो लाद्यो।
६. नव तेरै बावीस।

---

१. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति). २. वही. ३. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति).
४. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ५. रा. वा. भाग ५. ६. बा. मु प.
७. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति). ८. वही ९ वही. १०. चौबोली.
११. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति). १२. वही. १३. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति) १४. वही. १५. वही.

७. चूड़ाली नै घर घर रांधी ।
८. उठ न कूदीयां, कुदीया बोरा ।

ये आठों बातें अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर (राजस्थानी विभाग संख्या २१३) में लिखी हुई हैं । फुटकर रूप से और भी इस प्रकार की कई बातें लिखित रूप में मिलती है । उदाहरण के रूप में नव पेठा तेरह लागां,[1] सौ ज्यूं पचास,[2] छीको दूध्यौ दही रह्यौ[3] और बडा बडी डहक वाजे[4] आदि बातों के नाम लिए जा सकते हैं ।

इस प्रकार राजस्थानी बातों का अनेक प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है । इनमें विषय के अनुसार किए गए वर्गीकरण को प्रधानता दिया जाना विशेष उचित प्रतीत होता है ।

बात का रूप-विकास

किसी भी साहित्यिक विधा की पूर्व परम्परा एवं उसके रूप-विकास का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण और साथ ही रोचक भी होता है । जो विधा साहित्य-जगत् मे प्रतिष्ठा पाती है उसकी पूर्व-परम्परा अवश्य रहती है तथा समयानुसार वह विकसित भी होती है । यही स्थिति राजस्थानी बात की है ।

खड़ीबोली मिश्रित राजस्थानी बात 'कुतुबदीन साहजादे री वात' की हस्तप्रति सं. १६३३ तक की लिखी हुई प्राप्त है[5] परन्तु वैसे राजस्थानी बातों की हस्तप्रतियां अठारहवीं शती के प्रारंभ से लिखी हुई मिलती है । उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. तरे लखे कह्यौ, 'राव मांनूं नही थांहरौ कह्यौ' । तरे सारखेमर चावंड रो कोस पीयौ । लखौ छागळा रौ पंणी लायौ । राव पीयौ । राव नुं लखे जाण दीयौ । राव आधा खड़ीया । तरै लखे दीठौ, 'देखां, इण रे मन कासुं छै ?' तरै आदमी दोय पाळा ले नै आप ही पाळो थको अध कोस साथे गयौ । सु राव साथियां नुं कहै छै, 'म्हैं किसड़ो दाव कर नै लखा नुं कहकायौ छै ? हुं कदे लीयौ गढ हिमें दूं ? म्हैं इतरे

---

१. अ. जै. ग्रं. बी, (हस्तप्रति). २. वही. ३. वही. ४. वही ५. अ. सं. पु. बी.

दुख लीयो छै। म्हैं म्हारो दाव खेलीयो।' तरै लखे साद कर नै कह्यो, 'म्हैं थांहरो भाजनो जांणता ही ज था। न म्हे थांहरे वोले आवां नै म्हैं थाहरो दीयो गढ ल्या। म्हानुं परमेश्वर देसी। विण तुं जांणै, महादेव जांणै, चावंड जांणै। पछै राव सीरोही गयो। पछै पेट दूख, आंतां पेट री तूट तूट पड़ी। राव मुवो। पछै लखे थाणो मार नै गढ उरो लीयो। आ वात मुं० सुंदरदास लीखाई—संवत १७०३ सांवण वद ११, गांव पादरू।'[1]

२. जिमड़ो मांमलो सुणियो छै, तिसड़ो लिखियो छै। आगलो श्री परमेसर जाणई॥ नीसरीया तिण री विगति॥ राठोड़ चांदी लगायत नीसरीयो॥ रूपो, मुकंददास, भगवानदास खेतसीयोत रो ए नीसरीया॥ संवत १७०६ रा श्रावण सुदि १४ रै दिन प० चंद्रसेन लिखतं॥ श्री योधपुर मध्ये सुभ दिने लिखतं॥[2]

ये उदाहरण विक्रम की अठारहवीं शती के प्रारंभ में लिखी गई बातों से सम्बन्धित है और एतिहासिक वृत के प्रकाशन-स्वरूप प्रकट किए गए हैं।

इसके बाद अठारहवीं-उन्नीसवीं शती में बड़ी संख्या में बातें लिखी गई हैं परन्तु उनमें से अधिकांश के साथ लिपिकाल नहीं मिलता और सभी बातें लगभग समान सी ही है। ऐसी स्थिति में उनके रूप-विकास का काल विभाजन संभव नहीं है। उत्तर काल मे लिखी गई अनेक बातों में आकार-विस्तार तथा शृंगार-रस की अधिकता के कुछ विशेष उपलक्षण अवश्य प्रकट होते हैं, जो 'गुलाबां भंवर की वात', 'सगुण सत्रसाल री वात' और 'सजनां सुजान री वात' आदि में सहज ही देखे जा सकते हैं।

बातों की साहित्यिक विधा अकस्मात् उद्भूत नहीं हुई है। इसकी पूर्व-परम्परा मे कई तत्व स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं।

लोककथाओं की परम्परा

लोग अपने अवकाश के क्षणों को कथा-कहानी द्वारा सरस करके धन्य होते रहे हैं। महाकवि कालिदास ने अपने मेघदूत काव्य में इस विषय की ओर संकेत किया है :—

प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धा —
न्पूर्वोदिष्टामनुसर पुरी श्री विशालां विशालाम्।[3]

राजस्थानी बातों की परिपाटी भी यहाँ की लोककथाओं को लिखित रूप देने की चेष्टा के रूप से प्रारंभ हुई है। यहाँ मौखिक कथाओं को बात ही कहा जाता है और

१. ऐ. वा. परम्परा भाग ११, पृ १०९.
२. भारतीय विद्या, वर्ष २, अंक १.
३. मेघदूत, १/३०.

उसकी सुपुष्ट शैली है। बात कहने वाले लोग उसे बड़े ही संवारे-सजाये हुए तथा आकर्षक रूप में प्रस्तुत करते हैं। कई बातों में भी ऐसे लोगों की चर्चा आई है :—

१. सु इयै नुं नींद आवै नहीं। ताहरां साह कही चाकर नै, 'नींद तौ आवै नहीं, जु कोई बात कहै तो रात कटै।' तद गांव मांहे खबर कराई। ताहरां एक चारण हाथ आयौ। तद चाकरां जाय कही, 'राज, एक वडौ वाताळ छै।' तद साह कही, तो बोलाय ले आवौ।' ताहरां चाकरौ जाय चारण नूं बोलाय ले आया। चारण आय के साह सौं रांम रांम कीयौ। उठै साह कही, 'बारटजी, काई वात कहो, ज्यौं रात कटै।'[1]

२. राव जोधौ पौढियौ हुतौ। बातपोस वातां करता हुता। राजवियांरघां वातां करता ताहरां एक कह्यो, 'भाटियां रो वैर न रहै।' ताहरां एक बोलियौ, 'राठौड़ां रै वैर एक रह्यौ।' कह्यौ 'किसो ?' कह्यो, 'आसकरण सतावत रो वैर रह्यौ। नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता, तिको वैर रह्यौ।'[2]

पंद्रहवीं शती की राजस्थानी रचना 'अचळदास खीची री वचनिका' में भी इस विषय का निर्देश है :—

'तितरई तउ वात कहता वार लागइ। अस्त्री जन सहस चाळीस कउ संघाट आई संप्राप्ती हुवउ। किसी एक ? बाळी-भोळी अबळा प्रउढा सोडस वरस की। राणी रवताणी। आपण आपणा देवर, जेठ, भरतार का पुरखारथ देखती फिरइ छइ।'

इस वचनिका का 'वात कहता वार लागइ' प्रयोग ध्यान में रखने योग्य है। वात कहने वालों का यह एक विशिष्ट प्रयोग है, जिसे वे स्थान स्थान पर काम में लाते हैं। यह प्रयोग अनेक लिखित वातों में भी देखा जाता है। कुछ उदाहरण देखिए :—

१. ईण भांत वात कहतां तो वार लागै। रंजक जागी। कनां तोपखाना री ईक पलीती दागी। हर गोळां छुटी। अर ऐ पण तोपां रा जागोळा। किनां भूखा नाहरां रा टोळा।[3]

२. इतरै माहैं वात कहतां वार लागे, राजागीयां सांढीयों लीयो देखनै जैत आप रै रजपूत सूं कहण लागो, 'ठाकुरां, ईंदे कूडो उलंभो दिवाय म्हांरो वास छोडायो।'[4]

३. हाथळ जाय धरती टिकी। टिकतां पेहलो, वात कहतां वार लागे, इतरै मांडण

---

१. वात कपोलकुंवर राठौड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

२. वात दूदे जोधावत री, राजस्थानी भाग १, राज. शो. परिषद, कलकत्ता.

३. रा. सा. सं., भाग २, पृ. ४५.

४. वात जैतमाल सलखावत री, बा. मू. प.

सभाय तरवार नैं नाहर रै दोनी, टिको भमण हुवै तिसड़ो मायो पंजो नाहर रा दूर जाय पड़ीया ।[१]

४. इतरै माँहैं वात कहतां वार लागे, इण तुरक ईसवहदर दीठो, माथा वाढीयो पण बीजै हाथ सो माथा संबाय कटारी बीजै हाथ सौ काढी ।[२]

५ इम वात कहतां वार लागे, प्राय सांफळा ही ज वाजीया। ताहरां वरसं रायपाळ नूं कह्यौ, भोठी १ घरे मेलो, घरे खबर देवै ।'[३]

६. ताहरां घारीयं कर सलाम नाहर नूं बोलायो। सु वात कहतां वार लागे, सु बोलावतां सुवो नाहर घारीमैं उपर नाळो डाक नैं भाय पड़ीयो ।[४]

'बयान समसेर की वात',[५] में तो लेखक ने इस प्रकार का पूरा वक्तव्य प्रारंभ मे ही दे दिया है :—

बात केतां वार लागे, हांकारे वात मीठी लागैं।
सार बाबा सार, ईण बात्यां रा ऐ ई बीचार।
बात में हांकारो, फौज में नगारौ।
कईक डंको जै लगतौ बीच में होय जाय वगारौ।
सावत सुरता होय, सो तो वात कवावैं।
भर चत्रक होय, जीको तो सुणावै।
जब तो बात्यां का मजा भ्रावैं।
नहीं तो वात बीच में गीड़बड़ मच जावैं।

जैनकथाओं की परम्परा

लोककथाओं को लिखित रूप देने की पूर्व परम्परा भी राजस्थानी में रही है। जैन विद्वानों ने अपने टीकाग्रंथों में दृष्टांत के रूप में इनका काफी प्रयोग किया है। वे उपदेस-प्रधान कथाएँ हैं और उनका उद्देश्य शिक्षा देना है। उनकी लेखनशैली के सम्बन्ध में निम्न उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. उज्जयनी नामि नगरी। तहिंठे भोजदेकु राजा। तीयहिं तणई पंचह सयह पंडितह माहिं मुख्यु धनपाल नामि पडितु। तीयहिं तणइ घरि अन्यदा कदाचित साधु विहरण निमितु पइठा। पंडितह णी भायां श्रीजा दिवसह णी दधि लेउ ऊठी। बीज तुं काई

१. वात, मडांणसी कूंपावत री, बा० क्षु० प० ।
२. वात अरजन हमीर भीमोत री, साधना, अंक ७.
३. वात भाटी वरसै तिलोकसी री, बा. क्षु. प
४. वात राव किसन कानहड़ री, (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी).
५. हस्तप्रति अ जै. ग्रं बी.

तिणि प्रस्तावि व्रतिया विहुरावण सारीसउं न हुंतउ । व्रतिया मणियउं, कैता दिवसह णी दधि ? तिणि ब्राह्मणी भणियउ, त्रीजा दिवसह णी दधि । माहामुनिहि मणियउं त्रीजा दिवसह णी दधि न उपगरी ।[1]

२. विद्या विषये काश्यप अनैं ब्राह्मण कथा । काश्यपु नावी तेह रहइ, किणिहि विद्याधरि तूटहं हूंतइ विद्या दीधी । तेहनइ प्रभावि तेहनी मांडी आकाशि थिकी तेह सरसी चालइ । अनेरइ दिवसि डगसूकरू भणियइ ब्राह्मण तिणि दीठी । तउ तिणि ब्राह्मणि तेइनी सेवा कीधी, विधा तेह कान्हा ब्राह्मणि लीधी । विद्या प्रभावि तेहनी थायती आकाशि थिकि तेह सरसी चालइ ।[2]

३. अथ मूलदेव परिव्राजक दृष्टांत । जिसउ सुहणउ विचारीजई तिसउं फल हुवई । मूल-देव दृष्टांत । पाडलीपुर नगर संखधवल राजा राज्य करई । तेहनी भार्या जयलक्ष्मी । तेहनउ पुत्र मूलदेव । महाहार जुआरी माहा सुकठी राग माला वैताइ सुवइ समाथइ रहइ । जिकाई वस्तु हाथ गिरह चडइ ते दान थइ । तिसइ प्रस्तावि राजइं बहु-मुल्य आपणउ हार मूलदेव नइं राखणउ दीधउ, कह्यउ, 'हुं घोडा खेलाविवा जाउ छउं । आव्या पछइ माहरउ हार लइसु ।' मूलदेवनइ एहवउं कही · राजा घोडा खेलाविवा गयउं । तिसइ प्रस्तावि मूलदेव गोखि बइठउ छई । मांगणहारे आवी मूलदेवनई प्राथ्यउ, 'अहो कुंवर, आज काई एक मुझनइ आपि ।' कह्यइ थकइ तत्-काल हार आप्यउ । मांगनहार लइ नइ परहा गया ।[3]

उपर्युक्त अंश चौदहवी से सतरहवी शती तक की कथाओं के हैं । ये कथाएं संक्षिप्त है और उपदेशात्मक हैं । ये धार्मिक आवरण में लिखी गई हैं । संक्षिप्त कथा-लेखन की यह शैली लघु आकार की नीतिप्रधान राजस्थानी बातों में भी दृष्टव्य हैं—

साहूकार दोइ एके सहर माहे रहै । दोऊ द्रव्यवंत, मोटा आदमी, वडा सु मगायां । साहूकारे आपस में बडो मेळ छै । यूं करतां कितरे एकें दिन एक साहूकार रे तोटो आयो, सबळी भीड़ पड़ी । ताहरां घर रा बैठा लोक बोलीया, 'थांहरो मित्र छै, थे जावो थी आडा आवै । मित्र सो, जो विपत में आडो आवै ।' ताहरां साहूकार मित्र साह रे घरे गयो ।[4]

१. धनपाल कथा, राजस्थानी भारती ३/२.
२. प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ (मुनि जिन विजय), पृ. ५४.
३. मूलदेवनउ दृष्टान्त, (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).
४. टोटी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

बात-वणाव की परम्परा

राजस्थान में बात कहने वाले व्यक्ति उसके 'वणाव' पर विशेष ध्यान देते हैं और देशकाल का विस्तार से वर्णन करते हुए आगे बढ़ते हैं। मौखिक लोककथाओं की यह विशेषता भी लिखित रूप में पुराने समय में ही ग्रहण की जा चुकी है। माणिक्यसुंदर सूरि विरचित (सं १४७८) पृथ्वीचंद्र चरित्र (अपर नाम 'वाग्विलास') में यह विशेषता लेखक के कुशल-व्यक्तित्व सहित द्रष्टव्य है :—

> विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथी तणउ काल, नाठउ दुकाळ।
> जिणिई वर्षाकाल मधुर ध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ,
> जाणे सुभिक्ष भूपति आवतां जय ढक्का वाजई।
> चिहुं दिसि वीज झबूकइ, पंथी घर भणी पुलइ।
> विपरीत आकाश, चन्द्र सूर्य परियास।
> राति अंधारी, लवइं तिमिरि।
> उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण।
> दिशि घोर नाचइं मोर।
> सघर वरसई धाराधर।
> पाणी तणा प्रवाह खळहळइं, वाडी ऊपरि वेला वळइं।

वर्णन की यही शैली पंद्रहवीं शती में रचित (?) शिवदास गाडण री कही, अचळदास खीची री वचनिका' में भी द्रष्टव्य है :—

अचळेसर तउ किसउ? उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ भड़-किंवाड़, आइन्या अजइपाल। अहंकारि रावण। दूसरउ धाहू। तीसरउ सिंघण। छइ दरसण छत्रीगवइ पाखंड कउ अधार। वालउ चकरवति। धन हा राजा अचळेसर। धारउ जियउ, जिणि हइ पातिसाह सउं खांडउ लियउ। इस एक तइ पातसाह रा कटकबंध अचळेसर ऊपरि छूटा बाट का खड़ इंधण खूटा, द्रह का पाणी तूटा। परवतां सिरि पथ लागा, दुघट घट भागा, सूर सूझइ नहीं खेह आगा।

बड़े आकार की राजस्थानी बातों में यही शैली स्थान स्थान पर सहज ही देखी जा सकती है।

डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने राजस्थानी बातों के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—'ब्रजभाषा की भाँति ही राजस्थानी में ख्यात, बात और वार्ताओं का साहित्य थोड़ा बहुत बनता रहा। मुगल दरबार में 'किस्सागोई' नाम की एक विशेष कला का जन्म हो चुका था। मुगलकाल के अन्तिम दिनों में तो किस्सागोई' या 'दास्तानगोई' एक पेशे का रूप धारण कर चुकी थी। किस्सागो लोग अवकाश के क्षणों में बादशाहों, नवाबों और अन्य रईसों का मनोरंजन किया करते थे। इन कहानियों का प्रधान विषय

प्रेम हुआ करता था और अतिरंजित एवं आकस्मिक घटनाओं से वर्ण्यविषय को आकर्षक बनाने की चेष्टा भी होती थी। राजपूत दरबारों में भी इनका थोड़ा बहुत अनुसरण होने लगा, इसी कारण राजस्थानी भाषा में भी 'क़िस्सागोई' का साहित्य बनता रहा। परन्तु जिस प्रकार राजपूत कला मुगल कलम से प्रभावित होकर भी भीतर से सम्पूर्ण रूप से भारतीय बनी रही, उसी प्रकार यह आख्यान साहित्य भी सम्पूर्ण रूप से भारतीय ही बना रहा।'[1]

उपर्युक्त वक्तव्य पर विचार करने से सहज ही प्रकट होता है कि इसमें बात की कृत्रिमता का वातावरण है, जब कि राजस्थानी बातों के पीछे लोककथाओं एवं जैन-कथाओं की परम्परा है। साथ ही बातों की लेखन-शैली भी पहिले से चली आ रही है। बातें केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं रहीं हैं। हाँ, उत्तरकाल में बनी हुई कुछ राजस्थानी शृंगारिक बातों के सम्बन्ध में ऐसा भले ही कहा जा सके। इस विषय में श्री सीताराम लाळस का वक्तव्य ज्ञातव्य है—'इस सम्बन्ध में एक बात विशेष उल्लेखनीय है कि राजस्थानी *बात साहित्य पर मुगलकाल में प्रचलित क़िस्सागोई का असर भले ही पड़ा हो* किन्तु राजस्थानी में बात साहित्य सम्बन्धी रचनाएं मुगलों के भारत में आने से पहले ही निर्मित होती रही हैं। अतः राजस्थानी कहानी कहने और लिखने का विचार नितान्त मौलिक हैं।'[2]

बात-विस्तार की प्रवृत्ति

राजस्थानी बातों में व्याप्त लोकतत्व का एक अन्य पक्ष भी ध्यान देने योग्य है। उसके द्वारा बातों का विकास-क्रम स्पष्ट होता है। इस सम्बन्ध में राजा रिसालू की बात का अध्ययन विशेष उपयोगी है। यह बात अप्रकाशित है और विस्तृत रूप में लिखी हुई है। इसमें प्रयुक्त दोहों की संख्या साढे तीन सौ के लगभग हैं। इसके विकास के सम्बन्ध में श्री अगरचंद नाहटा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुका है, जिसका कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

'सब से प्राचीन संस्करण 'राजा रिसालू रा दूहा' है। इसकी सब से प्राचीन प्रति मेरे अवलोकन में सं० १६८० के आसपास लिखित बृहद् ज्ञान भंडार वाला गुटका आया है। इसमें दोहों की संख्या ३१ है।..........दूसरा संस्करण नरबद चारण का संकलित है। इस में दोहों की संख्या ६७ है। आगे शेष वार्ता गद्य में लिखी हुई है। दोहे प्रासंगिक रूप में बीच बीच में आते हैं। उपर्युक्त दोहों से ये दोहे प्रायः भिन्न हैं पर शैली

१. हिन्दी साहित्य (डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी)।
२. राजस्थानी सबद-कोस, भूमिका पृ. १८६.

एक ही है। इस संस्करण की १८ वीं शती की प्रति सिरोही में मेरे अवलोकन में आई थी।........तीसरा संस्करण जैन यति आनंद विजय ने बनाया है। यह उपर्युक्त नरबद चारण रचित वार्ता का विस्तृत रूप ही है। नरवद चारण के उल्लेखवाला पद्य देकर अंत में पीछे 'आनंदविजय ने इसका विस्तार किया है' स्पष्ट लिखा है। इस संस्करण की दो प्रतियाँ अभी तक मेरे अवलोकन में आई हैं, जिन में अनूप संस्कृत लायब्रेरी के गुटके न. १६० के पृष्ठ ७५ में यह वार्ता लिखी मिली है। यह गुटका सं. १८६० विजयदशमी को अमरविजय ने लिखा है।............चौथा संस्करण राजस्थान पुरातत्व मंदिर के संग्रहालय से हाल ही में जयपुर जाने पर प्राप्त हुआ। यह संस्करण कच्छ मे लिखा मिला है, इसलिए इसका गद्य गुजराती भाषा में है। इस मे पद्यों की संख्या उपर्युक्त तीनों संस्करणों से ज्यादा है। 'गद्य' वार्ता का सम्बन्ध जोड़ने के लिए लिखा गया प्रतीत होता है। पद्यों की भाषा गद्य से भिन्न है।'[१]

इस वक्तव्य पर विचार करने से प्रकट होता है कि 'राजा रिसालू की वात' समयानुसार वृद्धि को प्राप्त होती गई है। प्रारंभ में उससे सम्बन्धित ३४ दोहे मात्र है और बाद में उस में गद्य जोड़ दिया गया है। एक लेखक के बाद दूसरे लेखक ने उसे विस्तार दिया है और पद्यों की संख्या बढ़ती ही गई है। यही प्रक्रिया अन्य भी कई राजस्थानी बातों के सम्बन्ध में हुई हैं। 'सदयवत्स सावलिगा री वात' इसका दूसरा उदाहरण है। इस बात के सम्बन्ध में भी श्री अगरचन्द नाहटा का 'सदयवत्स सावलिगा की प्रेमकथा' शीर्षक विस्तृत लेख राजस्थान-भारती (३/१) में प्रकाशित हो चुका है।

कई बातों के एकाधिक रूप ऐसे मिलते हैं, जिनमें एक की अपेक्षा दूसरे में वस्तु-विस्तार देखा जाता है। इस से संभावना की जासकती है, उस को बढाया गया है। फोफाणंद चारण विषयक बात प्रसिद्ध है। उसका एक रूप इस प्रकार प्रारम्भ होता है:—

चारणां रा गांव छै थळवट मांहे। एक दिन चारण सरब बैठा छै। बैठा वातां करै छै। ताहरां वात चाली, महेश्ची मांहे चारण छै, तै री बेटी पण लियाँ छै' जियै रै सात बीस भैंस्यां नैं वंजण पड़ै तियैं नूं परणीजूं।' ताहरां तियां चारणां मांह एक चारण बोलियो, 'हूं परणीजूं उवैं नूं।' ताहरां बीजा हंसिया। उवै चारण री नाम फोफाणंद छै।[२]

वात के इस रूप में चारण-पुत्री के प्रण की चर्चा है परन्तु इसका कारण एवं परिचय आदि अप्रकट है। वात का दूसरा रूप इस प्रकार प्रारंभ होता है:—

चारण हीरो वरस १०० मो। तिण रैं बेटी सात, तिणां मांहे एक बडी बेटी, सु धनवंत चारण नूं परणाई। तिण बडी रै भैंसीयां हूर्फ। ताहरां धरती मांहे काळ पड़ीयो

१. जनपद त्रैमासिक, भाग १, अंक ३.

२. रा. वा. भाग १. पृष्ठ ८६-८७.

भैंसां ४ ले अर बाप रै घरै आई गोळ कारण नूं। तिण चारण रै छोटी बेटी जसी, तिका कहै, 'मौनूं भैंस रो दूध पावौ, दही पावौ।' ताहरां दिन एक मावड़ी बेटी कन्हा..जाय मंगा ल्याई। दिन दूसरे दावड़ी कटोरी लै नै भा फेर गई। ताहरां बडी बैहन कह्यो, 'रोज री रोज भैंस रो दही कठा सौं पीस ? जिण चारण नूं देवै छै, तिण रै तो बारणै गाडर ही नहीं।' दिवण री त्यारी कीवी हुंती। ताहरां ईयै कह्यो, कटोरी पटक नै सोंस कीयौ, 'एकलंक मायँ उदक परणीजण। जिण रे सात बीसी भैंसां हुवै, तिण नुं परणीजुं।'[१]

इस बात में चारण-पुत्री का परिचय एवं उसके प्रण का कारण प्रकट है। इस में फोफाणंद एक ठाकुर के पास रहता है :—

अठै चारण फोफाणंद चीराडो, तिको एके ठाकुर कन्है रहे। एक दिन रो समाधान छै, ठाकुर कन्हे बात हालो, 'भाद्रेस गाम एक चारण रहै छै। तिण रै बेटी छै। तिकै नेम घातीया छै—'जिण रै सात बीस भैंसां पाडीयांरी मावां हुवै, तिण नूं परणीजूं।'

यहाँ ठाकुर फोफाणंद को आवश्यक वस्तुएँ अपने पास से देकर उसका पूरा ठाठ नकली रूप में सजा देता है। फिर बात के दोनों रूपों की वस्तु लगभग समान रूप से चलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि बात के दूसरे रूप में अधिक पूर्णता है। साथ ही यह भी संभावना है कि जनसाधारण में फोफाणंद की बात के भिन्न-भिन्न रूप प्रचलित हों और अलग अलग स्थानों पर वे लिपिबद्ध किए गए हों।

देपाळदे री बात बड़ी प्रसिद्ध है जो राजस्थानी (भाग ३ अंक २) में प्रकाशित भी हो चुकी है। इस बात में देपाळदे अपनी पत्नी सहित ससुराल से विदा होकर घर जा रहा है और मार्ग में उसे एक चारण हल जोतता हुआ मिलता है, जिसने बैल के स्थान पर अपनी स्त्री को जोत रखा है। देपाळदे उसकी जगह स्वयं जुतता है और खेत के उतने भाग में समय पर मोती पैदा होते हैं। इस बात में देपाळदे के विवाह का वर्णन नहीं है परन्तु बात के दूसरे रूप में उसका भी पूरा प्रसंग है। वह बात इस प्रकार प्रारंभ होती है :—

सोढो देपाळदे उमरकोट राज करै। वडा मझावोळ भोमीयां री ठुकराई। तिको देपाळदे गोगे रो आराधी, गोगे रो जाप करे। तिण देपाळदे रे च्यार महल, जिको देपाळ सोढो आप रै परधांन वरसो नुं कहै, 'म्हारो वीवाह वळे करां।' ताहरां ईयै, 'राज, जिको थांहरी दाय आवै तिको नाळेर झालो,' कहै छै। ताहरां देपाळदे कहण लागो, इयै धरती मांह वीवाह न करूं। पूंगळ म्हारो वीवाह कर, तूं देख नै। ताहरां औ घड नै पूगळ आया छै। पूंगळ सोझ नै मरोठ गयो। मरोठ भाटी रहै। राव सीहै रै

१. बात चोउरे बानव फोफाणंद री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

बेटी वरस १८ मांहि, बडी गुणवंत, विद्यावंत, अति चतुर। देपाळदे लायक छै। सु वरसी मरोट आयो।[1]

इस बात में विवाह के बाद आगे का प्रसंग लगभग मिलता है परन्तु गोगादे की भक्ति को विशेषता दी गई है।

'ढोला मारू की वात' राजस्थान में सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। इसके एक रूप का प्रारम्भ इस प्रकार होता है।

> पिंगल पुगळ राव, नळ राजा नळवर तणो।
> आदीळा रठा, सगाई देव संजोग्य ॥ १ ॥
> मीर अठारै जंगळ धणी, गढ पुगळ दुरंग।
> जाहां नळवर राजस करे, अमलीमाण अभंग ॥ २ ॥

वारता — राजा पुगळ भाटी पुगळ गढ रो धणी। गढ पुगळ राज करे। तीणं नगर में वडा वडा साहुकार, क्रोड़ीधज लाखेसरी वसै। एक समै पूगळ देस, थळवट रो देस, तीणं में महाकाळ पड़ीयो। वरस दोय लगे मेह नहीं वुठो। सरवर पांणी सुक गया। तद रैत लोक बहुत दुखी हुया।[2]

बात के इस रूप में अकाल की स्थिति में पूगळ का राजा पिंगळ नरवर के राजा नळ के राज्य में जाता है और वहां उनकी संतानों (मारू तथा ढोला) का शैशवावस्था में विवाह कर लिया जाता है। फिर कहानी आगे चलती है। इसी बात का दूसरा रूप राजस्थानी बात-संग्रह में प्रकाशित है। उस में मारू के जन्म की कथा विस्तार से दी गई है। इसी प्रकार ढोला के जन्म का वृत्तान्त भी है :—

'आ तो बात मारवणि री उतपति री कही। हिवै साल्हकुंवर री उतपति कहै।' (पृष्ठ ३४)

इस के बाद दोनों राजाओं का पुष्कर क्षेत्र में मिलाप होता है। फिर ढोला-मरवण के विवाह के बाद कहानी आगे चलती है। इससे स्पष्ट होता है कि बात के इस रूप में वस्तु में ऊपर से की गई वृद्धि सम्मिलित है। मरवण का शील-सौन्दर्य प्रसिद्ध है, अ : यह स्वाभाविक प्रतीत होता है कि उसके जन्म की भी कोई विशेष कहानी मिलनी चाहिए, जैसा कि अनेक विशिष्ट पात्रों के जन्म के सम्बन्ध मे देखा जाता है। बातों में वीरमदेव सोनगरा तथा पाबूजी राठौड़ को अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न दिखलाया गया है। इसी क्रम में मरवण को पद्मिनी-स्वरूप उमादे देवड़ी की संतान के रूप मे प्रकट करके संतोष माना है :—

---

१. वात सोढै देपाल री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.).
२. ढोला मारू री वात, अप्रकाशित.

जालोर नगर रो धणी सांवतसी देवड़ो छै। तिण रै झाली पटरांणी छै। तिण री पुत्री ऊमा देवड़ी छै, तिका जांणीज विधाता आप हाथ घड़ी छै। (पृ. २७-२८)

इतना ही नहीं, ढोला मरवण की बात को और भी अधिक विस्तार दिया गया है। इसके एक रूप में छंद (प्रायः दोहा) संख्या ४२६ है तथा बहुत से दोहों का अर्थ भी दिया गया है। बात का अंत इस प्रकार होता है:—

इण विध ढोलो दोनूं स्त्रियां रो झगड़ो भांजियो नें मारूवणी नें वखाणी। यां दोनूं स्त्रियां सूं ढोलाजी रे घणो प्यार छै। उणां दोनूं स्त्रियां संघाते (साथै) रित विहार करतां दोनां रै आधान रह्या। पछै नव मास वदीत हुतां। दोनुं रे ही पुत्र प्रसव्या (हुवा)। पछै ढोलेजी मन गमती वारो वासो मारूवणि नें दीधो और सारो हाल हुकम मारूवणी रो हुवो। राज में मारूवणी घणो जस लीधो। भली भांत भरतार री आग्या पाळी, पतिव्रत धरम पाळियो। सील पण भलो अखंड पाळियो। भरतार सूं एकरंगो सनेह राखियो। सब कुटुंब में सोभाग हुवो। तिका मारूवणि अवसर री जांणग, विनय री कहणहार, सासू सुसरा री भगती करणहार, गरीबां री पोषणहार। सदा दया रा परणाम, सदा सत्य हृदै वसै। अतीत अभ्यागत नैं पोखे। सदाव्रत देवै। इसी आछी रीतां धारी। तरै मारूवणि रो जस वधियो। इसी रीत साच सुच्च सीळ संतोष पतिव्रत धरम पाळै, तिका राजवणियां ने सुख होवजो, पुत्रवती सुहाग री धणियांणियां होवजो। इसा भाग री धणियांणियां होवजो।

(इति श्री ढोला मारूवणि री वात सम्पूर्णम् सुभं भवतु। हस्ताक्षर लोळावस बारट किशोरदान संवत १९७१ आसोज सुद्ध विजयादशमी ।। श्री भैंसादजी रिछया करो)[1]

इस प्रति के दोहों के अर्थ का भी एक नमूना द्रष्टव्य है:—

> मिलिया मन तन गड्डिया, दोहण दूर गयाह।
> सज्जन पांणी दूध ज्यूं, एकमेक थयाह ।। ३८३ ।।

(कवि कहता है कि इस तरह दोनूं का मन मिल गया। सरीर में सरीर गड गया। सो ऐसा एकमेक हुवा है कि मां हूं दूध और पांणी एक हो गया)

पद्यों का अर्थ देने की इस पद्धति का प्रयोग कृपाराम वणसूर कृत 'सगुणा सत्रसाल री वात' में भी हुआ है। (मरुभारती ७/१, अप्रेल १९५९)

जगदेव पंवार की एक वात 'पंवार वंश दर्पण' के परिशिष्ट (संख्या दो) में प्रकाशित हुई है। उसमें जगदेव के जन्म और पिता की मृत्यु के बाद जयसिंहदेव के दरबार में जाकर उसके नौकरी करने से बात प्रारम्भ हुई है। जगदेव राजा के महल में रात के

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर की हस्तप्रति।

समय आने वाले भैरव (देव) को परास्त करता है और बदले में प्रसन्न होकर राजा उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर देता है तथा जगदेव को अपने राज्य का चतुर्थ भाग भी प्रदान करता है। इसके बाद कंकाळी भाटणी को जगदेव शीशदान करता है और राजा ऐसा दान करने में हार जाता है। भाटणी जगदेव को फिर से जीवित कर देती है—

ताहरां कंकाळी जगदेव रो सिर ऊपरि धड़ रे मेल्हीयो। जगदेव उठि ऊभो हुवो। कंकाळी आसीस दीन्ही। आसीस दे नैं ककाळी उडि गई। लोक देखता रह्या। जगदेव संसार माहै अखो हुवो। (पृ. ४७)

बात के इस रूप में थोड़ी सी घटनाएं हैं और उनका वर्णन भी संक्षिप्त में हुआ है। जगदेव विषयक बात का दूसरा रूप राजस्थानी वातां,' (सूर्यकरण पारीक) में द्रष्टव्य है। यह बात ४६ पृष्ठों में पूरी हुई है जब कि पहली बात में कुल ८ पृष्ठ हैं और उनमें भी आधे से उचित पद्य भाग है। बात के दूसरे रूप में घटनाओं की बड़ी संख्या है और साथ ही उन में वर्णन विस्तार भी है।

राजस्थानी वातां में 'कहवाट सरवहियो' शीर्षक बात १६ पृष्ठों में समाप्त हुई है और उसमें पद्य संख्या केवल ६ है। इसी बात का विस्तृत रूप भी प्राप्त है और वह अप्रकाशित है।[1] वह प्रथम रूप से लगभग १५ गुना बड़ा है। उसमे प्रयुक्त पद्यों की संख्या दो सौ से भी ऊपर है और वे विविध-प्रकार के हैं। इसी प्रकार राजस्थान भारती (६/३-४) में प्रकाशित 'वात कंवरसी सांखळै नै भरमल री' पुरानी बात केवल दो पृष्ठों मे है और उसमें एक भी पद्य प्रयुक्त नहीं है। बाद में तैयार हुआ उसका दूसरा रूप पहिले से लगभग बीस गुणा बड़ा है उस मे लगभग डेढ सौ पद्य प्रयुक्त हैं।[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि अनेक राजस्थानी बातों का परवर्ती समय में विस्तृत रूप दिया गया है। इन में कई बातों को साधारण विस्तार मिला है और कई को विशेष रूप से बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है। बातों के पूर्व रूप में सादगी और लौकिकता अधिक है, जब कि उनके परवर्ती रूप में सजावट विशेष हुई है और उन में लेखकों का नाम भले ही प्रकट न हो परन्तु उनका व्यक्तित्व स्पष्ट है। उनके पीछे लेखकों का कृतित्व है: जैसा कि राजा रिसालू को बात के सम्बन्ध में ऊपर कहा गया है, उसमें तो एकाधिक लेखक का नाम एवं व्यक्तित्व तक प्रकट हैं। एक ही बात को सजावट देने के लिए एक से अधिक लेखक का श्रम करना वस्तुतः उसकी अभिरुचि और साथ ही उसके प्रति जनरुचि का भी प्रकाशन है। बातों के इस प्रकार के विस्तृत रूप उनको एक स्वतंत्र ग्रंथ बनाने के

1. हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.
२. प्रकाशित—मरुवाणी, मासिक.

उद्देश्य से तैयार किए गए हैं और यही कारण है कि उनके प्रारंभ में प्रायः मंगलाचरण एवं विनय आदि से सम्बन्धित पद्य भी मिलते हैं।

यहाँ तक केवल उन्हीं बातों की चर्चा हुई, जिनके लघु, कुछ विस्तृत एवं अति विस्तृत रूपों मे से कोई दो अथवा तीनों मिलते हैं। परन्तु अनेक बातें लेखकों के द्वारा केवल विस्तृत रूप में ही तैयार की गई हैं और वे उनकी अपनी स्वतंत्र रचनाएं हैं। उनका कथानक लोकप्रचलित भी मिल सकता है। परन्तु प्रायः वह लेखक द्वारा कल्पित ही होता है। उदाहरणस्वरूप पनां वीरमदे सम्बन्धी बात का नाम दिया जा सकता है।

प्रतिलिपि की प्रक्रिया

बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिन में एक ही बात को एक स्वतंत्र पुस्तक माना गया है और उसकी अनेक प्रतिलिपियां तैयार हुई है। ऐसी प्रतिलिपियों में पूर्ण समानता के अतिरिक्त यत्र तत्र आंशिक भिन्नता भी मिलती है। संभवतः यह भिन्नता प्रतिलिपि-कर्त्ताओं की अपनी प्रवृति के कारण प्रकट हुई है। एक बात की दो प्रतियों में कई स्थानों पर कुछ कमी दिखलाई देती है और कई जगह कुछ वृद्धि। कई बातों में घटनाओं तक में कुछ अन्तर मिलता है। उदाहरण द्रष्टव्य है :—

'गढ जालोर सोनगरा वणवीरजी रे कंवर दो हुवा। वडो कंवर कांनड़दे, छोटो कंवर रांणकदे। टीकै कानड़दे बैठा। सुखै राज करै। तिकै एकै समै सिकार चढिया। तिके जालोर सूं कोस सात तथा दस ऊपरै गया। तठै राति पड़ी। कनै एक खवास रह्यो, तिण रो नाम बीजड़ियो। तारां रावजी नै वीजड़ियो चाल्या जंगल रै विचै एक देहरै आया। वासो लीधो। देहरै में पाखाण री पूतळी सो घणी एड़ी फूटरी। कान्हड़देजी उण रै रूप दिसी घणो गौर करि जोवण लागा। तिण समै कोई देव रै जोग, उवा पूतळी थी, तिका अपछरा हुई। तरै रावजी कह्यो, 'थे कूण छो?' तरै उवा बोली, 'अपछरा हूं। में थानै वरिया छूं। पण म्हारी आ वात किणी आगे कही तो परी जासूं। तरै रावजी सारी बात आगे कीवी। पछै दिन ऊगां कोस च्यार ऊपर बराड़ो गांव। तठै सांखलो सोमसिंघ घर धणी रहै, तिण रे घरे अपछरा मेली नै कह्यो, 'म्हे ब्राह्मण रा आवां छा। तोरण-थांम री तयारी कर राखज्यो। म्हे परणीजण नै आवां छां।'[1]

इस बात का यही अंश दूसरी प्रति में इस प्रकार दिया है।

'गढ जालोर सोनीगरो वणवीर राज करै छै। वणवीर रै कंवर २ हुवा। वडा कंवर रो नाम कानड़दे। छोटो राणगदे। टीके कानड़देजी सोवनगीर राज करै छै। एक दिन कांनड़देजो सिकार नै चढीया। सो साथ वीखर गयो। आप जालोर सूं कोस ७—८

---

१. रा बा. मू पा., पृष्ठ ६६-६७.

उपरे गया । तिसैं रात पड़ी । खवास १ बीजीयो कन्हे रहीयो । आधी रात गई । रावजी उजाड़ में पोढीया छै । तिण समै कांमदेव जागीयो । तरै रावजी कह्यौ, 'बिजड़ा, इण वेला असतरी ल्याव ।' 'माहाराजा, नैड़ो तो कोई गांम न्ही । असतरो कठा सुं ल्यावूं ?' तरै तामस कर नैं कह्यौ । तरै पथर री पूतलो रो कह्यौ । तरै कान्हड़देजी कह्यौ, 'उरी ले आव । मांहरी छाती उपर मेल दै । मन वेसास छै ।' 'तरै पूतळी पथर री आंणी नै कांनडदेजी रै छाती उपर मेली । तिसे छाती सुं भीड़तां पथर री पूतळी मानव देह हुई । तरै बोली, 'माहाराज, हु अपछरा छुं । अक्नकुंवारी छुं । राज नै परणीयां पछै सुख भोगवसुं ।' कांनडदेजी राजी हूवा । प्रभातै घोडै चाढ नै गांम वडाडा मांहै सांखळो सोभसिंघ घर रो धणी छै, तिण रै घरै ले जाय उतारी नैं विजडै खवास कहीयो, 'इण नैं कानडदेजी परणीजण आवसी ।'[1]

उपर्युक्त उद्धरण एक ही बात की दो प्रतियों के प्रारम्भिक भाग हैं । इनमें समानता और असमानता दोनों हैं । इस प्रकार एक अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य है—

ऊमाजी भीमी रो वांछियो हुवो । गायत्री तुष्टमान हुई । जिसड़ी ऊमांजी भीमी नूं तूठी, तिसड़ी गायत्री रो वरत करै तिका नूं तूठसी । पछै लालां मेवाड़ी रो रूसणो गीतां गायो छै, सो सह कोई जांणै । कासु लिखां ? पछै अचळदासजी ऊपर पातसाहरी फौज आई । पछै अचळदासजी चाळीस सहस अंतउर जोहर कियो । अचळदासजी काम आया । तरै लालांजी ऊमांदेजी वेही साथ सती हुई । तरै लालांजी रो रोसणो भागो । (इति खीची अचळदासजी लालांजी ऊमांदेजी री वात संपूरण ।। शुभं भवतु ।। कल्याणमस्तु ।। सं० १७५६ असाढ कृष्णा दशम्य ।।[2]

एक अन्य प्रति में इस बात का यह अंश निम्नरूपेण है—

ऊमां भीमा रे चीतवीयो हुवो । आणंद ऊछाह हुवो । गावतरी तुसटामान हुई । ईसड़ी सगळा ई नै होज्यो । पछै लालांजी रे तो रूसणो छै । ऊमाजो अचळदासजी एक हुवा । जीवण मरण सुधी नेह पाळियो, पछै गढ गागरूण ऊपर गढ मडोवर (?) रो पातस्या चढ आयो । तरे अचळदासजी काम आया । पछै लालां मेवाड़ी नै ऊमा सांखळी दोनूं ई सती हुई । लालां मेवाड़ी रो रूसणो गायो । सुरा पुरां रा भोगी भंवरा रा नाम रहीया । कवेसर चतुर सुघड़ वात कही । धरती मां अमर नाम कीधा । लाला मेवाड़ी रो रूसणो गायो । दोनं जणी अचळदासजी वांसै सत कीधो ।। (इति श्री अचळदास खीचो री वात सम्पूर्ण । संवत् १९१४ रा असाढ़ सुदी १३ वार सुकर ने लिखी छै)

ये दोनों उद्धरण बात के अन्तिम भाग के हैं । इनके लिपिकाल में १५५ वर्ष का

१. रा. सा. सं., भाग २, पृ ६८-७०.
२. पं. वं. द. परि

अन्तर है। ऐसी स्थिति में असमानता का तत्व ध्यातव्य है। प्रतिलिपिकर्ताओं द्वारा भिन्न वर्तनी का प्रयोग तो एक सामान्य चीज ही है।

वर्तमान-रूप

राजस्थानी बातों के विकास पर विचार करते समय उसके वर्तमान कालीन रूप की ओर सहज ही ध्यान चला जाता है। वर्तमान काल में कई लेखकों ने इस दिशा मे कार्य किया है, जिनमें रानी लक्ष्मी चूंडावत का विशिष्ट स्थान है। आपने राजस्थानी बातों के पुराने कथानक ग्रहण करके उनको नए रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार आपके द्वारा लिखी गई बातों में पुरातन एवं नूतन का संगम दृष्टिगोचर होता है। भारतीय साहित्य की अनेक अन्य विधाओं के समान यहाँ की कथात्मक सामग्री भी पश्चिम की शैली एवं परिपाटी से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाई है। आज की हिन्दी कहानी प्राचीन भारतीय कथा न होकर पश्चिम के साहित्यिक सिद्धान्तों के अनुसार लिखी हुई आख्यायिकी (शार्ट स्टोरी) है। इसमें सामग्री एवं शैली दोनों के ही विचार से नवीनता है। यही चीज वर्तमान राजस्थानी बातों के क्षेत्र में भी हुई है। अनेक लेखकों ने उसे वर्तमान युग की कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। परन्तु रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत की कुछ बातें पुरातन शैली में भी हैं। ये बात के रूप मे कही हुई सी प्रतीत होती हैं। 'कै रै चकवा वात' नामक संग्रह की प्रायः सभी बातें इसी शैली में हैं। इतना जरूर है कि लेखिका ने उनका नामकरण कहीं कहीं नए रूप मे कर दिया है, जैसे 'जग कैंता जगमाल' आदि। आपकी पुरानी शैली की कुछ बातों में उदाहरण देखिए :—

१. उज्जैण नगरी में राजा वीर विक्रमादित्य राज करे। वठै ही ज एक खापरियो नाम रो चोर रेवै। वो पोकळा में उस्ताद। राजा रोजीना रात ने भेस बदल ने गस्त देवा नैं निकळिया करतो। परजा री पूरी निगाह राखतो। एक समैं री वात के उज्जैण में एक लाखो वणजारो आय डेरो दीयो।[1]

२. एक राजा रा बेटा। वां री मितरता एक नाई सूं। सिकार जावे तो नाई नै साथै राखै। जीमै नाई ने लारै राख। सोवैं तो नाई साथे। दाना बूढा केवण लागिया, 'आ मितरता आछी नी। नाई सुभाव रो भूंडो है। कंवरजी ने खोटे गेले लगा- वेला।[2]

३. पाटण रा पट्टा में तेजसी तंवर नाम रो एक रजपूत। वो भी नामी धाड़ायती। दूरा दूरा तांई धाड़ा न्हाके। वण रा नाम सूं कोड़ीधज अर लखपती कांपे। धनवाळा

---

१. कै रै चकवा वात, पृष्ठ २४.
२. वही, पृष्ठ ६१.

रे अठै धाडो न्हाकै । धाड़ो न्हाक धन ने गरीब-गुरबां नैं बांट दें । चारणां ने रीझां कर दे ।[१]

उपर्युक्त तीनों उद्धरण बातों के प्रारम्भ के है। इन पर ध्यान देने से सब से पहली चीज इन की भाषागत विशेषता प्रकट होती है। ये बातें लेखिका द्वारा वर्तमान काल की अपनी बोलचाल की भाषा मे लिखी गई है। साथ ही इन में लोककथा का ठाठ है। यही ठाठ पुरानी राजस्थानी बातों का रहा है।

इसके अतिरिक्त लेखिका की वे बातें ध्यान देने योग्य हैं जिनमें पुरातन एवं नूतन का मिश्रण है। 'मांझल रात', 'मूमल' और 'अमोलक वातां' नामक संग्रहों की बातें प्रायः इसी प्रकार की हैं। इन सब में लेखिका की भाषा समान ही है परन्तु बातों की रचना-विधि में विशेषता है। इन सबका प्रारम्भ पुराने ढंग से न होकर वर्तमान कहानी की नवीन शैली से हुआ है और बात का विशेष मार्मिक प्रसंग चुन कर वहाँ से शुरू किया गया है—

१. ढोल बाज रिया, मारवाड़ रा कोलू गांव मे मिनख हरख्या हरख्या फिर रिया। केसरिया कसूमल पागां बांध्यां आयां-गियां री अमल री मनवारा चाल री। पाबूजी रैं सात सुवागण्यां मिळ पीठी कर री, लारै लारै मीठा गळा सूं पीठी रो गीत गावती जायरी।[२]

२. 'मान जा, कंवळ, मान जा। पछतावेला। म्हूं थारा नोरा खाय रियो हूं, गरज कर रियो हूँ जतरै हीज ठीक। म्हनै रीस मत अणां।' एमदाबाद रा किलां में बठा री बादसा मेंमदसा, जांगलू सूं आयोड़ी जवाहर पातर री बेटी कंवळ ने समझाय रिया। जगमग करता हीरा पन्नां रा गैणां रा डबा वींरे आगे मेल राखिया। दो लाख री जागीर रो पट्टो कंवळ रैं नाम रो हाथ मे ले राखियो। कंवळ एक री नीं व्हेयरी।[३]

३. 'उवां उवांह, उवांह।' जैसलमेर गढ री पोळ रा किवाड़ खोलतां पोळियै सांभळियो 'उवां, उवांह, उवांह।' पोळियो अठीनैं-वठीनैं झांकियो। पोळोड़े परभात यो टाबर अठे कुण कूकाय रिया है? टाबर फरळाय फरळाय रोय रियो। 'यो कुण?' कैवतो पोळियो रोणै रो साद आय रियो उण दिसा कांनी चालियो[४]

ये तीनों उद्धरण भी बातों के प्रारम्भ के है, जो वर्तमान कहानी के समान हैं। ये बातें आगे चलने पर पुराने लक्षण प्रकट करती हैं। इन में पुराने पद्यों का भी प्रचुरता

---

१. वही, पृष्ठ १०६. २. मांझल रात, पाबूजी.
३. मूमल, केहर. ४. अमोलक बातां, बाघो भारमली.

के साथ प्रयोग हुआ है। परन्तु साथ ही बातों की चित्रात्मकता एवं आलंकारिकता में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार वहां मनोवैज्ञानिकता भी विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है :—

१. रेत रा टीबा बळ रिया। ऊनी ऊनी लू असी चाल री जो कानां रा केसां ने बाळती नीसर जावै। नीचै धरती तपरी, ऊचो अकास बळ रियो। खेजड़ा री छाया में बैठ्यो सोढो जवान भीतर सूं अर बाहर सूं दोनूं कानी सूं दाझ रियो। बारला ताप सूं बत्ती हिया में सळगळती होळी री झाळां बाळ री। दुपैरी रा सूरज री सूधी मूडा साम्ही किरणां आंख्यां में गवोड़ा पाड़ री, पण वीनैं ईं री सुध नीं। वो तो ऊंडा विचार में अस्यो डूब रियो के चारू दिसा एक सी लाग री।[1]

२. 'चंद गयो घर आपणै, उजासड़ो कवांह', मगन व्हियोड़ो हमीर घड़ी घड़ी रो दूवा री इण कड़ी ने बोल रियो। कड़ी बोलती वेळा मस्ती सूं उण री आंखियां घुळती जाय री। आंखियां रे आगे रात ने देखियोड़ी उजाळी औरई ऊजळी व्है जावै। मन री कळी खुल खुल जाय री[2]

३. सीजो पोहर ढळवा लागतो बीझाणंद जंतर ने हेटै मेलतो। गायां भैस्यां ने हाक लगावतो, धी री हाक रैं साथै जमियोड़ी वी कनै आय भेळी व्हैती। भूरी झोटी वी रो हाथ चाटती, कावरी खाज खणावा ने गाबड़ आगे पसार देती। भैंस्यां रिड़क रिड़क वीं सूं वातां करती। वीं एक एक जिनावर रो नाम काढ राखियो। एक एक ने नाम ले बतळावतो। मोरां में हाथ फेरतो पुचकारतो गांव आड ने चालतो।[3]

इसी शैली मे अन्य भी कुछ वर्तमान लेखकों ने राजस्थानी बातें प्रस्तुत की है श्री मोतीसिंह राठौड़ द्वारा एक लोककथा के आधार पर लिखित बात का नमूना द्रष्टव्य हैं :—

द्वापर रो समय। हथनापर नगर देस री राजधानी। देस विदेस रा नगरां में सारां सूं सिरे। मुलक मुलक रा सेठ साहूकार व्यापार खातर आवै। धन-दौलत रो घाटो नहीं। बजार सदा चैंळ पर रेवै। च्यारू मेर सुख-सोमनी। बसती दिन दिन वधै। कोई नैं कोई बात रो डर नहीं। मोटा मोटा सेठां रा मैंल झुकरया। चैन री वंसी बाजै। पांडवां रो राज। किण रे भी कोई दुख होवै तो तुरत मेटै। पिरजा नें पुतर ज्यूं पाळै। राजा-पिरजा नेम धरम पर चालै। इण नगरी मांय पदमपत नांव रो एक मोटो सेठ।[4]

उपर्युक्त उद्धरण में लेखक ने लोककथा की वस्तु में यह भूमिका अपनी ओर से जोड़ी है परन्तु बात को कहने के ढंग पर लिखा गया है, अतः इसकी शैली पुरानी ही है।

---

१. मांझल रात, रजपूताणी. २ मूमल, मूमल नामक बात. ३. अमोलक वातां, पृष्ठ ३६
४. ओळमो मिनख, वरदा अंक २, गांगासर.

श्री बद्रीदान गाडण द्वारा एक लोककथा के आधार पर लिखित बात का नमूना इस प्रकार है :—

राजस्थान रै इण भीतरी भाग रे मांय गरमी री सिझ्या रो समूं घणो सुहावणो होवै है। सूरज री तीखी किरणां सूं संतप्त रेसम सी कंवळी धरती पर एक अलौकिक सुन्दरता री सृष्टि संझ्या रे समै दीखवा लागै है। आखै दिन सें सें करतो पवन रो वेग मधरो पड़ जावै नै धूळ रा बादळ दूर होय नै अकास साफ लीलो सरद री सरिता रै जळ ज्यूं लागवा लागे। ढांढा ढोर, मिनख, पंखेरू जिका दिन भर दड़िया रहै, इण समै सै रै मांय नवीन कर्म स्रोत प्रभात री भांत प्रवाहित होवा लाग जावै अर इण प्रसान्त मरु-सागर रै मांय जीवन संचार री लहरां हिलोळा लेवा लागै।[1]

इस उद्धरण में भी लेखक की अपनी कल्पित भूमिका प्रकट हुई है। साथ ही यह संस्कृत-निष्ठ भाषा शैली का नमूना है। भाव प्रकाशन में आलंकारिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है।

एक वीर रसात्मक लोककथा के आधार पर लिखित बात का प्रारम्भ इस प्रकार है :—

ठाकर बखतसिंहजी आपरा जमाना रा मांना सरदार हा। उणां रा आपाण ने दबंगपणा री धाक आखा चौखला रे मांय जमी थकी ही। ठिकाणो छोटो। बारे गांवा रा धणी। पण नान्हो रिजक होतां थकां भी काम मोटा करे। दीन दुनी रा मालकां सुं आड-टेड बरतै। रजपूती रा पण नै पाळै। राजापणै रा धरम नै निभावै। रैयत री पालणा करै। गौ और बामणां री रुखाळी करे। पिरजा नै परीछत ज्यूं पाळै। चोरी-चकारी, ठगी-धाड़ां ने रोकै। नेम-धरम पर चालै। राजा राज नै परजा चैन।[2]

इस बात में बोलचाल की सरल भाषा एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। वर्तमान बात-लेखकों मे श्री विजयदान देथा ने भी काम किया है। इन्होने 'वाणी' (राजस्थानी मासिक) के माध्यम से बड़ी संख्या में राजस्थानी लोककथाओं को लिखित रूप दिया है जो 'बातां री फुलवाड़ी' के चार भागों मे स्वतंत्र रूप से भी प्रकाशित है। परन्तु इनकी बातों में इनका व्यक्तित्व स्पष्ट प्रकट है। आपने लोककथाएँ ज्यों की त्यों उपस्थित न करके उन में अपनी कल्पना के सहारे नया नया मोड़ भी दिया है। इस प्रकार लोककथाएँ रोचक रूप में सामने आई है। साथ ही इनकी सहायता से हानिकारक रूढियों, अंधविश्वास, सामंतवाद और पूंजीवाद पर प्रहार करने की भी चेष्टा की गई है। जिस प्रकार पुराने बात-लेखकों ने 'बणाव' के उपकरण से उन्हें सजाया है, उस प्रकार का प्रयत्न

---

१. आंबै री डाल सरवर री पाल, मरुवाणी १/६-७.

२. खाट री खंटो, म. वा. १/६-७.

इनकी बातों मे दृष्टिगोचर नहीं होता परन्तु उन में नई घटनाएं यत्र तत्र जोड़ ही गई हैं। अनेक बातों का प्रारम्भ इन्होंने अपनी ओर से विशेष पुट देकर किया है। इस से न तो ये लोककथाएं ही रह सकी और न मौलिक कृतित्व को ही प्राप्त हो सकी। इनकी भाषा पर क्षेत्रीय प्रभाव भी बहुत अधिक है। उदाहरण इस प्रकार है :—

रामदुवारा रो एक महंत बांणिया कनासूं ठांगो करनै दस हजार रिपिया भाड़ लिया। बांणियो घणी ई हाथा-जोड़ी करी पण महंत तो पाछी एक साल छदाम ई उणनै नी बताई। जद बांणियो कह्यो—महंतजी, इण भेस रो तो थोड़ो घणो सरम राखो। म्हारी खरी कमाई रा रिपिया है, थांने पचेला कोनी।

महतजी कह्यो—बावळा, थूं तो रिपियां रै पचणा री बात करै, म्हांनै तो संखियो ई हजम व्है जावै। ऐ रिपिया तो अबै रांम रै सरणारति व्हैगा। थारी भगती में जोर व्है तो पाछा लेय सकै। म्हैंतो रांम री माया रा रुखाळा हां।[1]

पुरानी बातें प्रधान रूप में कहने की चीजें रही है। उनको लिपिबद्ध करके पढ़ने की चीज भी बना लिया गया है। परन्तु इन नवीन बातों में कहने की अपेक्षा पढ़ने का गुण विशेष हो गया प्रतीत होता है। इन मे पुरानी कथावस्तु को जम कर लिखा गया है और उसे एक नई चीज के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा हुई है।

वर्तमान में राजस्थानी में आधुनिक ढंग की कहानियाँ भी अनेक लिखी गई हैं। इनकी शैली एवं विषय-सामग्री सर्वथा नवीन है और आधुनिक आख्यायिका (शार्ट स्टोरी) के अनुसार है। ये कहानियाँ सर्वथा में पढ़ने की चीज है। इन में पुरानी बात का कहने तथा सुनने का तत्व नही रहता है। साथ ही इन में वर्तमान समाज की समस्याओं को प्रधानता दी गई है और प्रायः विषय-वस्तु एवं पात्र भी तदनुसार ही रखे गए हैं। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

१. मे-अंधारी रात। डांफर चालै। कोढियो सीयाळै रो मास। रात री आठ ई बजी कोय नी पण किसी कोई मिनख रो जायो गळी में दीख जाय। धीसू धूजतो धूजतो राम-राम करतो घर में वड़ियो। मोती री मा बोली, 'आ ई कोई आवण री वेळा ? ओढण नै सरीर माथै पोलियो' र आ सरदी। टेम-सर घर मे आय जाया करो। मोती रोवतो रोवतो, काका-काका करतो हणां ई सूतो है।[2]

---

१. बाता री फुलवाड़ी, भाग १, पृष्ठ १६४.
२. वरसगांठ (श्री मुरलीधर व्यास).

२. फागण री महीनी हो अर चांदणी घट रात, लीलकंठ गांव रे माथै डोढ बोतल रौ नसौ चढ्योड़ो हो। रात पोहर डोढ पोहर बीत गई हुवैला। चन्द्रमा खासौ ऊंचो चढग्यो हो, उण रा धवळ चांनणा में धुपीज'र गांव ने खेत सगळाई बगला री पांख हुवै जैड़ा हुवै ग्या हा। वायरा री ठाडी ठाडी लैरां आवती ही ने खेतां ऊभोड़ा गेहुं-चिणा हस हस नै लैरां लेवता हा। मोट्यांर आप रा चंग ले'र गांव रै बारै गो'र में जाय पूग्या हा अर लुगायां चोवटो माथै ले लियौ हो। लड़ांभूंब हुयोड़ी लुगायां रा लैण लूहर री ललकार में जिण वेळा सांमली लैण नें जबाब देवण नें आगै वढती तो उणां रे पगां रै धम्मीड़ां सूं जमीन धूजण लागती।[1]

स्पष्ट ही उपर्युक्त उदाहरणों में राजस्थानी कहानी का अद्यतन रूप प्रकट है।

---

१. रातवासो (श्री नृसिंह राजपुरोहित).

इनकी बातों में दृष्टिगोचर नहीं होता प
अनेक बातों का प्रारम्भ इन्होंने अपनी
ये लोककथाएं ही रह सकी और न मौलि
पर क्षेत्रीय प्रभाव भी बहुत अधिक है।

रांमदुवारा री एक महंत बांणिय
लियो। बांणियौ घणी ई हाथा-जोड़ी क
नी बताई। जद बांणियौ कह्यौ—महंतजी
म्हारी खरी कमाई रा रिपिया है, थांने प

महंतजी कह्यौ—बावळा, थूं तो
ई हजम व्है जावै। ऐ रिपिया तो अवै र
व्है तो पाछा लेय सकै। म्हैं तो राम री म

पुरानी बातें प्रधान रूप में कहने की
की चीज भी बना लिया गया है। परन्तु इन
गुण विशेष हो गया प्रतीत होता है। इन
और उसे एक नई चीज के रूप में प्रस्तुत

वर्तमान में राजस्थानी में आधुनिक
इनकी शैली एवं विषय-सामग्री सर्वथा नवीन
के अनुसार है। ये कहानियां सर्वथा में पढ़ने
तथा सुनने का तत्व नहीं रहता है। साथ ही
प्रधानता दी गई है और प्रायः विषय-वस्तु ए
सम्बन्ध में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:—

१. मे-अंधारी रात। डांफर चालै। कोढियौ
कोय नी पण किसौ कोई मिनख री जा
राम-राम करतौ घर में बड़ियौ। मोती र
ओढण नै सरीर माथै पोनियौ र आ र
मोती रोवतौ रोवतौ, काका-काका करतौ

---

१. बातां री फुलवाड़ी, भाग १, पृष्ठ १६४.
२. बरसगांठ (श्री मुरलीधर व्यास).

कथानक का अंग विभाग

सामान्यतया कथानक का अंग विभाग, प्रारम्भ, मध्य और अन्त इस प्रकार किया जाता है। सबसे पहिले उसका नामकरण होता है। राजस्थानी बात पर इस दृष्टि से आगे प्रकाश डाला जाता है।

१ नामकरण

किसी भी साहित्यिक रचना का नामकरण एक महत्वपूर्ण विषय है। ऐसा करते समय समग्र सामग्री को ध्यान में रखते हुए अति संक्षिप्त संकेत के रूप में उसका शीर्षक दिया जाता है। शीर्षक का चुनाव आकर्षक होने के साथ ही विषयवस्तु का परिचायक भी होना आवश्यक है। कई शीर्षक सांकेतिक भी होते हैं, जो पाठक को आश्चर्य में डाल देते हैं। फिर भी शीर्षक की सार्थकता अनिवार्य है। उसके द्वारा विषयवस्तु का किसी अंश में बोध हो जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में राजस्थानी बातों के नामकरण की विधि भी ध्यान देने योग्य है। बातों का नामकरण कई प्रकार से किया गया है। अधिकांश बातों का शीर्षक नायक के नाम के अनुसार मिलता है :—

१. राजा भीम री वात।
२. वात सलै सयणी री।
३. वात कुवरसी सांखलै री।
४. वात राव रणमल री।
५. वात पच राठोड़ री।

कई बातें ऐसी हैं, जिन में दो या अधिक पात्रों को समान रूप से प्रधानता प्राप्त होती है। ऐसी बातों में शीर्षक उन सब के नामों के अनुसार मिलता है :—

१. वात हंसराज बछराज री।
२. वात चारण बेहसूर सोनड़ी री।
३. राज भोज री वात।
४. सूरे खीवे कांधलोत री वात।
५. वात कर्ण लाखावत, देसल राठोड़, चारण जालूणसी री।

प्रेम तत्व सम्बन्धी बातों में प्रायः नायक और नायिका दोनों के नाम शीर्षक के रूप मे रखे गए हैं :—

१. ढोला मारू री वात।
२. जलाल बूबना री वात।
३. गुलावां भंवर री वात।
४. बयान समसेर री वात।

रचना-तंत्र

द्वितीय खंड

कथानक

कथानक कहानी का आधार होता है। कहानी में जो घटनाएं घटित होती हैं अथवा पात्र जो कार्य करते हैं, उन से कथानक का निर्माण होता है। लेखक की अनुभूति एवं लक्ष्यपूर्ति की धारणा उसे अवतरित करती है। कहीं वह स्थूल एवं इतिवृत्तात्मक होता है। इस प्रकार के कथानक में घटनाओं एवं कार्यों की अधिकता तथा प्रधानता रहती है। कहीं कहीं कथानक सूक्ष्म होता है। इस में घटनाओं अथवा कार्यों का गौण स्थान रहता है। वहां मानसिक संघर्ष को प्रधानता प्राप्त होती है। राजस्थानी बातों में पहिले प्रकार का कथानक ही देखने को मिलता है, जैसा कि आगे के अनेक उदाहरणों से स्पष्ट होगा। सामान्यतः वहां मानसिक संघर्ष को प्रधानता देने वाला सूक्ष्म कथानक दृष्टिगोचर नहीं होता। इसका स्पष्ट कारण भी है। सूक्ष्म कथानक कहानी के वर्तमान युग के विकास का परिणाम है और राजस्थानी बातें पुरानी हैं, अतः इतिवृत्तात्मकता उनकी सामान्य प्रवृत्ति है।

कथानक का एक प्रधान गुण उसकी स्वाभाविक गति है। उस में गत्यात्मक सौन्दर्य होना चाहिए। इस दृष्टि से राजस्थानी बातें दोनों प्रकार की मिलती हैं। कई बातों में गत्यात्मक सौन्दर्य देखा जाता है परन्तु साथ ही अनेक बातों मे ऐसा नहीं भी है। इसका मुख्य कारण यह है कि ऐसी बातें ऐतिहासिक विवरण के रूप मे प्रस्तुत की गई है। भले ही इन बातों में ऐतिहासिकता न भी हो परन्तु वे एक पात्र के जीवन से सम्बन्धित कही जाने वाली अनेक घटनाओ को लेकर चलती है। ऐसी बातों में पात्र को प्रधानता देकर उसकी कहानी मे अनेक प्रकार की घटनाओं को जोड़ दिया जाता है। कई पात्रों के तो पूर्वजों तक की कहानी भी साथ ले ली गई है और इस प्रकार कथानक अनेक घटनाओं अथवा कार्यों के साथ जुड जाता है। ऐसी बातों के एक साथ ही कई कथानक सम्मिलित से प्रकट होते हैं। घटनाओं की सुसम्बद्धता कथानक का एक विशेष गुण है। उस में घटनाएं लड़ी के समान परस्पर जुड़ी हुई होनी चाहिए। वे विशृंखलित न हों। अनेक राजस्थानी बातों में समुचित रूप से सुसम्बद्धता नहीं देखी जाती। आगे के अनेक उदाहरणों से यह चीज प्रकट होगी।

कथानक का अंग विभाग

सामान्यतया कथानक का अंग विभाग, प्रारम्भ, मध्य और अन्त इस प्रकार किया जाता है। सबसे पहिले उसका नामकरण होता है। राजस्थानी बात पर इस दृष्टि से आगे प्रकाश डाला जाता है।

१ नामकरण

किसी भी साहित्यिक रचना का नामकरण एक महत्वपूर्ण विषय है। ऐसा करते समय समग्र सामग्री को ध्यान में रखते हुए अति संक्षिप्त संकेत के रूप में उसका शीर्षक दिया जाता है। शीर्षक का चुनाव आकर्षक होने के साथ ही विषयवस्तु का परिचायक भी होना आवश्यक है। कई शीर्षक सांकेतिक भी होते हैं, जो पाठक को आश्चर्य में डाल देते हैं। फिर भी शीर्षक की सार्थकता अनिवार्य है। उसके द्वारा विषयवस्तु का किसी अंश में बोध हो जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में राजस्थानी बातों के नामकरण की विधि भी ध्यान देने योग्य है। बातों का नामकरण कई प्रकार से किया गया है। अधिकांश बातों का शीर्षक नायक के नाम के अनुसार मिलता है :—

१. राजा भोज री वात।
२. वात सलै सयणी री।
३. वात कुंवरसी सांखळे री।
४. वात राव रणमल री।
५. वात चच राठौड़ री।

कई बातें ऐसी हैं, जिन में दो या अधिक पात्रों को समान रूप से प्रधानता प्राप्त होती है। ऐसी बातों में शीर्षक उन सब के नामों के अनुसार मिलता है :—

१. वात हंसराज बछराज री।
२. वात चारण बेहसूर सोनड़ी री।
३. राज बीज री वात।
४. सूरे खींवे कांधळोत री वात।
५. वात करण लाखावत, देसल राठौड़, चारण जालूणसी री।

प्रेम तत्व सम्बन्धी बातों में प्रायः नायक और नायिका दोनों के नाम शीर्षक के रूप मे रखे गए हैं :—

१. ढोला मारू री वात।
२. जलाल बूबना री वात।
३. गुलावां भंवर री वात।
४. बयान समसेर री वात।

५. वात प्रथीसिंघ पुंवार अर सूवां री।

कई बातों में केवल नायिका के नाम पर शीर्षक चुना गया है :—

१. रत्नमंजरी री वात।
२. वात मारू सूथारी री।
३. वात लालां मेवाडी री।
४. मोमल री वात।
५. वात चौबोली री।

कई बातों के शीर्षक नायक का विशेष संकेत करते हुए रखे गए हैं :—

१. वात जैतमल पुमार री, सिधराज जैसंघ रे उमराव री।
२. वात सेतरांम वरदाईसैनोत राठौड़ री.।
३. वात सवैहोयै वीरमदे रे बेटै धनपाल री।
४. वात सेत्रावा रा धणी राव लूणा री।
५. वात सादै गोहिलोत नाडोळाई रै धणी री।

कई बातों के शीर्षक वंश अथवा वर्ग विशेष के अनुसार हैं :—

१. वात हाडां री।
२. वात सालंकिया री।
३. वात सिरोही रा धणियां री
४. वात ओडा चहुवाणां री।
५. वात कछवाहां री।

कई बातों के शीर्षक में प्रमुख पात्रों का संकेत रहता है परन्तु उनका व्यक्तिगत नाम नहीं दिया जाता :—

१. च्यार मूरखां री वात।
२. दो साहूकारां री वात।
३. राजा अर छीपण री वात।
४. गाम रा धणी री वात।
५. मामे भाणजै री वात।

कई बातों का शीर्षक स्थान विशेष के अनुसार रखा गया है :—

१. वात अणहलवाड़ पाटण री।
२. वात जैसलमेर री।
३. बूंदी री वात।
४. वात भटनेर री।

५. बात गढ गुवलेर री ।

कई बातों के शीर्षक किसी घटना विशेष के अनुसार रखे गए हैं :—

१. वात नरवदजी राणै कुंभै नूं आंख दीवी तै री ।
२. वात राजा प्रिथीराज सुहवदे परणिया तै री ।
३. वात हाहुल हमीर भोळै राजा भीम सूं जुध करियो तै री ।
४. वात सांखळां दहियां सूं जांगलू लियो तै री ।
५. वात रुद्रमाळो प्रासाद सिद्धराव करायो तिण री ।

कई बातों का शीर्षक पद्य प्रयोग के स्पष्टीकरण का उद्देश्य प्रकट करते हुए रखा गया है :—

१. वात कंवर रणमल चोंडावत री, इण दूहै उपर :—

रणमल गळती रात, कांकळ घर केवी तणै ।
पहु उगे परभात, आयो उथो हों अखो ।।

२. वात राव रणमल री, इण दूहे उपर :—

आयो अमली मांण, चावे भाले चोंडवुत ।
ते दाह रण ढाए, चोवीसै चारासीया ।।

३. वात खोखर छाडावत री, इयै दूहै माथै :—

ते ढंढोळीयो ज ढाण, भड़ रूठ भाटी तणो ।
खोखर लागां पांण, ढाहे बैठो ढूकड़ै ।।

४. वात सातळ जोधावत री, सातळमेर गढ मांडीयो तिण बाबत, इण दूहे ऊपर, केलावो वीरो मारायो :—

केलावो सातळ सरस, बोलै चूक मरजाद ।
जांह सो पाण न पूजीयै, तांह सो कहो वाद ।।

५. वात राजा भोज री, इयै गाहा उपर, तुरत दांन महापुन्य तै री ।
गाहा :—

तुरत दान माहा पुन्य करे सु पावै ।
हाथ का दीया, कांहा न जावै ।।

कई बातों का शीर्षक कहावतों के आधार पर रखा गया है :—

१. सच बोलै सो मारियो जावै, तिकै री बात ।
२. सांई री पलक में खलक बसै ।
३. ज्यूं सौ त्यूं पचास ।
४. तांत वाजी नै राग पिछाण्यां, तै री बात ।
५. बंधी बुहारी री बात ।

कई बातों में उद्देश्य को शीर्षक का रूप दिया जाता है—

१. बात दिनमान रै फळ री।
२. बात बुधि बळ री।
३. बात सूरां अर सतवादियां री।
४. भलै भलो, बुरै बुरो, ते री बात।
५. अकल री बात।

कई बातों का नामकरण एक साथ ही दो प्रकार से देखा जाता है। आदि में बात का शीर्षक एक है और अंत में वह दूसरा है :—

१. आदि — अथ लालां मेवाड़ी री बात लिख्यते।
   अंत — इति खीची अचळदासजी लालांजी ऊमादेजी री बात सम्पूर्ण।
२. आदि — बात डहरू री छै।
   अंत — बात देवड़ै री सम्पूर्ण हुई। वडो वडो देवडा डहरू वांनर री सम्पूर्ण हुई।
३. आदि — बात हाहुल हमीर री।
   अंत — बात राजा भोळै भीम री सम्पूर्ण।
४. आदि — अथ कलावंतनी की बात लिख्यते।
   अंत — इति मांनवती वीनवती रो संवाद। मांनवती जीती वीनवती हारी। सम्पूर्ण।
५. आदि — अथ बात देपाळ धंधरी।
   अंत — इति बात देपाळ धंध पातसाह री बेटी री सम्पूर्ण।

अधिकांश बातों का नामकरण एक या अनेक पात्रों के अनुसार हुआ है। कई पात्रों के नाम के साथ उनकी खांप (वंश-शाखा) एवं उनके पिता तक का नाम दे दिया गया है, जो राजस्थानी समाज की एक विशेषता रही है। इसका एक कारण यह भी है कि अधिकांश बातों पर ऐतिहासिक रंग छाया हुआ है। इस विधि से बात की ओर सहज ही ध्यान आकर्षित होकर विषय का संकेत मिल जाता है। फिर भी एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध में एकाधिक बातें मिल सकती हैं और उन मे 'वस्तु' की भिन्नता भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में नाम की समानता के कारण बात को विषय वस्तु का उचित संकेत नहीं मिलता। इस विषय में एक उदाहरण द्रष्टव्य है[1] :—

---

१. लाखा फूलांणी सम्बन्धी पांच बातें देखी गई हैं। इनमें चतुर्थ बात श्री मोहनलाल पुरोहित, बीकानेर के संग्रह मे है। अन्य चारों बातें हस्तप्रतियों के रूप में अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर मे हैं।

१. वात लाखै फूलांणी री (इस बात में लाखा फूलांणी के केवल जन्म का वृत्तान्त है। बात आकार में बिलकुल छोटी सी है।)

२. वात लाखै फूलांणी री (इस बात में लाखा फूलाणी तथा नेहड़कुमर के विवाह का प्रसंग है। वात आकर में कुछ बड़ी है।)

३. वात लाखै फूलांणी री (इस बात में पहिले छाहड़ और उसके पुत्र फूल का वर्णन है। फिर लाखा के जन्म, राज्य-ग्रहण एवं सोढी रानी के त्याग का वृत्तान्त है। अंत में चच आढा की चर्चा है। आकार में बड़ी है।)

४. वात लाखै फूलांणी री (इस बात में लाखा का जन्म, स्वर्णपुरुष का मिलना, अंधार वन गमन, राज्य प्राप्ति, मावल चारण की पुत्री का विवाह आदि अनेक प्रसंग है। बात कुछ बड़ी है।)

५. वात (लाखै री)। (यह बात नैणसी की ख्यात में दी गई है और कुछ विस्तृत है। इस में लाखा के जन्म, राज्य-प्राप्ति, सोढी रानी का त्याग और सोढी की मृत्यु तक का प्रसंग है।)

उपर्युक्त पांच बातों में से प्रथम चार स्वतंत्र रचनाएं है और उन में पर्याप्त विषय-भिन्नता भी है। फिर भी सब का नामकरण समान ही है। ऐसी स्थिति में इनकी स्वतंत्र गणना आवश्यक है।

साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि कई बातें ऐसी भी हैं, जिनका विशिष्ट पात्र के नाम पर शीर्षक रख दिया गया है परन्तु उस में प्रधान कार्य किसी दूसरे ही पात्र का है। ऐसी स्थिति में उस वात का शीर्षक विषय का समुचित बोध नहीं करवा पाता। 'राजा भीम री वात' मे प्रधान कार्य लूणसाह के द्वारा सम्पन्न होता है। परन्तु वहां राजा के पद पर भीम है। अत: बात का नामकरण तदनुसार हुआ है। इसी प्रकार 'राजा बीज री वात' में प्रधान कार्य मूलराज के द्वारा सम्पन्न होता है। परन्तु वह उनके यहां कुमारपद पर है, अतः बात का शीर्षक उसके नाम पर ही रखा गया।

छोटी छोटी वातों अथवा अंर्तकथाओं का शीर्षक कई जगह नहीं भी मिलता और उनका बात पहली, दूसरी और तीसरी आदि इस प्रकार क्रम से संकेत कर दिया जाता है।

राजस्थानी बातों के नामकरण पर ध्यान देने से प्रकट होता है कि प्राय: उनमें विषय का सीधा संकेत रहता है और कई जगह तो उसे अधिक स्पष्ट तक करने की चेष्टा की जाती है। एक ही बात का नाम आदि और अंत में इसी कारण कुछ भिन्नता लिए हुए भी मिलता है, जैसा कि ऊपर के उदाहरणों मे देखा जा सकता है।

२ प्रारम्भ

राजस्थानी बात का प्रारम्भ करने की शैली ध्यान देने योग्य है। बात का प्रारम्भ

कई रूपों में देखा जाता है। प्रथम रूप एक लोककथा के समान होता है। इसमें अत्यन्त सरलता एवं सादगी रहती है :—

अंबावती नगरी, तेथ राजा अंबकसेन राज्य करै। राजा रै बेटो स्यांमसुन्दर। जोबन अवस्था आई। ताहरां पूरब देस में गोड़ देस रे राजा रै परणायो। कितरा एक दिन हुवा, राजा त्र्यंबकसेन देवगति हुवो। ताहरां स्यामसुन्दर टीकै बैठो।[१]

रोचकता पैदा करने के लिए भूतकालीन घटना को बात में वर्तमान रूप में भी प्रारम्भ किया जाता है :—

१. दिन एक भीम गोहिलोत बैठो छै नै बेटा भीम रा अरजन हमीर कूकड़ा लडावै छै। कूकड़ा पगां रै पाछणा बांधा छै। सो लडतां लड़तां अरजन रै कूकड़ै हमीर रै कूकड़ै रौ माथो पाछणो सो उतार नांखीयो।[२]

२. राजा बीसलदेव अजमेर राज करै। वडो महराज, तेसूं कोई अधको नहीं। तिण सौं मूळवै लागवजी हुई।[३]

३. राजा वीर विक्रमादित्य उजीण राज करै। वैरै (हंस) हंसणी, सु ए रोज मांनसरोवर मोती चुगण जावै। सु दिन तो मांनसरोर रहै अर दिन अस्त हुवै सु राजा पासै ये भांत नित जावै। तद एक दिन हंस हंसणी मांनसरोवर सुं उजीण आवता, तद ए राजा नक्षत्रजातीक रे देस पूरणपुरी सहर नजीक आय नीसरीया। तद आंधी-फांख आई।[४]

कई बातों में लेखक इतिहास के समान किसी विशेष प्रसंग को लेकर सीधा विषय-प्रवेश करता है :—

१. जैतमाल देवड़ी परणीजण गयो। दिन ५ तथा ७ सर्व जांन रही। रळीरंग उछाह हुवो। डेरे आया। ताहरां देवड़ा ठाकुर पहिरावणी सगळा जांनीयां नूं डेरै आय कीवी। ताहरां जैतमाल रै आगले बोहा रा सोलंकी तिके साथ हंता। राज मांह इणां रो अधिकार घणो।[५]

२. लाखो फूलांणी फूल विसरांमीयै सूं घरे आयो। ताहरां चोगरद रा ठाकुर भुमिया लाखैजी नुं मिलण आवै। ताहरां बीरण राठोड़ मिलण आयो छै। ताहरां लाखोजी बीरण नुं मिलीया छे।[६]

---

१. स्यांमसुन्दर री बात (हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.). २. स

३. बात मूळवे सांगावत री, बा, मू प.

४. राजा वीर विक्रमादित्य री अर नक्षत्र जाती री बात (हस्त

५. बात जैतमल धलखावत री (हस्तप्रति अ. [illegible] ग्रं. बी.). ६.

कई बातों का प्रारम्भ विशेष प्रभाव प्रकट करते हुए किया गया है । इस पद्धति में वातावरण का बड़ा ही सुन्दर वर्णन मिलता है :—

रांणो खेतो चीत्रोड़ में राज्य करे । वरसाळै रा दीह छै। दीवांण सिकार चढीया छै । हळ वहै छै । भाद्रवो मास छै । खातिण भातो ले जावै छै । दोई पाडी छै, सु विन्हे हाथे पकड़ी छै । लीये जावे छै । पाड्यां नाचे छै थेई थेई करत्यां जावे छै । भातो माथै छै । बेपरवाह चाली जावे छै । दीवांण सिकार चढीया छै । साथे अमराव छै, तीयां नुं कहे छै, 'ठाकुरो, ईयै लुगाई रो बळ देखो छो । भाई, इण रे पेट रा जे बेटा हुवै तो किसा बळवंत हुवै ?' देखि घर सिकार नुं चलता हुवा । खातिण खातिण रै मारिग गई ।[1]

कई बातों का प्रारम्भ किसी विशिष्ट पद्य से हुवा है :—

इसड़ो दातार हुवो :—

नाकारो जांणै नही, ऊभो जा लग प्राथ ।
रिधदाता रेसामियो, उणत घनै अनाथ ॥

आवे नही ज इणां रेसामीयै रो दूहो । रेसामीयो दातार असड़ो हूवो, मंगत जिके प्राय जांचै तिण नुं नाकारो न करै । इसड़ो हूवो ।[2]

विशिष्ट लेखक की बात का प्रारम्भ विनय एवं वस्तु-संकेत से होता है :—

मंगलाचरण

गणपत पूजूं सरस्वती, गुर के लागूं पाय ।
ग्यान सु दीजै अत सरस, वारता कहूं बनाय ॥
गणपत को धर ध्यान मन, चित में ओर न आन ।
अष्ट सिद्ध नव निध जुत, हिय में प्रगटै ग्यांन ॥
चतुर गुलाबां अत सरस, पीय भंवर सुजांन ।
इनकी प्रीत सु वरनहु, गुर को चित धर ध्यांन ॥[3]

३ मध्य

प्रारम्भ करने के बाद कहानी का मध्यभाग आता है । यह कथानक का प्रधान अंग है । इसे कहानी का कलेवर कहना चाहिए । इस में उसकी आत्मा प्रतिष्ठित रहती है । यहाँ कथानक गतिमान होकर चरम बिन्दु पर पहुंचता है और फिर मोड़ लेता है । राजस्थानी बात का मध्यभाग कई प्रकार दृष्टिगोचर होता है । बातें कई प्रकार की है, अतः जो बात जिस प्रकार की होती है, उसका मध्यभाग भी उसी तरह का मिलता है । उदाहरण इस प्रकार है :—

---

१. राणै खेते री वात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.). २. साधना, अंक ७,
३. गुलाबा भंवर की वात (अ जै. ग्रं. बी.).

१. अनेक ऐतिहासिक बातें ऐसी हैं, जिन में प्रधान पात्र के जीवन की घटनाएं क्रम से चलती रहती हैं और कहानी के विचार से वे शृंखलित भी नहीं प्रतीत होतीं। अंत में पात्र के देहावसान या किसी विशेष घटना पर उनकी समाप्ति हो जाती है। ऐसी स्थिति में कथानक के चरम बिन्दु का प्रकाशन ही नहीं हो पाता। इस प्रकार से ये बातें ऐतिहासिक शैली में लिखी गई जीवनी के रूप में सामने आती हैं। ऐतिहासिक बातां (परम्परा भाग ११) में दी गई प्रायः बातें इसी रूप में हैं।

२ कई ऐतिहासिक बातो में कथारस मिलता भी है। 'राव लाखै री वात'[1] में राव लाखा सिरोही का स्वामी है। लोहियाणा का मालिक राजधर देवल उसके राज्य में लूटपाट करता रहता है। राव लाखा उसे समझाने के लिए अपने आदमी भेजता है। राजधर के पीछे के सभी अपराध क्षमा कर दिये जाते है और उसकी लड़की राव लाखा को विवाह दी जाती है। इस प्रकार ऊपरी तौर पर बैर समाप्त हो जाता है। कुछ समय बाद शपथपूर्वक राव लाखा अपने श्वसुर राजधर और उसके पुत्र लाखा को अपने यहाँ बुलवाता है और उनके प्रति बड़ा सम्मान तथा प्रेम प्रकट करता है। ऐसा कई बार होता है। अंत में राव लाखा अपना दाव खेलता है और राजधर को अपने दरबार मे धोखे मार डालता है। लाखा षडयंत्र को समझ कर भाग निकलता है। उसके पीछे सेना जाती है। परन्तु वह पकड़ में नहीं आता और लोहियाणे जा पहुँचता है। वहाँ युद्ध होता है। राव की सेना दुर्ग पर अधिकार कर लेती है परन्तु लाखा फिर भाग निकलता है। लोहियाणा को राजस्थान बना कर राव लाखा वही ठहर जाता है। लाखा अपने साथियों को इकट्ठा करके राव से बदला लेने का अवसर देखता है। एक बार वह 'बागर' (घास के ढेर का स्थान) में छिप जाता है परन्तु वहाँ दो दिन पड़े रहने पर भी उसका दाव नहीं चल पाता। अंत में लगभग ६ मास लोहियाणा रह कर राव लाखा अपने १५-२० सवारों के साथ सिरोही के लिए रवाना होता है। आगे घाटी में लाखा देवळ अपने ५०-६० साथियों के साथ उन्हें रात के समय मिलता है। अब राव लाखा उसके पंजे में है। राव उस से अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगता है और लोहियाणा [illegible] के बारह [illegible] देने के लिए सारणेश्वर तथा चामुंडा की शपथ [illegible] पर लखा [illegible] देता है। कुछ दूर आगे बढकर राव लाखा अपने [illegible] कि [illegible] देवळ को कुछ नहीं देता और उसने तो काम [illegible] पीछे से लखा अपने दो सा[illegible] पैदल [illegible] राव को धिक्कारता है। [illegible] बाद वह पेट की बीमारी [illegible] लेता है।

१. परम्परा, भाग ११

यह ऐतिहासिक बात है परन्तु इस में करुणारस है और इसका कथानक सरल गति से आगे बढ़ता है। मूल रूप में इस बात में राव लाखा की नीचतापूर्ण कपट-चातुरी दिखलाई गई है और यह उस समय चरम बिन्दु पर पहुंची है, जब कि वह शपथपूर्वक वचन देकर भी लखा देवल को दुर्ग देने से अस्वीकार करता है। यहां आकर कथानक मोड़ ले लेता है और बात का पूरा प्रभाव पाठक पर प्रकट होता है। जिस घटना से बात का प्रारम्भ होता है, अब वह पूर्ण विकास को प्राप्त हो जाती है। बात के मध्यभाग में कुतूहल की कमी नहीं होती और ज्यों ज्यों कथानक आगे बढ़ता है, पाठक जिज्ञासा के साथ अग्रसर होता रहता है।

३. 'तमाईची पातिसाह री बात'[1] दिल्ली का बादशाह 'पिरोसाह' सिंध के बादशाह तमाईची को युद्ध में परास्त करके कैद कर लेता है और दिल्ली ले आता है। वहां बादशाह की ओर से दिल्ली में तमाईची के लिए सब प्रकार के आराम की पूरी व्यवस्था कर दी जाती है परन्तु उसे मुक्ति नहीं मिलती। कुछ समय बाद 'पिरोसाह' तमाईची को देखता है तो वह आंख भर लेता है। बादशाह उस से पूछता है कि यहां उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं है तो फिर वह आंसू क्यों गिराता है ? तमाईची उत्तर देता है कि वहां उसका मन नहीं लगता अतः समय निकालने के लिए सिंध से कवि सांवळ सुध के बेटे हेगा सुध को उसके पास बुलवा दिया जावे तो बड़ी कृपा हो। बादशाह प्रार्थना मान कर तमाईची के लिए हेगा सुध को बुलवा देता है। हेगा ऊंचे दर्जे का गायक है। एक बार बादशाह पिरोसाह के सामने उसका गायन होता है, जिस पर प्रसन्न होकर बादशाह उसे अपने मन की इच्छानुसार कुछ भी मांगने के लिए कहता है। गायक और कुछ भी नहीं चाहता, केवल अपने बादशाह तमाईची की मुक्ति मांगता है। पिरोसाह उसकी इच्छा पूर्ण करता है और तमाईची को दिल्ली से अपने राज्य में जाने के लिए विदा कर दिया जाता है।

इस बात का कथानक भी छोटा सा है और वह सरल गति से आगे बढ़ कर चरम बिन्दु पर शीघ्र ही पहुँचता है। इस में गायक के द्वारा अन्य कोई वस्तु न माँगकर अपने बादशाह की मुक्ति माँगना कथन का चरम बिन्दु है। बात के प्रारम्भ में जो घटना सामने आती है, उसका यहां पूर्णतः विकास हो जाता है। गायक की माँग के साथ ही तमाईची के जीवन का संकट कट जाता है।

इस प्रकार देखा जाता है कि प्रायः बातों के प्रारम्भ में जो संघर्ष पैदा होता है, वह मध्यभाग मे आगे बढ़ता है और प्रधान पात्र उस से टकराता चलता है। यह स्थिति चरम बिन्दु पर पहुंचती है और फिर संघर्ष दूर होकर कथानायक अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेता है।

---

१. हस्तप्रति (अ. सं. पु. ची.).

४ अन्त

राजस्थानी वातों का अन्त भी अनेक रूपों में देखा जाता है। कई वातों का अंत आशीर्वाद के साथ होता है :—

१. *ढोले मारू घणा सुख विलास कीधा नै जुग जुग त्यांरा बोल रहसी। ढोला मारू रा वात दूहा मगर-वल्ह गाया तिणां नै लाख पसाव ढोलाजी दियो। अबै ढोला मारू री वात सुणसी तिणा नै ढोला मारू री सुख होसी। दुख उपजै नहीं। दिल खुस्याली रहसी।*[१]

२. जलाल बादसाह हुवो। बूबना मूमना नूं साथ लेय सुख साथै राज कीयो। गाहणी नूं सुख दियो। धरती सारी अमन चैन हुई। जै जै कार हुवो। जलाल बडो आलीजो भवर बादसाह थो :—

> *पढै सुणै चित सें इन्हें, जलाल साह री बात।*
> *सुख संपति संकट तिन्हें, अमर सुयस दे तात॥*
> *उन्नीसों पिचयांनवैं, सुभ सिवरात्री जांण।*
> *नारायणपरसाद नै, लिखी लिखी परवांण॥*[२]

इस वात के अंत में लिपिकाल एवं लिपिकर्ता का नाम भी दे दिया गया है। इसी प्रकार जिन वातों के लेखक विशेष होते हैं, वे अपना संक्षिप्त परिचय भी अंत में दे देते है :—

१ नगर में घणा उछाव कीया छै। राज तो पामता समसेर ने दीनां, आप फकीरी लीनी। राज समसेर सुखै सुखै करै छै। आप रै हुरम आगे हुती, सब में बयान पाट री हुरम थापी। जंदा नै सीख दीनी :—

> धन्य पुरप वै मांनही, ऐसी प्रीत निभाय।
> बयांना हुरकम पाट री, और न आवै दाय॥
> गनफो खेलै चतुर नर, करता खूब कीलोळ।
> समसेर नैं देखीयो, जब तब उठा अलोल॥
> ऊगणी सं समत साल दस, सांवण सुद की दूज।
> पाय पड़े उसताद कै, बात बणाई बूज॥
> बीकानेर नगर तीहां चवाण नांनु जात।
> ईण्या लेह उसताद की, ऊण बणाई बात॥

---

१. ढोला मारू, रा. वा. सं.

२. जलाल बूबना, रा. वा. सं.

बात संपूरण
सेवग मदु सुत कहै, लिखी बुलाकीदास।
रखबदेव की चाकरी, साहब पूरे श्रास ॥[1]

२. इसा सुख विलास करतो नैं बरस दोय हुग्रा। तठै ग्रासा रही। नव मास रैं छेहड़ै वेळो जायो। तारी नांव रोके कढायो। साक्षात देवकुमार सरीखा हुग्रा। मोटा हुग्रा। दोय राज थापिया। राव पदवी कढ़ाई। जुग में बात रही। घणा बरस कवीश्वरों गाई। सुजांणी रैं मनभाई। ग्रकलवंतों रे मनभाई।

दईव संजोगे जनमिया, रांको थांको राव।
लेख विधाता ज्यूं लिख्या, ज्यूं पासा हुंदा दाव॥
रसिक बात मन री रसिक, करि ग्रानंद कविराय।
सांभळतां सुगणां नरों, दीजै मोहि पसाय॥[2]

उपर्युक्त ग्रंथ-भागों में बात के लेखक एवं लिपिकार का वक्तव्य प्रस्तुत है। साथ ही इन में बात प्रशंसा भी दी गई है।

कई बातें कथानायक के गुण-वर्णन के साथ समाप्त होती हैं :—

१. सो ऐ घरां कुसळ सूं ग्राया। भाईयां रा लोग खास त्यानूं घोड़ा दिया। मनुहारां सुं घणी घणी मिजमानी कर सीख दीन्ही। घायल था त्यानूं पट्टा बंधाया, खरची दीन्ही। घणो रस राख बिदा किया। घणी गोठां करनै लागिया। जांगड़िया गाणं लागिया। बड़ा धीर वीर हुग्रा। तिण रो नाम मुलकां चावो हुवो।[3]

कई बातों का ग्रंत उपसंहारात्मक देखा जाता है :—

ग्रठै देवड़ा वडेरा ठाकुर हंता। तिके साम्हां ग्राया। ग्राय राव तीडे रे पगे लागा, 'मार मावै तार।' ग्रठे राव तीडे रा थान परधान हंता, तिका कही, 'रावजी ग्रौ वडोव जुह पमाडो ग्रायो। हमैं राखीयां री बड़ाई छै।' तठै राव तीडे कह्यो, 'न करावै परमेसर हमे मारां।' लेड-खरच देवडां दीन्हो। ग्रागे राव तीडे रा रजपूत काम ग्राया हंता, त्यारा बैर दीना। कही रो बेटो, कही रो भाई परणायो। ईये भांत राव तीडे देवड़ांनूं रेस खवाड़ीयो, तिकेरीयां बातां गल्हां उवरीयां।[4]

कई बातों का ग्रंत विशेष रूप से मार्मिक ढंग से होता है, जो पाठक पर स्थायी प्रभाव छोड़ देता है। इस प्रकार का ग्रंत सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता है :—

१. ताहरां वहूयां नुं कह्यो, 'हिवै थांहरो धणी कांमि ग्रायो। हिवै थे साथे सत्या हुवो।' तितरैं सूरिजमल री लोथ ग्राई। बहूयां सत्यां हुवा। ग्राप पदमसिला नुं हाथ रो

---

१. बयान समसेर की बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी) २. रा. प्र. क, पृष्ठ १३६-१३७.
३ सूरे खीवे कांधलोत री बात, रा. या. मं. ४. राव तीडे री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

जोर दीयो। चिटा फाटि गई। त्रिहुँ दोहीतरां री बधाई एकै दिन सावँतसी नूं आई बेठवा गांव मांहे।[१]

२. ठाकुर ईयैं सीह बराबर छै। मैं तो थांनूं तद ही कहीयो हुतो पण म्हारै कयां न लागा। हमै कासूं कहिजै ? थां सो मुवो न जावै।[२]

कथात्मक सामग्री के लिए सुखान्त अथवा दुःखान्त होने का प्रश्न भी ध्यान देने योग्य है। आगे इस विषय मे प्रकाश डाला जाता है।

सुखान्त

भारतीय कथाओं की सामान्य प्रवृत्ति उनका सुखान्त होना है। कथा में नायक पर नाना प्रकार की विपत्तियां पड़ती हैं और वह उनसे संघर्ष करता है। अन्त में सभी संकट दूर हो जाते हैं और विजयी होता है। इस प्रकार कथा का अन्त सुख में होता है। राजस्थानी बातें भी इसी प्रवृत्ति के अनुसार प्राय: सुखान्त हैं और इस सम्बन्ध में उनके अन्त में स्पष्ट उल्लेख भी मिलता है :—

१. तद बाज मंजीरा उठै नाख वेहल मांहे बैठ घरे आया। उठै महिमानी कीवी छै। अर आप रा पीतयाही भाई री बेटी दोय सोनड़ रे बेटा नूं परणाई। वैर भांज भाई हुवा छै। उठे सो सोनड रा बेटा बैर भाज ने घरे आया छै। अर पीठवै री स्त्री इहां आप रैं घरैं सुख कीयो छै।[३]

२. आ वात सांभळी तद विचारी, रजपूतांणी रही तो सील मांहे छै। तद वेरसी पाछो चाकर पासे आय नें घोडा कपड़ा हथयार ले नै सासरे फेर आयो। उठे लोहड़ी नूं मिलायो छै, खुस्याली हुई छै। परभाते रहि हलांणो ले नें घरे गयो छै।[४]

३. तद कुंवर नूं राजा उवैं रतन नाळेर में हाथ दीयो अर कही, 'फूलकुंवर थां ने दीवी छै।' तिलक काढ उवैं रतन टीके रा दे ने विदा कीयो। कुंवर डेरे आयो छै। पछै भलो महूर्त देख ने साहो दीयो छै। कुंवर उठे परणीयो। तठै रळी रंग हुवा। राजा पास दत-दायजो ले नै आपरे घरे आयो छै।[५]

विशेष सुखान्तता

कई बातें सुख के साथ समाप्त होती हैं परन्तु उन्हें और भी अधिक सुखमय बनाने की चेष्टा देखी जाती है। राजस्थान में वैर को समाप्त करने का यह एक रिवाज रहा है कि बदले में अपने घर की कन्या का प्रतिपक्षी के साथ विवाह कर दिया जाता है।

---

१. वात राव सूरिजमल री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. जैतमल पुमार री वात (रा. मु. प.).

३. वात चारण वेहमूर सोनडी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी)

४. वात रजपूत अर बोदरे री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी).

५. वात रूपीर कुंवर राठौड री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी).

कही कही ऐसे विवाहों की संख्या एकाधिक भी होती है। विवाह स्वयं मंगल है, अतः इसके बाद कोई वैर-भाव नही रहता :—

ताहरां मेलं रो बेटो बोलियो, 'राजि, वैर म्हा थांसूं कोई छै नहीं। वैर सरीखो हुवो छै। मेलो अन्याई हुतो। मेलं मेलं रो कियो पायो। राजि पधारो। म्हारो वैर कोई छै नहीं।' ताहरां ऊदै कह्यो, 'ऐ ठाकुर कुण कुण छै?' कह्यो, 'जी श्री मेलैजी रो बेटो छै, ऐ भाई छै बीजा रजपूत छै।' ताहरां ऊदो कहे, 'सिखरेजी री बेटी थांहरे बेटै नूं दीनी छै। देव उठियां पछै बांमण मूकां छां। पधारिज्यो ज्यूं परणावां।' वैर वाढि अर ऊदोजी घरे आप रे आयो छै। सखरा दिन हुआ ताहरां बामण मेल्हि मेलं रे बेटे नूं तेड़ि नै परणायो छै। वैर भागो छै।[1]

इस बात में पुराना वैर समाप्त हो जाने पर भी विवाह-सम्बन्ध के द्वारा आगे के लिये विशेष प्रेम स्थापित किया जाता है। इसी प्रकार का एक प्रसंग 'वात चारण वेहसूर सोनडी री' में है, जिसका उद्धरण प्रारम्भ में दिया जा चुका है। उस में पीठवा वैर समाप्त करने में सफल होता है। परन्तु इसी कथानक पर आधारित 'वात पीठवै चारण री' में महाराणा को बीच में लाया जाता है और उनके द्वारा वात के अंत को और भी अधिक सुखमय बना दिया जाता है :—

तद दीवांण हुकम कीयो, 'दात म्हे देसां।' तद ईयां नूं हजूर ले आया। ईयां सुभराज कीयो। ईयां नूं दीवांण घणो आदर दे नै पीठवै रे सांम्हां बेसाणीया ने कह्यो, 'म्हे थांनू हाथी देसां।' ईयां ऊठ ने सुभराज कीयो। तद घणा हरख कर नै ईयां नूं नाळेर झलाया। सात दिन रो विन्यायक बैठो। परणीया, घणा हरख-कोड कीया। दिन १५ राखीया। विदा कीया। जाहरां ये हालीया, तद ईयां कह्यो, 'पीठवाजी, म्हे थांहरा छोरू छां।' घणो दत-दायजो देय ने हलाया अर कह्यो, 'थांनू आ हीज चाहीजै' दीवांण हाथी दीयो। वैर भागो। दुंनां सुख हुवो।[2]

'वात कवळसी सांखळै ने भरमल री' का अंत इस प्रकार होता है :—

कुंवरसीह भरमल ले नै घरै आया। ताहरां बाप कहै, 'ईयै बहू नूं हूं घर माहे नही घालूं।' ताहरां भरमल रासीसर रही छै। एक दिन सांखळो खींवसीह सिकार गयो हुंतो। सु सुघर बासे दिया हुता, सु जावतां जावतां रासीसर गयो। ताहरां भरमल रो गाडै वास छै, घोष जाय नै नीसरियो। गाडै री ढाळ हेठे भरमल सूता छै। नींद मांहे बेटो हांचळ चूघै छै। सु कहि हेठा नीसरै छै अर बीजो हांचळ चूघै छै। फिर अपूठो आवे छै। ताहरां देखिने राजी हुवो। भरमल नूं सेजवाळो जोताय नै ले आया। भरमल नूं गांव दियो। कुंवरसीह भरमल सूं वडी मया की, सुख सूं खावै-पीवै छै।[3]

---

१. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ६७-६८. २. वात पीठवै चारण री (बा. मू. प.).
३. राजस्थान भारती ६/३-४.

यह कथानक सुखान्त है परन्तु इसी को दूसरी बात[1] में विशेष रूप से सुखमय बनाने की चेष्टा की गई है। उस मे बातनायक कुंवरसी का पिता खींवसी सांखळा अपनी पुत्रवधू का बड़े सम्मान के साथ घर में स्वागत करता है और वह पुत्री को नही परन्तु पुत्र को जन्म देती है। उपर्युक्त बात मे वैर तोड़ने की भी कोई चर्चा नही है, जब कि दूसरी बात मे वैर को सर्वथा तोड़ कर कुंवरसी अपनी परिणीता भरमल को प्रचुर दहेज सहित घर में लाता है। इस प्रकार एक सुखान्त कथानक को चेष्टापूर्वक सब तरह से सुखमय बना दिया गया है। राजस्थानी बातों की यह प्रवृत्ति ध्यान में रखने योग्य है।

दुःखान्त

राजस्थानी वार्तों में अनेक दुःखान्त भी हैं और वे बड़ी ही मार्मिक हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. चच राठौड़ बड़ी कठिनाई से कळी के साथ विवाह करने मे सफल होता है। कुछ दिनों बाद कळी को सांप काट लेता है और वह मर जाती है। इस पर चच की विरह वेदना देखकर कळी की छोटी बहिन मळी के साथ उसका विवाह कर दिया जाता है परन्तु वह उस से कोई सम्पर्क नही रखता। एक दिन मृत्यु के बाद कळी आती है और मळी का शृंगार करती है। फिर चच उस से प्रभावित हो जाता है। कळी सातवें दिन छिप कर आती है; एक बार चच उसे देख कर पकड़ बैठता है। अंत में वे तीनों धरती में प्रविष्ट हो जाते हैं :—

कळी नें मळी बें बें बाथ मां ले बैठी। ताहरां कळी बोली, 'छोडो मोनुं पकड़ो मत।' ताहरां चच कहै' 'छोडु नाही।' कळी कहै, 'म्हांहरी गति और हुई।' पिण चच कहै, 'न छोडु।' ताहरा कळी कहै, 'गति म्हारी और छै।' ताहरा चच कहै, 'थारी गति सो म्हारी गति।' ताहरां कळी धरती नुं कह्यो, 'मोनुं मारिग दे।' ताहरा धरती फाटी छै। कळी, मळी नें चच तीनुं बंगले सहित धरती में पैसि गया। धरती ऊपरा मिल गई छै।[2]

२. अजमेर के राजा बीसलदेव और मूळवे जागावत में शत्रुता चलती है। मूळवा छोटे राज्य का स्वामी होने पर भी बीसळदेव का 'कोडीधज' घोड़ा उठा कर ले भागता है। बीसलदेव का कोई उपाय नही चलता और वह मर जाता है। उसका बेटा पाहरू मुळवे से युद्ध करता है। युद्ध में दोनों ही समाप्त हो जाते हैं:—

ताहरां पाहरू मूळवे नु तरवार वाही, तेसूं असवार दुसून हुवो। इनरे बीच बेसबटी मूळवे जूं दूहो कहै :—

---

१. हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.

२. चच राठोड़ री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

तै मूळवा पड़तै थकै, वाहै खाग बिहार ।
बिहु चुहव बके हुम्रा, ग्रस ग्रनै ग्रसवार ।।

मूळवे पड़तै थकै थाहरू नूं घाव कीयो, तेसूं ग्रसवार ग्रर घोड़ो च्यार बटका हूवा । ते ऊपर वेसवटै दूहो कह्यो—

सिर पड़तै सांगावते, ग्राछटीयो केवांण ।
ताहर तणो ज थाहरू, पड़ीयो छंडै प्राण ।।[1]

३. बीजानंद चारण सयणी से विवाह करने की शर्त समय पर पूरी नहीं कर पाता । इस पर सयणी हिमालय में गलने के लिए चली जाती है और अन्त में बीजानंद भी उसका पीछा करता है :—

ताहरां सयणी जाई हीमाळै गळी । बीजाणंद पिण हीमाळै गळियो :—

ग्रो बागड़ ग्रो बेकरो, गोरड़ियां रा गाम ।
बीजाणद मिलिवा तणो, हियै रहैसी हाम ।।[2]

दुःखान्त बातों में प्रेमकथाएं अधिक हैं । 'बींझरै ग्रहीर री वात', 'मोमल महेन्दरै री वात', 'खींवै ग्राभल री वात', बाघी भारमलो री वात' और 'नागमती नागजी री वात' आदि इसी प्रकार की हैं ।

दोनों रूप

अनेक राजस्थानी बातें अलग अलग दुःखान्त और सुखान्त दोनों रूपों में मिलती हैं । मूलरूप में वे कथानक दुःखान्त ही हैं परन्तु सामान्य प्रवृत्ति के कारण उनको सुखात भी बना दिया गया है । उदाहरण देखिए :—

१. उठै बूबनां रो पिण हियो फाटो । तरै श्रीपातिसाह पधारे नै जलाल बूबनां जूजई घोर माहै घातीया । रात रो पातिसाहजी घोर जलाल री ग्रर बूबनां री घोर माथै डेरा दीदा । परभात हूयां श्रीपातिसाह गोर जोवाड़ै तो जलाल नै बूबनां, एकै घोर माहै जलाल नै बूबना भेळा थया है । दूहो :—

गाहांणी योठोह, हीयड़ो काढि कपास ज्यूं ।
पाछै कुन रह्योह, तन डोड ज्यूं सवलणी ।।[3]

इस बात में जलाल और बूबना को अंत में कब्र में मिला कर संतोष कर लिया गया है । परन्तु इसी बात के रूपान्तर में कथानक को सर्वथा सुखान्त बना दिया गया है । वहाँ शिव पार्वती प्रकट होते हैं :—

---

१. मूलवै सांगावत री वात, बा. ग्रू. प. २. रा. वा., प्रथम भाग, पृष्ठ १५-१६.
३. जलाल गाहणी री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

तद पारवती हाथ जोड़ विनय करी, 'महाराज, एक बार उवं दोनूं प्रेमी मोनूं दिखावो।' जद श्री संकर भोलेनाथ नादिया सूं उतर प्रवसे चोमटं मूं धूळ हटाय, जलाल बूबना समीप लेटिया दिखाया। सो देख गद् गद् होय कही :—

जीवदान देवहु इन्हें, मरण जोग ये नांहि।
संकर भोळानाथ मैं, करू' विनय तुम पाहि ॥

पारवती रो हठ देख कैलासनाथ भ्राप उण रै छींटा दीन्हा, सो दोनूं जी उठीया। सामने श्री संकर पारवती नूं देख स्तुति करी। जद महादेव पारवती रजामद होय कही, 'आज सु तीसरै दिन भ्रगतमायसी फौत होयसी। थारै टीको होयसी।' इतरी कहि सिव-पारवती अलोप हुआ।[१]

प्रथम उद्धरण में जलाल-बूबना की कब्र मक्का में है। दूसरे उद्धरण में वे पुन-र्जीवित होकर शिव-पार्वती की स्तुति करते है। उन्हें राजपद प्राप्त होने का वरदान मिलता है। इस प्रकार मुसलमानी कहानी एक हिन्दू बात में बदल गई है।

२. सोहणी महियार की एक बात का अन्त इस प्रकार होता है :—

तेड़े कारण छंडिया, सांझी सूना जग।
प्राव सुगंधी सोवणी, मीनड़ियां गळ लग ॥

महियार विलाप करि रह्यो। वांसला ही माईत सासू सुसरां माटी सरव विलाप कर रहिया। घणु' ही पाली पिण रही नहीं, कुमौत मुई।[२]

इसी बात के एक अन्य रूप का अंत इस प्रकार होता है :—

जाळ काढीयो, महा सु मछी नीसरीया। एक मोटो मछ दीठो, उवं निजीक आणीयो। ताहरां कहै 'भीवरां नुं', ओ थे मछ चीरो।' ताहरां महीयार कहै, 'इये में सोहणी छै।' ताहरां भीवरां नूं कहै, 'ओ मछ भली भांत चतुराई सुं चीरो।' ताहरां मछ चीरीया। मांही सुं सोहणी जीवती नीसरी, सावचेत हुई मूंहडे बोली। महीयार राजी हुवो। ताहरां महीयार कहे :—

थां कारण म्हां छुटीया, साझै सूना मग्ग।
प्राव सुगंधी सोहणी, विळकुळती गळ लग्ग ॥

ताहरां सोहणी कहै, 'महीयार, सुण। मैं ही वर घर कुळ री लाज इतरा छाडि तोसुं लागसुं।.........बधाई घणी वहिची। सोहणी महीयार घरे वासो। सुख सुं महीयार सोहणी रमैं छै, केळि करै छै, सुख भोगवै छै।[३]

मिश्रित रूप

कई बातें ऐसी हैं, जो दुःखान्त हैं परन्तु उनके कथासूत्र को आगे खींच कर सुखान्त

---

१. रा. बा. सं. पृष्ठ १२४-१२५. २. द. वि., पृष्ठ ८६.
३. सोहणी री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

बना दिया गया है। ऐसी स्थिति में एक नायक के बाद दूसरा पात्र नायकत्व ग्रहण कर लेता है :—

१. जखड़ा अपने शत्रु भीलों के बीच फंस कर मारा जाता है और उसकी स्त्री पकड़ ली जाती है। फिर उसकी दुर्दशा होती है :—

वळै कह्यो, 'हमसां सांपेरो गोबर भेळो करावो नै थपावो। नै दोय अढाई मण री धरती दोळो बैसाणो नै सवा मण धान हमेसा पीसाड़ो। नै अरटियै पाव एक सूत कतावो। पुराणा जव सेर एक खावा ने द्यो। नै अभूनं नोहरै पड़ी राखो। हमेसा दिन ऊगतै पचास पैंजारां री द्यो।'[1]

फिर जखड़ा का छोटा भाई मुखड़ा इस दुर्गति से अपनी भाभी का उद्धार करता है और अंत में वह सती हो जाती है :—

'देवर, थांरी घणी वेल पसरो, पूतरा पोतां सूं वधो, धान धीणो धापो, घणो राज चढतो होज्यो। कोई वळै रजपूत रो बेटो इसी भांत वैर लेज्यो। पिण यो पापणो नै लाकड़ी दे ज्यूं पाप तो कहै नहीं पिण क्यूं हळकी होऊं। थांहरा भाई री खवासी मांहे रहूं।' तरै मुखड़ै कह्यो, भली विचारी। तद अरोगी चिण सत्य करायो, तिका सत्यलोक पोंहती।[2]

१. साहब बहलीम दगे से मारा जाता है और फिर उसका छोटा भाई अपने शत्रुओं को समाप्त करता है। अन्त में उसकी भाभी पल्लू सती होती है :—

देवर नूं वधाय ने कहै छै, 'कै इतै तो वाट जोई थी कै देस में थांरी आण फिरै, सू सब थांरी आंण हुई। सु हमैं मोनूं लकड़ी देवो।' तरै रायब कहै छै, 'आपणै बलण री रीत न छै' :—

रीत अकीधी हूं करूं, बीजो फेर करंत।
सायब कंथ सिधाविया, पैंलो रहू न परंत॥

आ म्हारी जीभ काटूं—

कर गह काटूं जीभ नूं, कांनां बिहूं सहत्त।
सायब साथै संपड़ै, सत्ती पैंला सत्त॥

नै मांमाणां तळाव पै सत्ती कर काठ दे नै पाछो वळ्यो—

रातै मैं बहलीम सा, साहब भाई होय।
भोजाई पैंला जसी, कब्बर होसी मोय॥[3]

अनेक राजस्थानी बातें ऐसी है, जिनके अन्त में नायक अपने वचन का पूरा निर्वाह

---

१. रा. वा., पृष्ठ १५०. २. वही, पृष्ठ १५३-१५४.

३. बहलीम री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

करके मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। ऐसी बातें देखने में भले ही दुःखान्त प्रतीत हो परन्तु साथ ही वे सुखान्त भी हैं। इन में नायक का शरीर नहीं रहता परन्तु उसका यश-शरीर स्थित हो जाता है। नायक अपने प्रण के सामने अपने शरीर को नगण्य समझता है। वह अपनी आन को, अपनी बात को सर्वाधिक महत्त्व देता है। अन्त में वह देह त्याग कर भी अपनी बात बनाई रख लेता है। उदाहरण :—

१. हमीर अपने पिता के सामने प्रकट करता है कि योद्धा गर्दन कटने पर भी शत्रु को मार ही डालता है और अन्त में वह ऐसा ही कर दिखलाता है—

दोनै जणा खेत रहीया। माथै पड़ीया हर्क-बाहदर नूं पण पाड़ीयो। तिण उपर दूहो :—

वोल अटंका बोलीया, निसचै निरवहीयाह।
मारणहारो मारीयो, धूकड़ वत कहीयांह ॥[1]

२. चार भाटी भाई रणक्षेत्र में खेत रह कर अपने कर्तव्य पर प्राण न्योछावर कर देते है :—

ताहरा छोकरी साथ हुंती, तिकै कह्यो, 'बहूजी, आगै हालो।' सु आगै जावै तो घणां योधा मांहे च्यार भाई भेळा गरो हुवा पड़ीया छै। इण भाती देख नै फेर दूहो कहे :—

वेलीडा बलिहार, कर्मा जिकै वरसै कनै।
हेकण छीनै हार, पड़ीगा जिमै मोती पड़ै ॥
अंता तंत विधूळीया, बातर थया गरट।
तोय न छंडै साहिबो, मूछां तणो मरट ॥[2]

३. पाबूजी राठौड नै चारणों से शर्त पर उसकी घोड़ी ली थी कि वे अपना सिर देकर भी उसकी गायों की रक्षा करेंगे। अंत में उन्होंने ऐसा ही कर दिखलाया :—

इतरा मे पाबूजी ओचक आयं नै पड़िया अर धण घेर नै पाछा फिरिया। पण एक वाछड़ो आयो नही, जिण सूं दूजी बार भळै खीचियां रै लारै गया। तठै खीचिया पाबूजी नूं एकला देख नै घेरिया। घमासाण माचियो। तठै बीद रे वेस माहे ज पाबूजी काम आया। सोढी साथे सनी हुई।[3]

५. शाह अमीपाल ने मरते दम तक अपने प्रतिद्वन्दी को समाप्त करके बात रखली :—

आगै अमीपाळ साह खेत में सूतो छै, घावै लोही भमकै छै। एकै तरफ रा हथियार वाधा छै एकै तरफ रा हथियारा सूं लड़ियो छै। ताहरां तरवरतखान बोलियो, 'अमीपाळ, तू कहता था मुवा पछै लडूं, सू अब कदि लड़ेगा ?' इतरै कहंता ऊपड़ियो। काढि कटारी नै

१. वात अरजन हमीर भीमोत री (साधना, अंक ७). २. भाटी वरसै तिलोकसी वात (बा. इ. प.).
३. रा वा. सू. पा, पृष्ठ २११.

तरवर खान रै पेट में मारी। तरवर खान ढहि पड़ियो, जीव नीसरि गयो। एकै तरफ तरवरखान पड़ियो, एकै तरफ धमीपाळ साह पड़ियो। बेऊं काम आया।[1]

५. चांपानेर के स्वामी प्रतापसिंघ चौहान ने साका किया, जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करता है :—

पछै जद गढ भिळियो अर (रजपूत) काम आवण लागा, तदै रजपूताण्यां आग मांहे पड़ै। सइयो बांऊलियो पातिसाह कन्है ऊभो दिखावै, 'जु श्री फलाणो रजपूत अर या बुद पड़ी तिका वैर।' तद पातिसाह देख अर कह्यो, 'जु शाबास ऐ रजपूत अर ऐ रजपूताण्यां।'[2]

उपर्युक्त उद्धरणों में बात-नायक मृत्यु को प्राप्त करके भी गौरवान्वित होते है। असल में यह मृत्यु नही है, मरण-महोत्सव है। साका करने वाले वीरों का सर्वस्व समाप्त होता है परन्तु उनकी कीर्ति स्थिर रहती है। ऐसी स्थिति में उनसे सम्बन्धित बातों को सर्वथा दुःखान्त नही कहा जा सकता। यही कारण है कि कवियों ने ऐसे नरसिंहों को स्वर्ग में पहुँचा कर संतोष माना है, जहाँ सब प्रकार से सुख ही सुख है।

क्षेत्र-विस्तार

ध्यान रखना चाहिए कि सामान्यतः राजस्थानी बात का कथानक उसके लेखक की स्वतंत्र उद्भावना नहीं है। उसे वह या तो इतिवृत्त के रूप में ग्रहण करता है या किसी लोककथा से लेता है। इस प्रकार प्राप्त कथानक को बात के रूप में प्रस्तुत करने की भाषा-शैली उसकी अपनी चीज अवश्य होती है।

राजस्थानी बातों में केवल वर्तमान राजस्थान से सम्बन्धित ही नहीं परन्तु मालवा, गुजरात, सिंध एवं पंजाब के भी अनेक कथानक ग्रहण किए गए हैं। इसका स्पष्ट कारण यह है कि ये प्रदेश राजस्थान के सीमावर्ती हैं और राजस्थान से जुड़े हुए है। विक्रमादित्य एवं भोज सम्बन्धी बातें तो प्रसिद्ध ही हैं। इसी प्रकार सयणी, जसमल और सोरठ आदि से सम्बन्धित बहुसंख्यक गुजराती कथानक राजस्थान में सर्वथा आत्मीय समझे जाते है। इस दृष्टि से राजस्थान एवं गुजरात तो इकाई के रूप में प्रकट है। सिंध के लोकप्रिय कथानक 'साहनी महिवाल' की बात राजस्थानी में है। इसी प्रकार यहाँ पंजाबी लोकवीर राजा रिसालू के विषय में भी विस्तृत बात है। इतना जरूर हुआ है कि स्थान भेद के अनुसार राजस्थानी बातों में कथानक थोड़े-बहुत बदल गए है।

इस विषय में एक उदाहरण दिया जाता है। गुजरात में लोढण-खोमरो नामक प्रेमख्यान प्रचलित है, जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है :—

---

१. रा. वा., प्रथम भाग, पृष्ठ ३६-३७.

२. वही, पृष्ठ २०-२१.

लोडण अनुपम लावण्यमयी थी परन्तु युवावस्था में प्रवेश कर लेने पर भी उसने अविवाहित रहने का निश्चय कर रखा था। एक बार संघ के साथ वह द्वारिका की यात्रा पर रवाना हुई। वह अपने प्रदेश खंभात से चल कर जामनगर राज्य के रावळ नामक गाँव में पहुँची। यह अहीरों की बस्ती थी। संघ ने वहाँ नदी तट पर डेरा डाला। गाँव के लोडण के वैराग्य की चर्चा पहुँची और वहाँ की स्त्रियाँ उसे देखने के लिए आने लगीं। गाँव के मुखिया के खीमरा नामक जवान बेटा था। उसने भी लोडण को देखना चाहा परन्तु वह पुरुष का दर्शन नही करती थी। अतः खीमरा नारी वेश में अपनी भावज के साथ लोडण के डेरे में पहुँचा। लोडण ने आगन्तुक महिलाओं को गले लगा कर उनका स्वागत किया। इसी प्रकार जब वह नारी वेशधारी खीमरा से मिली तो उसके स्पर्श से लोडण के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। इधर खीमरा को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। उन दोनों ने एक नई दुनियां देखी और इस प्रथम भेंट में ही उन में प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो गया। इस समय तो खीमरा गाँव की स्त्रियों के साथ लौट आया परन्तु फिर वह रात पड़े लोडण से मिला। लोडण को तीर्थ यात्रा पर जाना था। उसने देवदर्शन करके केवल आठ दिन बाद ही लौटने का खीमरा को वचन दिया और वह विदा हो गई। खीमरा इतना वियोग भी सहन न कर सका और उसकी मृत्यु हो गई। जब लोडण लौट कर आई तो उसने खीमरा का स्मृति-पाषाण देखा। इस पर अपने रक्त का सिंदूर चढा कर उसने भी प्राण त्याग कर दिया और एक के साथ ही दूसरा स्मृति-पाषाण भी खड़ा हो गया।[१]

राजस्थान में यही कथानक 'आभल-खींवरो' के नाम से प्रसिद्ध है। राजस्थानी बात का सारांश इस प्रकार है :—

चोटियाळा गढ़ का राजकुमार खींवसिंह बड़ा शक्तिशाली और रूप यौवन-सम्पन्न था। उसने एक दिन अपनी भावज से सुना कि उसकी बहिन आभलदे इतनी सुकुमार है कि उसे एक शशक का बाल भी कठोर एवं असह्य अनुभव होता है। ऐसा सुन कर खींवसिंह आभलदे से मिलने के लिए उसके गाँव पहुंचा। वस्तुतः वह परम सुन्दरी और अत्यधिक सुकोमल थी। खींवसिंह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। साथ ही उसके प्रति भी आभलदे के हृदय मे प्रेम का प्रवाह उमड़ चला। इस प्रकार प्रेमबन्धन में बंध कर खींवसिंह अपने गाँव लौट आया। इधर आभलदे अपने हृदय को न रोक सकी और वह तीर्थ यात्रा (पुष्करस्नान) का बहाना लेकर खींमसिंह के गाँव आ पहुँचा। परन्तु इन दो प्रेमी-हृदयों का एकीकरण नहीं हो सका क्योंकि एक दूसरे ही विवाद में खींवसिंह मृत्यु को प्राप्त हो गया था।[२]

---

१. सोरठी गीतकथाओं (झवेरचंद मेघाणी) पृष्ठ १०४-१०५ के आधार पर.

२. अप्रकाशित बात.

स्पष्ट ही एक कथानक के ये दो रूप है। इन में आंतरिक समानता है। वातावरण के अनुसार कई घटनाएं बदल गई हैं। गुजराती कथानक की लोडण (अथवा लोडी) और राजस्थानी कथावस्तु की भाभलदे मूलरूप में एक ही पात्र है। दोनों कथानक दुःखान्त है परन्तु पात्रों की परिस्थिति में अवश्य अन्तर है।

प्राचीनता

राजस्थानी बातें इतिहास से अतिरंजित हैं परन्तु अनेक बातों पर गहराई से ध्यान देने पर प्रकट होता है कि उनकी वस्तु अति प्राचीन है और उसे नई रंगत में प्रस्तुत कर दिया गया है। उनमे अनेक अति प्राचीन कथानक नए रूप में प्रकट हैं और वे ऊपरी तौर पर देखने से सर्वथा राजस्थानी विदित होते हैं। कई बातें ऐतिहासिक रंगत में न होकर लोककथा के संवारे हुए रूप में हैं। इस सम्बन्ध में आगे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं :—

१. ऋग्वेद (१०/९५) में पुरूरवा और उर्वशी की प्रणयकथा की चर्चा है। इसी प्रकार यह प्रसग शतपथ ब्राह्मण (९/१) में भी उपस्थित है। परन्तु विष्णु पुराण की यह प्रेमकथा विकसित रूप में दी गई है, जिसका सार निम्न प्रकार है—

नृपति पुरूरवा ने अप्सरा उर्वशी के रूप माधुर्य पर मुग्ध होकर उस से प्रणय की याचना की। उसने नृपति का पत्नीत्व स्वीकार करने के लिए कुछ शर्तें प्रस्तुत कीं। पुरुरवा ने उर्वशी की सभी शर्तें स्वीकार कर ली और वे दोनों पति-पत्नी के रूप में रहने लगे। इस प्रकार कुछ समय बीता। परन्तु गन्धर्वों को यह प्रणय पसन्द न था। उन्होंने ऐसी लीला की कि पुरूरवा की शर्तें टूट गई और उर्वशी गंधर्व-लोक चली गई। राजा उसके विरह में दुखी हुआ और वन वन भटकने लगा। एक दिन उसने कुरुक्षेत्र के सरो-वर में अन्य अप्सराओं के साथ उर्वशी को देखा। राजा को शोकाकुल देख कर उर्वशी ने कहा, 'राजन्, मैं गर्भवती हूँ। एक वर्ष बाद आना। मैं तुम्हें पुत्र भेंट करूंगी।' इस पर प्रसन्न होकर पुरूरवा अपनी राजधानी को लौट आया। समय पर उर्वशी ने उसे आयु नामक पुत्र भेंट किया। फिर नृपति ने गंधर्वों को भी प्रसन्न कर लिया और यज्ञ द्वारा उर्वशी भी उसे प्राप्त हुई।

यही कथानक राजस्थानी बात में भी सहज ही देखा जा सकता है। वीरमदे सोनगरा विषयक बात में (राजस्थानी वातां) प्रारम्भ में यही कथानक परिवर्तित रूप में द्रष्टव्य है। अप्सरा वहां कान्हड़दे का पत्नीत्व शर्त के साथ स्वीकार करती है। उसके वीरमदे नामक पुत्र पैदा होता है। फिर शर्त टूटती है और अप्सरा चली जाती है। इसी प्रकार पाबूजी री बात (राजस्थानी वातां). में शर्त के साथ धांधलजी का पत्नीत्व अप्सरा स्वीकार कर लेती है और पाबू नामक पुत्र पैदा होता है। फिर शर्त टूटती है और अप्सरा आकाश में उड़ जाती है। ये दोनों बातें आगे विस्तार को प्राप्त करती हैं।

बात नायकों के जन्म का प्रसंग सहज ही पुरूरवा एवं उर्वशी का स्मरण करवा देता है। प्राचीन कथानक का 'आयु' ही इन में वीरम अथवा पाबू बन गया है। इस प्रकार लोक-मुख पर उपस्थित यह पुरातन कथा राजस्थानी बातों में सर्वथा राजस्थानी बन कर प्रकट हुई है। बातों के पात्र ऐतिहासिक है परन्तु उनके जन्म का अलौकिक प्रसंग सर्वथा ऊपरी एवं कल्पित है, जो उनको गौरव प्रदान करने के लिए वस्तु के साथ जोड़ दिया गया है।

२. पद्मपुराण (भूमिखण्ड) में महाराजा इक्ष्वाकु और शूकर-शूकरी की कथा दी गई है। वहाँ इस उपाख्यान को 'पुराना इतिहास' कहा गया है। अतः यह कोई प्राचीन लोककथा हो सकती है उसका सारांश इस प्रकार है :—

इस बार मनुपुत्र महाराजा इक्ष्वाकु अपनी पत्नी सुदेवा को साथ लेकर गंगा के तटवर्ती वन मे शिकार खेलने के लिए गए। वहाँ एक बलवान शूकर अपनी पत्नी, पुत्र, पौत्र एवं बांधवों सहित रहता था। महाराजा के आने की खबर सुन कर वे सब युद्ध के लिए तैयार हुए और कोई भी भाग कर न गया। युद्ध हुआ, जिसमें दोनों ओर के कई योद्धा मारे गए और कई भाग भी छुटे। परन्तु शूकर अपने पुत्रों सहित रणक्षेत्र में डटा रहा। अन्त में महाराजा की गदा के प्रहार से उसका प्राणांत हो गया। देवताओं ने उस पर पुष्पवृष्टि की और वह विष्णु के श्रेष्ठ धाम को प्राप्त हुआ। अब शूकरी और उसके चार पुत्र शेष रहे। उसने तीन छोटे पुत्रों को वहाँ से रवाना कर दिया और स्वयं बड़े पुत्र के साथ युद्धभूमि में जमी रही। फिर युद्ध हुआ। शूकरी का पुत्र मारा गया और वह घायल हो गई। महारानी सुदेवा ने उसके पास आकर उस पर पानी छिड़का तो वह मनुष्य वाणी में बोलने लगी। पूर्वजन्म के कर्म के प्रभाव से वे शूकर-शूकरी के रूप में प्रकट हुए थे। अब उनका पाप नष्ट हो गया और शूकर के समान वह भी विमान में बैठ कर परमधाम वैकुंठ को चली गई।

राजस्थान में 'दाढाळे एकलगिड़ री बात' (परंपरा भाग ६-७) अत्यन्त प्रसिद्ध है। असल में देखा जाय तो उस में उपर्युक्त पौराणिक कथानक का राजस्थानी रूपान्तर प्रकट हुआ है। महाराजा इक्ष्वाकु के स्थान पर सिरोही का राजा बीसलदे वाघेला है। उसी प्रकार युद्ध होता है और अंत में शूकर परिवार का एक सब से छोटा बच्चा वंशरक्षा के लिए सुरक्षित स्थान पर भेज दिया जाता है तथा अन्य सब मारे जाते हैं। शूकरी सती होती है। यहाँ भी शापमोचन का प्रसंग है।

३. सुवण्ण मिग जातक की कथा में एक मृग शिकारी के जाल में फंस जाता है और उसकी मृगी उसके स्थान पर मरना प्राण देने के लिए शिकारी से प्रार्थना करती है। इस से प्रभावित होकर शिकारी मृग को मुक्त कर देता है। इसी प्रकार नन्दिय मिगराज जातक की कथा में एक राजा मृगों की शिकार में तत्पर है। इस से मृगयूथ दुःखी होकर प्रतिदिन एक मृग राजा को भेंट करने का निर्णय करता है। राजा इस

बात को मान लेता है। अंत में नंदिय मृगराज की बारी आती है और राजा उसके शील से प्रभावित होकर हिंसा का त्याग कर देता है।[1]

इन दोनों जातक कथाओं का संयुक्त रूप सहज ही, राजस्थानी बात में देखा जा सकता है। 'ठग राजा की बात'[2] में एक अवान्तर वार्ता की वस्तु का सारांश इस प्रकार है :—

एक राजा को शिकार का व्यसन था। वह मारता तो दिनप्रति एक हरिण था परन्तु अन्य हरिण इस से पीड़ित होते थे। अतः उन्होंने प्रतिदिन एक हरिण राजा के दरवाजे स्वयं भेजने की बारी बांध ली। तदनुसार एक दिन एक खोड़े (लंगड़े) हरिण की बारी आई। उसे चलने में विलम्ब हो गया और वह रात को एक झाड़ी के नीचे ठहर गया। वहाँ एक हरिणी उसकी पत्नी बन गई और फिर वे दोनों ही राजा के दरवाजे पहुंचे। वहाँ एक दूसरे के लिए प्राण देने का हठ किया। राजा एवं रानी ने भी यह तमाशा देखा। रानी ने महल में से अपनी दासी के हाथ राजा को झूठा संदेश भेजा कि वह जलकेलि के तालाब में डूब गई है। राजा घबरा कर महल में आया और बड़ा दुःखी हुआ। इस पर रानी ने प्रकट होकर वियोग की पीड़ा का मर्म राजा को समझाया। राजा ने हरिण और हरिणी दोनों को छोड़ दिया और शिकार करना बंद कर दिया।

बात की वस्तु में रानी एक नया पात्र प्रकट हो गया है। अन्य प्रसंग जातक कथाओं वाले ही हैं।

४. आवश्यक चूर्णि में एक बनिए की चतुर बहू की कहानी है। वह बनिया अपनी बहू को एक कुंए में रखता है और यह आज्ञा देकर परदेश जाता है कि उसके लिए एक गट्ठर कपास को काते और उसी के औरस तीन पुत्र भी पैदा करके वह बहू ही उसे परदेश से लौटा कर लावे। साथ ही वह कुए से भी न निकले। वह चतुर स्त्री पहिले से ही तैयार करवाई हुई एक सुरंग के रास्ते अपने पीहर जाती है। फिर वेश्या का रूप धारण कर वहीं पहुंचती है, जहाँ कि वह बनिया रहता है। वहाँ वह उस से तीन पुत्र पैदा करती है। कालान्तर में वह उसी के साथ लौट आती है और मार्ग में अपने पीहर ठहर जाती है फिर सुरंग के मार्ग से अपने तीनों पुत्रों सहित कुंए में आ बैठती है। बनिया घर आकर उनको कुंए में से निकला देखता है।[3]

यही कथानक साधारण परिवर्तन के साथ 'साहूकार री बात'[4] का है। उसमे एक साहूकार परदेश जाते समय अपनी स्त्री के लिए पीछे से कई काम पूरे करने का आदेश देता है। प्रथम, वह पुत्र को जन्म देवे और शीलवती रहे। दूसरे, वह बछेरे

---

१. जातक, तृतीय खण्ड, पृष्ठ ३४३-३४७ और पृष्ठ ४२४-४२८. २. हस्तप्रति, अ. सं. पु. बी.
३. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ (डॉ. जगदीश चन्द्र जैन) प्रथम संस्करण, पृष्ठ ७५-७६.
४. राजस्थानी, जनवरी, १६४०.

मंगवा कर घोड़ों की पायंगाह तैयार करावे । तीसरे, वह हवेली बनवा लेवे । इसके बाद वह चला जाता हैं । इन में दो कार्य कठिन न थे । ये रुपए खर्च करके करवा लिए जाते हैं । पुत्र पैदा करने के लिए साहूकार की स्त्री को गूजरी के रूप में उसी नगर में जाना पड़ता है, जहाँ उसका पति गया हुआ है । वह उसे लुभा कर उस से गर्भ धारण करती है और पुत्र सहित घर लौट आती है । जब साहूकार स्वयं घर आता है तो सभी काम पूरे मिलते हैं । उसकी स्त्री गूजरी का वृत्तान्त प्रकट करके उसे चुप कर देती है ।

५. कथासरित्सागर के लावाणक नामक तृतीय लम्बक में 'प्रव्राजकस्य वानरस्य च कथा' दी गई है । इस कथा में एक मौनी मठाधीश एक सेठ के घर भोजन करने के लिए आता है और उसकी परम रूपवती कन्या पर आसक्त हो जाता है । वह सेठ से कहता है कि वह कन्या उसके लिए घातक है, अतः अपनी रक्षा हेतु उसे एक संदूक में बन्द करके नदी में बहा दिया जावे । सेठ डर कर ऐसा ही करता है । महन्त उसे प्राप्त करने के लिए अपने शिष्यों को आज्ञा देता है कि गंगा में एक संदूक बहती हुई आएगी उसे सीधे ही उठा के उसके पास ले आया जावे । संदूक नदी में बहती है । संयोग से उसे एक राजकुमार देख कर खोल लेता है और उस में से निकली हुई रूपमयी कन्या से स्वयं विवाह कर लेता है । उसके साथ वाली संदूक में एक बंदर को बंद करके बहा दिया जाता है । अन्त में संदूक महंत के पास पहुँचती है । वह उसे एकान्त में खोलता है और बंदर के द्वारा अपने नाक कान आदि नष्ट करवा कर हंसी का पात्र बनता है ।

'गोदावरी तीर रो जोगी'[1] नामक बात की कथावस्तु भी यही है । बात में पानी में बहती हुई संदूक को नदी तट पर कपड़ा धोने वाले धोबी को देख कर खोलते हैं और वे रूपवती कन्या को राजा के पास ले जाते हैं । राजा कन्या से पीछे का पूरा वृत्तान्त सुन कर उसके साथ विवाह कर लेता है और संदूक में उसी प्रकार एक बन्दरी को बन्द करके वापिस पानी में बहा देता है । इस बंदरी के द्वारा आगे चल कर महंत की दुर्गति होती है ।

६. कवि भीम प्रणीत 'सदयवत्स वीर प्रबंध'[2] में तुम्बन नगर का वृत्ता[…] भाग में एक स्वतंत्र कथा है । उसका सारांश इस प्रकार है—

राजकुमार सदयवत्स के तीन मित्र हुए । […] एक बनिया, तीसरा ब्राह्मण था । वे चारों तुम्बन नगर गा[…] के लिए सेठ बहुत समय पहिले ही मर जाने के बाद भी […] घर राजकुमार ने सेठ को जला देने के लिए कुछ धन […] किया को श्मशान में ले गए । चारों मित्रों ने बारी […] देना

१. म. भा., भाद्रपद २०१०. २. शार्दूल राजस्थानी

कि प्रातः काल उसे जला दिया जावे। पहला पहरा बनिए का था। उसकी एक 'सिकोतरी' से भेंट हुई। पहरेदार ने उसका हाथ काट कर रख लिया और वह भाग गई। दूसरे पहरे में ब्राह्मण ने एक राक्षस को मार कर एक राजकुमारी की रक्षा की। तीसरे पहरे में क्षत्रिय ने भूतों को मार भगाया और सात बंधे हुए राजकुमारों को छुड़ाया। अन्त में सदयवत्स ने शव में प्रविष्ट बेताल को द्यूत में हरा कर शव को जला दिया। फिर प्रमाण देने पर उसे निश्चित धन मिला और सेठ की पुत्री भी उसे ब्याह दी गई।

'नांनिग छावड़ा री बात'[1] की वस्तु भी यही है। उस में चार छावड़ा राजपूत भाई नांनिग, देवंग, अर्जसी और विजैसी नौकरी की तलाश में निकले। वे पोहकरण आकर ठहरे। वहाँ एक सेठ का लड़का मर गया था परन्तु उसे जलाया नहीं जा सकता था। चारों भाइयों ने सेठ से कुछ धन लेना निश्चित किया और वे रात को बारी बारी से मुर्दे का पहरा देने लगे। फिर लगभग ऊपर वाली कहानी के अनुसार सभी घटनाएँ इस बात में भी घटित होती हैं। अंत में प्रमाण देकर नांनिग निश्चित धन पाता है और राजा अपनी पुत्री का उसके साथ विवाह करके उसे पोहकरण का राज्य भी दे देता है।

इस प्रकार स्पष्ट ही सदयवत्स इस बात में नांनिग छावड़ा बन गया है और उसके तीन मित्र उसके छोटे भाई के रूप में प्रकट हुए हैं।

७. सोमप्रभ सूरि द्वारा विरचित (सं. १२४१) कुमारपाल प्रतिबोध में पशु-पक्षियों की भाषा जानने वाली एक स्त्री की कथा है। वह आधी रात के समय एक गीदड़ की पुकार सुनती है कि नदी में बहने वाले मुर्दे के गहने कोई स्वयं ले लेवे और उसे मुझे खाने के लिए दे देवे। वह ऐसा करने के लिए चुपचाप नदी पर जाती है और गहने ले लेती है लौटते समय उसका श्वसुर उसे देख कर असती मान लेता है और फिर उसे उसके पीहर छोड़ने के लिए ले चलता है। मार्ग में एक कौआ कहता है कि पेड़ के नीचे दस लाख की निधि गड़ी हुई है, उसे कोई निकाल लेवे और मुझे दही सत्तू खिलावे। काकवाणी सुन कर वह स्त्री कहती है :—

एक्के दुन्नय जे कया, तेहिं नीहरिय घरस्स।
बीजा दुन्नय जइ करउं, तो न मिलउं पियरस्स॥

इस वचन से पीछे का सारा भेद प्रकट हो जाता है।

'परंतप जातक'[2] में भी गीदड़ वाला प्रसग लगभग ज्यों का त्यों मिलता है। तदनुसार एक राजकुमार समस्त प्राणियों की बोली पहिचान लेने के लिए मंत्र सीखा हुआ है। एक रात वह अपने महल में लेटा है और एक गीदड़िन अपने दो बच्चों को साथ लेकर पास की पुष्करणी के समीप आती है। वह अपने बच्चों से कहती है कि एक आदमी

---

१. वरदा, ७/२. २. जातक (हि. सा. सम्मेलन, प्रयाग) चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ ७३-७६.

पुष्करणी में डूब कर मरा है। उसके वस्त्र में एक हजार कार्पापण हैं तथा अंगुली में अंगूठी है। उस का मांस उनको खाने के लिए मिलेगा। इतना सुन कर राजकुमार उस मुर्दे के रुपए और अंगूठी निकलवा कर मंगवा लेता है और उसे गहरे पानी में इस प्रकार डुबवा देता है कि वह ऊपर न आ सके। इन दोनों कथानकों में राजकुमार और सेठ की बहू किसी अंश में समान ही प्रकट होते हैं।

'ठग राजा की बात' में यही कथानक कुछ विस्तार के साथ मिलता है। उस में भी एक सेठ के बेटे की बहू जानवरों की भाषा जानती है और वहाँ भी गीदड़ और काग वाली घटनाएँ दी गई हैं। यही कथानक दम्पति-विनोद की प्रथम कथा में धनमंजरी के नाम से मिलता है।

८. श्रीशुभशीलगणि विरचित विक्रमचरित्र ग्रंथ में सम्राट विक्रमादित्य के पुत्र विक्रमचरित्र की कहानी विस्तार के साथ दी गई है। उसमें राजकुमार विक्रमचरित्र का अपने पिता से मिलने का प्रसंग संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है—

सम्राट विक्रमादित्य ने बड़ी चतुराई के साथ एक विद्याधर के रूप में सुकोमला नामक राजकुमारी के साथ विवाह करके सफलता प्राप्त की और विवाह के बाद जब वह गर्भवती हुई तो उसे पीहर में ही छोड़ कर बिना सूचना दिए सम्राट उज्जैन लौट आए। पीछे से सुकोमला के पुत्र पैदा हुआ और जब वह बड़ा हो गया तो सर्व-विद्या ग्रहण करके अपने पिता से मिलने के लिए उज्जैन आया। उसका नाम देवकुमार रखा गया था। देवकुमार एक वेश्या के घर सर्वहर नामक चोर के रूप में रहा और उसने राजा के शयनकक्ष में पलंग के नीचे रखी हुई अमूल्य आभूषणों की पेटिका चुरा ली। अगले दिन से चोर को पकड़ने की चेष्टा हुई और इस प्रयास में क्रमशः कोटावल, महामंत्री, चार वेश्याएं, कोटिक जुआरी, स्वयं राजा तथा अग्निवेताल ने मुंह की खाई और कोई भी चोर को नहीं पकड़ सका। अंत में सम्राट ने हार कर चोर को पकड़ने वाले व्यक्ति को आधा राज्य देने की घोषणा की और देवकुमार अपने पिता के सामने आभूषणों की पेटिका लेकर उपस्थित हुआ। पीछे का सम्पूर्ण वृत्तान्त जान कर विक्रमादित्य परम प्रसन्न हुआ और पुत्र का विक्रमचरित्र नाम रखा।

लगभग यही कथावस्तु 'सरवैहीयै वीरमदे रै बेटै धनपाळ री वात'[1] में द्रष्टव्य है। बादशाह ने एक नवाब को वीरमदे पर आक्रमण करने के लिए भेजा। वह शाही सेना के सामने नहीं ठहर सका। वीरमदे सरवहिया अपने साथियों सहित लड़ कर मर गया और रानियों ने जौहर व्रत का पालन किया। एक छोटा बालक वंशरक्षा के लिए धाय के साथ बाहर भेज दिया गया। धाय ने बालक को बनिये का बेटा बतला कर खेमपाल नामक

---

१. हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं.बी.).

सेठ के यहाँ शरण ली। खेमपाल ने उसका पुत्र के समान पालन किया और उसका नाम धनपाल रख दिया। बड़ा होकर धनपाल अनेक विद्याओं में निपुण हो गया। विशेष रूप से उसने संगीत विद्या का अभ्यास किया। जब उसे धाय से अपने पूर्ववृत्तान्त का पता चला तो वह बादशाह की राजधानी में गया और खेमपाल सेठ की हवेली में उसके पुत्र के रूप में रहने लगा। एक दिन दरबार में उसने संगीत-विद्या के ज्ञान से बादशाह को प्रसन्न कर लिया और फिर वहाँ बराबर आने जाने लगा। अब उस ने चोर कला का चमत्कार दिखलाने का निश्चय किया और बादशाह के यहाँ बड़ी चोरी की। उसको पकड़ने की चेष्टा प्रारम्भ हुई। क्रमशः चौकीदार, कोटवाल, नवाब और लखबाहू ने उसको पकड़ने के प्रयास में अपनी दुर्गति करवाई। अन्त में बादशाह ने चोर को पकड़ने के लिए आधा राज्य देने की घोषणा की। तब धनपाल उसके सामने स्वयं उपस्थित हो गया। बादशाह उसकी चतुराई से परम प्रसन्न हुआ और उसका पीछे का वृत्तान्त जान कर उसे उसके पिता वीरमदे सरवहिया का राज्य दे दिया।

इस कथानक से स्पष्ट प्रकट होता है कि एक ही लोककथा को जहाँ विक्रमादित्य के साथ जोड़ा गया है, वहाँ इस बात में उसे ऐतिहासिक रंगत दे दी गई है। मूलरूप में चीज एक ही है।

राजस्थानी बातों के कथानक की प्राचीनता का विषय अति विस्तृत है और इस के सम्बन्ध में प्रचुर उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। परन्तु यहाँ कुछ चुने हुए संकेत ही दिए गए हैं। भारत में काफी पुराने समय से लौकिक कथानक विद्वानों द्वारा अपने ग्रंथों में संकलित किए जाते रहे है। इसी प्रक्रिया से वे राजस्थानी बातों में भी प्रकट हुए हैं। यह प्रसंग जितना उपयोगी है, उतना ही रोचक भी है। समय और स्थान के भेद से एक ही कथानक न्यूनाधिक परिवर्तित भी हो जाता है। उपर्युक्त उदाहरण इस तत्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट करते हैं।

कथानक-रूप

राजस्थानी बातों का कथानक सरल, संयुक्त तथा समायोजित रूपों में मिलता है। सरल कथानक में एक ही कथा-सूत्र होता है। संयुक्त कथानक में एकाधिक कथासूत्रों का योग दृष्टिगोचर होता है परन्तु इनमें एक सूत्र प्रधान रहता है और अन्य उसके सहायक होते है। समायोजित कथानक में अनेक कथासूत्र किसी अंश में स्वतंत्र अस्तित्व रखते है। ऊपर के अनेक उदाहरणों में सरल कथानक का रूप सहज ही देखा जा सकता है। यह विषय अपने आपमें स्पष्ट है। अतः आगे कथानक के अन्य दो रूपों की विशेष चर्चा की जाती है।

संयुक्त कथानक

इस प्रकार के कथानक का विश्लेषण करने से अनेक रोचक सूचनाएं सामने आती हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. डहरू की बात में कूंतल देवड़ा काफी समय बाद अपनी ससुराल जाता है। वहाँ वह अपनी पत्नी से रात के समय मिलता है और उसके कान की मोतियों की लडी में से तीर निकालता है। यह उसका नियम है। ऐसा करने पर ही उसका अफीम का नशा चढ़ता है। तीर निकालने पर वह कहता है कि क्या संसार में मेरे समान दूसरा कोई है? उसकी पत्नी इस क्रिया से डरती है। इस बात की चर्चा सुन कर उसकी सास उसे अपने दूसरे दामाद के पास भेजती है कि वह उसकी पगड़ी उठा कर ले आएगा तो शक्तिशाली माना जाएगा। देवड़ा उसके पास जाता है परन्तु उसके जूते भी धरती पर से ऊपर नहीं उठा सकता। तब वह उसकी प्रशंसा करता है। ऐसा सुनकर उसका पड़ोसी ताना मारता है कि वह कैसा शक्तिशाली है, जिसकी पत्नी को डहरू वानर उठा कर ले गया है। देवड़ा उसे साथ लेकर डहरू के पास जाता है और उस पर अपना तीर छोड़ता है परन्तु उसके लिए यह तीर मच्छर के समान है। जब वह इनके पीछे मारने को दौड़ता है तो ये दोनों भाग कर फोगसी (अजापाल) एवाळ की शरण लेते हैं। डहरू इतना बली होने पर भी फोगसी का दीवड़ा (जलपात्र) तक नहीं उठा सकता। अतः यह मान कर लौट जाता है और छीनी हुई स्त्री लौटा देता है। देवड़ा अपनी कमान तोड़ कर पत्नी सहित घर आ जाता है।[1]

कलण्डुक जातक[2] की कथा में एक सेठ की दासी का लडका भाग कर किसी सुदूर नगर में चला जाता है और अपने को सेठ-परिवार का सदस्य घोषित करके कालान्तर में समृद्धिशाली बन जाता है। इस पर एक अन्य सेठ उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर देता है। नये सेठ (दासीपुत्र) जलविहार करते हुए अपनी पत्नी के मुख पर पानी के कुल्ले करता है। इस व्यवहार से वह बड़ी दुखी होती है। इसी समय वहाँ एक तोता उड़ कर आता है और दासीपुत्र को पहिचान कर फटकार बतलाता है। इस कथानक में जाति स्वभाव का असर प्रकट किया गया है। एक राजस्थानी लोककथा में भी यही चीज देखी जाती है। एक संतानहीन राजा कहीं दूर से भंगी के दो लड़कों को मंगवा कर अपने पुत्र बना लेता है। वे अपनी बहुओं के नाक की नथ में से तीर निकालते हैं और उनके पीहर का पुरोहित आकर सब चीजों की जानकारी कर लेता है। फिर वह उन्हें फटकारता है। इस प्रकार स्पष्ट ही 'डहरू की बात' का प्रारम्भिक भाग एक स्वतंत्र एवं प्राचीन कथानक सिद्ध होता है।

इस बात के अगले भाग के सम्बन्ध में भी एक अन्य राजस्थानी लोककथा की वस्तु ध्यान देने योग्य है। तदनुसार अर्जुन श्रीकृष्ण के सामने हठ करता है कि काल की अपेक्षा मनुष्य अधिक बलशाली है। इस पर वह मार्ग में अकेला आगे बढ कर एक दानव एवं एक स्त्री को देखता है, जिसके नेत्रों से रक्तधारा बह रही है। अर्जुन उस दानव पर तीर मारता

---

१ शोधपत्रिका, १४/४. २. जातक (हि. सा. सम्मेलन, प्रयाग) खण्ड २, पृष्ठ ६६-६८.

है परन्तु उन्हें वह मच्छर समझता है। फिर पता चलने पर वह अर्जुन के पीछे दौड़ता है और अर्जुन एक चौरंगे (हाथ पैर कटा हुआ व्यक्ति) की शरण में जाकर प्राण बचाता है। बात में अर्जुन के स्थान पर देवड़ा ठाकुर है और दानव की जगह डहरू है। वहाँ चौरंगी का काम फोगसी करता है। इस प्रकार मूल रूप में बात और लोककथा एक प्राण हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण एवं विवेचन से स्पष्ट होता है कि 'डहरू की बात' में एकाधिक कथासूत्र संयुक्त रूप में वर्तमान हैं परन्तु वे परस्पर शृंखलित हैं।

२. 'रत्नमंजरी की बात'[1] की वस्तु सार रूप में इस प्रकार है — गुजरात के राजा चित्रसाल की पुत्री रत्नमंजरी रूप का निधान थी। जब रत्नमंजरी विवाह योग्य हुई तो वर उसके योग्य नहीं मिल सका। एक रात उसने स्वप्न में विक्रमादित्य के पौत्र और विक्रमचरित्र के पुत्र बललोचन को देखा और उसके रूप पर मुग्ध हो गई। उसकी सहेली चित्रा ने अनेक राजकुमारों के चित्र बना कर अपनी सखी को स्वप्न में देखे गए कुमार की पहिचान करवाई। अतः बललोचन के लिए सगाई का नारियल भेजा गया। जाने वाले पुरोहित को चित्रा ने रत्नमंजरी का एक चित्र भी साथ ही दे दिया। वह चित्र उज्जैन में बललोचन को दिखलाया गया तो वह मुग्ध हो गया। पुरोहित ने कहा कि वह रत्नमंजरी से उसका विवाह करवा देगा तो मुंह माँगा इनाम लेगा। राजकुमार ने ऐसा स्वीकार किया और सगाई का दस्तूर हो गया। समय पर बरात आई और भांवर के समय पुरोहित ने अपना इनाम माँगा। इस पर बललोचन को क्रोध आ गया कि पुरोहित ने मुहूर्त टालने की स्थिति क्यों उत्पन्न की। किसी तरह भांवर का काम सम्पन्न हुआ और राजकुमार उठ कर बाहर आ गया। पुरोहित ने उसे उलटा समझाया कि उसे रत्नमंजरी न विवाही जाकर उसकी छोटी बहिन बखतकुंवर दी गई है। अतः उसे साथ ले जावे परन्तु उसका मुंह न देखे तथा गुजरात के राज्य को लूटना प्रारम्भ कर देवे। जब उसके निशान का पत्र उसे मिले तो वह बखतकुंवर सहित आवे। तब उसके साथ रत्नमंजरी का विवाह हो सकेगा। बललोचन उसकी बात मान कर पत्नी सहित चला गया। रत्नमंजरी ने उसे अपने पास बुलाया परन्तु वह इन्कार हो गया। इस पर उसे कहा गया कि वह सात बार कहेगा तब अपना मुंह दिखलाएगी। फिर भी वह रत्नमंजरी के पास नहीं गया और पुरोहित की सलाह के अनुसार गुजरात राज्य में अपने सामंतों से लूटमार करवाने लगा। इस से राजा तंग आ गया और पुरोहित को किसी तरह झंझट काटने के लिए कहा। पुरोहित ने अपने निशान का पत्र बललोचन को भेजा और वह रत्नमंजरी को ऊंट पर अपने पीछे बिठा कर गुजरात के लिए रवाना हुआ। मार्ग में चावड़ा ठाकुर एक तालाब पर गोठ करते हुए मिले। उन्होंने रत्नमंजरी को छीन लेने का विचार किया मगर रत्नमंजरी की चतुराई से वे कुछ न कर सके। आगे जंगल में शिकार करके बललोचन ने रत्नमंजरी को

---

१. हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.

भोजन करवाया परन्तु उस से बोला नहीं। गुजरात पहुँचने पर रत्नमंजरी महल में बुला ली गई और बललोचन को समाप्त करने के लिए राजा ने उसे ऐसे स्थान पर ठहराया जहाँ रात के समय राक्षस आया करता था। बललोचन ने राक्षस को मार डाला। महल में यह खबर रत्नमंजरी को मिली कि उसका पति मृत्यु के मुंह में धकेल दिया गया है तो वह उसकी ओर आई। उसे बललोचन ने पहिचान लिया और सात बार के स्थान पर चौदह बार निहोरे करके उसका घूंघट हटवाया। वे दोनों रात को वहीं रहे। दूसरे दिन राजा को पूरा भेद मिला और पुरोहित की दुष्टता प्रकट हुई। बललोचन ने उसे क्षमा करवा दिया। राजा ने अपने दामाद का काफी सम्मान किया।

स्पष्ट ही रत्नमजरी की बात का प्रारम्भिक भाग उषा अनिरुद्ध के उपाख्यान के प्रारम्भिक अंश का ही दूसरा रूप है। इस में नायिका श्रीकृष्ण के पौत्र एवं प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध के स्थान पर विक्रमादित्य के पौत्र तथा विक्रमचरित्र के पुत्र बललोचन का स्वप्न में दर्शन करके उसके रूप-सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट होती है। इस प्रकार कथानक का विक्रमकथाचक्र से सम्बन्ध स्थापित कर दिया गया है, जैसा कि अन्य अनेक कथाओं के सम्बन्ध में भी हुआ है।

बात के आगे के अंश पर विचार करते समय सहज ही कथासरित्सागर के शक्ति-यशोलम्बक के द्वितीय तरंग में दी गई 'सिहबलस्य तद्भार्यायाश्च कथा' की ओर ध्यान चला जाता है, जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है —सिहबल नामक राजा का राज्य उसके भाई छीन लेते हैं और वह अपनी पत्नी को साथ लेकर ससुराल की ओर चल पड़ता है। मार्ग में एक जंगल आता है। वहाँ वह अकेला ही सिंह, वन्यगज तथा दस्युदल का संहार करता है। अन्त में वह ससुराल पहुंच कर अपनी स्त्री से कहता है कि वन की वार्ता किसी से कहने की आवश्यकता नहीं है। फिर शक्ति-संग्रह के लिए वह बाहर चला जाता है और पत्नी को पीहरमें ही छोड़ देता है। पीछे से उसकी रानी एक व्यक्ति का रूप देख कर उस पर मुग्ध होती है और उसे रात के समय अपने महल में खिड़की के मार्ग से बुला लेती है। परन्तु उसकी पलंग पर बैठने की हिम्मत तक नहीं होती। संयोग से वहाँ एक सांप निक-लता है और वह पुरुष को मार डालता है। इस पर वह आनन्द के मारे नाचने लगता है। यह देख कर रानी को भारी अनुताप होता है कि कहाँ तो उसका पति सिहबल और कहाँ वह व्यक्ति। उसे निकाल दिया जाता है। अन्त में सिहबल अपना राज्य वापिस जीत लेता है और अपनी रानी को लिवा ले जाता है।

सिहबल की कथा नारीचरित्र की अस्थिरता के उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत की गई है। परन्तु इस में रानी का शील खंडित नहीं होता और वह पवित्र ही बनी रहती है। रत्नमंजरी की बात स्पष्ट ही इस प्राचीन कथा का संवारा हुआ रूप है। उस में पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं और कुछ नया परिवर्तन भी हो गया है। इस विवेचन से प्रकट होता

है कि 'रत्नमंजरी की वात' में पौराणिक उपाख्यान का अंश तथा एक प्रसिद्ध प्राचीन कथा का कथानक परस्पर जुड़े हुए हैं।

३. 'प्रथीसिंघ पुंवार री अर खूबां री वात'[1] का सारांश इस प्रकार है —एक राजा के पुत्र नहीं था अतः वह दुःखी रहता था। राजा ने एक सन्यासी की सेवा की, जिसने उसे आशीर्वाद दिया कि उसके बाद उसका राज्य रह जाएगा। फिर संन्यासी चला गया और रानी ने गर्भ धारण किया। इसी बीच राजा अपना राज्य मंत्री को सौंप कर अन्यत्र चला गया। पीछे से राजा के पुत्री हुई परन्तु मंत्री ने पुत्र होने की घोषणा करवादी और वास्तविक बात छिपा ली। राजकुमार का नाम पृथ्वीसिंह रखा गया। जब वह बड़ा हुआ तो उसकी सगाई की चर्चा होने लगी परन्तु मंत्री सम्बन्ध अस्वीकार ही करता रहा। राजा अभी लौट कर राजधानी में नहीं आया था। उसने बाहर ही अपने बेटे का सम्बन्ध एक जगह पक्का कर लिया। जब विवाह निश्चित हुआ तो लौट आया और राजकुमार की बरात चली। मंत्री सम्पूर्ण भेद छिपाए हुए था वह बड़ा उदास था। अन्त में एक स्थान पर बरात ने मार्ग मे पड़ाव किया। वहाँ राजा के सामने भेद प्रकट हुआ। उनको दुःखी देखकर एक यक्ष ने अपना पुरुष रूप राजकुमार को दे दिया और स्वयं बदले में स्त्री-रूप धारण कर लिया। निश्चय हुआ कि लौट कर आते समय लिंग-परिवर्तन कर लिया जाएगा। राजकुमार का सानंद विवाह हो गया। राजा ने उसे वहाँ छोड़ दिया और स्वयं राजधानी लौट आया। कई दिन बाद राजकुमारी गर्भवती हुई तो वे विदा होकर आए। मार्ग में यक्ष ने दया करके उन्हें यों ही छोड़ दिया और वह स्वयं नारी ही बना रहा। राजा ने सब वृत्तान्त सुन कर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। समय पाकर पृथ्वीसिंह के पुत्र पैदा हुआ।

एक दिन राजा के शहर से 'धाड़ी' धन लेकर चलते बने। पृथ्वीसिंह उनके पीछे भेजा गया परन्तु वह असफल होकर लौट आया। इस पर राजा ने ताना मारा कि आखिर वह है तो स्त्री ही, उसका पुरुषत्व तो पराया है। इस ताने से पृथ्वीसिंह घर छोड़ कर चला गया और एक बादशाह के यहाँ नोकर हो गया। उसका ठाठबाट बड़ा था। बादशाह ने उसे शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए भेजा। वहाँ शत्रुओं ने उसे विवाह का लोभ देकर मारना चाहा। पृथ्वीसिंह का खूबां से विवाह हो गया। वह पद्मिनी स्त्री थी। फिर लड़ाई हुई, जिस में पृथ्वीसिंह के सब सैनिक मारे गये और वह प्राण लेकर भाग गया। कुछ समय बाद वह संन्यासी के रूप में खूबां के पास आया और वे गुप्त रूप से घोड़ों पर चढ़ कर वहाँ से भाग निकले।

अब पृथ्वीसिंह एक दूसरे बादशाह के राज्य में आया। वहाँ खूबां उसे रूमाल बुन कर देती और वह उसे बाजार में ऊंचे मोल पर बेच लाता। ये रूमाल बादशाह के सामने

---

1. हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. बी)

भी गए और उसने सारा भेद मालूम करके एक नाइन की सहायता से खूबां को दगे से अपने महल में बुला लिया । परन्तु खूबां धोल पर डटी रही । उसने पृथ्वीसिंह को गुप्त रूप से कहलवाया कि वह महल के नीचे रूई का व्यापार प्रारम्भ करे और वह नीचे कूद कर आ जाएगी । ऐसा ही किया गया । एक रात दो घोड़े लिए हुए पृथ्वीसिंह बैठा था और खूबां की प्रतीक्षा में था । उसे नींद आ गई और वहाँ एक चोर आया । इसी समय खूबां नीचे रूई के ढेर पर कूद पड़ी और चोर को पृथ्वीसिंह समझ कर उसके साथ भाग गई ।

प्रातः काल हुआ और खूबां को पता चला कि उसके साथ धोखा हो गया है । उसने चोर को मिठाई लाने भेज दिया और स्वयं आगे दौड़ गई । आगे उसे चार धाड़ी (डाकू) मिले । उनको भी उसने बहला दिया और उनके हथियार लेकर वह चलती बनी । अंत मे वह एक राजा के यहाँ पुरुष-वेश में प्रधान-पद पर नौकर हो गई । उसी नगर में पीछे से चोर, धाड़ी तथा पृथ्वीसिंह आ पहुँचे । प्रधान ने उन सब को पकड़वा लिया । राजा ने उसकी बुद्धिमानी पर प्रसन्न होकर उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया । फिर प्रधान ने चोर तथा धाड़ी लोगों को उनके हथियार आदि देकर विदा कर दिया और पृथ्वीसिंह को सारी बात समझा दी । अंत में प्रधान वहाँ से सपत्नीक विदा हो गया । अब पृथ्वीसिंह दो रानियाँ लेकर अपने पिता की राजधानी में लौट आया ।

स्पष्ट ही इस कथानक के तीन विभाग हैं । प्रथम विभाग राजकुमार के सपत्नीक घर लौट आने तक है । दूसरे विभाग में बादशाह द्वारा खूबां को महल में बुलवा लिए जाने का प्रसंग है । तीसरा विभाग खूबां के भागने और फिर पृथ्वीसिंह को लेकर लौट आने तक है । ये तीनों विभाग चतुराई के साथ एक दूसरे से जोड़ दिए गए हैं ।

प्रथम विभाग की वस्तु लगभग इसी रूप में दम्पति-विनोद की छठी कहानी में देखी जाती है । वहाँ भी राजकुमार का नाम 'पृथ्वीसिंह' ही रखा गया है । लिंग-परिवर्तन यक्ष न करके उस में भूतों का बादशाह करता है । अन्त में पृथ्वीसिंह के पुत्र पैदा होता है । इधर स्त्री रूप धारी भूतों के बादशाह का सम्पर्क अन्य भूत से हो जाता है और उसके पुत्री पैदा होती है । वहाँ कहानी इतनी ही है ।

स्पष्ट ही बात का दूसरा विभाग एक पूरी कहानी नहीं है और वह एक प्रसंग मात्र है । किसी राजा द्वारा रूपवती स्त्री को देख कर उसके अपहरण की चेष्टा अनेक लोक-कथाओं में देखी जाती है । लगभग ऐसा ही प्रसंग 'सोनचड़ी' विषयक लोककथा में है ।

बात का तीसरा विभाग एक पूरी लोककथा है और वह 'सेठ की बेटी' के नाम से राजस्थान में कही जाती है । विक्रमचरित्र में राजकुमार विक्रमचरित्र और सुभमती के विवाह की कथा भी लगभग इसी रूप में है ।[1] इतना ही नहीं, 'बात राजपूत अर बोहरे

---

१ विक्रमचरित्र कथा का लौकिक आधार, शोधपत्रिका, ११/३-४.

री'[1] तथा 'वात सौदागर री'[2] में भी एक रजपूतनी लगभग खूबां के समान ही चतुराई दिखलाती है। एक राजपूत के परदेश में होने की दशा में लोग उसे ठगने की चेष्टा करते हैं परन्तु उसके द्वारा वे स्वयं ठगे जाते हैं और अन्त में राजपूत के सामने सारा भेद प्रकट हो जाता है। इस विश्लेषण से प्रकट होता है कि उपर्युक्त राजस्थानी बात में एकाधिक कथानक जुड़े हुए हैं।

समायोजित कथानक

अनेक राजस्थानी वातें ऐसी हैं, जिनकी वस्तु के लगभग स्वतन्त्र एकाधिक विभाग किए जा सकते हैं। इन में एक विभाग दूसरे विभाग से साधारण सम्बन्ध के साथ ही जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। इस विषय में उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. 'जगमाल मालावत री वात'[3] की वस्तु सार रूप में इस प्रकार है— अहमदाबाद के बादशाह महमूद बेगड़ा के उमराव हाथीखांन पठान ने सोभट के स्वामी तेजसी तंवर पर आक्रमण किया और तेजसी अपने तीन सौ राजपूतों सहित युद्ध करता हुआ मारा गया। उसका गाँव उजाड़ दिया गया और वहाँ कोई न रहा। परन्तु तेजसी और उसके सभी साथी प्रेतयोनि को प्राप्त होकर रात के समय अपने महल में आने लगे। एक रात वहाँ एक जोगी आकर ठहर गया। उसकी भूतों से भेंट हुई। तेजसी ने जोगी को एक संदेश दिया कि वह महेवे के राजकुमार जगमाल को उसकी मनुष्य-योनि की पुत्री से विवाह कर लेने के लिए कहे, जिससे कि वह कन्यादान का फल प्राप्त करके प्रेतयोनि से मुक्त हो सके। तदनुसार जगमाल वहाँ सूने महल में आ गया और कन्या को ननिहाल से लाकर उनका तेजसी से यथाविधि विवाह कर दिया। तेजसी की मुक्ति हो गई। उसने अपने साथियों को आदेश दिया कि जब कभी जगमाल उन्हें सहायता के लिए याद करे, वे तत्काल उसके पास पहुँच जावें। जगमाल सपत्नीक महेवे लौट आया और आनन्द से रहने लगा।

कुछ समय व्यतीत हुआ। हाथीखांन ने अपने जासूस भेज कर पता लगवाया कि जगमाल किसी कार्यवश महेवे से बाहर गया हुआ है उसने तीज के त्योंहार पर आक्रमण करके वहाँ की अनेक बालिकाओं का अपहरण कर लिया। जब जगमाल लौट कर आया तो उसे इस घटना से बड़ा अनुताप हुआ। उसका प्रधान भोपति हुआ था। उसने कुछ घोड़े इस प्रकार के तैयार किए, जो दौड़ने में आश्चर्यजनक थे। कुल अपने साथ केवल पचीस वीरों को लेकर चुपचाप इन घोड़ों पर अहमदाबाद पहुंचा और वहाँ से गणगौर के दिन महमूद बेगड़ा की बेटी गीदोली को जुलूस में से उठा कर ले भागा। उसके घोड़ों को कोई पकड़ न सका और शत्रु देखते ही रह गए। इस घटना के कारण क्रोधित होकर महमूद

---

१. हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. वी.), २. हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. वी.).
३. रा. वा. सू. पा.

बेगड़ा ने बड़ी सेना तैयार की और महेवे पर चढ़ आया। जगमाल ने तेजसी के भूतों को सहायता के लिए स्मरण किया और वे आ पहुंचे। युद्ध हुआ, जिसमें भूतों ने बेगड़ा की समस्त सेना को समाप्त कर डाला और जो भाग छूटा वही बच पाया।

इस बात में स्पष्ट ही दो विभाग प्रकट हैं। तेजसी तंवर विषयक विभाग बात की पूर्वपीठिका है और गींदोली वाला वृत्तान्त उसकी उत्तरपीठिका है। ये दोनों विभाग आपस में जुड़े हुए होने पर भी किसी अंश में स्वतन्त्र हैं। प्रथम विभाग को पार्श्विक कथावस्तु कहा जा सकता है। इसको पृष्ठभूमि में रख कर बात का कथानक आगे बढ़ा है।

२. 'लाखा फूलाणी की बात'[१] ......यह बात भी विशेष ध्यान देने योग्य है। इसकी वस्तु सार रूप में इस प्रकार है— छाहड ने कंथडनाथ की कृपा प्राप्त करके कंथकोट बनवाया और फिर उसकी शक्ति बढती ही गई। पास ही घेहली का स्वामी घरण था। जिससे छाहड़ का बड़ा प्रेम था। छाहड़ की रानी ने एक दिन घोड़ों की दौड़ में घरण के केश देखे और और वह उस पर आसक्त हो गई। जब छाहड़ यात्रा पर गया तो रानी ने घरण को कंथकोट में बुलवा लिया और इस प्रकार वह कोट का स्वामी बन बैठा। छाहड़ लौट कर आया और वह घरण से लड़ कर मर गया।

एक स्वामि भक्त धाय छाहड़ के पुत्र फूल को लेकर कोट से भाग गई और वह जजेवाहण पहुंच कर उसका पालन करने लगी। फूल बड़ा हुआ। एक बार उसने सिंह की शिकार के समय जजेवाहण के स्वामी जैसा के सामने बड़ी वीरता प्रदर्शित की। जैसा ने फूल का परिचय प्राप्त करके उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया और वह सेना सहित घरण के पास कंथकोट आया। घरण ने फूल को कोट सौंप दिया और अपनी बेटी का उसके साथ विवाह करके वैर समाप्त किया। परन्तु कुछ दिनों बाद फूल ने घरण को मार कर अपने पिता छाहड़ की मृत्यु का बदला लिया।

फूल की शक्ति बढ़ती ही गई। एक बार उसके राज्य में वर्षा नहीं हुई। पंडितों ने प्रकट किया कि व्यापारियों ने धान महंगा बेचने की इच्छा से एक जती के द्वारा मेह को बंधवा दिया है और एक विशिष्ट हरिण के सींग से यह 'जंतर' बंधा हुआ है। फूल उस हरिण के पीछे गया और उसे मार डाला। इस पर भयंकर वर्षा हुई। फूल किसी तरह अचेत अवस्था में सेरडा गांव पहुंचा। वहाँ जमले अहीर ने अपनी बेटी को उसके साथ पत्नी रूप में सुला कर उसके प्राण बचाये। फूल से उसके गर्भ रह गया और लाखा का जन्म हुआ।

बड़ा होने पर लाखा को शासन की व्यवस्था का भार मिला क्योंकि फूल बाहर

१. बा. मू. प.

थाने में रहता था। इस स्थिति में फूल की एक रानी ने उसके सामने प्रेम-प्रस्ताव किया। उसके अस्वीकार करने पर रानी ने उस पर झूठा दोष लगा कर फूल को संदेश भेजा। फूल ने बिना विचारे लाखा को देश निकाला दे दिया। कुछ समय बाद फूल की मृत्यु हुई और एक चतुर डूमणी के द्वारा लाखा को बुलवा कर राज्यगद्दी पर बिठाया गया।

लाखा भी सीमा रक्षा के लिए कोट से रवाना हुआ। उसकी सोढी रानी ने इस वियोग को असह्य बतलाया तो उसकी सेवा में गायन करने के लिए मनभोळिया नामक डूम छोड़ दिया गया। लाखा चला गया परन्तु सोढी ने डूम के साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लाखा को थाने मे यह खबर मिली। वह चुपचाप एक दिन महल में आया और उसने सब लीला देख ली। उसने सोढी डूम को दान कर दी।

इस वस्तु पर ध्यान देने से स्पष्ट ही प्रकट होता है कि इसमें धाहड़, फूल और लाखा इन तीनों की जीवन-कथा मिली हुई है। इस प्रकार बात को आसानी से तीन विभागों में बांटा जा सकता है। साथ ही प्रकट है कि प्रत्येक विभाग की घटनाओं में भी स्वतंत्रता है। सभी घटनाएँ कारण, कार्य अथवा फल के रूप मे जुड़ी हुई नही हैं। इन सब चीजों का मूल कारण है कथावस्तु की ऐतिहासिक रंगत।

घटना

कथानक में घटना का भी अपना विशेष महत्व होता है। राजस्थानी बातों में घटनाओं की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। आगे इस विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

अलौकिक घटनाएँ

राजस्थानी बातों में अलौकिक तत्व की छटा द्रष्टव्य है। लोककथाओं मे यह तत्व विशेष रूप से व्याप्त रहता है। वहीं से इसने बातों मे प्रवेश किया है। अनेक राज-स्थानी बातें लोककथाओ पर आधारित है, अतः उनके विशिष्ट उपलक्षण इन में भी प्रकट हुए हैं। कई बातो का मूल विषय ही अलौकिक है। उन में आश्चर्यमयी घटनाएँ घटित होती हैं। उदाहरण देखिए :—

१. उठै एक भारंड पंखी बैठो छै। तठै औ जाय नीसरीयो। तद ईयै जांणियो, औ रूंख छै। औ जांण पंखो रै पांखां नीचे पगां री नहर उपर सूय रह्यो। तद औ तो सूतो अर ईयै नूं नींद आई। अर पंखी उडियो, तिको एकै सायत मांहे समुद्र पार पाहड़ां उपर जाय बैठो। और सूतो हुतो, सु सूतो ही ज गयो।

२. औ पाहड़ रै निचै आय अर एकै गुफा मांहे जाय रह्यो। उवै पाहाड़ उपर नूत रो वृख हंतो। तेरा हाथी रै जितरा फळ। सुं फळ नीचा पडै, तद फळ रौ पांणी नीसर अर परो सोनो हुवै।

३. तठै ठकुरै रै बेटै नूं सूतै नूं जानीयां उठाय नाखीयो समुद्र में। तिको ईयै नुं एकै मछी

गिलियो। सु सांई री ऐसी कुदरत हुई, जु मच्छ कहो मांत रातोरात समुद्र माहा कर एकण नदी मांहा जाय नीसरीयो। तद प्रभात हुवो। तद गुजरात माहे राजा कहो, 'जावो, मछले तल करसां। नदी माहां सु मच्छ ले आवो।' तद काहर नदी जाय लंप तैंतो सांचीयो। औ मच्छ जाल मांहे आयो। तद मच्छ नूं बाहर ले चोरीयो। औ मच्छ तिण रै पेट मांहे माणस दीठो जीवतो। ताहरां राजा कहो, 'हजूर ले आवो।'

ऊपर एक ही बात[१] में से तीन आश्चर्यमयी घटनाएँ प्रकट की गई हैं। प्रथम मे नायक भारंड पक्षी द्वारा समुद्र पार करता है। दूसरी में फल के पानी का सोना बनता है। तीसरी में मछली के पेट से जीवित मनुष्य निकलता है।

अनेक बातों में आश्चर्यपूर्ण किंवदन्तियों को भी ग्रहण कर लिया गया है। प्रायः ये किंवदन्तियाँ विशिष्ट स्थान अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध मे मिलती हैं।

१. सोजत नगरी के काम की बात[२] का सारांश इस प्रकार है……अंबावती नगरी में अंबसेन नामक राजा राज्य करता था, जिसके सोजल नाम की बेटी थी। सोजल सब के सोने पर पहाड़ पर जाती और वहाँ चौसठ जोगनियों के साथ खेलती। एक बार राजा ने उस के पीछे अपने प्रधान बांधरा हुल को भेजा। वहाँ जोगनियों में हुल से आने का कारण पूछा गया तो उसने राजा के आदेश की चर्चा की। सोजल ने कहा कि उसने बड़ी भूल की है परन्तु इस बात की चर्चा वह राजा के सामने कर देगा तो वहाँ का राज उसके हाथ में आ जाएगा। हुल ने राजा का दबाव पड़ने पर सारी बात प्रकट कर दी। राजा मर गया और बांधरा राज्य का स्वामी बना। उसने तालाब बनवाया, जो बंधेळाव कहलाया। गांव का नाम बदल कर सोजल के अनुसार सोजत हो गया।

यह प्रसंग स्पष्ट ही एक स्थान के नाम से सम्बन्धित किंवदन्ती हैं।

२. जोईयां आदि जातियो की उत्पति विषयक बात[३] का सारांश इस प्रकार है—मंडाण गाँव की कुछ लड़कियाँ छाणें (उपले) इकट्ठे करने के लिए जंगल में गई। वहाँ उनको खेल में विलम्ब हो गया और वे उपले चुन न सकी। एक लड़की ने स्वीकार किया कि यदि वृक्ष का देवता उनके पात्र 'छाणो' से भर देगा तो वह उसके साथ विवाह कर लेगी। उस वृक्ष में एक पीर रहता था। उसने लड़कियों के पात्र छाणों से भर दिए। लड़कियाँ हंसती हुई घर आ गई। वह पीर रात को अपने से विवाह करना मंजूर करने वाली लड़की के पास आया। पीर के आगे किसका वश चले। वह लड़की पीर की पत्नी बनी। उसके क्रमशः जोईयो, कोहर, माहर और मोटेहर इन नामो के चार पुत्र हुए, जिनके वंश चले।

---

१. ठकुर साहू री वात (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. बी.)। २. ऐ. बा., पृष्ठ १०५.
३. म बा. ६/३-४.

स्पष्ट ही यह एक किंवदन्ती है। जोईया लोग प्राचीन यौधेय गण के सदस्य थे।[1] वे कालान्तर में मुसलमानी धर्म मे चले गए। जन साधारण में उनकी उत्पति के सम्बन्ध में एक रंगीन किंवदन्ती चल पडी, जिस में माता को हिन्दू और पिता को मुसलमान पीर के रूप में प्रकट किया गया।

प्रासंगिक घटना की स्वतंत्र बात में परिणति

यह भी एक ध्यान देने का विषय है कि एक बात में जो घटना प्रसंगरूप में देखी जाती है, वही एक दूसरी स्वतंत्र बात के रूप मे भी मिलती है। इसका कारण स्पष्ट है। उक्त प्रसंग मे कुछ विशेष ज्ञातव्य रहता है, अतः उसे स्वतंत्र बात की वस्तु के रूप में भी ग्रहण कर लिया गया है और सम्बन्धित पात्र विषयक विस्तृत बात में उसे जोड़ भी दिया गया है। उदाहरण देखिए :—

१. 'वीरमदे सोनगरा री वात'[2] में वीरमदे के पूर्व जन्म का प्रसंग आता है। वहाँ वह एक सेठ का पुत्र है और अपनी पत्नी से रुष्ट होकर अगले जन्म में उस से पिंड छुड़ाने की कामना करता है। इसी प्रसंग पर आधारित स्वतंत्र वात 'वीरमदे सोनगरै रै आगलै जनम री वात'[3] है।

२. पाबूजी री वात[4] में पमै धोरंधार का प्रसंग आता है वहाँ उसके साथ पाबूजी राठौड़ का बैर पड़ता है। इसी प्रसग का विस्तार 'पमै धोरंधार री वात'[5] में हुआ है।

३. 'जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात'[6] का एक प्रसंग कूंगरै बलोच से सम्बन्धित है। वहाँ कूंगरे बलोच की पुत्री के साथ भींवा का विवाह होता है और पुत्र पैदा होते हैं। इसी प्रसंग को लेकर 'कूंगरे बलोच री वात'[7] स्वतन्त्र रूप से तैयार हुई है।

समान घटना का आवर्तन

राजस्थानी वातों में एक ही घटना कई स्थानों पर देखी जाती है। कहीं कहीं इस का कारण यह है कि एक ही पात्र एकाधिक वातों में प्रकट हुआ है अतः उससे सम्बन्धित घटना भी कई बातों में मिल जाती है। उदाहरण देखिए :—

१. (क) तिसै समीयै माह भाणोज मानधाता आइ मुजरो कीधो। [illegible] 'भाणेज मोहल माहे पधारो छो ताहरां नीसासा क्यूं [illegible] 'महाराज, राजा मानधाता राजा अजयपाल नुं [illegible] कीधी, मामारी एक

एकै समीयै थारै मामोजी नुं तू पूछे, खुमीयाल [illegible]

---

१. राजस्थान के स्वातंत्र्य प्रेमी तीन प्राचीन [illegible] ([illegible]), [illegible] १४/३.
२. रा. वा. सू. पा. ३. गुटका संख्या २१३, वात संख्या [illegible] ([illegible])
४. गुटका संख्या २१०, वात संख्या ११६ ([illegible]) ५. [illegible]
७. गुटका संख्या २०८, वात संख्या ७ ([illegible]) ६. [illegible]

वीनती छै।' ताहरां कह्यो, 'भाणोज कहि।' 'मामाजी, कौल दो तो कहूं।' ताहरां कोल दीयो। ताहरां भाणोज कहै, 'मामाजी, रावळे घरे वडा वडा देसोतां राण्यां बेट्यां छै नै महाराजा, राणीयां में पधारो ताहरां निसासा क्यूं मेलो ?' ताहरा आ बात सुणी राजा अजयपाल माथो धूणियो।[१]

(ख) सु एकै दन लाखोजी रा बहुवां राखायच नें कही, 'जो भांणेज, बीजो तो कोई पुछ सगे नही अर तु आसंगयात छै सु पुछ कै मामाजी, थे रात रा पोढण जावो ताहरां नीसासो कु नाखो ?' ताहरां ईयैं कह्यो, पुछीस। रात पडी। लोक मरब हुटीयो। ताहरां राखायच ऐकांयंत अरज कीवी, 'जो मामाजी, आज थांहरै ठाकुरजी रे परताप सेह थोक पण थे सोणहूण पधारो ताहरां नीसासो कुं नाखो ?' ताहरां लाखैजी कह्यो, 'जो परमात कहीस '[२]

इन दोनों बातों में मामा तथा भानजे से सम्बन्धित समान घटना ली गई है परन्तु वे पात्र अलग अलग हैं।

२. (क) उपरां होळी आई। लाखैजी रा पण भाई बंधा रे धीनणा वाजण लागा। ताहरां बीज सोलंखी ही कह्यो, 'जो आपां ही धींनण रमसां।' ताहरां चाकरा नैं कह्यो, 'रे ढोल करायै।' तद लाखैजी रो सदाफळ आंब हुतो, तिको वाढीयो। ते उपर लाखैजी रा चाकरां अर बीज रा चाकरां आपस में लडाई हुई। ते उपर बीज चढ जाय अर लाखैजी रा आदमी था, तीकै मारीया। ते उपर लाखैजी नुं खबर पोहती, जो आंब पण वाढीयो अर चाकर पण मारीया।[३]

(ख) इतरै होळी आई नैं गेहर बाजण लागी। सुहांणै गढ गेहर बाजैं, तिको ढोल निपट सरवो बाजै छै। तरैं वीरमदेजी कह्यो, 'जोयां ठाकुरां रो ढोल बोहत मरवो बाजै छै।' तरै चाकरां कह्यो, महाराज, जोयां रै ढोल आंबा रो छै। आपणै ढोल लोह रो छै, तिको मधुरो बाजै छै।'.........तरै कारीगरां नैं बुलाय नै वीरमदेजी कह्यो, कठैक आंबो वढाय नै ढोल करावो। तरैं कारीगरां अरज कीनी, 'महाराज, थळवट मे आब नैं फरास कठकै लाभै ?'..........वीर धवल नामां फरास बढाय नैं ढोल करायो। तरैं दोलै गहलोत कह्यो, 'अबै हुसीयार होज्यो, सवारै आधा उपरि जोईया आवसी।' इतरै फरास वाढीया री खबर गई।[४]

इन दोनों बातों में होली के अवसर पर ढोल बनाने के लिए शत्रु के राज्य का वृक्ष काटने का प्रसंग है। पात्र दोनों स्थानों पर भिन्न भिन्न हैं।

३. (क) सिंध माहे थारू सुतहार छै। सु समुद्र रै कांठे गोवळ गयो हुतो। सु वह १ खोड़ी हुई हुती। सु जंगल माहे रहतो। सु उवै नुं रोज लागो। सु उवै रै पेट रा

---

१. चौबोली, पृष्ठ ४६-४७. २. राव बीज री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी),
३. बात राव बीज री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.). ४. वीरवाण, परिशिष्ट, पृष्ठ १२-१३.

रोझ २ हुवा । सु ओ सूतहार ल्यायो । सु उवै सूतहार रोझ सभाया । आप रै हाथ ही वहिल हळकी घड़ि नैं रोझ फेरै । सु पहर रै झटपटै फेरै । सुतर ७० कोस फिरि नै अपूठो आवै, पहर दिन चढते पहिलो । सु उवा वहल अणाई । अणाइ नै जसराज नुं बैसांणीयो ।[1]

(ख) ताहरां धारो सूतहार छै । तीयै रे बै रोझ साझीया छै । जाहरां वीरण जान करि नैं चढीयो छै, धारो सुथहार पिण चढि नै साथैं हुवो छै । जाहरां धारो वहिल बैठो खेड़े छै एकलो ही ज, ताहरां वीरण कहै, 'धारा, तूं पाछो घिर तू पहुचीस नही । घोड़ा सुं रोज पहुँचीसै नही । तूं घिर, अपूठो जाह ।' जाहरां धारो तो घिरे नहीं । ज्यु आघो वटै गया, त्युं घोडा रह्या । ताहरां वीरण देखै तो धारो वहिल बैठो खेड़ै छै । ताहरां वीरण कहै, 'धारा, वहिल ल्याव ।' ताहरां धारो वहिल ल्यायो । वीरण वहिल बैठो । धारो खाड़ेतो हूवो अर खड़ीया आइ पहुता ।[2]

यहाँ दोनों बातों में धारा सूतहार के द्वारा तैयार किए गए रोझों की चर्चा है । पात्र एक ही है ।

४. (क) 'थे आइ नै यूं कहो मोमल नूं, महंदरो साप खाधो बाग माहै, जीव नीसरि गयो । आफे मोमल रो मोस जीव छै तो समझि पड़िसी । ताहरां चाकर दोड़िया आया, माथो कूटता पीटतां कह्यो, 'जी, महिंदरजी नूं सांप डसिया, जीव दियो ।' ताहरां सर्व रोवणै लागा । ताहरां मोमल कह्या, 'रै हां ?' बीजी वार 'हां' कहतां जीव नीसरि गयो ।[3]

(ख) तिण नूं सिखाय दियो, कै तूं रोवतो रोवतो जाय गाहणी नूं खबर कर, जे आज सिकार मे जलाल ओर सेर रै आपस में खुस्तो हुई सो जलाल तो सेर नूं मारियो ओर सेर नोचियो तोमूं जलाल मर गयो । सो चाकर जाय इण भांति ही गाहणी नूं खबर सुणाई । गाहणी सुण पछाड़ खाय गिरी । छाती कूट बुरी तरै रोवणै पीटणै लागी । सारै हाहाकार मच गयो । सुणतां ही बूबना रो जीव हुन्नारै साटै निसर गयो । ऊभी थी, सो ढह पड़ी ।[4]

इन दोनों प्रसंगो में नायक की मृत्यु की झूठी खबर देने से उसकी प्रेमिका प्राण छोड़ देती है । बातों के पात्र भिन्न-भिन्न हैं ।

इस प्रकार एकाधिक बातों में समान घटना का पाया जाना उनमें व्याप्त लौकिक-तत्व का प्रकाशन है ।

---

१. बात लाखै फूलाणी री (हस्तप्रति अ. ग्रं. बी.). २. बात मारू सूथारी री (वरदा ६/४).
३. महिन्द्रो सोढो, राणे बीसल रो बेटो (वरदा, अंक २, गांग्यापुर).
४. रा. बा. सं., पृष्ठ १२३-१२४.

कथानक-रूढ़ियाँ

राजस्थानी बातों की वस्तु के साथ ही उन में प्रयुक्त कथानक-रूढ़ियों पर भी सहज ही ध्यान चला जाता है। असल में कथानक-रूढ़ियां लोककथाओं का विषय है परन्तु राजस्थानी बातों में अनेकशः लोककथाओं को संवार सजा कर प्रस्तुत किया गया है, अतः उनमें भी इनका प्रयोग देखा जाता है। इसके साथ ही अधिकांश राजस्थानी बातों में ऐतिहासिक रंगत है, अतः ऐतिहासिक काव्यों के समान इन में भी कथानक-रूढ़ियाँ प्रयुक्त हुई हैं।[१]

विषय के स्पष्टीकरण हेतु आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का अभिमत ध्यातव्य है — 'ऐतिहासिक चरित का लेखक संभावनाओं पर अधिक बल देता है। संभावनाओं पर बल देने का परिणाम यह हुआ है कि हमारे देश के साहित्य में कथानक को गति और घुमाव देने के लिए ऐसे 'अभिप्राय' दीर्घकाल से व्यवहृत होते आ रहे हैं; जो बहुत थोड़ी दूर तक यथार्थ होते हैं और जो आगे चल कर कथानक-रूढ़ि में बदल गए हैं।[२]

यहाँ 'अभिप्राय' शब्द अंग्रेजी के 'मोटिफ' शब्द का अनुवाद है, जिसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है :—

> Motif — A word or pattern of thought which recurs in a similar situation or to evoke a similar mood within a work or in various works of a genre.[3]

इस प्रकार कथा सम्बन्धी 'अभिप्रायों' की बहुत बड़ी संख्या है। हिन्दी मे डॉ. कन्हैयालाल सहल ने इस विषय में बहुत अधिक कार्य किया है। आप के द्वारा विशेष रूप से 'राजस्थानी लोककथाओं' के इस अंग पर प्रकाश डाला गया है।[४] यहाँ राजस्थानी बातों में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक-रूढ़ियों पर प्रकाश डाला जाता है।

१ अलौकिक-उत्पत्ति

वंश-गौरव की विशेषता प्रकट करने के लिए नायक की अलौकिक उत्पत्ति के अनेक प्रसंग राजस्थानी बातों में द्रष्टव्य हैं। इस प्रसंगों में विविधता भी है। उदाहरण इस प्रकार हैं :—

(क) 'विक्रमादीत री बात'[५] में इन्द्र प्रसन्न होकर देवां (अप्सरा) को विक्रमादित्य को प्रदान कर देता है और वह राजा की पत्नी बन कर रहती है। समय पाकर उसके गर्भ से विक्रमचरित्र का जन्म होता है।

---

१ पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियां (श्री ब्रजविलास श्रीवास्तव).
२. हिन्दी साहित्य का आदिकाल, पृष्ठ ७४.
3. Siple, Dictionary of World Literature.
४. 'नटो तो कहो मत' आदि ग्रंथ द्रष्टव्य है. ५. हस्तप्रति, (अ. जै. ग्रं. बी.)

(ख) 'रत्नमंजरी री वात'[1] में जब रत्नमंजरी जन्म लेती है, तो उसके गले में चौदह रत्नों की माला देखी जाती है, जिसके कारण उसे ऐसा नाम दिया जाता है। इन रत्नों के प्रकाश के आगे कोई साधारण व्यक्ति ठहर नहीं पाता और तत्काल मूर्छित हो जाता है।

(ग) 'कुंवरसी सांखलै री वात'[2] में खींवसी सांखला की झाली रानी के पास 'कामण' (जादू) के प्रभाव से समुद्र स्वयं मनुष्य-रूप में आता है और उसके पुत्री जन्म लेती है।

(घ) 'लालमण कुंवर री वात'[3] में लीलावती अप्सरा और लालखांन गन्धर्व शापवश मृत्यु-लोक में मनुष्य योनि में प्रकट होते हैं और उनके लालमणि नामक पुत्र जन्म लेता है।

(ङ) 'बहलीमा री वात'[4] में आकाश से पाँच पैगम्बर उतरते हैं और वन में तपस्या करते हैं। उन में से एक का संसर्ग हूर से होता है और उस से महमद भटियाणा जन्म ग्रहण करता है।

(च) 'राजा मानधाता री वात'[5] में राजा युवनांश्वर भूल से अभिमंत्रित जल पी लेता है और वह स्वयं गर्भ धारण करता है। समय पर उसका पेट फटता है तथा मांधाता जन्म लेता है।

(छ) 'देवजी बगड़ावता री वात'[6] मे कोका शाह की पुत्री लीला तपस्या करती है और हरराम चौहान सिंह की शिकार के बाद उसका सिर काट कर लीला के सामने आता है। फलस्वरूप लीला के गर्भ ठहर जाता है और बाघा जन्म लेता है। बाघा का सिर सिंह के समान है और धड़ मनुष्य जैसा है।

उपर्युक्त प्रसंगों में कहीं मानव और अप्सरा का संसर्ग होता है और कहीं असाधारण रूप से शिशु का जन्म होता हैं। ये पात्र आगे चल कर वात में आश्चर्यजनक कार्य करते हैं। अतः इनकी अलौकिक उत्पत्ति सार्थक होती हैं।

२ कमल-पूजा

कमल-पूजा राजस्थानी बातों का एक विशिष्ट अभिप्राय है। इस में नायक प्रायः देवी को अपना सिर कमल के समान चढ़ाने के लिए तैयार होता है और देवी प्रकट होकर उसे रोक देती है तथा वरदान देती है। राजस्थानी में 'कमल' का अर्थ भी 'सिर' लिया जाता है। कमल-पूजा के उदाहरण देखिए :—

१. पछै वैरसी मूंधियाड़ ऊपरै फौज ले नै दोडियो। साम्हां चण रूप आयो, सु गैचंद मारियो। पछै ओसियां जात आयो। आप एकंत देहुरो जड़ नै कंवळपूजा करणी

---

१. अप्रकाशित बड़ी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

२. अप्रकाशित बड़ी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ३. रा. वा., भाग ४.

४. हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. बी.). ५. चौबोली. ६. रा. सा. सं., भाग २.

मांडी । तरै देवजी हाथ झालियो, कह्यो, 'म्है थारी सेवा-पूजा सौं राजी हुवा । तो नैं माथो बगसियो । तूं सोना रो माथो कर चाढ ।' आप रैं हाथ रो संख वैरसी नूं दियो, कह्यो.'ओ संख बजाय नैं सांखळो कहाय ।'[1]

यहाँ वैरसी कमल-पूजा करने के लिए तैयार होकर देवी से प्रसन्नता सूचक शंख प्राप्त करता है ।

२. आधी रात रा आप एकलो हीज ऊठ नैं देवीजी रे देहुरे गयो । उठै जाय हाथ पग धोय नैं आप री तरवार काढ नैं कंवळपूजा रैं वास्तै गळा ऊपर मेली । तरैं देवीजी कह्यो, 'मा, मा ।' तरैं इण जांणियो, वांसै कोई माणस आयो । सु तरवार परी कीवी । बीजैं फेरैं वळै तरवार कांधे मांडी । तरैं देवीजी मोंहडैं बोलिया, 'तूं विजैराव कंवळपूजा मत करै । म्है थारी पूजा मानी ।'.........तरैं माताजी आप रा हाथ सोना री चूड़ उतार नैं विजैराव रैं हाथैं पेहराई ने सीख दी । कह्यो विजैराव नूं, 'घरे जा ।' पछैं घरे आयो । विजैराव रे हाथ देवीजी चूड़ी घाली तठा थी विजैराव चूड़ाळो कहायो ।[2]

यहाँ विजैराव कमल-पूजा के लिए तैयार होकर देवी से सोने की चूड प्राप्त करता है ।

३. जगदेव कह्यो, 'जो म्हारो माथो ल्यो नैं सिधराव री ऊमर वधारो तो म्हारो माथो तयार छै ।' तरैं जोगणियां बोली, 'तूं राजा सूं चढतो छै । जो थारो माथो हाथ सूं उतारि कमळ-पूजा करैं नैं म्हांनैं चाढैं तो राजा री ऊमर बढै ।'.........जगदेव वळै कह्यो, 'तो म्हारी अस्त्री,चावड़ी ने दोय कंवर प्यारा बारै २ बास हुआ । ऐ विण मो जिसा छै । तिण सूं सिधराव ने वरस अड़ताळीत बगसो । ऐ हूँ चारू सीस चाढसूं ।' जोगणियां इण रो साहस देखि नैं वर दीधो । भलां २ कह्यो ।[3]

यहाँ जगदेव कमल-पूजा का प्रण करके योगनियों से वरदान प्राप्त करता है ।

उपर्युक्त तीनो प्रसंगों के अतिरिक्त ऐसा प्रसंग भी द्रष्टव्य है, जिस में सिर सचमुच भेंट कर दिया जाता है और फिर देवी भक्त को पुनर्जीवित कर देती है । वात में जगदेव के साथ ऐसा ही होता है :—

पाछो छाळो ले जगदेव री पोळ आई । सगतसिंह एक आंख दीधी, तिण नें दोनूं आंख दीधी । तिण रें दोनूं ही आंख्या हुई । नै धड़ ऊपरा सीस चाढि नैं अमी रो छांटो नाख्यो । जगदेव खंखारो करितो उठ बैठो हुवो ।[4]

---

१. वात पंवारां री (नैणसी री ख्यात, भाग १, पृष्ठ ३३८-३३९).
२. वरद्दाहां री वात (नैणसी री ख्यात, भाग २ पृष्ठ १७-१८).
३. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ३३-३४. ४. वही, पृष्ठ ४८.

राजस्थान वीर भूमि के रूप में विख्यात है। यहाँ का इतिहास वीरों की गौरव गाथा से अलंकृत है। अतः ऐसे शक्ति के उपासक प्रदेश की बातों में कमल-पूजा अभिप्राय की अधिकता का मिलना स्वाभाविक ही है। यह 'अभिप्राय' शक्ति, साहस और त्याग के समन्वित रूप का सूचक है।

३ धीज

'दिव्य' तथा 'सत्यक्रिया' अभिप्राय के लिए राजस्थानी 'धीज' शब्द है। इस अर्थ में 'धीज' का प्रयोग अनेकशः हुआ है। इस अभिप्राय में पात्र अत्यन्त कठिन परीक्षा के लिए तैयार होकर सत्य का प्रभाव प्रकट करता है। भारतीय कथासाहित्य में सत्यक्रिया के अगणित उदाहरण भरे पड़े हैं। सीता की अग्नि-परीक्षा तो प्रसिद्ध है। राजस्थानी बातों में धीज के उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. तद इन्द्रजी कह्यो, 'जे तु धीज सीझै तो थारी स्त्री छै, तु ले जाए।' तद राजा कही, 'तो वाह, वाह। धीज मंडावो।' तद कढावो एक तेल रो भर नै चाढीयो, ऊकाळीयो, तै मांहै लोह नाखीयो। राजा नुं कहीयो, काढ लै। तद राजा आंगळी मांहै घात नै लोह काढ लीयो।[१]

यहां राजा उबलते हुए तेल में से लोहा निकाल कर अपने को सच्चा सिद्ध करता है।

२. ताहरां दोनां ही नूं फोगसी बोलाया। कह्यो, 'धीज करो।' ताहरां दोनां ही कह्यो, 'राज, कहो तिको धीज करां।' ताहरां फोगसी, 'कुंभटा रा लकड़ मंगाया नै जगरो कीयो। कह्यो, ,दोनै ई झगड़ू इण जगरै मांहैं पैसो। तद लोकां कह्यो, 'औ धीज मता करो।' ताहरां फोगसी कयो, 'तो भलां, म्हारै दीवड़ै मांहै पैस नै स्नान कर नीसरो।' ताहरां रजपूत तो पैठो नही अर भूत पैठो। ताहरां फोगसी दीवड़ै रो मुंहडो बांधीयो।[२]

यहाँ वादी प्रतिवादी के सामने अग्नि अथवा छोटे से जलपात्र में प्रवेश करने की शर्तें रखी गई हैं। इनमें मनुष्य ऐसा नहीं कर पाता परन्तु भूत कर दिखलाता है और वह इस क्रिया में पकड़ा जाता है।

३. रांणी पस मर के दरीयाव मांहै जाइ कै बोली, 'या खदिर पातिसाह, मैं आपणै खावंद कै पीछै, सास-सुसरा के पीछै, जे उस कै पीछै बुरा दिखाऊं, माता-पिता कुं बुरो दिखाऊं तो मुझ वाही को ले जाओ। जे सास-सुसरां की जड़ रखणै कुं निकलती हुं तो

---

१. विक्रमादित्य री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

२. फोगसी एवाल री वात, वरदा ५/४.

मुझ कुं *मार्ग द्यो । यह सिरणी तुम कुं है ।*' युं कहि कै सीरणी दरियाव बीच नांखी। दरियाव फाटि कैं मारग दिया ।[1]

यहाँ अपने सत्य के प्रभाव से नायिका दरिया में से रास्ता प्राप्त कर लेती है।

४. मौजाई बधावो टूंटा हाथ सूं ले नै आती थी, सू सायब रा हुकम थी, आप री सील थी सोनां री चूड़ सैंत हाथ नीकळ्या ।[2]

यहाँ सत्य के प्रभाव से कटे हुए हाथ फिर ज्यों के त्यों प्रकट हो जाते हैं।

५. कुंवरसी तो तोरण बाद मैं चंवरी मैं बैठो। भरमल आंत्यां संजम, सु कुंवरसीह नूं परणावण नूं आंणी। ज्यूं करि भरमल रा पला रो गांठि कुंवरसीह रा पला बांधी ताहरां *भरमल नूं आंख्यां सूझण लागी। भरमल मां नूं कह्यौ, 'मां, म्हारयां आंख्यां* हुयां,' मोनूं सूझै छै।' ताहरां मां देख नै खुसी हुई।[3]

यहाँ नायक के शील के प्रभाव से नायिका का अंधापन दूर हो जाता है।

'धीज' अभिप्राय सत्य एवं शील की महिमा का सूचक है। शौर्य के साथ सत्य का होना आवश्यक है। इस अभिप्राय में '*सत्यमेव जयति नानृतम्*' की गूंज है।

४ बोल

राजस्थानी बातों में अनेकशः 'बोल' एक अभिप्राय के रूप में द्रष्टव्य है। इसके अनेक रूप हैं। कहीं कहीं बोल (वचन) एक ताने के रूप में प्रकट है। इस रूप की अधिकता है। 'बोल मारना' इस विषय में मुहावरा है। बातों में जिस पात्र को ताना दिया जाता है, वह उसे पूरा कर दिखाता है और तदन्तर बात पूरी हो जाती है। उदाहरण—

१. '*ठकुराई राखण करो तो आगे भाटीयां दीसै जा। अठै रहिसी तो बीजा भाई ताहरां* पांच मांणस छै, तिम थै ई बैठा रहो, नहीं तो भाटीपे जाय गढ मांडो।' मोसो बोलीयो। ताहरां सातल उठ सलाम कर नै बोलीयो, 'रावजी, थांहरा माथै हाथ हुसी तो भाटीयं ही भलां रहिसां।' ताहरां परधांन कहीयो, 'सातलजी, नीवा बैसो। रावजी टीकायत छैं। सदा कहता आया पण थांनू गुनो माफ छै, थै बैसो।' सु सातल वरजीयो रहै नहीं। सलाम कर उठीयो। ताहरां रावजी फेर मोसो बोलीयो, 'ठाकुरां, सातलजी नुं मतां वरज राखो। जांणजै छै सातलजी सवारै जैसलमेर पोकरण रै गढां संघ आप रो कोट मांडसी, नामगो घाटसी। सातलजी, माळी न छै, जु ताजणो वाहसो नै आडा हाथ देसी। आगै भाटी वजै छै। ताजणै री आहिया

---

[1] हुसीमा री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

२. बहलीमा री बात दूसरी (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

३. बात कुंवरसी सांखलै नै भरमल री (राजस्थान भारती ६/३-४):

तरवार री सिर मांहे देसी। पर सातलजी, जो जावो तो वैरै किलावै री आथ मांगजो। प्रजू तांई वीरो जोवै छै, गढ मांडसो तो।[1]

यहाँ सातल जोधायत ताने के कारण भाई का दरबार छोड़ कर जाता है और फिर आगे अपनी बात पूरी कर दिखलाता है।

कई बातों में पात्र का 'बोल' उसकी वचनबद्धता प्रकट करता है इसके लिए 'बोल देणौ' मुहावरा है। वह अपने बोल के द्वारा नियम धारण करता है और उसकी सम्पूर्ति को अपना परम कर्तव्य मानता है। बात में वह अपने प्रण को पूरा करके दिखला देता है।

२. ग मा घोड़ी काछेला पासां जीदराव खीची मांगी। तद चारणां न दीवी पर यूंहै मांगी तद पण न दीवी। काछेला घोड़ी पाबूजी नूं दीवी। तद कही, 'राज, थांनै घोडी देवां छां सू थै म्हांरी परवरदास्त घणी करज्यो। तद पाबूजी कही, 'थांनूं काम पडियां ऊगें पहरां नही।' भो बोल कर लीयो।[2]

यहाँ पाबूजी ने घोडी के बदले चारणो की सुरक्षा का वचन दिया है जिसे वे आगे प्राण देकर भी पूरा करते हैं।

कई बातों में दूसरे व्यक्ति के बोल को अन्य पात्र अपने ऊपर धारण करता है और वह उसे पूरा करके ही चैन लेता है। ईस प्रकार के रूप में परस्पर सम्बन्धित भी हो सकते हैं।

३. तरै गोगादेजी हंसीया। दांत बोका रा मोटा छा। तिको देख नै भाटी रांणगदे कह्यो, 'वळ्या दांता'रो घोस।' तद गोगादेजी कह्यो 'मांहरौ कोई केहायत होय तिको पांचै-पचासै दिनै वैर ले, तिको भाटी ठाकुरां कना लेज्यो। तठासुं गोगादे रो वैर भाटीयां रै माथै ठाहरीयो।[3]

इस बात में गोगादे राठौड़ का भाटीयों से बैर पड़ता है और आगे उसके वंशज उसे निभाते हैं।

कही 'बोल' गर्व का द्योतक होता है। पात्र के इस गर्व का बात में प्रायः भंजन करवाया है।

४. ताहरां परधांन घईयायत कयो, 'वित नूं सीख देवो। राठौड़ वित रांहण न देवै।' ताहरां मूळपसाव कही, 'साहजी, साता परीयां री जोवा है। जो राठौड़ ले जावै बकरो तो ऊंठ देउं। जिकै रो ऊंठ जावै, तिकै नूं सिंह भर घोड़ी देउं। गाय जाय तीकै

१. वात सातल ओधावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)- २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १८२.
२. गोगादे वीरमोत री वात (बीरवाण, परिशिष्ट).

नुं भैंस देउं। भैंस जावै, तंनूं घोड़ी देवों। जमा खातर राखौ। इतरौ कासूं डरो छौ।' इम कहि नै चढीयो छै।[1]

इस बात में आगे चलकर मूलपसाव के गर्व का भंजन होता है।

राजस्थानी बातों में 'बोल' का प्रयोग अत्यधिक है और वह यहाँ की सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार ही है। अगणित राजस्थानी वीरों ने अपनी बात के लिए प्राणों की बाजी लगाई है। अब भी उनके 'बोल' जन साधारण के कानों में गूंज रहे हैं। इस अभिप्राय में वचन-निर्वाह की दृढ़ता है, जो स्वाभिमान का परमोज्वल रूप है।

५ अक्षय धन

राजस्थानी बातों में अक्षय धन सम्बन्धी अभिप्राय भी अनेक रूपों में द्रष्टव्य है। अधिक व्यय करने वाले अथवा विशिष्ट दानी व्यक्तियों के पास इस प्रकार के साधन बतलाए गए हैं, जिन से कि कभी उनके धन का अन्त आने का प्रश्न ही नहीं उठता। ये साधन कई प्रकार के हैं, जिन में मुख्य नीचे लिखे अनुसार हैं:—

१. पोरसो........राजस्थानी बातों में 'पोरसो' अथवा 'सोनें री पोरसा' स्वर्णपुरुष के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो तांत्रिक विधि से तैयार किया जाता है। इसका कोई भी अंश काट लेने पर वह फिर ज्यों का त्यों पूरा हो जाता है।

(क) सिद्धराव जैसिंघजी, खांप सोलंखी, तिण नै छिन्नूं हजार गांव हुता। पोरसो एक कोठार मांहे हुवो।[2]

(ख) तरै राणगदेजी कह्यो, गढ वेगो करावज्यो। कांनड़देजी रै सोनां रो पोरसो तौ आगै होज छै।[3]

(ग) लाखे रे सोनें रो पोरसो हुतो। चारण महिव सीमक्रि दीयो हुतो।[4]

(घ) पड़तो जोगी कहै छै 'मैं तो तोनुं घात घाली हुतीं पिण तूं समघो। पिण म्हारो मायो सावतो राखै। हाथ पग वाढै। फेर आइ जासी। थारो वड़ा भाग। हूं सोनें रो पोरसो हुईस।' जोगी तेल मांहे पड़ीयो, सोनें रो पोरसो हुवो।[5]

इन प्रसंगों में सिद्धराज सोलंकी, कानड़देव सोनगरा, लाखा फूलाणी और बगड़ावतों के पास स्वर्ण पुरुष का होना प्रकट किया गया है। बातों के अनुसार इन्होंने प्रचुर धन व्यय किया है। इसलिए इनके पास स्वर्ण पुरुष का होना लोक विश्वास का सूचक है।

---

१. बात खोखर छाबावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी).

२. रा. वा. मू. पा., पृष्ठ ४६. ३. वही, पृष्ठ ८६.

४ लाखै फूलाणी री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

५. बात देवजी बगड़ावतां री (रा. सा. स., भाग २).

२. रसकुप्पा.........इस कुप्पे में विशेष प्रकार का रस संचित रहता है। उसके स्पर्श मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है। इसमें भी तांत्रिक प्रभाव प्रकट है। उदाहरण :—

उठै देवराज मैड़ी में पोढै छै, तठै जोगी बाबो रेवतो। एकरसां इण री कूंपो रवाय नूं सूंप गयो थो। भरम मागो न थो। सु इण कूंपा मांहि था टबको इ छण नै हेठो पड़ियो, तिको देवराज री कटारी रै लागो। सु लोह री थी, सु सोना री हुई। तरै सवारै देवराज दीठी। तरै विचार दीठो, जु इण कूंवा मांहे काई बलाई छै। तरै ओ कूंपो देवराज उरो ले नै कबज कियो।[1]

३. खीरसंख.........'खीरसंख' में यह विशेषता बतलाई जाती है कि वह मुंह-मांगी वस्तु तत्काल प्रदान कर देता है। उदाहरण —

समुद्रजी रजपूत नूं कही, 'जु रजपूत, तोनै मास छै हुवा, तूं हिवै जावो।' तद समुद्रजी रजपूत नूं माणक मोती हीरा देवण लागा। तद रजपूत कही, 'जु मोनै महाराजा, क्यां इसो दीजै, सु फेर कही री आसूत न रहूं। अर बैठो खावां अर खुटै नहीं, सु दीजै।' तद परधानै कही, 'जु एक खीरसंख छै, सु दीजै।' तिको रजपूत नूं संख दे घोड़ो दे, मता दे नै विदा कीयो।[2]

४. अखूट चरू.........'अखूट चरू' ऐसा पात्र है, जिस में डाली हुई वस्तु चाहे जितना निकालने पर भी समाप्त नहीं होती। उदाहरण —

रात घड़ी च्यार गयां समुद्र आयो। तद झाली खीवसीजी नुं बोलाया। दरबार सो उठि भीतर आयो। तद समुद्र चरू एक दीयो, 'चरू औ अखूट छै'। जिको चाहिसो जितरा मांणस जीमसै। रांधसो सो अखूट नीसरसी, आधी रात तांई।' ......खीवसीजी चरू झाली नुं दीयो।' जो मुंजाई थे करो, 'आ कही'। खींवसीजी बाहर पधारिया। तद सुं खींवसीजी 'चरूसुकाळ' कहाणो।[3]

अक्षयधन सम्बन्धी ये साधन सम्पन्नता के सूचक हैं। जब कोई पात्र अत्यधिक व्यय करता है, तो उसके पास इनमें से कोई एक वस्तु का होना मान लिया जाता है।

६ जनशून्य नगर

राजस्थानी वातों का एक अभिप्राय जन-शून्य नगर है, जो अनेकशः देखा जाता है। इसकी शून्यता के कई कारण मिलते हैं। कहीं वह किसी दानव के उपद्रव के कारण शून्य हो जाता है तो कहीं प्रेतबाधा के कारण ऐसा होता है। उदाहरण देखिए :—

---

१. देवराज री वात (नैणसी री ख्यात, श्री बदरीप्रसाद साकरिया, भाग २, पृ० २०.
२. ठग राजा री वात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.).
३. वात कुंवरसी सांखल री बडी (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

नुं भैंस देउं। भैंस जावै, तौनूं घोड़ी देवों। जमा खातर
छो।' इम कहि नैं चढीयो छै।[1]

इस बात में आगे चलकर मूलपसाव के गर्व का भंजन
राजस्थानी बातों में 'बोल' का प्रयोग अत्यधिक है
प्रवृत्ति के अनुसार ही है। अगणित राजस्थानी वीरों ने
बाजी लगाई है। अब भी उनके 'बोल' जन साधारण के
प्राय में वचन-निर्वाह की दृढ़ता है, जो स्वाभिमान का पर

५ अक्षय धन

राजस्थानी बातों में अक्षय धन सम्बन्धी अभि
अधिक व्यय करने वाले अथवा विशिष्ट दानी व्यक्तियों
गए हैं, जिन से कि कभी उनके धन का अन्त आने का
प्रकार के हैं, जिन में मुख्य नीचे लिखे अनुसार हैं :—

१. पोरसो........राजस्थानी बातों में 'पोरसो'
के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो तांत्रिक विधि से तै
भी अंश काट लेने पर वह फिर ज्यों का त्यों पूरा

(क) सिद्धराव जैसिंघजी, खांप सोलंखी, तिण नैं छि
कोठार मांहे हुवो।[2]

(ख) तरै राणगदेजी कह्यो, गढ वेगो करावज्यो। का
आगै हीज छै।[3]

(ग) लाखै रे सोनैं रो पोरसो हुतो। चारण महिद सीफ्रा

(घ) पड़तो जोगी कहे छै 'मैं तो तोनूं घात घाली हुती
मायो सावतो राखै। हाथ पग बाढै। फेर आइ जासी
रो पोरसो हुईस।' जोगी तेल मांहे पड़ीयो, सोनैं रो पो

इन प्रसंगों में सिद्धराज सोलंकी, कांनड़देव सोनगरा, ल
के पास स्वर्ण पुरुष का होना प्रकट किया गया है। बातों के
व्यय किया है। इसलिए इनके पास स्वर्ण पुरुष का होना लोक

---

१. वात खीवर छाडावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी).
२. रा. वा. सू. या., पृष्ठ ४६. ३. वही, पृष्ठ ८६.
४. लाखै फूलाणी री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
५. वात देवजी बगड़वतां री (रा. सा. सं., भाग २).

है तो वहाँ काव्यगत न्याय माना जाता है। इस विषय में राजस्थानी वातों में अनेक उदाहरण हैं :—

१. पछै सर्व काम आया चूकत अर सर्व आग मांहे पड़ियां, तद पातिसाह सहयै बांकलियै नूं साबासी दीधी। अर गढ़ मांहे आयो तद कह्यौ, 'अबै माल मतो बतायो, पछै बतायो।' पछै काम आया था, जितरां रा माथा काट ने भेळा कर पछै सहयै वांकलियै रौ माथौ काट सगळा माथां ऊपर मेलियो, कह्यौ, 'हमारा कौल था, इस जिसका योत खाया था, तिसका ही हुआ नहीं. सु हमारा क्या होयगा ?'[१]

यहाँ सहयै वांकलियै को स्वामिद्रोह का उचित फल मिलता है।

२. छाहड़ कंध री कोट हेठे कांम आयो। राज धरण लीयो। हिवै धरण छाहड़ रो राजलोक एकठो कीयो। फूल नूं धाड लेने ताठी। ताहरां छाहड़ री रांणी छै, तेनु धरणि कह्यौ, 'तै मो में छाहड़ सुं अधिको कासूं दीठो ?' मोसूं तो छाहड़ सिगलै थोके भलो हुतो। मोसूं जोरावर हुतो। तै छाहड़ नूं मराई नै मोनूं कोट दीयो, सु मो में कासूं दीठो ? किसो गुण छै ?' कह्यौ, 'थारी चोटी ऊपर हूं रीझी।' कह्यौ, 'जी, मूळ चोटी ऊपर रीझीया ?' कह्यौ, 'जी, आ चोटी ल्यो।' ताहरां चोटी कतरि नै परही दीन्ही। कह्यौ, 'कोट छाडो, बाहिर रहो।' ताहरां छाहड़ री राजलोक बाहिर-वास मांहि नै रह्यौ छै।[२]

यहाँ छाहड़ की रानी पतद्रोह करती है, अतः उसका राज्य प्राप्त करने के बाद धरण उसे किले से बाहर कर देता है।

काव्यगत न्याय के प्रयोग से पाठक बात-संसार को सुव्यवस्थित देखता है और उसे इससे संतोष प्राप्त होता है। भले को भला और बुरे को बुरा फल मिलने की स्थिति का नाम ही तो सत्य की विजय और असत्य की पराजय है।

इनके अतिरिक्त कई बातों में जो अन्य विशिष्ट कथानक रूढ़ियाँ प्रयुक्त हुई हैं, उनकी सूची इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है :—

१. मौन धारण और मौन भंग	(चौबोली की बात)
२. होड़ अथवा डांडामेंडी	(अमीपाळ साह री बात)
३. लिंग-परिवर्तन	(प्रथीसिंघ पुंवार अर सूबां री वात)
४. सांकेतिक भाषा	(वगले हंसणी री बात, तीसरी)
५. आत्सर्य की लीला	(स्यांमसुंदर री बात)
६. शरीफ चोर	(सवेहीयै वीरमदे रै बेटे धनपाल री बात)

१. रा. वा., भाग १. पृष्ठ २१-२२.
२. बात लाखै फूलाणी री (बा. मू. प.).

१. आगे दरवाजा मांही वड़या, तव नगरी सूनी दीठी। तब सुवा नें कुंवरजी पूछीयो, 'श्रो कांही कारण, जुं सूनी नगरी सगळी दीसें ?' तव सुवो मेना ने कुंवरजी ने कहियो, 'श्री महाराजकुमार, आज सुं छठें महीना पहली आया छा, तब मालें बैठा बात करता था। तव हम पिण पूछीयो, 'श्रो नगर सूनो किम दीसें छें ?' तव तिण मांहू नें कह्या, 'इण सहर में एक राखस हिल्या छें। सो आदमियां नें मार खाघा। घणा ज्यानें कीया। तिण रा डर सुं वळें मनुख हुता, सो नाहसी गया। इण तरें सूनो हुई छें।[१]

इस प्रसंग का नगर राक्षस के उपद्रव से सूना हुआ प्रकट किया गया है।

२. पठांण गांव मारि नें पाछो पाटण गयो। ने कोई नारायणजी रा चक्र थी तेजसी तीन सें रजपूतां सूघो भूत री गति पाई। तिको आप रें गांव असवारी री जलूस करि आथण रो आप रें मेंहलां आवें, बडी मजलिस करि हमेस आवें। गांव सूनो पड़ियो छें। दिन रें पोहर पाखती रा गावां रा गोरी बेंसें, रमें खेलें नें गायां चरावें :[२]

इस प्रसंग का नगर युद्ध के कारण उजड़ गया है।

इन कारणों के अतिरिक्त किसी नगर का किसी सिद्ध अथवा तपस्वी के शापवश भी सूना हो जाना प्रकट किया जाता है। इसे जनसाधारण में 'बजराग' नाम से पुकारा जाता है, जो वज्राग्नि एव वज्रवाक् का समन्वित प्रभाव सूचित करता है। लोककथाओं में अथवा किंवदन्तियों में सूने नगर या गांव के लिए प्रायः 'बजराग' ही प्रकट किया जाता है। लोग इस प्रकार के शापित गांव की कोई वस्तु उठा कर घर में लाना अशुभ मानते हैं। इस सम्बन्ध में निम्न उदाहरण द्रष्टव्य है :—

तरें आ बात गरीबनाथ रें दाय आई। तरें कह्यो, 'आंबा री आंबली हुवो।' सु वचन कहतां सबी आंबा री आंबली हुई। सु आंबली अजेस छें। आंबा री आंबाली कर नें बीजें दिन एक चेलो आसण री ठोड़ गाडियो नें बद्वा दीनी, कह्यो, 'मांहरी ठोड उपाड़ी छें, त्यों नाथ करें तो यांहरी ठोड़ उपड़ज्यो।' लाखड़ीया कोस १२ घीणोद छें, तठें खूंघड़ीमल घीणोद रें भाखर अजेस रहे छें। सु गरीबनाथ उठें गयो।[३]

नगर के उजड़ने का कारण प्रायः युद्ध अथवा प्राकृतिक उपद्रव होता है। अभिप्राय में उसे विविध लोकविश्वासों के साथ जोड़ दिया गया है।

७ काव्यगत न्याय

जब किसी पात्र को अपने किए का जैसा फल मिलना चाहिए वैसा मिल जाता

१. वात राजा रिसालू री ,हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).
२. रा. वा. सू. पा; पृष्ठ ५०-५१
३. वात रायधण मुजरा धणियां री (नैणसी री ख्यात, भाग २, पृष्ठ २१०-२११.

है तो यहाँ काव्यगत न्याय माना जाता है। इस विषय में राजस्थानी बातों में अनेक उदा-हरण हैं :—

१. पछै सर्व काम आया चूका अर सर्व आग मांहे पड़ियां, तद पातिसाह सहयँ वांकलियँ नूं सावासी दीवी। अर गढ़ मांहे आयो तद कह्यो, 'अबै माल मतां बतायो, पछै बतायो।' पछै काम आया था, जितरा रा माथा काट ने भेळा कर पछै सहयँ वांकलियँ रो माथो काट सगळा माथां ऊपर मेलियो, कह्यो, 'हमारा कौल था, इस जिसका बोत खाया था, तिसका ही हुआ नहीं. सू हमारा क्या होयगा ?'[१]

यहाँ सहयँ वांकलियँ को स्वामिद्रोह का उचित फल मिलता है।

२. छाहड कंथ रो कोट हेठे काम आयो। राज धरण लीयो। हिवै धरण छाहड़ रो राजलोक एकठो कीयो। फूल नूं धाइ ले नै ताठी। ताहरां छाहड़ री रांणी छै, तेनु धरणि कह्यो, 'तैं मो में छाहड़ सु अधिको कासूं दीठो ?' मोसुं तो छाहड़ सिगलै थोके भलो हुतो। भोसुं जोरावर हुतो। तैं छाहड़ नुं मराई नै मोनुं कोट दीयो, सु मो में कासूं दीठो ? किसौ गुण छै ?' कह्यो, 'थारी चोटी ऊपर हुँ रीझी।' कह्यो, 'जो, मूळ चोटी ऊपर रीझीया ?' कह्यो, 'जो, आ चोटी ल्यो।' ताहरां चोटी कतरि नै परही दीन्हीं। कह्यो, 'कोट छाडो, बाहिर रहो।' ताहरां छाहड़ रो राजलोक बाहिर-वास मांडि नै रह्यो छै।[२]

यहाँ छाहड़ की रानी पतिद्रोह करती है, अतः उसका राज्य प्राप्त करने के बाद धरण उसे किले से बाहर कर देता है।

काव्यगत न्याय के प्रयोग से पाठक बात-संसार को सुव्यवस्थित देखता है और उसे इससे संतोष प्राप्त होता है। भले को भला और बुरे को बुरा फल मिलने की स्थिति का नाम ही तो सत्य की विजय और असत्य की पराजय है।

इनके अतिरिक्त कई बातों में जो अन्य विशिष्ट कथानक रूढ़ियाँ प्रयुक्त हुई हैं, उनकी सूची इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है :—

१. मौन धारण और मौन भंग	(चौबोली की बात)
२. होड़ अथवा डांडामेंड़ी	(अमीपाळ साह री बात)
३. लिंग-परिवर्तन	(अयोसिंघ पुंवार अर सूवां री बात)
४. सांकेतिक भाषा	(बगलै हंसणी री बात, तीसरी)
५. मात्सर्य की लीला	(स्यांमसुंदर री बात)
६. शरीफ चोर	(सवैहीयँ बीरमदे रैं बेटे धनपाल री बात)

१. रा. बा., भाग १. पृष्ठ २१-२२.
२. बात लाखै फूलाणी री (बा सू. प.).

	(मानधाता की बात)
७. निषिद्ध कक्ष	(नापा सांखळा री वात)
८. परकाय प्रवेश	(चार प्रधानां री वात)
९. उपश्रवण	(रत्नमंजरी की बात)
१०. स्वप्न में प्रेमी का दर्शन	(ठकुर साह की बात)
११. भाग्यलेख	(राजा सिद्धराव जैसिंह री वात)
१२. तंत्र मंत्र की लड़ाई	(लाखा फूलाणी की बात)
१३. अभिज्ञान या सहिदानी	(साहूकार ने सूम्रा री वात)
१४. चतुर सुग्गा	(हंसराज बछराज की बात)
१५. कृतज्ञ जन्तु	(पलक में खलक की बात)
१६. लौटने की प्रतिज्ञा	(जगदेव पंवार की बात)
१७. स्वामिभक्त सेवक	(वीरमदे सोनगरा री वात)
१८. पाषाण प्रतिमा का जीवित होना	(राजा वीज री वात)
१९. अंधा पारखी	

इन 'अभिप्रायों' में से प्रायः सब का स्पष्टीकरण डा. कन्हैयालाल सहल ने अपने विविध लेखों में किया है, जो उनकी 'लोककथाओं की कुछ प्ररूढियां' और 'राजस्थानी लोककथाओं के कुछ मूल अभिप्राय' नामक पुस्तकों में संकलित हैं।

पात्र और चरित्रचित्रण

कहानी की वस्तु में जो घटनाएं घटित होती हैं या जो कार्य किए जाते हैं, वे पात्रों के द्वारा ही संचालित होते हैं। पात्रों का कार्य-व्यापार उनके चरित्र का प्रकाशन करता है। पात्रों का सजीव होना आवश्यक है, वे निर्जीव नहीं होने चाहिए। उन में स्वाभाविकता का गुण जरूरी है। इसी से पाठकों की वास्तविक रसानुभूति होती है। पात्रों की अलौकिक अथवा असाधारण शक्ति से कुतूहल भले ही पैदा हो जाए परन्तु उनके साथ हृदय का सम्बन्ध नही जुड़ सकता। उन में मानवीय हृदय के शाश्वत मनोभावों का प्रकाशन होना चाहिए, जिस से कि पाठक उनको अपने जैसा ही मान कर उनके साथ सहानुभूति प्रकट कर सकें।

कहानी में पात्रों की अधिकता भी वांछनीय नहीं। कई राजस्थानी बातों में यह गुण सुन्दर रूप में देखा जाता है, परन्तु अनेक बातों की संख्या काफी बढ़ी हुई मिलती है। पात्रों की इस अधिकता का कारण भी उनका इतिवृत्त के रूप में उपस्थित किया जाना है। जिन बातों में किसी ऐतिहासिक पात्र का विवरण देना अभीष्ट होता है, उन में अनेक प्रकार के बहुत अधिक पात्र देखे जाते हैं, जैसे राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री वात,[1] महाराजा श्रीपदमसिंह री बात[2] आदि। राजस्थानी बातों में ऐतिहासिक पात्रों की प्रधानता है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो बातों का संसार उन्हीं से बसा हुआ है। इतना ही नहीं वहाँ कल्पित पात्रों को भी ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है और अनेक लोककथाओं मे उनको चतुराई के साथ नायक के पद पर प्रतिष्ठित करके प्रकट किया गया है। कथानक विषयक अध्याय में इस प्रकार के अनेक पात्रों की चर्चा की जा चुकी है।

राजस्थानी बातों में पात्रों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :—

१. मानव
२. देव-दानव
३. पशु-पक्षी आदि।

इन में प्रथम वर्ग के पात्र प्रधान हैं तथा द्वितीय वर्ग के पात्र गौण हैं। वे बातों में कहीं कहीं ही प्रकट होते हैं और उनका सम्बन्ध तत्कालीन लोकविश्वास से है। तृतीय वर्ग के पात्र यत्र तत्र बालोपयोगी बातों में देखे जाते हैं। यहाँ मानव पात्रों के चरित्रचित्रण पर प्रकाश डाला जाता है।

राजस्थानी बातों में चरित्रचित्रण दो रूपों में हुआ है। एक रूप में पात्र की वर्गगत विशेषताएँ प्रकट होती हैं और दूसरे में उसके व्यक्तिगत गुणों का प्रकाशन होता है। बातों मे प्रधान, मोहता, पुरोहित, कोटवाल, दांणी आदि पदों पर काम करने वाले पात्रों के प्रायः व्यक्तिगत नाम नहीं मिलते और उनको अपने पद के नाम से ही पुकारा जाता है। ये पात्र वर्गगत विशेषताओं को प्रकट करते हैं। यही स्थिति डूम, दासी, रैंबारी, गौहरी, एवाळ आदि की है। इनके भी प्रायः बातों में नाम नहीं मिलते। असल में इस प्रकार के 'पात्रों' का कोई विशेष महत्व नहीं होता और बात में इनकी उपस्थिति कहीं कहीं ही प्रकट होती है। यदि इस तरह का कोई पात्र महत्व ग्रहण करता है तो उसका अपना नाम भी प्रकट होता है और उसकी व्यक्तिगत विशेषताएं भी सामने आती हैं। इस सम्बन्ध में बीजड़ियो खवास (वात वीरमदे सोनिगरा री)[3] और फोगसी एवाळ (वात फोगसी एवाळ री)[4] आदि के नाम उदाहरणस्वरूप लिए जा सकते हैं। ऐसे पात्र विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं, जिनकी अपनी चारित्रिक विशेषताएं होती हैं।

---

१. रा. बा. सं. २. वही. ३. रा. बा. सू. बा. ४. बरदा, भाग ५, अंक ४.

राजस्थानी बातों में प्रायः शीर्षक किसी पात्र के नाम के अनुसार मिलता है। इसका स्पष्ट कारण यही है कि वहाँ पात्र को प्रधानता दी गई है और उसका जीवन एवं चरित्र प्रकट करना बात का मूल उद्देश्य है। ऐसी स्थिति में यह सहज ही कहा जा सकता है कि राजस्थानी बातें प्रायः चरित्रप्रधान हैं। वहाँ पात्रों का एक अलग ही संसार बसा हुआ है। इस संसार में सभी तरह के व्यक्ति है। उन में भले हैं तो बुरे भी हैं। वहाँ छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, बली-निर्बल, धनी-निर्धन आदि सभी प्रकार के लोग अपने कार्य में व्यस्त दिखलाई देते हैं।

पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का प्रकाशन भी राजस्थानी बातों में दो प्रकार से हुआ है। प्रथम प्रकार मे लेखक के द्वारा पात्र विशेष के गुण अथवा अवगुण का उद्घाटन कर दिया जाता है। प्रायः ऐसा बात के प्रारम्भ में ही हो जाता है और आगे चल कर पात्र तदनुसार ही कार्य करता है। उदाहरण द्रष्टव्य है :—

पातसाह री बेटी परणीयो। देपाळ धंध रजपूत अठै देपाळपुर राज करै। अठै भो भोमीयोचारो करै। सो ईयैं पासै असवार २५ रहै। सो वडा सामंत, वडा तरवारीया। अर देपाळ पिण वडो तरवारीयो। जैमोई दातार, वडो रजपूत। सो भो भोमीचारो करै। परखंडां रा माल ले आवै। तठै गांम मांहै ले नैं खावै खरचै। गांम मांहै वडी गढी, वळवंत। सु देपाळ अठै ईयैं भांत सुं रहै।[1]

चरित्रचित्रण का दूसरा प्रकार वह है, जिस मे लेखक स्वयं अपनी ओर से पात्र की विशेषताएँ प्रकट न करके उसके कार्यों एवं शब्दों द्वारा ही ऐसा करवाता है। यह तरीका श्रेष्ठ है। अधिकतर राजस्थानी बातों में यही तरीका अपनाया गया है।

पात्रों के चरित्रचित्रण में आदर्श को यथार्थ का विभेद का महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय में दोनों ही पक्ष अपनी अपनी विशेषताएँ रखते हैं। इनके द्वारा कलात्मक सामग्री के मूल उद्देश्य का प्रकाशन होता है। मानव चरित्र में जहाँ आदर्श का महत्व है, वहाँ यथार्थ का भी है। असल में आदर्श और यथार्थ के समन्वित रूप का नाम ही मानव-जीवन है। ऐसी स्थिति मे मानवजीवन के इन दोनों पक्षों पर ध्यान देने से ही कलात्मक सामग्री का उद्देश्य सफल होता है। कहीं एक पक्ष कुछ अधिक बलवान भी हो सकता है तो कहीं दूसरा। राजस्थानी बातों में पात्रों के चरित्र पर ध्यान देने से प्रकट होता है कि यहां आदर्श और यथार्थ दोनो रूपों में चित्रण हुआ है। बातों में जहाँ बहुत अधिक आदर्श पात्र हैं, तो यथार्थ पात्र भी कम नहीं हैं। राजस्थानी बातों की यह एक विशेषता है।

---

१. बात देपाळ धंध री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

आदर्श

भारतीय साहित्य की मूल प्रवृत्ति सदा से आदर्श चरित्रों को प्रकट करने की रही है। प्रधान रूप में यहाँ कथापात्र अनेक गुणों से विभूषित देखे जाते हैं। लेखकों ने पाठकों के सामने दिव्य चरित्र प्रस्तुत करने में अपनी कला को सार्थक माना है। यही प्रेरणा राजस्थानी बातों में है। वहाँ इस प्रकार के बहुसंख्यक पात्र हैं, जो आश्चर्यजनक रूप में गुणान्वित हैं। समाज को बल देने के लिए इस प्रकार के चरित्रों को बातों में प्रकाशमान किया गया है। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. जगदेव पंवार की बात में जगदेव अपनी विमाता की डाह के कारण राज्य छोड़कर चला जाता है और सिद्धराज की सेवा स्वीकार करता है। यहाँ वह अपने स्वामी की आयुवृद्धि के लिए अपने पूरे परिवार के सिर तक देने को तैयार होता है। इस पर उसे प्रचुर सम्पत्ति एवं सम्मान मिलता है। दानी वह ऐसा है कि अपना सिर तक काट कर कंकाळी भाटनी को सहर्ष भेंट कर देता है। इस दान के आगे सिद्धराज भी हार मान जाता है। कंकाळी शक्ति-स्वरूपा है। वह जगदेव को पुनर्जीवित कर देती है। इस प्रकार जगदेव स्वामिभक्त तथा दानशीलता का उज्वल आदर्श प्रकट करता है।[1]

२. पाबूजी राठौड़ की बात में पाबूजी देवळदे नामक चारणी से उसकी काळमी नामक घोड़ी इस शर्त पर लेते हैं कि जब कभी उसके धन (गाय आदि) पर संकट उपस्थित होगा, पाबूजी अपना सिर देकर भी उसकी रक्षा करेंगे। कालान्तर में पाबूजी का विवाह निश्चित होता है और वे वररूप में फेरे लेते हैं, तब उन्हें देवळदे पर आए हुए संकट की सूचना मिलती है। वे वैवाहिक कार्य बीच में ही छोड़ देते हैं और अपना वचन निभाने के लिए शत्रुओं से युद्ध करते हुए काम आते हैं। इस प्रकार पाबूजी प्रणवीरता के आदर्श है।[2]

३. राव रणमल की बात में अखा सांखळा सींधल राजपूतों के साथ धाड़े के लिए जाता है और वे ईंदा राजपूतों के बहळवे गांव की सांडें लेकर वापिस लौटने लगते हैं। इसी समय पीछे से ईंदा सरदार आते हैं। सींधल भाग छूटते हैं परन्तु अखा सांखळा वहीं डट जाता है। वह ईंदों के हाथ मारा जाता है परन्तु मरते समय कहता है कि मेरा स्वामी रणमल इसका बदला लेगा। जब यह खबर रणमल के पास पहुंचती है तो वह तत्काल सब काम छोड़ कर अपने थोड़े से योद्धाओं सहित ईंदों के गांव आता है और उनकी घोड़ियाँ लेकर चलता बनता है। इस पर ईंदा सरदार सेना सहित

---

१ रा. वा.-सं. पा. २. वही.

पीछा करते हैं । युद्ध होता है, जिस में इंदों की पराजय होती है। इस प्रकार रणमल बदले तथा सेवक सहानुभूति का आदर्श उपस्थित करता है।[1]

४. पताई रावळ की वात में गुजरात का बादशाह महमूद बेगड़ा उसके किले पावागढ़ का घेरा देता है और पताई बड़ी दृढ़तापूर्वक उसकी रक्षा करता है। अंत में उसे धोखा होता है और गढ़ का पतन हो जाता है। पताई और उसके सब साथी युद्ध करते हुए प्राण त्याग देते हैं और किले में रानियाँ जौहर करके भस्म हो जाती हैं। इतना होने पर कहीं बादशाह किले में प्रवेश कर पाता है। इस प्रकार पताई रावळ जन्म-भूमि-प्रेम एवं सर्वस्व बलिदान का आदर्श उपस्थित करता है।[2]

५. सयणी चारणा री वात में बीजानद चारण सयणी के प्रति आकर्षित होकर विवाह का प्रस्ताव करता है परन्तु विवाह के लिए एक शर्त रखी जाती है, जिसकी ६ मास में पूर्ति होनी आवश्यक है। इस पर बीजानंद पूर्ति हेतु पर्यटन करता है। जब वह काम पूरा करके लौटता है तो ६ मास पूरे हो चुकते हैं और सयणी हिमालय पर गलने के लिए घर से निकल जाती है। बीजानंद उसके पीछे जाता है। परन्तु सयणी हिमालय पर पहुँच कर गळ चुकती है। इस पर बीजानंद भी वहीं गल जाता है। इस प्रकार बीजानद प्रेम का आदर्श उपस्थित करता है।[3]

६. अरजन हमीर भीमोत री वात में मुर्गों की लड़ाई करवाते समय हमीर दृढतापूर्वक प्रकट करता है कि गर्दन कटने पर भी शूरवीर अपने शत्रु को समाप्त कर सकता है। उसका ऐसा कहना आश्चर्यजनक प्रतीत होता है परन्तु जब सोमैया महादेव पर शाही सेना आती है तो हमीर युद्ध में अपना शिर कटने के बाद भी मारने वाले शत्रु को समाप्त कर देता है। इस प्रकार हमीर 'जुंभार' का कार्य करता है। वह एक साथ ही धर्मवीर और युद्धवीर दोनों का आदर्श है।[4]

७. कवळसी साखलै नै भरमल री वात में कवळसी का यह नियम है कि वह किसी कन्या की सगाई के लिए उसके पास आया हुआ नारियल वापिस नहीं लौटाता। सांखला वंश एवं खरळ वंश का वैर है और खरळ किसी प्रकार बदला लेने की चिन्ता में हैं। वे अपनी अंधी लड़की भरमल की सगाई का नारियल कवळसी के पास भेंजते हैं और विवाह के समय उसे मार डालने का षड्यंत्र रचते हैं। कवळसी का पिता यह नारियल अस्वीकार कर देता है परन्तु जब जंगल में शिकार के समय उसे (कवळसी को) नारियल दिया जाता है तो वह ग्रहण कर लेता है। विवाह के समय पति के सत्य प्रभाव से भरमल के नेत्रों में ज्योति आ जाती है और वह उसे षड्यंत्र का संकेत दे

---

१ वरदा, ७/३. २. रा वा, भाग १ ३. वही. ४. साधना, अंक ७.

देती है, जिससे वह बच कर निकल जाता है। फिर वह भरमल के पास अकेला हिम्मत करके आता है और उसे छिपा कर महल में ६ मास रख लिया जाता है। अंत में वह चतुराई से भरमल को साथ लेकर विदा हो जाता है। इस प्रकार कवळसी सत्यपरायणता एवं साहस का आदर्श उपस्थित करता है।[१]

ऊपर सात आदर्श पात्रों के चरित्र की चर्चा की गई है। ये सभी पुरुष पात्र हैं। इसी प्रकार राजस्थानी वातों में आदर्श नारी पात्रों का चरित्र भी द्रष्टव्य है:—

१. जसमा ओडणी री बात में जसमा ओड जाति की स्त्री है, जो मिट्टी खोदने का धंधा करती है। उसके रूप पर मुग्ध होकर राजा उसे अनेक प्रकार से प्रलोभन देता है। अन्त में ओड लोग डर कर एक रात भाग छूटते हैं। राजा सेना भेज कर उनको मरवा देता है। जसमा सती हो जाती है। इस प्रकार जसमा ओडणी दृढ़ता एवं सतीत्व का आदर्श प्रकट करती है।[२]

२. वीरमदे सलखावत री वात में शाही सेना वीरमदे का पीछा करती है और वह भाग कर जांगलू की धरती में पहुँचता है। वहाँ के राजा उदा मूजावत से वह सारी स्थिति बतला कर शरण देने की प्रार्थना करता है। उदा अपनी माता के सामने समस्या प्रस्तुत करता है। उसकी माता उसे कहती है कि वीरमदे को अवश्य शरण दी जावे। तदनुसार वीरमदे जांगलू के कोट में रख लिया जाता है। पीछे लगी हुई शाही सेना भी वहाँ आ पहुंचती है। उदा उसके प्रधान को समझा कर बाहर ही रात भर डेरों में रोक देता है और इसी बीच वीरमदे को जोइयों की धरती में भेज दिया जाता है। दूसरे दिन कोट मे वीरमदे के न मिलने पर शाही सेनापति उदा को पकड़ता है और पैरों की ओर से उसकी खाल खेंचने की तैयारी होती है। उदा की माता कोट की दीवार से दृश्य देख कर जोर से आवाज देती है कि वीरमदे उदा के पैरों में नहीं है, उसकी खोपड़ी में है। अतः खोपड़ी की खाल उतारी जावे। वृद्धा के इस वचन से प्रसन्न होकर सेनापति उदा को छोड़ देता है और वहाँ से लौट जाता है। इस प्रकार उदा की माता एक अनुपम आदर्श उपस्थित करती है। वह शरणागत की रक्षा को अपना धर्म समझने वाली वीरमाता है[३]

३. कूंगरे बळोच री वात में महाबली कूंगरे की पुत्री हांसू अपने मृत पिता की इच्छापूर्ति के लिए पुरुषवेश में जैसलमेर के घोड़े लूट लाने के लिए चल पड़ती है। मार्ग में उसकी ओढे सरदार से भेंट होती है और वे सांझे में धाड़ा' (डाका) करने के लिए आगे बढ़ते हैं। घोड़े घेर कर ले आए जाते हैं पीछे से सेना आती है। ओढा घोड़े लेकर

---

१. बात कवलसी सांखलं री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.). २. रा. वा., भाग १.

३. वीरवांण, परिशिष्ट.

आगे बढ़ता है और हांसू अकेली सेना को रोक कर छका देती है। सेना हार कर लौट जाती है। आगे आने पर घोड़ों का हिस्सा होता है और ओढा हांसू को पहिचान लेता है कि वह लड़की है। फिर उनका आपस में विवाह होता है और उनके बीर जखड़ा जन्म लेता है। इस प्रकार हांसू वीरपुत्री का आदर्श उपस्थित करती है।[१]

४. महिन्द्रो सोढो, राणे वीसल री बेटो, की बात में मोमल का प्रेमी महेन्दरा सोढा उसके पास प्रति रात बडी दूर से चल कर पहुँचता है। एक रात उसके बडी देर से आने पर सब सो जाते हैं और दरवाजा नहीं खुल पाता। इस से यह नाराज हो जाता है। प्रेमी की नाराजी का पता लगने पर मोमल स्वयं उसके यहाँ पहुँचती है। महेन्दरा बाग में जाकर बैठ जाता है और मोमेला को झूठा संदेश भिजवा देता है कि साँप के काटने से उसकी मृत्यु हो चुकी है। इस समाचार को सुनते ही मोमेल अपना शरीर छोड़ देती है। इस प्रकार वह आदर्श प्रेमिका के रूप में प्रकट होती है।[१]

५. राजा नरसिंघ री वात में अजमेर के राजा वैरसी गौड़ के मरने पर उसका पुत्र नरसिंघ बचपन की अवस्था में होता है और रानी दहड़ (दहिया वंश की पुत्री) के ऊपर सारा भार आ पड़ता है। इसी समय पठानों का अजमेर पर हमला होता है। रानी स्वयं वीरतापूर्वक युद्ध करती है परन्तु कोट की रक्षा होना कठिन प्रतीत होता है। अतः वह अपने लोगों को साथ लेकर चुपचाप दूर चली जाती है। नरसिंघ का बचपन में ही विवाह करके उसे अपनी ससुराल में छोड़ दिया जाता है। फिर रानी हाडों की धरती में जाकर शक्ति संग्रह करती है। नरसिंह सयाना होता है तो उसका एक विवाह और कर लिया जाता है। फिर अवसर देख कर रानी अजमेर पर आक्रमण करती है और विजय के बाद नरसिंह राजा बनता है। फिर रानी सती हो जाती है। इस प्रकार रानी दहड़ एक साथ ही धैर्य, सहनशीलता, बुद्धिमता एवं पतिभक्ति का आदर्श उपस्थित करती है।[३]

यहाँ कुछ चुने हुए आदर्श पात्रों का साधारण उल्लेख मात्र किया गया है। वैसे राजस्थानी बातों मे आदर्श पात्रों की बड़ी संख्या है और उन्होंने अनेक प्रकार के आदर्श उपस्थित किए हैं। शारीरिक शक्ति का नमूना भी द्रष्टव्य है :—

१. कूंगरो बलोच घरोड़ सखर रहै। तिलोकसीह जसहड़ौत जैसलमेर राज करै। कूंगरो छै साकड़ी री म्हार करै। एक वैर कूंगरै री हाडो परवत छै, ओय रहै। या छै सू घरोड़ रहै। सू पहाड़ इसड़ो परबत सू पहाड़ काटि नै माहै घर कियो। सू घर रै मुंहडै पहाड़ री चिटां कोटि नै राखी छै। सू पहाड़ रै मुंहडै दोयै। सू उवा चिटां कूंगरो

---

१. रा. वा., भाग १. २. रा. प्रै. क.
३. राजा नरसिंघ री बात (हस्तप्रति अ. बै. ग्रं. बी.).

खेलवै, बाजै कही खुलै नहीं। पहाड़ नै भरोड़ साठ कोस रो आंतरो। एक दिन पहाड़ रहै, एक दिन भरोड रहै। इम थको रहै।[1]

२. ताहरां सूरिजमल सादड़ी छाडी। सूरिजमल देवळीयै गयो। आगै देवळीयै मैंणों मरि गयो। मैंणी राज करै। उठै जाइ नै सूरिजमल पग टेकीया। सु मैंणी इसड़ी बलाह, बाओ पहिर घोड़ै चढै। सु ६ ताकड़ी री बूढी इसड़ी बरछी पकड़ीयै। देस मांहै चोथ लयै। अठै सूरिजमल प्रिथीराज रो धकायो थको मैंणी कन्है जाइ रह्यो।[2]

इन दोनो उद्धरणों में क्रमश: कूंगरा बलोच और मीनी रानी की शारीरिक शक्ति प्रकट की गई है, जो सामान्यजन से कहीं अधिक हैं। राजस्थान में जिस प्रकार अगणित व्यक्ति अपूर्व शौर्य सम्पन्न हुए हैं, उसी प्रकार यहाँ शारीरिक शक्ति भी कम नहीं रही है। ऐसे व्यक्तियों की आज भी लोग चर्चा करते हैं, 'बातों' के रूप में वे गौरवान्वित किए गए हैं।

यथार्थ

पात्रों के यथार्थ चरित्र चित्रण की दृष्टि से राजस्थानी बातें विशेष महत्वपूर्ण हैं। उन में मानव-मन की विविध स्थितियों का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया गया है। ऐसे चित्र बहुत अधिक हैं। उदाहरण देखिए —

१. केसै उपाधीयै री वात में जांगलू के स्वामी अजैसी दहिया का कुल-पुरोहित केसा है। राज्य मे उसका बड़ा सम्मान है। वह राजा की अनुमति प्राप्त किए बिना कोट के सामने तालाब बनवाना प्रारम्भ करता है। कोट के लिए यह हानिकारक है, अतः राजा अजैसी उसे रोक देता है। इस पर केसा मन ही मन बड़ा नाराज होता है और वह रायसी सांखला से गुप्त रूप से मिल कर षड़यंत्र रचता है। तय होता है कि केसा रायसी को जांगू का राज्य दिवा देगा और बदले में उसे कोट के सामने तालाब बनवा लेने देवे : दाहिया-दल के लोगो को वर रूप में विवाह के लिए बुलवा लिया जाता है और क्रूरतापूर्वक उनको आग मे जला दिया जाता है। केसा चालाकी से जांगलू के कोट का दरवाजा भी खुलवा लेता है। उस पर सांखला रायसी का अधिकार हो जाता है। कोट के सामने तालाब बन जाता है। इस प्रकार केसा की प्रतिहिंसा पूरी होती है। वह तुच्छ स्वार्थ के लिए अपने परम्परागत सम्बन्ध को भूल जाता है।[3]

२. कछवाहै री वात में नळवरगढ़ के पतन के समय बालक सोढ को लेकर उसकी माता दासी के रूप में जान बचा कर भाग जाती है और वह खोह में मीनों के राज्य मे पहुँ-

---

१. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ४२. २. वात सूरिजमल री (हस्तप्रति अ. सं पु. बी.).
३. अप्रकाशित बात (अ. जै ग्रं. बी).

चती है। वहाँ दुरावस्था में एक किसान मीना उन माँ बेटों को दयावश अपने घर में शरण देता है। सोढ की चर्चा खोह के राजा के पास पहुँचती है और वह उसे अपनी सेवा में बुलवा लेता है। कुछ समय बाद खोह पर शाही सेना की चढ़ाई होती है और मीनों का राजा ६ लाख रुपए नकद तथा ३ लाख के बदले सोढ को अपने पुत्र रूप में बादशाह के पास भेज कर सन्धि कर लेता है। राजा सोढ को कहता है कि वह धीरज धारण किए रहे, उसे जल्दी ही छुड़वा लिया जाएगा। बादशाह के सामने भेद खुल जाता है कि सोढ मीनों का राजा का बेटा न होकर कछवाहा राजपूत है। वह सोढ को सैनिक सहायता देता है और वह मीनों को मार कर खोह पर अधिकार स्थापित कर लेता है। इस प्रकार सोढ अपने शरणदाता का ही घातक बनता है।[1]

३. मारू सूथारी की बात में फूल की मृत्यु के बाद लाखा राजा बनता है और ठाकुर तथा भोमिये उस से मिलने के लिए आते हैं। वीरण राठोड़ भी वहाँ मिलने के लिए पहुंचता है। लाखा उसको अपनी बहिन विवाह में देने के लिए कह देता है। परन्तु यह बहिन उसकी सगी न होकर विमाता बलोचणी रानी की बेटी है। इस सम्बन्ध से वह नाराज होती है परन्तु उसका कोई वश नहीं चलता। वीरण विवाह के लिए आता है, उस समय उसकी बहली के तेज दौड़ने वाले रोझ देख कर लाखा उनको मांग लेता है। ये रोझ वीरण के नहीं हैं और धारा सूथार के हैं, जो वहीं साथ में है। तय होता है कि धारा पर कोई दोष लगा कर उस से रोझ छीन लिए जावें और और इसके लिए उसका बलोचणी रानी की कोटड़ी (निवास स्थान) में डेरा दिया जावे। फिर दोनों को पकड़ लिया जाय। बलोचणी को इस निर्णय की सूचना मिल जाती है और वह धारा को खबर देती है कि यदि वह उसे ले भागे तो वह चलने के लिए तैयार है। धारा मंजूर कर लेता है और वे चुपचाप बहली में बैठ कर भाग जाते हैं। इस पर लाखा बड़ा क्रोधित होता है क्योंकि बलोचणी रानी आखिर उसकी विमाता है। यह वीरण के साथ उसकी पुत्री को बिदा करता है और उसे समझा देता है कि किसी प्रकार वह ससुराल मे जाकर अपनी माता को जहर खतम कर डाले। वह इस के लिए तैयार हो जाती है और ससुराल में अपनी माता को कपटपूर्वक बुलवा कर उसे भोजन में विष दे देती है। इस प्रकार बलोचणी रानी की जीवन लीला समाप्त हो जाती है।[2]

४. 'ठकुरै साह री वात' में एक सेठ ठकुरै शाह के घर से निकले हुए पुत्र से अपना काम निकाल लेता है और फिर उसे धोखे से समुद्र में डाल देता है। किसी तरह वह बच जाता है और एक नगर में राजा के यहाँ 'जगाती' के रूप में नौकरी करने लगता है।

१. अप्रकाशित वात (अ. जै. ग्रं. बी.). २. वरदा, ७/१.

परन्तु वह अपनी जाति यदि किसी को नहीं बताता। पर जब राजा को पिछली बात का पता चलता है तो इस वृत्तान्त से बड़ा क्रोधित होता है कि जगाती ने अपनी जाति छिपाई। जब जगाती को बुला कर पूछताछ की जाती है तो सारा भेद खुल जाता है। इस पर डूम लोग तत्काल सेठ से प्राप्त दस मोहर निकाल कर राजा के सामने डाल देते हैं और कहते हैं कि सारा काम उन मोहरों ने करवाया है, जो उन्हें सेठ से मिली हैं।[1]

ऊपर केवल चार बातों में से उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार का यथार्थ रूप राजस्थानी बातों में अनेकशः देखा जाता है। इस प्रकरण में जिन पात्रों का चरित्र प्रकट किया गया है, उनमें कुछ अपनी विशेष कमजोरियाँ हैं। यह उनका यथार्थ रूप है परन्तु यह मानवीय है।

आदर्श और यथार्थ चित्रण

राजस्थानी बातों के अनेक पात्रों के चरित्र में आदर्श और यथार्थ का मिश्रण प्रकट हुआ है। ऐसे पात्रों की कुछ विशेषताएँ है तो साथ ही कुछ मानवीय दुर्बलताएँ भी है। उदाहरण देखिए—

१. राज बीज री बात में लाखा का भानजा राखायत अपने मामा के पास रहता है। और वहाँ उसका पूरा सम्मान है। परन्तु राखायत गुप्त रूप से घोड़े पर चढ कर मूलराज के पास जाता है और लाखा पर आक्रमण करने का अवसर बतला देता है। वह लाखा से अपने पिता की मृत्यु के बैर का बदला लेना चाहता है। जब मूलराज की सेना आक्रमण करती है तो राखायत स्वयं लाखा के पक्ष में लडता हुआ प्राण त्याग देता है। इस प्रकार वह लाखा के अन्त का स्वयं कारण बन कर उसके साथ अपना जीवन देता है। राखायत जानबूझ कर धोखा देने पर भी अन्त में स्वामिभक्ति प्रकट करता है।[2]

२. राजा नरसिंघ की बात में एक घोड़े के सम्बन्ध मे विवाद हो जाने के कारण हरा अजमेर को छोड़ कर पठानों की सेवा में चला जाता है। जब पठान अजमेर पर आक्रमण करने की सोचते हैं तो हरा सारी सूचना गुप्त रूप से अजमेर भेज देता है। इसी प्रकार वह चढ़ाई के समय भी अजमेर के गौड़ों के लिए उचित परामर्श छिप कर पहुँचाता रहता है। इतना होने पर भी जब अंत मे युद्ध होता है तो हरा पठानों के पक्ष में लड़ते हुए प्राण-त्याग करता है। गौड़ विजयी होकर हरा का संस्कार

---

१. ठुकरै साह री बात (अ. जै. ग्रं. बी.).
२. राज बीज री बात (अ. जै. ग्रं. बी).

करते हैं। इस प्रकार हरा अपने स्वामी को धोखा देते हुए भी उस के लिए ही प्राण देता है।[1]

३ देपाळ धंध की बात में मुलतान का बादशाह देपाळ से पराजित होकर उसको अपनी बेटी विवाह में दे देता है। फिर बादशाह अपनी बेटी को गुप्त रूप से अपने पक्ष में कर लेता है और उसके द्वारा यह मालूम कर लेता है कि देपाळ किस प्रकार मारा जा सकता है। देपाळ की पत्नी अपने पति को बातों में बहला कर उससे यह भेद पूछ लेती है। अन्त में जब देपाळ युद्ध में मारा जाता है तो बादशाह की बेटी उसके साथ सती होती है। इस प्रकार वह पहिले पतिद्रोह और फिर पतिभक्ति प्रकट करती है।[2]

चरित्र-विकास

राजस्थानी बातों में पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रायः स्थिर हैं और उनका विकास कम ही दृष्टिगोचर होता है। फिर भी कई बातों में पात्रों की मनोदशा मे परिस्थितिवश विशेष परिवर्तन देखा जाता है। यही उनका चारित्रिक विकास है। उदाहरण—

१. ऊमादे भटियाणी री बात में रानी ऊमादे अपने पति को एक दासी की ओर आकृष्ट देख कर रूठ जाती है और फिर उसे मनाने के लिए अनेक प्रयत्न किए जाने पर भी वह नहीं मानती। सर्व साधारण में उसका नाम ही 'रूठी राणी' के रूप मे प्रसिद्ध है। अन्त में जब उसके पति राव मालदेव का देहान्त हो जाता है तो वह सती होती है और अपने जीवन का अनुभव संदेश रूप में देती है कि उनकी तरह कोई स्त्री संसार में 'मान' न करे। इस प्रकार अत्यंत आग्रह के साथ जन्म भर 'मान' पर डटी रहने वाली ऊमादे अन्त में उसकी निस्सारता के प्रति ग्लानि प्रकट करके अपने पति के साथ ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती है।[3]

२. लाखे फूलाणी की बात में जब लाखा दूर देश जाता है तो अपनी प्रियतमा सोढी रानी के पास गायन के द्वारा उसका मन बहलाने के लिए मनभोळियो डूम को छोड जाता है। पीछे से सोढी रानी कामातुर होकर मनभोळिया को अपने महल में रखने लगती है। यह खबर किसी तरह लाखा के पास पहुँच जाती है और एक रात वह चुपचाप आकर सोढी रानी का चरित्र देख लेता है। इस पर लाखा उसे मारने

---

१. राजा नरसिंघ री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

२. देपाल धंध री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)।

३. रा बा., भाग १.

के लिए तरवार निकालता है परन्तु अपने पूर्व वचन का स्मरण करके उसको नहीं मारता। अगले दिन सोढी रानी उसी डूम को सौंप दी जाती है। वह मनभोळिया के साथ चली जाती है। कुछ समय बाद वे दोनों पाटण में लाखा को देखते हैं। इस समय सोढी प्रतिज्ञा करती है कि लाखा के हाथ का 'सूळा' खाए बिना वह अन्न पानी ग्रहण नहीं करेगी। यह प्रतिज्ञा सुन कर लाखा अपने हाथ का बनाया 'सूळा' सोढी के लिए भेजता है। उसे देखते ही सोढी प्राण त्याग देती है। इस प्रकार सोढी रानी पति को दगा देने के बाद भी उसके व्यवहार को देख कर अन्त में आत्मग्लानि के कारण अपनी जीवन लीला समेट लेती है।[1]

'कावळो जोड़यो नै तीडी खरळ री वात' में कांवळा एक दम भोले स्वभाव का व्यक्ति है। यहाँ तक कि उसकी सास अपनी बेटी को उसके घर भेजने के लिए भी तैयार नहीं होती। अंत में किसी तरह समझाने से वह उसे कांवळे के साथ विदा कर देती है। जब उसका गांव निकट आता है तो उसकी पत्नी तीडी कपड़े आदि ठीक करने के लिए ऊंट से नीचे उतरती है और उसे कुछ दूर खडा होने को कहती है। कांवळा समझता है कि वह अकेली आ जाएगी और स्वयं घर चला जाता है। रात पड जाती है और तीडी ससुराल का घर जानती नहीं, अतः वह रोने लगती है। इसी समय वहाँ एक धाडी आता है और सारी स्थिति समझ कर तीडी को कहता है कि ऐसे व्यक्ति के साथ उसका निर्वाह नहीं हो सकेगा। यदि वह चाहे तो उसके घर आ सकती है, वहाँ उसे पूरा सम्मान मिलेगा। इस पर तीडी उसके साथ चली जाती है। इधर कांवळा तीडी के लिए भगवां धारण करके उसकी खोज में निकलता है और घूमते घूमते अंत में उसी गांव में चला जाता है, जहाँ तीडी रहती है। धाडी की अनुपस्थिति में उनका मिलाप होता है और जब तीडी देखती है कि उसके लिए कांवळे ने घर छोड़ दिया है तो वह उसके साथ जाने को तैयार हो जाती है परन्तु शर्त यह है कि वह किसी समर्थ पुरुष को साथ लेकर वहाँ आवे, नहीं तो उन में से किसी की भी खैर नहीं। कांवळा अपने बहनोई को साथ लेकर वहाँ फिर आता है और धाड़ी की अनुपस्थिति में वे तीडी को ले भागते हैं। इस प्रकार तीडी का मन अपने पति की मूर्खता के कारण उस से फिर जाता है परन्तु अन्त में उसके त्याग को देख कर उसका प्रेम उमड़ता है और वह भयकर खतरा उठा कर भी उसके साथ वापिस लौट आती है।[2]

मानसिक संघर्ष

बातों में मानसिक संघर्ष की अनेक परिस्थितियां प्रकट होती हैं परन्तु वहाँ इस प्रकार का मनोवैज्ञानिक चित्रण दृष्टिगोचर नहीं होता। वहाँ सीधे-सादे रूप में घटना की

---

१. अप्रकाशित बात (अ. जै. ग्रं. भो.). २. बा. सू. ४.

ओर संकेत कर दिया जाता है, मनोभावों की सूक्ष्मता के चित्रण की ओर ध्यान नही दिया जाता। इस सम्बन्ध में कहीं कहीं साधारण चर्चा भले ही मिले।

१. इतरै मे नागोर बीकानेर आपस में कजियो हुओ, गांव जखाणियां बाबत। सो नागोर री फौज भागी, बीकानेर री फतह हुई।........सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई। सो सुणत सुवां काळो मरट हुय गयो। हाथ पटकै, दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै। कटारी सूं तकियो फाड़ नांखियो। जै म्हांरी घणा दिनां री संची जाजम बीकानेर री खाली कर दीवी। मैं तो इहां नूं जोधपुर रै पगां संचिया था, सो हमें जोधपुर री आस तो चूको दीसै छै।' मुत्सद्दी अमराव हजूर री धीरज बंधावै, परचावै, पण अमरसिंह तो बावळे री सी बात करै।[1]

राव अमरसिंह की ऐसी मनोदशा उस समय प्रकट की गई है जब उसे अपनी जागीर (नागोर) से पराजय का संवाद मिलता है और शाही दरबार से घर जाने के लिए उसे छुट्टी प्राप्त नही हो रही है।

२. एकै दिन राजड़िया रो बेटो बीजड़ियो बीरमदेजी री खवासी करै छै। तिण आंख भरी, चौसरा छूटा। बीरमदेजी पूछियो, 'बीजड़िया, क्यूं, किण तोनै इसो दुख दीधो? तद बीजड़ियै कह्यो, 'राज माथै धणी, मोनै दुख दै कुण? पिण नींबो म्हारा बाप रो मारणहारो, गढ-कोटा मांहि बडा बडा सगां मांहे धणीया रो हासारो करावणहारो, बळे गढ माहे खंखारा करै छै नै पोढै छै, तिणरो दुख आयो।'[2]

इस प्रसंग मे बीजड़िया का हृदय उसके पिता को मारने वाले नींबा को राजमहल मे आराम से रहते देख कर जल रहा है। परन्तु वह सेवक है, अतः उसकी मानसिक पीड़ा नेत्रों की राह बह चली है।

३. अचळदासजी नूं आंख्यां न ही देखै छै, तरै ऊमांजी झीमी नूं कहियो, 'हिमें क्यों कि जासी?' एकेक रात बरस बराबर हुई छै। आखी खाधी तिका आधी ही न पावूं, इसड़ी हुई। तरै ऊमांजी झीमा नां कहै छै, 'कासूं कीजसूं? कोहक विचारणा करणी, औ जमारो क्यों नीसरै? जो तू वीण बजावै, तरै रन रा मृग आवे नै आगै ऊभा रहता, सो ते अचळजी नूं मोहै नै ल्यावे सो तूं खरी सुघड़राय।' तरै झीमी कहियो, 'जो अचळदासजीनां एक बार आंख्यां देखूं तो मगन करां। आंख्या ही न देखूं तो किसो जोर लागे?'[3]

इस प्रसंग में सौत के द्वारा वशीभूत पति के द्वारा परित्यक्ता पत्नी की मनोवेदना प्रकट हुई है। किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति ने इस वेदना में विशेष रूप से वृद्धि कर दी है।

---

१. रा. वा. सं, पृष्ठ १६६. २. रा. वा., पृष्ठ ७६-७७. ३. प. सं. द., परि.

१ लाखा फूलाणी

(क) ताहरां राज सोलंकी खेतपाळ री आराधन कर पूछीयो, 'जो मांनै तो थांहरो वर, सु श्रे मांहरी मदत कां करो नहीं ।' ताहरां खेतपाळ कह्यो, 'जो लाखे नैं वर मानाजो रो छै । सु हुँ माताजी सुं वस आवुं नही ।' तो कह्यो, 'कही भांई लाखो मरे ही ? ताहरां खेत-पाळ कह्यो, 'जो लाखे री मोत राय सीहे रै हाथ छै । उवै सुं मरसी ।[१]

(ख) लाखो फूलांणी फूल विसरांमीयें सुं घरे आयो । ताहरा चोगरद रा ठाकुर भुमीया लाखैजी नुं मिलण आवे छै ।[२]

२ फोगसी एवाळ

(क) आगे फोगसी एवाळ गाडरां चारे छै । जाय फोगसी वासे छिपीया । इम कहीयो, 'फोगसी, मांहरी वयर घवळै दिहाड़े भोगवै । हमे म्हांनू मारण आवे छै ।' सवे हकीकत कही ।[३]

(ख) ताहरां धारे फोगसी नुं कह्यो, 'तोनुं मारू परणावुं, जे १२ वरस एवड़ चारै तो ।' ताहरां फोगसी कहै, एवड चारीस १२ वरस, पण कौल दे ।'[४]

(ग) तठे एकंतरो राज फोगसी रहै छै । तीण रे लाखां गमे गाय छै, भैंसां छै, साढ्यां छै। तिके लखो जंगल मे चरै छै । मनै फोगसी एकण भाड़ नीचे बैठो छै ।[५]

३ खाफरा चोर

(क) सु मारत मोठी । खाफरो बंदीखाने हुंतो, तिके नू छोड़ियो । खाफरो आय उभो रह्यो ।[६]

(ख) एके दिन राजा रै खाफरो चोर चोरी करण पैठो । तद राजा रै हुजूर जनाने भीतर आयो । सु खाफरै नूं श्रो मंत्र, श्री खेत्रपालजी रो वर, सु इये नुं देखे कोई नहीं । ताहरां भीतर आय ने चोरी कीवी ।[७]

४ मलो भोकाई

(क) तठै मलो फेर कहै छै, 'आपणी तो टेक छै । तै ऊपर मलो दूहो कहै —

मीठो कहा मगार को, ताहि कीर चुगाय ।
यही टेक नही छंडीयें, जो चांच जीभ जळ जाय ।।[८]

(ख) मलो घरे आयो । ऊंठ दीठो नहीं । खबरि हुई । ताहरां मलो बास चढीयो ।[९]

---

१. बात राव बीज री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).
२. बात माह मूपाठे री बरदा, ७/१.
३. बात बहुक री, शोध पत्रिका, १४/८.
४. बात माक मूपाठे, बरदा, ७/१.
५. बरदा, ५/४, बात फोगसी एकउत री.
६. बात मलै मगनो री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
७. बात मुसर्दे सांमावत री, बरदा, ७/१.
८. हस्तलिखित बात, अ. स. पु. बी.
९. बात, काबल्हो जोइयो नै लोजी धरम री, बा. मू. प.

इतना ही नहीं, कई बातों में तो पुराणों के पात्र तक राजस्थानी रूप में प्रकट हुए हैं। 'राजा चौबोली मानधाता री वात' (चौबोली, पृष्ठ ४३-५५) में तो प्रारम्भिक अंश पूरा ही प्राचीन सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र मांधाता विषयक उपाख्यान का ग्रहण कर लिया गया है। इस वात में अजमेर के राजा अजयपाल को मांधाता के मामा के रूप में प्रकट किया गया है —

राजा अजमेर सामो आइ अजैपाळ रै पगे लागो। राजा मानधाता सूं अजैपाळ मिळीयो, घणो हरख कीयो। कह्यो, 'जावो, मामां नुं सलाम करो। ''''''''बात सगळे परगट हुई। तादरां राजा अजैपाल मानधाता नुं राज ने आप तपस्या करणं गयो। राजा मानधाता बडो राजा हुवो। चकवै कहाणो। बडी साहिबी हुई।[1]

मानधाता का उपाख्यान महाभारत (द्रोणाचार्य, अध्याय ६२) तथा विष्णुपुराण (४/२) में प्राप्त है। इस सम्बन्ध में 'डॉ. कन्हैयालाल सहल का वक्तव्य विषय को स्पष्ट कर देता है —'मानधाता री वात में पौराणिक उपाख्यान तथा शुद्ध लोककथा का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है। पौराणिक उपाख्यान में 'निषिद्ध कक्ष' जैसी कोई कथानक-रूढ़ि उप-लब्ध नहीं होती। मानधाता ने छड़ी की सहायता से दिव्यलोक में पहुँच कर जो अद्भुत दृश्य देखे वे किसी भी कल्पित पात्र को लेकर दिखलाये जा सकते थे। मानधाता री बात में से यदि पौराणिक उपाख्यान हटा दिया जाय और मानधाता के स्थान पर किसी अन्य पात्र की कल्पना कर ली जाय तो यह बात एक विशुद्ध लोककथा का रूप धारण कर सकती है।'[2]

मानव का देवीकरण

वातों में मानव पात्रों का देवीकरण अनेकशः द्रष्टव्य है। असल में यह प्रवृत्ति लोकविश्वास से ग्रहण की गई है। यहाँ अनेक पात्र लोकवीर पद से लोक देवता रूप को प्राप्त हुए हैं और उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक चमत्कार पूर्ण कहानियाँ जनता में फैली है। इन कथानकों को लोकवीरो विषयक बातों में गुम्फित कर दिया गया है। कुछ उदा-हरण इस प्रकार हैं —

१. श्रीरामदेवजी री वात में आदि से अन्त तक चमत्कारपूर्ण घटनाओं की चर्चा है। शिशुअवस्था में उफनते हुए दूध के पात्र को आग पर से उतार देना, बाल्यकाल में भैरव राक्षस को मार भगाना, मालोजी के साथ चोपड़ खेलते समय समुद्र मे से डूबते हुए बनिये को बचा कर बाहर निकाल देना, समाधि लेने के बाद भी हरवूजी से मिलने के लिए आगे तक पहुँचना आदि आदि घटनाएँ इस बात मे दी गई हैं। राम-

१. चौबोली, पृष्ठ ५४-५५. २. राजस्थानी लोककथाओं के कुछ मूल अभिप्राय, पृष्ठ ३५-३६.

देवजी के समान ही हरबूजी भी राजस्थान मे पीर (सिद्ध) के रूप मे पूजित हैं। इस बात में नायक का चित्रण देव रूप में ही हुआ है।[१]

२. 'पाबूजी री बात' में पाबूजी अनेक वीरतापूर्ण कार्य करते हैं परन्तु कई स्थानो पर उनके द्वारा भी चमत्कार प्रकट करवाए गए हैं। योगी लोगों द्वारा मार कर खाई हुई सांड (ऊंठनी) को फिर से जीवित करना, बिना जल प्रवेश किए नदी पार हो जाना, गोगाजी की करामात के ऊपर अपनी दिव्यशक्ति का परिचय देना आदि घटनाएं इस बात में हैं। पाबूजी की तरह गोगादे भी पीर के रूप में लोकपूजित हैं। इस बात में पाबूजी के जीवन को अधिकांश मे मानव रूप में ही चित्रित किया गया है।[२]

३. 'सयणी चारणी री बात' मे सयणी का देवी रूप में चित्रण हुआ है। उसे महाशक्ति योगमाया बतलाया गया है और उसके भी अनेक चमत्कार बात में दिए गए हैं। यात्रा पर जाते समय वह दिल्ली मे मालदेव के यहाँ ठहरती है, जो बादशाह की नौकरी करता है। वहाँ वह बादशाह को करामात दिखलाती है और सांप से कटवा कर मृतक किए हुए घोड़े को फिर से जीवित कर देती है तथा मालदेव को पाताल ले जाती है। फिर मृत्युलोक आकर हिमालय की ओर चली जाती है। इस बात में सयणी के चरित्र में मानव तत्व और देवतत्व दोनों प्रकट है। वह सर्वथा देवी के रूप में नही दिखलाई गई है क्योंकि वह बीझानद से प्रेम करती है।[३]

राजस्थानी बातों में देव-दानव, भूत-प्रेत आदि पात्र भी अनेकशः प्रकट हुए हैं। लोकचित्रण विषयक प्रसंग में इसके बारे में प्रकाश डालना उचित होगा।

कथोपकथन

पात्रों के वार्तालाप का कहानी में बड़ा महत्व है। इस से उनके विचार प्रकाशित होते हैं। साथ ही उनकी वृत्तियाँ एवं स्वभाव आदि भी प्रकट होते हैं। कथोपकथन से कहानी में नाटकीयता आती है और उसमें एक विशेष प्रकार का आकर्षण भर जाता है।

---

१. रामदेवजी री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्र. बी.)। २. रा. वा. सु. पा.
३. रा. वा, भाग १.

जब पात्र वार्तालाप करते हैं तो उनकी सजीवता सामने आती है और पाठक का हृदय उनके साथ जुड़ जाता है। इस प्रकार पात्रों के साथ आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। कथोपकथन में कई विशेष गुण होने चाहिए। उसमें संक्षिप्तता, सरलता, पात्रानुकूलता तथा मार्मिकता का रहना आवश्यक है। लम्बे भाषण उचित नहीं। इन से पाठक ऊब जाते है। कथोपकथन से पात्रों का चरित्र प्रकट होना चाहिए। उसमें कथा-वस्तु को विकसित करने की सामर्थ्य होनी चाहिए। जो वार्तालाप जितना अभिनयात्मक होगा, वह उतना ही सुन्दर और लुभावना रहेगा।

राजस्थानी बातों का यह तत्व विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। यह गद्यात्मक एव पद्यात्मक दोनों रूपों में देखा जाता है। गद्यात्मक वार्तालाप बड़ा ही महत्वपूर्ण है। उसमें कथोपकथन के सभी गुण सुन्दर रूप में देखे जाते हैं। वह संक्षिप्त, सारगर्भित तथा स्वाभाविक होता है। उसकी नाटकीयता गजब की है। जब बातों के पात्र बातचीत करते हैं तो मानो वे पाठकों के सम्मुख प्रकट होकर अपना ज्ञापन करते हैं और वे केवल कहानी की चीज नहीं रहते। बात-लेखको ने इस तत्व की ओर पूरा ध्यान रखा है और इस प्रयोग से उनकी बातों की कलात्मकता में विशेष वृद्धि हुई है। बातों का यह तत्व इतना आगे बढ़ा हुआ है कि अनेक स्थलों पर आधुनिक पद्धति की आख्यायिकाओं से भी सहज ही टक्कर ले सकता है।

पद्यात्मक कथोपकथन

अनेक बातों मे पुरानी परिपाटी के अनुसार पात्रों का पद्यात्मक वार्त्तालाप भी मिलता है। यह राजस्थानी बातों में व्याप्त काव्यतत्व का सूचक है। इस में स्वाभाविकता नही रहती, परन्तु सरसता अवश्य मिलती है। उदाहरण देखिए :—

१. अनंतराय

करि मुजरौ कँवाट, भाखे मम राजा अनत।
पाछौ मेलुं पाट, परणाय'र गिरनार पत ॥

कँवाट

भमंग न झेलै भार, पाजा दध सायर पलै।
गढ लाजै गिरनार, कहो मुजरौ किण नें करूं ॥

अनंतराय

पग वेहो घालूं प्रगट, जडयूं तोख जंजीर।
करि मुजरो कँवाट सी, सहसी दुख सरीर ॥

कँवाट

ऊगै उलट प्रदीत, दिखण दिसा सुमेर दियँ।
सत जो छोडै सीत, मुजरो करि तोसों मिलूं॥

अनंतराय

कहो मुं मुजरो क्यूं न करो, येक श्राख अनतेस।
जुध कर मोसूं कुंण जुड़ै, दहल पड़ै दस देस॥

कँवाट

गंगा उलट दिस गुड़ै, संकै मनाज मेर।
मुजरो करि तोसों मिलुं, तो सरके दक्षिण सुमेर॥

अनंतराय

सो छत्र धारी सांखळा, थोगण भरियां थाट।
सो राजा वन में सिड़ै, किसड़ो गिणत कँवाट॥

कँवाट

रजपूती रो राह, थळ मैं नहीं छै श्रागली।
सो ढिग ल्यायो साह, अंजसों कांई राजा अनत॥[१]

२. बूबना

सांई दीजै सज्जणा, ऊतर ए जांणांह।
म्हारो जिवड़ो थांव सूं, थांरी नह जांणांह॥

जलाल

जीव हमारा तैं लिया, पंजर भी अब लेहु।
तेरे सिर पर वार के, फेर फकीरां देहु॥

बूबना

मैं मन दीन्हों तोय, नैणां जिण दिन देखियां।
सुधि क्यों रही न मोय, प्रेम लाज अब राखियां॥

जलाल

ऐसी विधि ले कीजिये, मित्रां सूं मन मेळ।
सरसै सरस विरसै विरस, ज्यूं पत्तो अहिबेल॥

---

१. 'कँवाट सरवैया अनंतराय सांखला री बात' (हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं., बी.)।

बूबना

मेरे सज्जरण मीत तुम, प्रीतम तुम परमांण।
मोनूं पग री मोचड़ो, जलाल करियो जांण ।।[1]

(१)

विजोगण फूल देखनै दूहो कहै । दूहो —

ना हर चढ़ै न धर पड़ै, विच ही जाय विलंब ।
हम जोबन तुम फूलड़ा, अहळा गया कलंब ।।

ओ दूहो बीजड़ सांभळीयो, तद बीजड़ कहै छै । दूहो —

कुंवळ तुहारो रे कदंब, पास ही मार्णे बाय ।
बीजड़ विजोगण बिना, जीवन अहळो जाय ।।

ओ दूहो विजोगण सांभळ नै वळै विजोगण दूहो कहै —

बीजड़ तो समदां विचै, तू सिव हर क वास कत ।
हरख घणों पूरण हुई, अबला आतुर मति ।।

फेर बीजड़ कहै —

बीजड़ तो समंदां विचा, परम उतारघो पार ।
जो तू अर्द्ध विजोगणी, सही करै मो सार ।।

फेर विजोगण कहै —

जी जी करती तिय जपै, कीध मिलप करतार ।
हम जळ काज पपीहै जेंही, पीव करत पुकार ।।[2]

यहां वीर रस एवं शृंगार रस के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। प्राय: शौर्य एवं प्रेममूलक बातों में ही पद्यात्मक वार्तालाप अधिक मिलता है। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि इसकी अधिकता बड़ी बातों में ही मिलती है। छोटे आकार की बातों में यह चीज प्रायः बहुत कम मिलती है। बड़ी बातों में सजावट के लिये अधिक अवकाश रहता है। इसके विपरीत छोटी बातों में कथोपकथन प्रायः गद्यात्मक ही मिलेंगे, कहीं कहीं कोई कोई पात्र अपने मुख से पद्य भले ही बोल देवे।

स्वाभाविकता

राजस्थानी बातों में कथोपकथन की स्वाभाविकता की ओर भी लेखकों ने ध्यान अवश्य रखा है। यही कारण है कि वहां पात्रों की भाषा अनेक बार उनके अपने गुण-धर्म

---

१ रा बा. सं., पृष्ठ १११-११२. २. बात बीजड़ विजोगण री, बा. सू. पा.

के अनुसार कुछ बदली हुई सी प्रकट होती है। सामान्यतया जोगी लोगों के मुख से एवं मुसलमान पात्रों के वार्तालाप में खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी का प्रयोग देखा जाता है। इस से पात्र की विशिष्टता प्रकट होती है और वातावरण बनता है। एक ही बात में जहाँ लेखक का वक्तव्य एवं अन्य पात्रों के वचन राजस्थानी में दिए गए हैं, वहाँ मुसलमान पात्र अथवा जोगी राजस्थानी मिली हुई खड़ीबोली में बोलता है। इस सम्बन्ध में उदाहरण देखिए :—

१. अमरसिंह जी जाय भीतर खड़ा है। सलावतखांन साम्हैं खड़ो छै। और पण लोग खड़ो छै। इतरै में अमरसिंह जी नूं देख खान कही, 'रावजी, फीलबराई का सरतत करो।' अमरसिंह जी कही, 'फीलबराई री तो दीसमं पण थांनूं इतरा दिन कहतां हुआ जे अरज कर सीख दिरावो, सो थांसूं इतरो ही काम नीसरियो नहीं, सो म्हे तोनूं जाण रहिया। हमे तोनूं नही करस्यां। आपे अरज करस्यां।' इतरी सुण सलावतखां नाक चाढ बोलियो, 'रे गंवार, किस तरह बोलता है ?' इतरी कहतां पांण तो अमरसिंह जी ऊभा था, तिकी जगा सूं तमक जाय खांन सूं भेळा हुई गया। कटारी दीन्ही सो मोटे पेट मे हाथ तक गरक हो गयो।[1]

२. सो इण दोहे री किही बादसाह नूं चुगली कीवी, 'जे केसरसिंह कुंवर चारण पास किस तरह कहावता है।' तद बादसाह चारण नूं बुलाय फरमायो, 'तैंने केसरिये कुंवर कूं किस तरह कहा ?' तद च्यार बारेक तो नटियो पण बादसाह फेर गाढ कर पूछी जद चारण बांण चाढ दूहो कहियो सो बादसाह सुण घणा मांणसां रे सुणता फरमाई, 'जे उस रोज तो केसरिया ऐसा हीज हुवा।' तो सगळा देखता ही जै रहि गया। चुगलखोरा रो मुंह फीको पड़ गयो। फेर एक दिन बकसी रे नायब बादसाह सूं मालूम कीवी, 'जे केसरिया कुंवर गैरहाजर।' तो बादसाह सुण फरमाई, 'केसरिया हाजर था, उस रोज तुम न थे।' तद नायब फीको मुंह कर खड़ो रहियो।[2]

ऊपर दो उद्धरण दिए गए हैं। इन में एक साथ ही लेखक के वक्तव्य के अतिरिक्त हिन्दू तथा मुसलमान पात्रों के वचन हैं। यहाँ मुसलमान पात्रों की भाषा राजस्थानी मिश्रित खड़ीबोली है। इसी प्रकार नाथ एवं जोगी लोगों से सम्बन्धित एक उद्धरण भी द्रष्टव्य है :—

तद गोरखनाथजी आय बैठा। तठै देपाळ आदेस कर अर गोरखनाथजी नूं आसण दे अर बोलाया। आयस कन्है बैठा। ईतरै कही, केही के कही, 'राज, गोठ तयार हुई छै।' तद देपाळ कही, 'पहिले आयसजी नुं जीमावो।' तद कह्यो, 'आयसजी, मांस छै,

१. रा. वा. स., पृष्ठ १५८-१५९. २. वही, पृष्ठ १७२-१७३.

आरोगसो ?' तद गोरख जी कही, 'बाबा, हम अतीत छों। आवैं सो खावां। अतीत कूं क्या पूछणा ? अलख का घर है। सब ही गोठ सब खावां।' तद देपाळ कही, 'तो नहीं कासूं ? जीमो।' तद ए पुरसता गया अर गोरखनाथजी जीमता गया। तद सारो ही जीमीयो। तद देपाळ पूछीयो, आयसजी, धापीया ?' तद गोरख कही, 'बाबा, अतीत का क्या धापेगा ?'[1]

इसी प्रकार भीलों से सम्बन्धित एक प्रकरण द्रष्टव्य है :—

इसी भांति झाली नै समझाय अक्काई भील कनै आयो। तरे अक्कोई कह्यौ, जुहार, जुहार, पिण ग्रहणो तो उतारे आपिनैं जोर रजपूताणी काई हुखरो दीसै छै, जाणे पाभाहुर री हांह, तो रजपूताणी थमनै आपि नैं थारा हाथ उपरा जीवतूं नैं हथियार वगह्या।' तरैं जखड़ै कह्यौ, 'तो म्हारो नैं म्हारी रजपूताणी री गेहणो भेळो करि ल्याऊं छूं।' इसो कहि पाछो फिरियो, तिको सांढि कनै आयो। झाली नैं कह्यो, 'आगिलैं आसण बैसि जावो। तरै झाली मोहरी हाथ माहे लै नैं जखड़ैं टांग वाळी नैं कांब चलाई ने सांढ पवनै-पवन लागी।[2]

इस प्रसंग में भील सरदार अक्काई तथा जखड़ा भाटी की बातचीत में भीली भाषा का प्रयोग स्पष्ट है।

जाटों सम्बन्धी एक प्रकरण द्रष्टव्य है :—

माहे राजा सूं मालम करियौ, कारसा ऊभा छै, हुकम करो तो आवैं। तरे हुकम हुवो, तरे मांहे पोहता। त्यां मांहे ऊभो मुदो। बोल्यो, 'राज्याजी, रांम रांम। राज्याजी समाध्या छो ? 'राजा हस्यो। तरे ऊगै कह्यौ, 'महाराज, वेड का रहिणवाळा छां। बोलण की कूं ही जाणां छां नहीं, माफ करियो।' तेरे राजा कह्यौ, 'कठै रहो नैं इतरी दूर कूं आया ?' तद ऊगै कह्यौ, 'गरीबनवाज, माळवैं सिंघू धणी खेचळ करै नैं दुख दे छै। दूध-दही, मावो, खांयड़ी, माडी, वैठ पड़ि पावां नहीं। आथळ का देवाळ छां। एक थांहरैं रैंत नैं चैन सुणियो, त्रेरा थाका पावां आया छां।' तद राजा कह्यो, 'म्है थांनै थाघ में होरवायत करस्यां। वेगा आवज्यो। वाछा खेत थांहरा छै।'[3]

इस प्रसंग मे उगा एक जाट के वेश में आता है और वह राजा से जाटों की बोली मे बातचीत करके पूरा स्वांग भर लेता है।

भाषा की यथार्थता के प्रकाशन हेतु कागड़ा बलोच एवं उसकी पुत्री की बातचीत भी ध्यान देने योग्य है :—

---

१. देपाळ धंध री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं बी). २. रा. वा. सू. भा, पृ. १४८-१४९.
३. रा. वा, भू. भा, पृष्ठ ११६ ११७.

के अनुसार कुछ बदली हुई सी प्रकट होती है। सामान्यतया जोगी लोगों के मुख से एवं मुसलमान पात्रों के वार्तालाप में खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी का प्रयोग देखा जाता है। इस से पात्र की विशिष्टता प्रकट होती है और वातावरण बनता है। एक ही बात में जहाँ लेखक का वक्तव्य एवं अन्य पात्रों के वचन राजस्थानी में दिए गए हैं, वहाँ मुसलमान पात्र अथवा जोगी राजस्थानी मिली हुई खड़ीबोली में बोलता है। इस सम्बन्ध में उदाहरण देखिए :—

१. अमरसिंह जी जाय भीतर खड़ा है। सलावतखान साम्हैं खड़ो छै। और पण लोग खड़ो छै। इतरै मे अमरसिंह जी नूं देख खान कही, 'रावजी, फीलवराई का सरतत करो।' अमरसिंह जी कही, 'फीलवराई री तो दीससै पण थांनूं इतरा दिन कहतां हुआ जे अरज कर सीख दिरावो, सो थासूं इतरो ही काम नीसरियो नही, सो म्हे तोनूं जाण रहिया। हमे तोनूं नही करस्यां। आपे अरज करस्यां।' इतरी सुण सलावतखां नाक चाढ बोलियो, 'रे गवार, किस तरह बोलता है?' इतरी कहतां पांण तो अमरसिंह जी ऊभा था, तिको जगा सूं तमक जाय खान सूं भेळा हुई गया। कटारी दीन्ही सो मोटे पेट में हाथ तक गरक हो गयो।[1]

२. सो इण दोहे री किही बादसाह नूं चुगली कीवी, 'जे केसरसिंह कुंवर चारण पास किस तरह कहावता है।' तद बादसाह चारण नूं बुलाय फरमायो, 'तैंने केसरिये कुंवर कूं किस तरह कहा?' तद च्यार वारेक तो नटियो पण बादसाह फेर गाढ कर पूछी जद चारण वांण चाढ दूहो कहियो सो बादसाह सुण घणां मांणसां रे सुणता फरमाई, 'जे उस रोज तो केसरिया ऐसा हीज हुवा।' तो सगळा देखता ही जै रहि गया। चुगलखोरा रो मुंह फीको पड़ गयो। फेर एक दिन बकसी रे नायब बादसाह सूं मालूम कीवी, 'जे केसरिया कुंवर गैरहाजर।' तो बादसाह सुण फरमाई, 'केसरिया हाजर था, उस रोज तुम न थे।' तद नायब फीको मुह कर खड़ो रहियो।[2]

ऊपर दो उद्धरण दिए गए हैं। इन में एक साथ ही लेखक के वक्तव्य के अतिरिक्त हिन्दू तथा मुसलमान पात्रों के वचन हैं। यहाँ मुसलमान पात्रों की भाषा राजस्थानी मिश्रित खड़ीबोली है। इसी प्रकार नाथ एव जोगी लोगों से सम्बन्धित एक उद्धरण द्रष्टव्य है :—

तद गोरखनाथजी आय बैठा। तठै देपाळ आदेस कर अर गो[illegible] आसण दे अर बोलाया। आयस कन्है बैठा। ईतरै कही, केही के कही[illegible] हुई छै।' तद देपाळ कही, 'पहिले आयसजी नुं जीमावो।' तद कही[illegible]

---

१. रा. वा. स., पृष्ठ १५८-१५६. २. वही, पृष्ठ १७२-१७३.

तद ठग रे बेटे कह्यो, 'तो थे म्हांहरा बहनोई हुवो। फलांणे वरस थांहरो वान मायो हुतो। तद बीया कीयो हुतो। सो ता पछे थे भली समझ कोनी। 'तद रजपूत पणा पढोजा कीयां। तद ठगे कह्यं, 'तो श्रठे किसे वासते घर थकां उतरीया? चालो घरे।' तद कह्यो घोड़ो झालीयो, कह्यो हथीयार झालीया अर रजपूत नूं लेने घरे गया।'[1]

इतना ही नहीं, कहीं कहीं विद्वान ब्राह्मण के मुख से संस्कृत का श्लोक तक कह-लाया गया है:—

एक परदेशी ब्राह्मण रावळदेजी री सभा मांहे भावियो, राजा साहमो ऊभो रहि भाशीर्वचन दियो। श्लोक —

चिरंजीव चिरं नन्द, चिरं पालय मेदिनीम्।
चिरमाधिरय लोकानां, पूरय स्व मनोरथान्॥

इसो भाशीर्वचन दियो। तहँ रावजी पगे लागणा किया, भादर सम्मान कियो नें पूछियो, देवजी, कठा सूं पधारिया?'[2]

संक्षिप्तता एवं सरलता

कथोपकथन का एक गुण यह माना गया है कि उसमें लम्बा भाषण न हो। ऊपर जो उदाहरण दिए गए हैं, उनमें विशेष परिस्थितिवश पात्र कुछ अधिक बोलता है, अन्यथा राजस्थानी बातों में प्राय: पात्रों का वार्तालाप संक्षिप्त ही रहता है। उसमें अनावश्यक वाक्य एक भी प्रयुक्त नहीं मिलता। उदाहरण:—

ताहरां हालण री तयारी कीवी। ताहरां मांगो सोनार कहै, 'घरे कुण राखिस्यां?' ताहरां बेर बोली, 'कळी नुं राखिस्यां। श्रोथ कळी मांगी छं, ते नही ले जावां।' ताहरां कळी नुं घरे राखी। कह्यो,'बीजो आदमी कळी कन्है कुण राखिस्या?' ताहरां मांगो कहे, 'भंगारीयें नुं राखिस्यां, ताहरां बेर बोली, 'भलां।'

तितरे भांख भाई। तोयें मांहे नव पांखडीयो फूल उडी भाकरो फूल भाई पड़ियो। भांख मिटी। कळी देखे तो फूल एक पड़ीयो छे। कळी फूल दीठो देखिनें कह्यो, इसड़ा कोई फूल घड़े तो फूलां रो हार करूं। भाछा फूल छे। ताहरा भंगरीयो कहै, 'इसड़ा फूल हुं घडुं।' कळी कहै 'रे भंगारीया तूं घड़ि की जांणे?' भंगरीयो कहै, 'सोनो ल्याव ज्यु घडुं।' ताहरां कळी सोनो ल्याई छे।

, हार पोयो, गळे में घातीयो। पछे हार ले जाइ मोहल में राखीयो। मांगो सोनार भायो। एक दिन मोहल में गयो, हार नजरि भायो। हार देखिनें कळी नुं पूछीयो, 'बेटा

१. अ. सं. पु. बी. (हस्तप्रति) ठग राजा री बात, २ रा. प्रे. क., पृष्ठ ५०-५१,

हिवै पाटणथी कोस ४० ऊपरे कागड़ो बलोच रहै, तिको वडो झोकाई, गांव ४० रो धणी। तिणरै बेटी एक, पिउसंधी। तिका वरस ११ मांहे हुई। तरै भांटै भील सूं सगाई कीवी। तिसै कागड़ै बलोच री डील बेचाक हुवो। तरै कागड़ै (नैं) कह्यौ, 'तुस्सांडे जीव नं चैन रख, असांडा लेख है त्युं ह्वेगा।' कागड़ै कह्यौ; 'तुस्सानै अल्ला जाणे, मैं एक बात अरखूं सो सुणो। सिकारपुर में पठांणांदी घोड़ियां लेण नैं दोय तीन बेळा झूका दिया, तहा असांडा दात खट्टा किया। हथपगां पंड अन्त आया। सो पुत्र नहीं, पुत्र होय तो सिकारपुर पठांणादी घोड़ी ल्यावै।' इसो सुण पिउसंधी बोली, 'मैंडा बोल सच्चा जांणे तुस्सांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं।' ओ वचन सुणि कागड़ै कह्यौ, 'तो पंजा दे।' तद पिउ-सधी आघो हाथ करि कौल कियो। कागड़ै देह छोडी।[1]

बोली में स्वाभाविकता प्रकाशन के लिए केच मकरान के पनूं और थटा के पात्रों की बातचीत सम्बन्धी निम्न उद्धरण भी द्रष्टव्य है —

ताहरां बाबीहो कोटवाळ थटा रो आयो छै। ताहरां महाजनां पंनूं नु कह्यौ, 'ओ थटा रौ कोटवाळ छै। इयै सुं आदर करो। ताहरा पंनू कहै। दूहो —

असै तो परडेहोय, तुं संदेही बबीहड़ो।
नगर निहाळे जोय, जे थड़ लथै सथड़ो।।

बात—ताहरां बाबीहे, कोटवाळ सहर मे फिरदे जोवते डेरै री ठाहर साधी नहीं। पछै ससी रो बाग चीता आयो। ताहरां घघां धोविण कन्है कोटवाळ गयो छै। घघा नुं कह्यौ, 'एहो जेहा मांण हूं आया है। कहै तो बाग में उतारां? 'ताहरां घघा कह्यौ, 'कोतवाळ, ए चंगी गल्ह।[2]

सिरोही के पात्रों की बातचीत में उस क्षेत्र की बोली का रंग द्रष्टव्य है :—

आप कहियो, 'रै मांगेसुर री कांई खबर? 'तरै कहियो, 'मागेसुर ताइयार, साहिब।' 'कहिड़ो काढियो?' 'अजायब है, साहिब।' 'छोटूं ठाहरै रै?' कहियो, 'राज, छोटो तो न ठाहरै, सीक अवस्य ठाहरै है।' तो तो उजाड़ियो रे। पांणी मूं मत काढो, उळटाय नैं दारूहूं काढो। 'ताहरां कसूंमो तयार हुयो। पी चलूळ हुया। आप फुरमायो, 'खाऊका री कांसूं खबर?' 'खावको तयार है, साहिब।' आप फुरमायो, 'पातियां नाखो।' पातियां आप बैठा।[3]

एक नमूना ठग लोगों की वचन—चातुरी का भी द्रष्टव्य है :—

कहियो, राज, कि जातियां अर नाम करसूं?' तद रजपूत आप रो नाम कह्यौ, जात बताई। तद ठगे कह्यौ, फलांणै रा बेटा हुवो नहीं?' तद ईयै कही, 'राज हुवां छां।'

---

१. वही, पृ १२९-१३०   २ रा. प्रे. क., पृ. १५६.
३. रा. वा. भाग १.

तद ठग रे बेटे कही, 'तौ थे म्हांहरा बहनोई हुवौ। फलाणें बरस थांहरी वार मायो हुतौ। तद वीया कीयो हुतौ। सो ता पछै थे भली समझ कीनी। 'तद रजपूत घणा पछोजा कीयां। तद ठगे कह्यं, 'तो मठे किसै वासतै पर थकां उतरीया ? चालो घरै।' तद कही घोड़ो झालीयो, कही हथीयार झालीया अर रजपूत नूं लै नै घरे गया।[1]

इतना ही नहीं, कहीं कहीं विद्वान ब्राह्मण के मुख से संस्कृत का श्लोक तक कहलाया गया है :—

एक परदेसी ब्राह्मण रावळदेजी री सभा मांहे आवियो, राजा साहमो ऊभो रहि आसीर्वचन दियो। श्लोक —

चिरंजीव चिरं नन्द, चिरं पालय मेदिनीम्।
चिरमाश्रित्य लोकानां, पूरय त्वं मनोरथान्॥

इसो आशीर्वचन दियो। तहै रावजी पगे लागणा किया, आदर सम्मान कियो नें पूछियो, देवजी, कठा सूं पधारिया ?'[2]

संक्षिप्तता एवं सरलता

कथोपकथन का एक गुण यह माना गया है कि उसमें लम्बा भाषण न हो। ऊपर जो उदाहरण दिए गए हैं, उनमें विशेष परिस्थितिवश पात्र कुछ अधिक बोलता है, अन्यथा राजस्थानी वातों में प्रायः पात्रों का वार्तालाप संक्षिप्त ही रहता है। उसमे अनावश्यक वाक्य एक भी प्रयुक्त नहीं मिलता। उदाहरण :—

ताहरां हालण री तयारी कीधी। ताहरां मांगो सोनार कहै, 'घरे कुण राखिस्यां ?' ताहरां वैर बोली, 'कळी नुं राखिस्यां। ओथ कळी मांगी छै, ते नही ले जावां।' ताहरां कळी नुं घरे राखी। कह्यौ, 'बीजो आदमी कळी कन्हे कुण राखिस्यां ?' ताहरां मांगो कहै, 'अंगारीयें नुं राखिस्यां, ताहरां बैर बोली, 'भला।'

तितरे आंख आई। तीयें मांहे नव पांखडीयो फूल उडी आकरो फूल आई पडियो। आंख मिटी। कळी देखें तो फूल एक पड़ीयो छै। कळी फूल दीठो देखिनै कह्यो, इसड़ा कोई फूल घड़े तो फूलां रो हार करूं। आछा फूल छै। ताहरां अंगरीयो कहै, 'इसड़ा फूल हुं घडुं।' कळी कहै 'रे अंगारीया तूं घड़ि को जांणै ?' अंगरीयो कहै, 'सोनो ल्याव ज्यु घडुं।' ताहरां कळी सोनो ल्याई छै।

हार पोयो, गळे में घातीयो। पछै हार ले जाइ मोहल मे राखीयो। मांगो सोनार आयो। एक दिन मोहल में गयो, हार नजरि आयो। हार देखिनै कळी नुं पूछीयो, 'बेटा

---

१. अ. सं पु. बी. (हस्तप्रति) ठग राजा री वात, २ रा. प्रे. क., पृष्ठ ५०-५१,

कळो, ग्रो हार कठा ?' 'कळो कह्यो, 'बापजी, ग्रंगारियँ घड़ीयो छँ।' ताहरां सोनार हार
ले नै राजा रे मुजरे गयो।[1]

उपर्युक्त बात के कथोपकथन में भाषण की संक्षिप्तता एवं सरलता प्रकट हुई है,
जो ध्यातव्य है।

मार्मिकता

पात्र का सारगर्भित एवं सुगठित भाषण राजस्थानी बातों की एक बहुत बड़ी विशे-
षता है। वहां थोड़े से शब्दों मे बडी गहरी ग्रौर मार्मिक उक्ति देखी जाती है, जो पाठक
के हृदय पर छा जाती है। ऐसी उक्तियों का ग्रर्थ-गौरव ऊंचा होता है :—

१. 'इतरा गहणा ल्याव, छै मासरी ग्रवध, उपरांति वार लायी तो तैं कहियो न मैं सुणियो,
मैं कहियो न तैं सुणियो, वाचा ग्रवाचा छँ।'[2]

२. पछै वीभरो सूतो हुतो तेथ गयी। जाइ नै दीठो, जु सूतो, नींद ग्राई छँ। ताहरा पगं
हाथ दियो। ताहरां जागियो। दीठो, बहिन कह्यो हुतो 'हूं ग्राइस' सू बहिन ग्राई छँ, मोनूं
जागवियँ। ताहरां कपड़ो मुंहड़े सूं दूर करि नैं कह्यो, 'बाई ग्रायी ?' ताहरा उवँ कह्यो,
'ग्रायी वीरा।'[3]

३. 'चारणी कह्यो, 'जी, जियां नूं ग्रमल करणो हुसी सु ग्रमल ग्रापे करिसी। तळाव
भरियो है, पाणी पीवाणो हुसी सु ग्रापे पाणी पीसी।'[4]

४. ताहरां रावजी कह्यो, 'दूदा, यूं जा मत। हूं सराजाम करि देस्युं। यूं ग्रागै मेघो सीचल
छँ। तैं मेघो काने नही सुणियो छँ।' ताहरां दूदो कहै, 'का तो दूदो मेवं, का मेघो दूदे।'[5]

५. 'ठाकुर ईयें सीह बराबर छँ। मैं तो थांनूं तद ही कहीयो हुतो, पण म्हारे कयां न
लागा। हमैं कांसूं कहिजे ? यांसो मूको न जावँ।[6]

६. जसराज पूछीयो, कह्यो, 'जी, सिह किना स्याळ ?' कह्यो, 'जी सिंह, न स्याळ।'[7]

७. ताहरा वीरो बोलीयो, 'जगमाल, चोथी पाय मेलीस, का तो म्हारो नाम मता लेई।
थां कनै पलो मांडू तो ववर कने मांडू। ये तो मोनूं तीजो जागा मेले हंता।'[8]

८. ताहरां माहि सूं वेसूर ही बैठी ग्राई नै कह्यो, 'रजपूतां नूं, 'वीरा, पईसे रे पगां मोहर
विणासी छँ। मैं रजपूत रे वासते बाप मरायो छँ।[9]

---

१. चच राठोड़ री वात (हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.). २. रा. वा. भाग १, पृ. ४.
३. वही, पृ. ८०. ४. जोगराज चारण री वात (मरुवाणी वर्ष १ अं. १.
५ वात दूदै जोधावत री (राजस्थानी, भाग १). ६. वा. मु. प. (जैतमाल पुंमार री वात.)
७. अ. जै. ग्रं. बी. (हस्तप्रति, सागै कुलाणी री वात). ६. पोठवे चारण री बात, वा. मु. प.
८. वीरे देवड़े री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

९. तरे मलीनाथजी वीरमदेवजी नैं तेड़ि नैं कह्यो, 'वीरमदे, मांहरो कितरेक ठकुरई छै, जे पातिसाही सोबत मारे तिण नैं म्हे राखा ? सवारैं पातिसाही फौजा आवसी तरैं म्हावतै थारो उपर कोई होसी नहीं । थे थांहरो मूल देस नैं रहो ' तरे वीरमदेजी रीसाय नैं कह्यो, 'मांहरो फाड़ियो म्हे हीज सीवसां।'[१]

१०. कहीयो, 'भीम मांगि तूठो।' कहीयो, 'वाचा द्यो।' ताहरां वाचा दीन्हीं। ताहरां राजा कहीयो, 'तो म्हारे घर घूंघट काढि।'[२]

११. तद कुंवर कही, 'राज, अमल खाधो तो कांसूं हुवो ? पण कठै मेल्ह जीवो, देखो कैसो कांम करां छां। अर जो आपरै दाया नावा छां तो क्यों गळे पड़ीया छां नहीं। बेटो थांहरो छै सुतो घोयो ही उतरां नहीं अर कमाय खासां।'[३]

१२. देपाळ वीरमदेजी ने कह्यो, 'थे माहरी घरती माहे रहिनैं मांहरा हीज देस रो बिगाड़ करावो छो, सो भली बात। एक पर तो डाकणि हुवैं जिका ई परहरैं छै।' तरैं वीरमदे कह्यो, 'देपाळजी थे कहो, तिका वात साची। जो डाकणी भूखी हुवै, बाहिरलो न मिलै, तरैं घर रां नै खाय क न खाय ? तो बीजा री बात किसी ?'[४]

राजस्थानी बातों में कथोपकथन तत्व को इतना अधिक महत्व मिला है कि कई बातें लगभग वार्तालाप से ही प्रारम्भ होकर अन्त तक उसी में चलती हुई समाप्त हो जाती हैं। इस विषय में 'राजा भोज, माघ पिंडत अर डोकरी री वात'[५] एक उदाहरण है। इसी बात का एक रूपान्तर 'राजा भोज अर पाण्डे बुरच री वात'[६] के नाम से भी प्राप्त है।

इस प्रकार राजस्थानी बातों में कथोपकथन तत्व का महत्व सहज ही हृदयंगम किया जा सकता है।

उद्देश्य

उद्देश्य ही प्रधानरूप से कहानी का प्रेरक तत्व है। इसकी सिद्धि के लिए विविध घटनाओं, पात्रों एवं कार्यों का संयोजन किया जाता है। उद्देश्य का स्वरूप भी कई प्रकार

१. वीरवांण, परिशिष्ट २. २. राजा भीम री वात, प्रा. मू. प्र.
३. बात सेतराम बरदाई सैनोतरी (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.). ४. वीरवांण. परिशिष्ट २.
५. राजस्थानी त्रैमासिक (राजस्थान रिसर्च सोसायटी कलकत्ता) भाग ३, अंक १. ६. रा. वा., भाग ५

का होता है। . कहीं उसमें समाज की समस्याओं का चित्रण एवं उनका समाधान प्रस्तुत करने की चेष्टा की जाती है, कहीं उसके द्वारा अतीत काल के गौरवपूर्ण प्रसंगों की झांकी दिखला कर प्रेरणा देने का प्रयास किया जाता है तो कहीं वह मानव-मन की ग्रंथियों को सुलझाता है।

प्रत्येक साहित्यिक विधा की कोई भी रचना तथ्यों की संवेदनीयता हेतु प्रस्तुत की जाती है। उसके द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नूतन रागात्मक रूप दिया जाकर सहृदय लोगों को आकर्षित किया जाता है। मूलरूप में प्रत्येक बात-लेखक का भी यही उद्देश्य रहा है।

कवि या लेखक आत्मानुभूति का प्रकाशन स्वान्तःसुखाय या परोपदेश के लिए करते हैं। इससे उनके अहं की तृप्ति होती है और साथ ही उन्हें यशलाभ अथवा अर्थ-प्राप्ति भी हो सकती है। राजस्थानी बातें लिखित रूप मे बहुत मिलती हैं परन्तु उनके लेखकों के नाम कम ही प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति मे इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि बात लेखकों में प्रायः स्वार्थ का अभाव ही रहा है। यह हो सकता है कि लेखकों ने अपनी चीजों को किसी अन्य समर्थ व्यक्ति अथवा अपने किसी प्रियजन के निमित लिखा हो।

समग्र रूप से विचार करने पर राजस्थानी बातों का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। इस विषय मे स्वर्गीय सूर्यकरणजी पारीक का वक्तव्य इस प्रकार है :—

'जैसा कि ऊपर कह आए हैं, बातों के रूप में राजस्थान का प्राचीन इतिहास लिखा गया है, अतएव इन बातो में ऐतिहासिक सामग्री बहुतायत से मिलती है। ख्यात की बातों मे और मनोरंजनार्थ रचित बातों मे एक अंतर यह होता है कि इन मे कल्पना की मात्रा अधिक रहती है। ख्यात की बातों में जहाँ तक हो सका है, ख्यातलेखक ने वंशावलियों के क्रम से प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवनकाल की मुख्य बातों का यथार्थ-वर्णन किया है। कहानी की बातों के किसी एक ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना का पुट देकर मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की आधारभूत बातें ऐतिहासिक हैं परन्तु कहानी के समस्त रूप को ऐतिहासिक तथ्य मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसका प्रधान उद्देश्य है —मनोरंजन के रूप मे किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के सम्बन्ध मे आख्यान लिख कर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। संसार के सभी साहित्यों में जहाँ भी देखा जाय, क्या कहानी, क्या उपन्यास नाटक, काव्य सभी में कल्पनात्मक प्रसगो द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दिया जाता है। वही बात यहाँ इन कहानियो में भी समझनी चाहिए।'[1]

---

१. रा. बा., भू. भा भूमिका भाग, पृ. (८)

इसी विषय में स्वर्गीय ठाकुर किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य का वक्तव्य भी ध्यान देने योग्य है —

'प्राचीन समय में जब राजकुमारों को चारण कवियों के संरक्षण में रख कर शिक्षा दिए जाने का नियम प्रचलित था, तब उक्त कवि किसी प्राचीन वीर-धीर के ऐतिहासिक चरित्र को रोचक बना कर उसको कथानकों के रूप मे लिखा करते थे और वही अपने शिष्यों को पढाते थे। साथ ही उनमें लिखी हुई बातों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अपने शिष्यों को बराबर प्रोत्साहित करते रहते थे। ....ये कथानक जिस प्रकार पुरुषों के पढ़ने की चीज है, उसी प्रकार स्त्रियों के हाथों में भी बिना किसी हिचकिचाहट के साथ दिए जा सकते हैं। अश्लीलता तो इनमें नाम मात्र भी नही। जिस प्रकार पुरुषों के उपरोक्त गुणयुक्त चरित्रों का उल्लेख इनमें किया गया है, उसी प्रकार स्त्रियों के पातिव्रत्य, शौर्य, सतीत्वरक्षा आदि गुणों का भी इनमें उल्लेख मिलता है।'[1]

उपर्युक्त वक्तव्यों पर विचार करने से राजस्थानी बातो के लिखे जाने के निम्न उद्देश्य प्रकट होते हैं :—

१. इतिहास-बोध का प्रकाशन
२. चरित्र-निर्माण
३. नीति शिक्षा
४. मनोरंजन

बातों में उद्देश्य प्रकट और अप्रकट दो रूपों मे रहता है। प्रकट रूप में उसका स्पष्ट प्रकाशन होता है और अप्रकट रूप मे वह पाठकों के कुछ सोचने से सामने आ सकता है। राजस्थानी बातों में उद्देश्य के ये दोनों ही रूप मिलते हैं, जैसा कि आगे के उदाहरणों से स्वतः ही सिद्ध हो जाएगा।

इतिहास-बोध का प्रकाशन

राजस्थानी बातों के लिखे जाने का एक उद्देश्य इतिहास-बोध का प्रकाशन रहा है। उनमे स्थान स्थान पर इतिवृत्तात्मक विवरण मिलता है। कई जगह युद्ध विशेष में भाग लेने वाले अथवा हताहत व्यक्तियों की नामावलि तक देखी जाती है। इसी प्रकार कई स्थानों पर वंश-परम्परा एवं अनेक घटनाओं तक की चर्चा की गई है। यह सब ऐतिहासिक जानकारी देने के उद्देश्य से ही हुआ है। उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. 'इतरै में नागौर और बीकानेर आपस में कजियो हुओ —गाव जखाणियां बाबत। सो

---

१. राजस्थान त्रैमासिक (कलकत्ता) वर्ष १, अंक २, संवत् १९९२ में प्रकाशित 'डिंगल भाषा के प्राचीन ऐतिह्य' शीर्षक लेख से।

नागोर री फौज भागी । बीकानेर री फतह हुई । केसरीसिंह जोधो काम आयो । करण भोपतोत चांपावत काम आयो । गोयंददास, भोवतसिंह, करणोत खेतसी, रायसिंह, अखेराज करमस्योत, सेखो पातावत, जसो बारहठ इतरा सो नामी, बीजो ही घणो लोग काम आयो । साथ बुरी तरह भागीयो ।[१]

२. राव तीडो आपरो बार बजाय-गजाय देवलोक हुवो । वडो ओगाढा राजवी हुवो । रावसलखे ही ज्यांरा वित लीया, जिके पाछा कदे पेरीया नहीं । जितरा मोतड़ें आगे घातीया, इतरा ल्यायो हौज । बडा वडा पुवाडा जीता । वडा काम किया । ईये भांत सो राव सलखें ही आप री वार वजाय-गजाय देवलोक हुवो । राव सलखे रा वेटा वडा सांमंत हुवा । पाटवी गादी रो घणी तो राव मलीनाथ परमोम पंचायण, ओगाढ, आमरे रंग रंग, पारके रंग विरंग । वीरम सलखावत सनेहां–वेरां रो लेवणहार । जैतमाल सलखावत सोमत मलाव । अठै महेवे राव मलीनाथ राज करे । सु मलीनाथजी अर वीरमजी आपस मेळ नहीं ।[२]

३. महेवे खेड़ राव तीडो छाडावत राज करे, वडो आगाढो देसोत । जिकेरे वाये हरण खोडा हवे । पाखती राज राईतन, तिका राव तीडेगी धाक पडे जालोर सोनगरा, सांचोर चहुवाण, तिके राव तीडे केई वार तरवारियां माहे कांडीया । वडी लड़ाई भीनमाळ कीवी । तठे राव तीडे सोनगरा रो घणो साथ मारियो । सिरदार पण सोनगरा पांच सात ठाकुर काम आया अर राव सामंत सोनगरो अलहो नीसरीयो । तिके लड़ाई पछै सोनगरा हुद खाधी अर राव तीडे री फतै हुई । वडो नांव सोनगरा नुं सामि रै सब माडि अर हमैं दूसरा राईतन उपरै तरवार उठाई । सीरोही देवड़ा राज करै । तिका उपर राव तीडै साथ कर चलाया । देवडा नूं पण खबर हुई, आज आंपां उपर आयो, हुमरके टळै नहीं ।[३]

इस प्रकार उपर्युक्त सभी उद्धरणों से प्रकट है कि इनमें ऐतिहासिक वृत्तान्त देने की चेष्टा की गई है । यहाँ नामावलि वंश-परम्परा की चर्चा हैं ।

कई बातों में मूल संवेदना समाप्त हो जाने पर भी आगे के इतिवृत्त की सूचना दी गई है । उदाहरण इस प्रकार है :—

१. सो बलू इसा काम किया । सो सारे मसहूर हुवो । पछै राव राखे नूं वादसाह री हजूर ले गया । नागोर चाकरी करी नै मोटियारा रिझाया लियो । वडो खबरदार हुवा । राव रासे भलो राज कीयो ।[४]

---

१. रा. बा. सं., पृष्ठ १५६.   २. बात जैतमाल सलखावत री (बा. पु. प्र)
३. बात राव तीडे छाडावत री (अप्रकाशित) अ. जै. ग्रं. बी.   ४. रा. बा. सं., पृष्ठ १६६.

आणि नें तखत बैसारीयो। टीको दे, माथे छत्र लगाइ, सतर सहस गुजराति री साहिबो दीन्ही। मुंहड़ै आगै लूंणसाह प्रधान थापीयो। वडो राज कीधो। इकतीस वरस करण राज कीयो। सारी धरती साभी। करण रैं पाटि सिधराजा जैसिंह हुयो[1]

३. वीरे री फोज छोदरी आवती हुंती। वीरो आगे आवतो हुंतो। तिण उपर सातल लूट पडीयो। तरगस महा तीर काढ नें वीरैं रा छाती माहे दीनो। सिलह पो छाती मांह पैलै पार जाय नीसरीयो। बीरो मारीयो ने फोज भागी। सातल कहण लागो—'रावजी री आण छै। भागां वांसे मतां पड़ो।' इण भांत वीरो मार फलोदी आय गढ मांडीयो। हमीरपुर कोट कीयो।[2]

उपर्युक्त तीनों उद्धरणों में बात की वस्तु समाप्त हो चुकने पर भी आगे का कुछ वृत्तान्त प्रकट किया गया है, जो ऐतिहासिक सूचना देने की दृष्टि से ही हुआ है।

कई बातों में कथारस रहता है परन्तु साथ ही अनेक स्थलों पर केवल विवरण सा ही प्रतीत होता है :—

तरैं पातिसाह बोलीया, 'वे लडका, तूं मैंणें ऊपर बीड़ो उठावै तो धरती मैंणें री तोनुं द्युं।' ताहरां ईयें तसलीम की, कह्यो, 'जे हजरत रा मोरे हाथ तो हुं धरती लेसुं। पातिसाह री खिजमति करिस्युं।' ताहरां फोजां ईयें री ताबीन दीनी। सिरपाव घोड़ो दे विदा कियो, 'धरती मारि ले, तोनुं दीधी।' ताहरां करि सलाम ने विदा हुवो। आइ धग्ती नुं लागो। घेर खोह ने लड़ाई कीधी। मैंणां मारीया। मैंणां रो राजा मारीयो। जिके पगां पडीया, सु छूटा। आपरी आण-दांण फेरि धरती आप लीधी। आप रो अमल कीयो। खोह ली। मैंणा चाकर हुई रह्या।[3]

इस उद्धरण में ऐतिहासिक शैली का विवरण प्रकट हुआ है, जिसके पीछे तथ्यात्मक सूचना देना ही उद्देश्य-रूप है। इस प्रकार अनेक रूपों में राजस्थानी बातों में इतिहास-बोध का प्रकाशन हुआ है।

चरित्र-निर्माण

राजस्थानी बातों में इतिहास-बोध के साथ ही चरित्र-निर्माण का उद्देश्य भी मिला हुआ है। बातों में अनेक नर वीरों को नायक के रूप में चित्रित किया गया है। यह ऐतिहासिक गौरवानुभूति का परिणाम है। साथ ही इसका उद्देश्य समाज को प्रेरणा देना भी है। महापुरुषों के चारित्र्य का अनुकरण करना सदैव लाभदायक है। इसी उद्देश्य से इस प्रकार की बातें लिख कर उन्हें स्थायी करने की चेष्टा हुई है। कई बातों मे नायक

---

१. राजा भोमरी बात (रा. पु. प.). २. बात सातल सोधावत री (अप्रकाशित, अ. जै. ग्रं. बो.).
३. बात कछवाहैरी (अप्रकाशित, अ. सं. पु. बी.).

गुण-प्रकाशन इस प्रकार से किया गया है कि वह स्पष्ट ही सोद्देश्य विदित होता है। उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. वडो वेढ हुई। रावजी रा रजपूत हजार पांच काम आया। हजार दोय लोहां पड़िया नें पातिसाहजी रा सिपाई हजार १५ काम आया, हजार १०/११ लोहां पड़िया। वडो गजगाह हुवो। इण समीया रा गीत, गुण, भावन घणा ही छै।[1]

२. तिण समें जैतसी ऊदावत आप रा साथ सूं पाछा मारवाड़ नें चल आया, तिके दिन चार में छिपीयें आया। जरै आगे बधाईदार आयो। तरै गांव माहि सूं ढोल नगारा लें बधाय नें मांहे लीया। 'कलियां वेरा रो बाहरू' इसो विरुद लियो।[2]

३. सु रेसामीयें उठ गढवां नें कपड़ा कराय दिया। वाणीयें नुं कह्यो बोलाय अर 'गढवां रै अमल धान घृत खांड चाहीजै, सु थे देज्यो। ऐ गढवा काळ मांहे वैठा खावैं, गुण गावें।' इसड़ो दातार रैसामीयो हुवो।[3]

४. घणी फौज तुरकां री मार दोनूं ही जणा काम आया। भीम कोट संवायो, तिण उपर दूहो—

सूरे सापुरसेह, उभे आंच न आवही।
पिंड मुय विढ पड़ीयेह, सोमईये आयो संकट ॥[4]

५. इसं भांत सो वीरे खडग वायो, तिको वटका दोय थांभें रा हूवा। वटका च्यार भाया दोना ही कीया एकण घाव सो। ईये भांत जगमाल री फते हुई। ताहरा जगमाल माळा मोतीयां री, रूपीयां लाखरी, वीरें रे गळे मांहें घातण लागो। ताहरां वीरो बोलीयो, 'जगमाल, चौथी वाय मेलीस, का तो म्हारो नाम मता लेई। था कनें पलो माडू तो बयर कनें मांडू। थे तो मोनूं तीजी जागा मेलें हंता।' इयें भांत वीरें आपरा सगा भाई मारीया। लूण री तासीर छोडीयो पछें आप जगमाल री चाकरी छोडी। इसड़ो सामधरमी रजपूत हुवो।[5]

उपर्युक्त उद्धरणों में युद्धवीरता, वैर-शोधन, दानवीरता, धर्मवीरता एवं स्वामिभक्ति का आदर्श प्रकट किया गया है। इन गुणों को धारण करने वाले वीरों की बातें निश्चय ही एक उत्तम पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयोग की जा सकती है। ये बातें केवल कथारस की प्राप्ति के लिए ही नहीं लिखी गई हैं। स्पष्ट ही इनका उद्देश्य चरित्रनिर्माण है। मध्ययुग में ये गुण विशेष रूप से प्रशंसित थे। वीरों की ऐसी बातें सुन कर या पढ़ कर न जाने कितने लोगों ने प्रेरणा ली होगी।

---

१. रा. वा. सू. पा, पृष्ठ १०३. २. वही, पृष्ठ १७५.
३. साधना (डूंडलोद) वार्षिक अंक ७, वात रेसामीयें री. ४. वही, वात अरजन हमीर भीमोत री.
५. वीरे देवड़े री बात (अप्रकाशित, अ. जै. ग्रं. बी.).

नीति शिक्षा

चरित्रनिर्माण के साथ ही नीति शिक्षा का विषय भी जुड़ा हुआ है। 'नीति' शब्द बड़ा व्यापक है परन्तु यहाँ इसका अभिप्राय लोकानुभव अथवा लोक-व्यवहार में सुदक्षता प्राप्त करने की क्रिया से लिया गया है। राजस्थानी वातों में नीतिशिक्षा का उद्देश्य अनेकशः स्पष्ट है। कई बातों में तो प्रारम्भ में ही ऐसा उल्लेख मिलता है :—

१. वात राजा भोज री ईये गाहा उपर, तुरत दान महापुन्य, तै री। गाहा —

तुरत दांन माहा पुन्य, करै सु पावै।
हाथ का दीया, कांहां न जावै ॥[1]

२. भलै भलो बुरै बुरो री वात। राजा बलसिंघ पांणीखंस राज करे हैं। नैं परधांन रो नाम गिरपाल। जो अणो रा राज मैं बडो इकतार है। गिरपाल रे धन घणो पण बेटो नहीं। जणी रो सोच घणों रहे। जद एक दिन परधान बैठो हैं ने एक बांभण आयो। आवै नें एक गाहो कयो —

भलै भलो, बुरै बुरो,
या ही ज वात यों ही ज लेखो।
जो नहीं मांनै,
तो कर देखो ॥[2]

कई वातों के बीच में या अन्त में ऐसा उद्देश्य प्रकट हो जाता है:—

१. तद कुंवर कही, 'म्हे जद ही ज लेसां तद परमेस्वर देसी अर जिके मनुषा धीरजवंत है, तिकां रा कारज परमेस्वरजी करसी। इतरी कहि नैं ओ दूहो कहे। दूहो —

सूरां अर सतवादियां, धीरां एक मनाह।
दई करेसी कामड़ा, अरंड फळेसी ताह ॥[3]

२. इतरी सुण ब्राह्मणी मूठी दोय धूळ ली। फेर सरप सूं कही, 'मोनूं थां हो बुरी नजर जोवो छो, सो भसम हो जावो।' यूं कह एक चुटकी धूळ सरप ऊपर नांखी। सो ऊ उण ठांव ही भसम होय गयो —

श्री नरसिंह सहाय सूं, दोनूं आया गेह।
सांई केरा पलक में, खलक बसै कर तेह ॥[4]

३. माथै साठा चोहुतर दे नैं कागळ सांवटि दीयो। माहै दूहो लिख्यो। दूहो —

सत जिन छाडो मित्र हो, लछि चवर गुणी होय।
दुख सुख रेखा कर्म की, टाळी टळै न कोइ ॥[5]

---

१. राजा भोज री वात (अप्रकाशित, अ. जै. ग्रं. बी.)। २. रा. वा. भाग १, पृष्ठ ७७.
३. चौबोली, पृष्ठ ५८. ४. रा. वा. सं., पृष्ठ २०२. ५. छोटी अप्रकाशित वात अ. जै. ग्रं. बी.

४. जद राणी बोली—दूहो :—

सीह कदे गज मेटियो, मैं कह मैंच्यौ ,नाह ।
जात सुभाव न मुच्चवै, तूटो लंक वचाह ॥[१]

उपर्युक्त सभी बातों में उद्देश्य प्रकट कर दिया गया है । इस प्रकार के उद्देश्य वाली
बातों का कथानक सामान्यतया कल्पित ही देखा जाता है ।

राजस्थानी बातों में ऐतिहासिक कथानक काफी हैं । अतः इनमें राजनीति का प्रयोग
स्वाभाविक है । शत्रु को युद्ध से अथवा बिना ही युद्ध दबाए रखने के लिए राजनीति की
चाल से काम लिया जाता है । कहीं कहीं वह कपट नीति का रूप भी धारण कर लेती है ।
संधि, भेद, मित्रलाभ आदि इसके विविध उपाय हैं । बातों मे युद्ध के अतिरिक्त इन साधनों
का प्रयोग भी यत्र तत्र देखा जाता है । ऐसी बातो में इसे अप्रकट उद्देश्य के रूप में ग्रहण
किया जाना चाहिए क्योंकि समग्र बात का सार देखने से ही इस विषय का प्रकाशन होता
है । उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. 'कैसे उपाधीयै री बात'[२] में सीहड़ सांखळा रूंण में राज्य करता है । लोग उसके
छोटे भाई रायसी के सम्बन्ध में उसके कान भर देते है और वह उसे मार डालने की आज्ञा
देकर बहाने से शिकार के लिए निकल जाता है । सीहड़ और रायसी की स्त्रियाँ दोनों सगी
बहिनें हैं । अतः रायसी को षड्यंत्र का पता चल जाता है और वह चुपचाप रूंण छोड़ कर
अजैसी दहिया के राज्य में जागलू पहुँच जाता है । उसके पक्ष के लोग उसके साथ है ।
अजैसी दहिया दयावश रायसी को रहने के लिए स्थान दे देता है । समय निकलता है ।
अजैसी के पुरोहित केसा की अपने यजमान से कोट के पास तालाब करवाने की चेष्टा के
कारण नाराजी होती है और वह गुप्त रूप से रायसी से मिलता है । दहिया लोग रायसी
के पक्ष की कन्याओं को तंग करते हैं, अतः वह स्वयं उनसे नाराज है । एक षड्यंत्र रचा
जाता है, जिसके अनुसार सांखळा पक्ष की कन्याओं से विवाह के निमित्त दहिया पक्ष के
प्रमुख लोगों को उनके राजा अजैसी सहित वर रूप में बुलवा कर बारूद भरे मंडप में जला
दिया जाता है । जांगलू का स्वामी रायसी बनता है । केसा पुरोहित की इच्छा पूरी कर
दी जाती है ।

इस बात में रायसी सांखळा ने भेदनीति के सहारे जांगलू का राज्य प्राप्त किया
है ।

२. 'पीठवै चारण री बात'[३] में पीठवा और समघड़ा आपस में साला-बहनोई हैं । एक
खरगोश की शिकार पर बात बढ़ती है और जोश में आकर समघड़ा अपने श्वसुर बेहसूर

---

१. बात जात सुभावरी, रा. वा. भाग २. २. हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.
३. पीठवै चारण री बात (बस्ता ७/३)

को मार डालता है। इसका बदला पीठवा लेता है और समधड़ा को समाप्त करने में सफल हो जाता है। अब समधड़ा के दो बेटे पीठवा से बदला लेने का प्रयास करते हैं और याचक रूप में पीठवा के पास पहुँचते है। वहां आखिर भेद प्रकट होता है और वार्तालाप से पीछे का वैर दोनों पक्षों के लिए समान मानकर विवाह के द्वारा फिर से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लिया जाता है। समधड़ा के दोनों पुत्र विवाहित होकर घर लौटते हैं।

इस बात में स्पष्ट ही संधि के द्वारा पुराना चला आता हुआ वैर समाप्त हुआ है।

३. 'राजा नरसिंघ री वात'[1] में अजमेर के राजा वैरसी गौड़ का देहान्त हो जाता है और पठानों की सेना चढ़ आती है। कुमार नरसिंह सात साल का है। रानी दहड़ सब व्यवस्था अपने हाथ में लेती है। पठानों के दल में हरा गौड है, जो गुप्तरूप से सारी खबर रानी को भेज देता है। युद्ध में पठानों की शक्ति अधिक प्रतीत होती है, अतः रानी चुप-चाप किला छोड कर अपने लोगों के साथ निकल जाती है। वह तोडे के सोलंकियों के राज्य में पहुँचती है। बालक नरसिंह का विवाह करके उसे वहीं छोड़ दिया जाता है। फिर रानी हाडों के राज्य में गौड़ों के प्राचीन स्थान लाखेरी चली जाती है और बूंदीपति की कृपा से वहाँ ६ वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। अब नरसिंह समझदार होता है और अजमेर वापिस लेने की चेष्टा करता है। वह लाखेरी आता है। सिंधलो के यहाँ उसका विवाह और भी कर लिया जाता है। फिर पता लगवाया जाता है कि अजमेर से बहुत पठान बाहर गए हुए हैं। गौड़ अजमेर पर चढाई करते हैं। हाडा, सिंधल, सोलंकी आदि उनकी सहायता करते हैं। युद्ध में पठान परास्त होते हैं और अजमेर पर पुनः गौड़ों का अधिकार हो जाता है।

इस बात में युद्ध विजय का मुख्य कारण स्पष्ट ही मित्र लाभ है।

उपर्युक्त उदाहरणों से प्रकट होता है कि राजस्थानी बातों में राजनीति के तत्व भी यत्र तत्र प्रकट हुए हैं और ये किसी रूप मे सुप्रसिद्ध नीतिग्रंथ पंचतंत्र का सहज ही स्मरण करवा देते हैं। परन्तु इनके साथ ही क्रूरतापूर्ण कपट-व्यवहार भी देखा जाता है। ऐसी कपट-नीति को उचित-अनुचित का विचार छोड़कर प्रयुक्त किया गया है। एक बात में नायक राज्यलोभ में स्वयं अपनी माता तक को मार डालता है। पिता-पुत्र की दुरभि-संधि देखिए :—

'ताहरां मूळराज ने बुलाय अर राज पूछीयो। ताहरां मूळराज कह्यो, 'हूं मांमा नें मारीस।' 'ताहरां राज बोहत राजी हुवो—'जो मारै छै तो सपुत। 'ताहरां बाता

---

१. हस्तप्रति, (अ. जै. ग्रं. बी.).

मसलत करण लागा। ताहरां मूळराज री मा दीठी 'जो आज ऐ बाप बेटा आलोच करै, सु सही ज कांई म्हारा पीहरला री बात करै छै।' ताहरां मूळराज री मा पगरी जेहड़ ऊंची कर ओले आण उभी रही। तद इहां री बातां करता सुणीया, राज कह्यौ, 'जो बेटा, मारे ही मारे तो इसी तरै मारे, जु फेर चांवडा रो कोई रहे नहीं। निर्कंटको राज हाथ आये, ईयें मूळराज री मा आ बात सुणी तु सत ढीलो पड़ गयो, तेसु जेहड़ उची चाढी थी, सु उतर गई। सु उतरतो बाजी। ताहरां राज लखीयो—'रे कुण है ?', तद मूळराज कह्यो—'मा छै।' ताहरां राज कह्यौ, 'देखै कांसु ? थारी मा ने मार, का पीहरै भाया नैं कहैसै।' ताहरां मूळराज मा रै सीर माह तरवार री दीनी, सु सीर वाढ नांखीयो। पड़तो सीर पगथीयां सुं गुडकीयो। ताहरां राज कह्यौ, 'जो जीतरा ही परसांणीया थारी मा रो सीर उतरीयो छे, ततरीही पीढीयां हुए आपांरी राज रहसी।'[१]

इस उद्धरण में मूलराज ने अपने मामा का राज्य छीनने के उद्देश्य से अपनी माता को समाप्त कर डाला है, जिससे कि भेद न खुल जाए।

कई बातों मे शत्रु को धोखा देकर समाप्त करने की नीति भी ग्रहण की गई है। इसके लिए एक विशिष्ट शब्द 'चूक' है। आगे चल कर मूलराज भी 'चूक' के द्वारा ही राज्य लाभ करता है।

'मांमा ने पण गोठ बुलाया। अमल-पाणी कराया। मांमा रो सारो ही साथ दारू पी मतवाळो हुयो। पुरीसारो हुवो। लहरां घाव पड़ीया। सु पेहली हीज बणाव राखी थी। घी रो हुकम कीयो—'जी, हां, घी आवै।' ईतरै लोह हुवो। सु चावड़ा सरब मारीया। हेक-ही गोठ मांहैलो राखीयो नहीं, चाकरां सुधा मारीया। घोड़ा ने मालवीत सरब उरो लीयो। पाटण रे मुलक में मूळराज री आंण फीरी।'[२]

उपर्युक्त प्रसंग षड्यंत्र और सर्वसंहार का विवरण प्रस्तुत करता है, जो अत्यन्त क्रूरता के साथ पूरा हुआ है।

मनोरंजन

किसी बात का उद्देश्य चाहे इतिहास-बोध का प्रकाशन हो, चाहे चरित्रनिर्माण अथवा नीतिशिक्षा परन्तु उस में सरलता का गुण अवश्य मिलता है। वह मनोरंजन के साथ किसी विशिष्ट तत्व अथवा सिद्धान्त को प्रकाशित करती है। अनेक बातों का उद्देश्य ही प्रधानतया मनोरंजन है। उसके साथ गौण रूप से अन्य भी कोई उद्देश्य रह सकता है। ऐसी बातों की संख्या भी कम नहीं है। कई लेखकों ने तो कथारस विषयक उद्देश्य की चर्चा बात के प्रारम्भ में ही कर दी है :—

---

१. राव बीज री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी). २ वही.

१ गाहा गूढा गीत गुण, उकतो कथा उल्लोल।
चतुरां तणां चित री, कहिये कवि किल्लोल।।[1]

२ राग (रंग) रस की कथा, प्रेम पियास विलास।
बात चद सारी कहूं, सुगुणां पूरण आस।।[2]

३ चतुर गुलाबां मत सरस, पीय भंवर सुजान।
इनकी प्रीत सू वरतहूं, गुर को चित धर ध्यान।।[3]

४ परतापसिंह खुमाण नैं, हुकम कीयो कर ठाय।
हुंस कवी सूं ऐसो कह्यो, कवु यक बात सुणाय।।
सब कुं लगैं सुहायति, रचै सु जोम सिनगार।
मूरख हूं को मन हरे, सब कुं लगैं सुंपार।।[4]

५ श्री गणपत सरसुत सुमर, इष्ट देव सिर नाय।
कृपा राम बात सु कथम, महर करहु महामाय।।
मैं कविता यह विध रची, सबको सुनत सुहात।
सुबुधी रस की साधु जन, वाचत हरख विहात।।

(मैं कविता इस रीत की बताऊंगा सुबुधी कहिरा अकलवान आदमी तथा इरको लोक तथा ज्ञानी सर्वं ही आ वात वाचतां हर्षायमान होगा।[5]

इतना ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार की बातें प्रायः प्रेमाख्यान के रूप में लिखी गई हैं, जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है।

इस प्रकार समग्र रूप में विचार करने पर राजस्थानी बातों का उद्देश्य बहुविध प्रकट होता है। अतः यह साहित्य-सामग्री सभी प्रकार ने लोगों के लिए उपादेय है।

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ २५. २. राजा रिसालू री वात (अप्रकाशित, अ. जै. ग्रं. बी)
३. गुलाबां भंवर की बात (अप्रकाशित, अ. जै. ग्रं. बी.). ४. चंदकंवर री वात (शो. प. २/३)
५ सगुणां सलसाल री बात (म. भा. ७/१)

लोक-चित्रण

तृतीय खण्ड

लोक-चित्रण

वातावरण कहानी का आवश्यक अंग है। उसके पात्रों का सम्बन्ध किसी देश एव काल विशेष से रहता है। अतः उसमे देश एवं काल का स्वाभाविक चित्रण होने से ही वह प्रभावपूर्ण बन सकती है। जीवन-क्रम भी देश तथा समय के अनुसार बदलता रहता है, अतः कहानी में उसका चित्रण भी तदनुसार ही होना आवश्यक है। इस प्रकार वातावरण कहानी के सौंदर्य मे वृद्धि करके पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानी बातों का यह अंग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अधिकांश बातें अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शती में लिखी गई हैं। इन में इस काल का राजस्थानी-जीवन विस्तृत रूप में चित्रित मिलता है। इस विषय मे निम्न वक्तव्य ध्यान देने योग्य है —

सभी बातों के कथानक तत्कालीन समाज की भित्ति पर चित्रित हुए हैं, इसलिए इन में देश-काल का सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। विभिन्न प्रकार और समय की बातों के अध्ययन से तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों की जो महत्वपूर्ण जानकारी इनमें मिलती है, वह तथाकथित लिखित इतिहासों में उपलब्ध नहीं होती। प्रदेश का सामाजिक इतिहास लिखने में इस सामग्री से मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। मध्यकालीन राजस्थान के बहुत बड़े समाज का चित्रण इन बातों मे हुआ है। यहां की शासन प्रणाली, जागीर प्रथा, जातीय व्यवस्था, कलात्मक सर्जन, साहित्यिक वातावरण, आमोद प्रमोद, नैतिक मूल्य, भाग्यवादिता, रूढ़ि निर्वाह और जीवन सिद्धान्तों का बड़ा वैविध्यपूर्ण और सर्वांगीण चित्र इन बातों के माध्यम से अंकित हुआ है। सामाजिक परिस्थितियों की भूमिका में ही अपेक्षित सत्य की सांकेतिकता अपने जीवन्त और पूर्ण रूप में प्रकट हो सकी है, जिस से कथानक के शिल्प में देशकाल की विशेषताएं अपने पूर्ण औचित्य के साथ प्रकट होती हुई प्रतीत होती हैं।[1]

---

[1]. श्री नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी बात संग्रह, भूमिका, पृष्ठ १५-१६.

ऐसी स्थिति में राजस्थानी वातों का यह अंग विस्तृत प्रकाश की अपेक्षा रखता है। अतः यहाँ इस सम्बन्ध मे विस्तार से जानकारी देने की चेष्टा की जाती है।

१. शासन

राजस्थानी वातों मे शासन का चित्र बड़ा स्पष्ट है। अधिकतर वातों की वस्तु ठाकुर, राजा, महाराजा अथवा बादशाह से सम्बन्धित हैं। अतः इन में इस विषय की चर्चा चलती ही रहती है। आगे इस सम्बन्ध में कुछ चुने हुए उद्धरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

बादशाह

देश में बादशाह का स्थान ऊँचा है। वातों में प्रायः मुसलमान शासक को 'पातसाह' (अथवा 'बादशाह,) की संज्ञा मिली है—

क. वेगड़ो महमूद गुजरात पातिसाही करै। सू ताई रावळ ऊपर मुहम कीवी। पावंगढ़ नू वरस बारह ताई घेरियो।[१]

ख. तठै मुलतांण मे पातसाह पातसाही करै।[२]

ग. तद मांडव री वडी पातिसाही। पातिसाह गोरी हुसंग पातिसाही भोगवें।[३]

घ. थटा भखर रो बादसाह अगतमायची। तिण री बहण, तिकी बुलख रै बादसाह कुलनहसीब नूं परणाई।[४]

वातों में सर्वाधिक शान दिल्ली के बादशाह की प्रकट हुई है। वहाँ उसकी सत्ता सर्वोपरि विदित होती है। वातों में अनेक बादशाहों की चर्चा है, जिन में से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं —

क. दिली सहर, पातिसाह अलावदीन पातिसाही करै। अमीपाळ साह पातिसाह री चाकरी करै। पांच सो असवार राखं।[५]

ख. पेरोसाह दिली मे राज्य करै। पेरोसाह 'पातिसाह-खतम' कहांणो। वडो पातिसाह हूवो। छपन गढ़ लीया। बड़ा मेवासा भागा। घणी धरती लीधी।[६]

ग. राव दुरगो अचळै रै पाट बैठो। वडो देसोत हूयो। वडो ठाकुर हूवो। जोरावर थको रहै। रांणां सुं न मिलै। राणै नै राव दुरगै वांणक को नही। नै राणै री वडी साहिबो। ताहरां एक दुरगो दिली रा पातसाह अकबर नु जाय मिलियो।[७]

---

१. रा. वा., भाग १, पृष्ठ १९. २. वात देपाल् धध री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).
३. वात चंद्रावतां री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. रा. वा. सं., पृष्ठ ६३.
५. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ३२. ६. पेरोसाह पातसाह री वात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)
७. वात चंद्रावता री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

ग. तद अमरसिंघ लोक सुं वात कर नीसरियो, सो पातसाह साहजी कनै आगरै गयो, पांवां लागो। पातसाह खरच खावण नूं दीयो। आंबेर जैसिंघ रै परणीयो थो, सो उहां रो मुलाहिजो भारी। सो अमरसिंघ नु पातसाह आछी तरै रखै। हमेस मुजरै जावै।[1]

ड़. राजा जैसिंघ महासिंघोत वडो राजा हुयो। वडो राहवेधी बुद्धवांन हुओ। इसो ही राजगीरो, जिसोही मन सो वेदार। सो पातसाह औरंगजेब अवलीयो, बावन वीरां री करामात। सो जैसिंघ सुं निराठ महरवान। थेट सुं आयां थकां जैसिंघ री रूख औरंगजेबसुं रही।[2]

उपर्युक्त उद्धरणों में दिल्ली के बादशाह की शक्ति और सेवक राजाओं की स्थिति स्पष्ट प्रकट हुई है। यहीं तक ही नहीं, अनेक पुरानी घटनाओं पर आधारित बातों में भी दिल्लीपति का यह बड़प्पन ज्यों का त्यों दिखला दिया गया है।

बात मे जालोरपति कान्हड़दे की बादशाह के प्रति यह उक्ति है —

'रावजी कह्यो, 'पातिसाह दीन-दुनी रा छो। हूं पाधरियो घर रो धणी रजपूत छूं। पातिसाहां सगावळ करो। रोम सूंम विलायत रा धणी छैं। हूं तो बंदगी करूं छूं।'

इससे आगे बात इस प्रकार चलती है —

पातिसाहजी घणो हठ कीनो। जरै कह्यो, 'मोटीयार नैं बूझूं। उण री रजावंध री बात छै।' तरै हाथी, घोड़ो, मोतियां री माळा, खंजर दे नै विदा कीया। नै कह्यो, 'सुबै कंवर कूं ले नै बेगे आइयो। कानड़देजी आय नै कंवर नै सगळी हकीकत कही।[3]

इस प्रसंग में कान्हड़देव की दीनता प्रकट हुई है।

एक बात में सातळ सोम को भी बादशाह का सेवक बना दिया गया है —

समियाणो गढ। तिणं रो नांम हिवारूं समियाणो कहीजै, सू कूंभटगढ छै। अर तळाव भाडेलाव, सू भाडै रेबारी करायो छै। कूंभटगढ चहुवाण सातळ सोम राज करै। सू सातळ सोम दिली अलावदीन पातसाह री चाकरी करै। पातसाह री तरवार पाकड़ै।[4]

इस विषय में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत में मुगल काल में दिल्ली के बादशाह की सेवा को सामान्यतया उन्नति का राजमार्ग मान लिया गया था —

जे वडा वडा राजवी गढपती नामजादीक हुवै, तिकै दिल्ली रा धणी री चाकरी कियां सूं बडा हुईजै, नै कह्यो छै; 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा' मन रा मनोरथ पूरण नैं समर्थ छै।[5]

---

१. राजसिंघ खीयावत री वात (वरदा ३/१). २. आंबेर रा धणी री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बो.)
३. रा. वा. सू. भा., पृष्ठ ८४. ४. बात सातल सोम री (राजस्थानी भारती २/२)
५. रा. बा सू. भा., पृष्ठ १२४.

कान्हड़देव और सातळ सोम सम्बन्धी प्रसंगों में यही प्रभाव काम कर रहा है। इसी ने वात में कान्हड़देव सोनगरा को दिल्लीपति के सेवक के रूप में प्रस्तुत कर दिया है, जब कि इतिहास में वह अपनी दृढ़ता के लिए सुप्रसिद्ध है। यही चीज सातळ सोम के सम्बन्ध में है।[1]

बादशाह शब्द के बड़प्पन के कारण कहीं कहीं बातों में पुराने समय के हिन्दू महाराजा के लिए भी इसका प्रयोग कर दिया गया है :—

हवै वीझोजी वहिता वहिता पाटण पोहुता। जाइ नें पातिसाह कनै जाइ नै बोनवीयो—'जो म्हारी ग्रोरति रावजी खोस लीधी।........साथ दीजै, जिम गढ़ थांहरे नैं ग्रोरति म्हारी।' तिम पातसाह रैं इतरो ईज तो हुतो। तिम वींझैजी रैं साथ लसकर दे नैं सीख दीवी। (वात वींझा सोरठ री, अप्रकाशित)

इस उद्धरण में सिद्धराज जयसिंह के लिए बादशाह (पातिसाह) शब्द का प्रयोग किया गया है। इतना ही नहीं, दिल्ली की चर्चा के साथ ही बात में सालरसी तंवर को भी 'पातसाह' कहा गया है :—

सालरसी तूंवर दिली रो पातिसाह हुतो। सु सलारसी रो बेटो रिणसी। सु पातिसाही छाडि ग्राप री मन री खुसी जाय नींव रै पान सुं कासो-वरबत लीयो। (वात तुंवरां री, अप्रकाशित)

राजा-महाराजा

'पातसाह' (बादशाह) के अतिरिक्त राजाओं की चर्चा बातों में बहुत अधिक है—

क. वरदाईसेन राजा कनोज राज करै। तैं रैं सेतरांम कुंवर, सु वडो सिरदार[2]

ख. राठोड़ मच कलूर राज्य करै। लहुड़ो भाई चच; सु देस सवै चच सारै। न्याव तवावस सवै चच सारै।[3]

ग. रांणो सोहड़ सांखळो रूंण राज करै। तेरो लहुड़ो भाई राइसी। सोहड़ टीकै। राइसी खेलै रमै।[4]

ग. रांणो सांगो चीत्रोड़ राज्य करै। वडो रांणो हूवो। सांगै रै पातिसाह बंदीखानै रहीया, तीयां नुं चूड़यां पहिराइ पहिराइ छांडीया।[5]

इसी प्रकार अन्य भी बहुत से स्वतंत्र राजाओं की चर्चा बातों में मिलती है।

---

१. अर्ली चौहान डायनेस्टीज (अंग्रेजी) अध्याय १९ (डा दशरथ शर्मा).
२. वात सेतरांम वरदाईसेनोत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
३. वात चच राठौड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी). ४. वात केसै उपाधीयै री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
५. वात राव सूरिजमल री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)

ठाकुर

राजस्थानी बातों में छोटे ठाकुरों की चर्चा भी अनेकशः देखी जाती है :—

क. अबै बरस दोय नै भींवंजी रांम कह्यो। तरै जखड़ो टीकै बैठो। मुखड़ो मूंढा आगै दोड़ै धावै। इसी भांत दोनूं भाई घणा हेत प्यार मांय रहै।[१]

ख. तै वेळा आप रा लोक अर कुमर बैठा हुंता, तिकां नै राजा कह्यो, 'मूळवो चोघड़ एकै गांम रो धणी, तिण कन्है म्हारो कोड़ीधज घोड़ो रह्यो सु घणो ही सालै, सु म्हारै मन मांहै हीज रहो।[२]

इस प्रकार बातों में और भी बहुत अधिक ठाकुरों का वर्णन है।

पट्टा

जिस प्रकार बादशाह की सेवा में राजा-महाराजा रहते हैं, उसी प्रकार उनकी सेवा में छोटे या बड़े ठाकुर रहते हैं और उनको पट्टे (अधिकार-पत्र) दिए जाते हैं —

तद मुत्सद्दिया अरज कीवी, 'एक बार नागोर पधार मुलक में लोगा नू पटो देय फेर हजूर पधारज्यो।' तद कही, 'थे जावो, गांवां रो उतारो कर सताव मेलज्यो, तिण माफिक लोगां नूं पटो मेल देस्यां। सो सारो सरतंत कर दियो।' आछी जमीरत कीवी। लोग सारा आप आप री जायगां बांधी। लोग सबळ हुवो।[३]

पटायत सरदार छोटे और बड़े दोनों प्रकार के होते हैं, जो समय पड़ने पर स्वामी के लिए चाहे जैसी कठिन सेवा के लिए तैयार रहते हैं —

क. अठै रावतजी कागद वाच नै सीधळां रे सात बीस गांव मांहे तेड़ो मेलीयो। भाई सीधळां सरब बोलाया। लोक भेळो हुवो। ताहरां रावत सांमै आपरां आदमीयां नू कहीयो, 'अजमेर रो धणी परणायो, तिकै री हीड़ो काढणो।' ताहरां आदमी हजार त्यार हुवा।[४]

ख. तद एकै दिन वैरसी नूं राजा रो परवानो आयो हजूर रो, जु वेगो हजूर आयो। ताहरां वैरसी हालण री तयारी कीवी।[५]

आवश्यकता पड़ने पर ठाकुर लोग अपने आदमियों के साथ राजा के यहाँ पहुँच जाते हैं। राजस्थानी बातों में चित्रित राजतंत्र का मूलाधार सैनिक-सेवा है। आजीविका अथवा पट्टा प्राप्त करने वाला साधारण सिपाही या सरदार अपने राजा-महाराजा से जुड़ा रहता है। इसी प्रकार कई राजा महाराजा मनसब या जागीर पाकर बादशाह की सेवा

---

१. रा. बा. सू. पा., पृष्ठ १४४. २. बात मूलवै सागावत री (बा. भू. प.).
३. रा. बा. सं., पृष्ठ १५२. ४. बात राजा नरसिंघ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
५. बात रजपूत अर बोहरे री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.).

से बंधे हुए हैं। ग्रतः जिस तरह एक बादशाह के सामंत राजा-महाराजा हैं, उसी प्रकार उनके सामंत अनेक सरदार या ठाकुर हैं। छोटे जागीरदार या आजीविका-प्राप्त सैनिक योद्धा ठाकुर की सेवा में रहते हैं। इस प्रकार पूरा राजतंत्र विविध-प्रकार की सैनिक सेवाओं द्वारा गठित दिखलाई देता है और वहाँ छोटे-बड़े अनेक प्रकार के सामंत हैं। साथ ही छोटे बड़े अनेक स्वतन्त्र राजा भी हैं।

कहीं कहीं राज्य में (उमरावों अथवा ठाकुरों) की सम्मिलित शक्ति को पर्याप्त महत्व मिला हुआ दृष्टिगोचर होता है। समय पड़ने पर वे शासन की स्थिति में अपने इस महत्व को प्रकाशित भी कर सकते हैं —

तद राजसिंघ कह्यो, 'सारा सिरदार विराजो छो। पछै ही कोई सिरदार डावी-जीमणी बात कहै करै तो हमार कहो। आंपां किण ही री खाधो न छै, दोनुं सिरदार बरोबर छै। पछै किण ही रौ पख करौ तद आपणै घर मे फूट पड़े। तिण सुं हमार कहो। अमरसिंह तो पातसाह रौ कीधौ हुवै छै। फेर आबेर परणीयो छै। आपां रौ किरीयावर कोई छै नहीं। अर महाराज रै तौ आपां पांच मांणसां रो बळ छै। पछै सारां रै विचार आवै सो हमार कहौ।' तद सारा बोलीया, 'आ कासुं बात ? आंपे मारवाड़ रा पांच ठाकुर छै, सो तौ महाराज रा छै।'[१]

इस उद्धरण में जोधपुर राज्य का जागीरदार राजसिंह अन्य सरदारों के सामने स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए उनकी सम्मति मांगता है। प्रसंग बड़ा महत्वपूर्ण है। प्रश्न यह है कि राज गद्दी पर बड़े भाई अमरसिंह का बैठना उचित रहेगा या उससे छोटे जसवंतसिंह का ? सरदार जसवंतसिंह का पक्ष ग्रहण करते हैं और अन्त में उन्हीं की इच्छा-पूर्ति होती है। यह प्रसंग ठाकुरों के महत्व को प्रकाशन करता है।

प्रधान

राज्य में राजा या ठाकुर के बाद प्रधान (दीवान) का पद विशेष महत्व का है। उस पर राज्य का पूरा भार रहता है —

क. पछै मुंहणोत नैणसी दीवान थो, तिण नुं बोलाय कह्यो, 'जो मैं तो घर तोनै सौंपीयो थो। तैं भलो वसायो। भली राज री पुसतो बांधी। साबास छै।[२]

ख. धनुं मुंहतो चाहतो थो, सो हुवो। धनुं नै निवाजीयो, प्रधान थापीयो।[३]

ग. करण नांनाणै हुतो। सात वरस रो आणीयो। आंणि नै तखत बैसारीयो। टीको दै माथै छत्र तणाह सतर सहस गुजराति री साहिबी दीन्ही। मुंहड़े आगे लूणसाह प्रधान थापीयो।[४]

---

१. बात राजसिंघ खीयावत री (वरदा ३/१). २ बात राजसिंघ खींयावत री (वरदा ३/१).
३. बात बहलीमा री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बो.) ४. बात राजा भीम री (वा. मु. प.)

प्रधान के बाद अन्य भी कई राजकीय पदाधिकारी होते हैं —

तिलक कर सगळा लोकां रो जुहार करायो। सारा भाई मुहता, अमराव, मुत्सद्दियां कन्है नजराणो करायो।[1]

आण

शासन में राजा की 'आण' को बड़ा महत्व मिला है। इस आण (आज्ञा) अथवा 'दुहाई' का लोप करने की राज्य में कोई व्यक्ति हिम्मत नहीं करता। ऐसा करना भारी अपराध समझा जाता है। साधारण व्यक्ति भी चाहे जिसको राजा की आण के नाम पर किसी भी काम से रोक सकता है। आण राजकीय प्रभाव की सूचक है —

क. घड़ी दोय दिन चढ़तां तौ फतै रा सादियाना बजाय दीन्हा। आंण-दांण फेरी। घोड़ा हाथी खजानो हाथ आयो। दुहाई जलाल साहिब री फेरी।[2]

ख. ताहरां रावजी कहीयौ, 'माळो री आंण दीनी। सु तो आंण हजूर (री) ही भागी। आपणी सीव कोस दोय छै, सु आंण कोण मांनसी। थे तो आण न मानीं। ठकुराई राखण करो तो आगै भाटीयां हिसै जा। अठै रहिसो तो बीजा भाई थांहरा पांच माणस छै, तिम थेई बैठा रहौ। नहीं तो भाटीयै जाय गढ मांडो।'[3]

ऊपर के दूसरे उद्धरण में राजा अपने सगे भाई तक को आण न मानने के कारण राज्य से बाहर निकाल देता है।

शांति-रक्षा

असंगठित एवं विभाजित शासन के कारण अनेक लोग साहसिकता पर उतरे हुए हैं और वे धाड़ा (डाका) डालते हैं। राज्य में ऐसे लोगों के दमन की व्यवस्था भी यथा सम्भव रही है। इनको दबाने के लिए सिपाही भेजे जाते हैं —

अठै कतार खोसण नूं दौड़िया नै इण असवारां पचीसां ही ले ईश्वर रो नाम मव्ळी गूद माथै पड़ै तिम टूट पड़ीया। धाड़वी लूटता हुंता नै इण अजाणजकरा जाय लोह बजायो। इसड़ो रोठ बजायो, असी ही असवार धाडवियां रा माथा वाढीया अर रेसम रो भरी ही कतार दे लोढ़ड़ै भाई रायपाल साथ धाड़वियां रा माथा कतार सुंधा रावळजी री हजूर मेलीया।[4]

इस उद्धरण में राजा के सिपाही धाड़ी लोगों को मार डालते हैं।

नगर की शांतिरक्षा का भार कोतवाल के ऊपर है परन्तु प्राय: वह एक भ्रष्ट पदाधिकारी के रूप में चित्रित हुआ है —

---

१. रा. बा. सं., पृष्ठ २११. २. रा. बा. सं., पृष्ठ ११५.
३. वात सातन् बोधावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. भाटी वरसं तिलोकसी वात (रा. शु. प.)

ताहरां साह कोटवाल पासे आयो, कह्यो, 'जो चोर म्हारे घरे रो चाकर छै, थे मारो मती। दियो उरघो।' ताहरां कोटवाळ साह पास किम-न्हक लै नै चोर दियो। साह चोर ले ने घरे आयो।[१]

इस उद्धरण में कोतवाल बनिये से घूस लेकर पकड़े हुये चोर को उसे सौंप देता है। इसी प्रकार के एक कोटवाल के पुत्र का चरित्र देखिए, जो अनेक बुराइयों से भरा-पूरा है।

इतरै अठै सिधराज जैसिघदेव रो माहिलवाड़ियो डूंगरसी पाटण रो छै। तिण रो बेटो एक, लालकंवर। तिको मोटियार छै। परण्यो तो छै पिण मोट्यार पाटण रै कोटवाळ रो बेटो नै माहिलवाड़ियो छै। तठै पाटण माहे पातरां रा पांच सैं घर छै। तिण माहे एक जाबवंती पात्र छै।............तिण रै कोटवाळ रो बेटो आवै। तिण रो सागरद सूं रमै। एक दिन कह्यो, 'जांबोती' काई निपट फूटरी चतुर कुळवती बालक-वरसां माहि इसी काइक मिलावै तो खवास करूं नै तोनै निवाजूं।' जावोती मुजरो करि आरे कीधी।[२]

न्याय

राजस्थानी वातों मे न्याय-व्यवस्था की चर्चा भी अनेकशः देखी जाती है। न्याय राजा के द्वारा होता है —

क. उजेणी नगरी मांहे वांणीयै झगड़ो आपस में हूयो। राजा वीर विक्रमादित्य आगे वांणीया पुकारीया। नित झगड़ै। एक दिन राजा कह्यो वांणीया नुं, 'मास ६ पछै न्याव करीस।' ताहरां वाणीया घरे गया छै। जाइ नै वाणीयै विचारीयो, 'राजा तो कहै, ६ मास न्याव न करूं। तो आपे चालो, कथे के न्याव कराविस्या।' ताहरां वांणीया हालीया छै।[३]

ख. तद साह री छोटी वहू राजा भोज तीर पुकारू गई। आय नै फरियाद किधी। तद राजा पुकार सांभळी, कह्यो, 'देखां, खबर मगावो, या कुण है।' जद आदमी आय नै पूछी, 'थारै कांही पुकार है?'[४]

ग. पछै व्यापारीयां नै छोड दीया। तिके रावळ मलीनाथजी कने पाधरा फिरादु गया। तरै रवलजी चुंडा नै बोलाय ने हकीगति बूजी, 'इणां रो माल क्युं लुटांणो?'[५]

प्रथम उद्धरण में प्रकट किया गया है कि जब राजा निर्णय मे विलम्ब करता है

---

१. वात हंसराज वछराज री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.). २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १६.
३. वात विक्रमादित्य सालिवाहन री. (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. रा. वा., भाग ३, पृष्ठ ५६.

तो लोग एतदर्थ पंच के पास चले जाते हैं। राजस्थानी बातों में पंच की चर्चा अनेक जगह मिलती है —

क. इतरै झगड़ू आया। आय ने रांम रांम कीयौ। ताहरां फोगसी पूछीयौ, 'कठा सुं आया ? कठै जासो ?' ताहरां इण हकीकत मांड नै सरब कही। ताहरां फोगसी कह्यौ पैंहलो लागू बोलो।'[1]

ख. तब पंचूं मिल कर कह्या, 'यह जमी माहि सुं निकळा। खुदा इनै पैदा कीया। महमद नैं पैदा कीया। इसका नाम महमद मटियाण दीया।'[2]

ग. साह कहै, 'पंचां री जोख छै, जीमणी आवै तो जीमो, नहीं ओ परो दूर देवो, बीजो करो।' पंच सारा आया।[3]

ऊपर के उद्धरणों में प्रयुक्त राजा, पंच, न्याय, फिरादु, झगड़ू, लागू, पुकारू आदि शब्द तत्कालीन न्याय-व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं।

दण्ड

चोर आदि अपराधी लोगों को पकड़े जाने पर कठोर दण्ड दिया जाता है। इस कठोरता में युग की छाया है —

तद कहीयो, 'रजपूत पर-उपगारी हुवै छै।' कहीयो, एक म्हारे कार्य छै। तुं मोटो रजपूत छै। म्हांरो कारिज करि।' कहीयो, 'थारे कुण सो कारिज छै ?' कहीयो, म्हांरो घर-धणी भूंडै विसन पड़ियो हुतो। चोरी करतो सू सूळी दीयो छै।[4]

लोकतन्त्रीय-पद्धति

राजस्थानी बातों में राजतन्त्र शासन-प्रणाली के अतिरिक्त एक दूसरी पद्धति भी कहीं कहीं देखी जाती है, जो किसी अंश में लोकतंत्रीय व्यवस्था सी है —

वीरमदेजी जोईयां रे देस देपाळ कनै गया। आगै जोईयो देपाळ बीजाई जोईया सिरदार दोण उपरै थो तठै दांणी चोतरै आया था। तिण दिन वीरमदे सोहाणा रे तळाब आणि उतरीया था। सतरी छांह देख नै देपाळ जोईयो दाणी-चोतरो बैठो थो।

\+ \+ \+

घठै घोड़ा-रजपूत थोब-गोठ छै, सो वीरमदेजी रा छै। दस भाई म्हे लूणा जोईयो रै डोकरा कहे छै। त्यारा गढ सुहांणा माहे दस होमा छै। त्यूं इग्यारमो हेसो वीरमदेजो रो छै। वसी रा लोक ने घर बताया। इग्यारमो हेसो दांण मैं करि दीयो।

---

1. बात फोगसी एवान् री (बरदा ४/४) 2. बात महमीया री री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
3. रा. बा. स., पृष्ठ ११३. 4. बात वानिय ढ़ाब्हा री (बरदा ७/२)

इतरै फरास वाडीयां री खबर आई। तरै सारां ही जोईयां मिल नें देपाळ आगे पाघड़ी पटकी, कह्यौ, 'देपाळजी, घर में फिसादि घालि ने जोयां रो मायो भुकायो पाघड़ीया में धूळ पड़ी। जोयां रै पूजनीक फरास वाढीयो। तिको वीरमदे अबै पेट मे क्युं कर समावै?' तरे सगळा जोईयां भेळा होय ने घोडां हजार २४ सुं चढीया। तिण माहैं दलो देपालांणी मोहर वधीयो। आप रा साथ सुं वध नै वीरमदेजी री गायां लीधी।[१]

उपर्युक्त तीनों प्रसंगों में प्रकट है कि लूणां का पुत्र देपाळ और उसके अन्य नौ भाग राज मे बराबर के हिस्सेदार हैं। वहाँ दांण-चोतरा (राजस्व वसूल करने का चबूतरा) है। समय पड़ने पर सभी जोईया सरदार परस्पर परामर्श किया करते हैं और युद्धके लिए पूरी जाति एक साथ तैयार हो जाती है।

इसी विषय में जोईया लोगों से सम्बन्धित अन्य प्रसंग भी द्रष्टव्य है —

उठी जलाल गिरवरगढ सुं कोस दस जाय डेरो दियो। हजार पचास फौज छै। आगे जोहियां रै गढ में साथ भेळो हुवो, सो हजार चालीस सिपाही छै। गढ जुदो सजियो सहर जुदो सजियो। च्यारू' पासां मोरचाबंदी कर रह्या छै।

+　　+　　+　　+

यूं रहितां जेठ काढियो। आसाढ लागतां ही अमापी बरखा हुई। तद जोहियां रै कटक खटण जोहियो सरदार थो, 'खेती करता तो भली। कहो तो आप आप रै गांवां जाय हळ जुताय आवा। जलाल तो दिन काढणै नूं बैठियो छै। आपां सूं मिळियो छै।' जद सगळा साथ नूं सीख हुय गई। सो सारो साथ बिखरियो।[२]

इन उद्धरणों में भी जोईया लोगों का 'साथ' बड़ा शक्तिशाली प्रकट किया गया है। उनके 'कटक' के सरदार का नाम 'खटण' है। जोईया लोग खेती करते हैं।

इस प्रकार जोईया लोगों के राज्य में किसी अंश में लोकतंत्रीय पद्धति की झलक दिखलाई देती है।

समाज

राजस्थानी बातों में राजपूत-समाज का चित्रण विशेष रूप से हुआ है। इसका स्पष्ट कारण है कि राजपूत शासक जाति रही है। अनेक राज्यों के उत्थान-पतन की कहानी

१. वीरमदे सलखावत री बात (वीरवाण परिशिष्ट)　२. रा. वा. सं., पृ ११४.

राजपूतों के साथ जुड़ी हुई है। इस कहानी के पीछे वंश-गौरव की भावना बड़ी बलवती है। एक ही वंश के व्यक्तियों में संगठन अति मात्रा में देखा जाता है। संघर्ष या युद्ध प्रायः अन्य वश के राज्य के साथ ही होता है। अपने वंश के राज्य की गौरववृद्धि हेतु त्याग और बलिदान के लिए प्रत्येक योद्धा बद्धपरिकर है। ऐसी स्थिति मे भिन्न राजवंश के विचार से राजपूतो में भारी फूट है तो आत्मवंश की दृष्टि से उन में बड़ा संगठन भी है। एक राज्य मे प्रायः एक ही वंश के लोगों की बड़ी संख्या सिपाही रूप में शासनाधिकार रखती है और टीकायत सरदार का आदेश उनके लिए शिरोधार्य है। यही कारण है कि किसी राज्य का निर्देश करते समय अधिकतर वहाँ के शासक वश का नाम लिया जाता है—

१. एकदा प्रस्ताव, सौ तैरी धरती दुकाळ हुवौ। ताहरा खरळ बोलिया, 'कठै हेकै हालौ मास च्यार द्राव चारां।' ताहरां केहै बोलिया, 'धरती आज खीचियां री भली छै।' ताहरां आदमी मेल्हिया। खीचियां आगै कह्यौ, 'मास च्यार म्हे थां कन्है आय नै गोवळ करा, द्राव चारां।' ताहरां खीची सांखळा ससलामी।[1]

२. तद डोड-गहेली बोली, कही, 'जासो तो सही पण म्हारा भाई ऐसा न छै, जिके थानै धाड़ौ ले आवण देवै। का तो पोहच अर राखै अर जो जाणै जु बहनोई रा भाई छै तो मारै नही तो अव्वल आसुवै रोवावै।' तठै पाबूजी कही, 'म्हे राठोड़ छां। डोडां कदे राठोड़ कोई मारियो सुणियो नहीं।[2]

३. बाघ फिरतौ फिरतौ भाद्राजण गयौ। ताहरां भाद्राजण रै सींधळ गयौ। सींधळै मारियौ। तठै वैर हुयौ। ताहरा ऊदै नै सीधळे वैर हुयौ। सींधळ अर इदां लड़ाई हुयो।[3]

४. अर कुंवरपाळ तो डाभ्यां रै देस गयौ, सो डाभ्यां सौ मिलै नै पाटण रा धाड़ा करै।[4]

उपर्युक्त सभी उद्धरणों में प्रदेश की चर्चा में राजपूतों वंशों के नाम साथ हैं।

'राजपूतों में अपने वंश की गौरवानुभूति के साथ ही अपनी जन्मभूमि के प्रति उत्कट प्रेम की अनुपम त्यागमयी भावना है। यह राजस्थानी बातों का एक ध्यातव्य विषय है। इस भावना ने अनेकशः 'साको' और 'जौहर' करवाए हैं। साका करने वाले योद्धा प्रबल शत्रु का विरोध करने में अपने को असमर्थ मान कर अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं और उनकी महिलाएँ जौहर में भस्म होकर अपनी पवित्रता अक्षुण्ण रख लेती हैं —

तद पताई रावळ नूं खबर हुयी, जु गढ पळट्यो। तद पताई रावळ भीतर राणियां नूं अर दोजै ही जनानै नूं कह्यौ, 'जु थे जूहर करो।' तद राणियां कह्यौ, 'म्हे ही रजपूताणियां छां। म्हे ऊंचियां चढस्यां अर नीचै लकड़ियां री भूपी करो। ज्यूं ज्यूं थे काम

---

१. बात वचलसी सांखले नै भरमल री (रा. भा. ६/३-४) २. रा. वा. मू. पा., पृष्ठ १८२-१८३
३. रा. वा., प्रथम भाग, ५३-५४ ४. रा. वा., भाग ४, पृष्ठ १६.

ग्रास्यो, त्यूं त्यूं म्है कूद कूद पड़स्यां।' पछै गढ भिळियो ग्रर काम ग्रावण लागा तदै रजपूताण्यां ग्राग माहे पड़ै। सह्यो वांकळियो पातिसाह कन्है ऊभो दिखावै, 'जू ग्रो फलांणो रजपूत ग्रर ग्रा कूद पड़ी तिका वैर।' तद पातिसाह देख ग्रर कह्यो, 'जू सावास ऐ रजपूत ग्रर ऐ रजपूताण्यां।[१]

उपर्युक्त उद्धरणों में जौहर का वर्णन है। जौहर करने वाली राजपूत महिलाओं की शत्रु भी सराहना करता है।

राजपूत समाज में नारी-सम्मान विशेष रूप में प्रकट हुग्रा है। उसकी यह विशेषता ध्यान में रखने योग्य है —

१. मारू ढोलैजी री हजूर ग्राय मुजरो कियो। तद ढोलोजी ऊठि नै मारू नै घणो सनमांन दीधो। हाथ पकड़ ढोलिया ऊपर वैसांणी।[२]

२. तरै लालां मेवाड़ी कहियो, 'जु हेक वात री बांह देवो, ज्युं थानै हुकम देवां। 'तरे ग्रचळदासजी कहियो, जो थे कहो, तिका वात बांह देवां।[३]

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों में पति ग्रपनी पत्नी को पूरा सम्मान देता है।

वातों में ग्रनेक जगह सती होने का वर्णन ग्राया है। यह प्रथा उस समय ग्रत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखी जाती थी।—

१. नरसंघ ग्राप रो सारो ही साथ लार ले ग्रर रांणी रो दरसण कीयो। रांणी ग्रासीस दीनी। नरसंघ नूं लड़ाई जीप टीको दीनो। ग्राप वरस............पछै राजा पुठै सती हुई।[४]

२. ग्रा सीख दे ग्रर ऊमादेजी सती हुवा। राम जोधपुर ग्रायो। ग्रागै टीकै तो चंदसेण वैठो।[५]

इन उद्धरणों में राजपूत महिलाओं के सती होने की चर्चा है। परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि सती होने की प्रथा केवल राजपूत-समाज में ही नहीं, यह ग्रन्य लोगों में भी है —

तद पदमावती कही, 'म्हारो सुसरो ठकुरो साह छै।' तद राजा पदमावती नूं कही, 'ग्रो तो मूवो। हमैं साह रै बेटै नूं कवूल कर।' तद ईयैं कही, 'म्हारो मांटी हंतो सू मूवो छै तो हूं तो सती हुईस। इ येनूं लकड़ी दीजै।' इतरी ईये कही। तठै राजा विचारी, सीळवंती छै।[६]

---

१. रा. वा., प्रथम भाग, पताई रावल् री वात २. रा वा सं., पृष्ठ ८२.
३. वात लाला मेवाड़ी री (पं. व. द, परिशिष्ट). ४. वात राजा नरसंघ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
५. रा. वा. स. भाग १, पृष्ठ ७८. ६. वात ठकुरै साह री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी).

इस उद्धरण में पदमावती एक सेठ की पुत्री है। वह सती होने के लिए तैयार होती है।

साथ ही कहीं कहीं बलात् अथवा अनिच्छापूर्वक सती होने का उदाहरण भी देखा जाता है :—

ताहरां ग्रै असवार पाछा आया। आय नैं देखै तो सगरौ तोरण नीचै पड़ियौ छै। ताहरां कह्यौ—'जी, सती हुवौ, सगरै नूं ले नैं। सती नूं कह्यौ जु बाहिर आवैं, ज्युं सगरै नूं दाग देवां।' ताहरां बींदणीं नू भीतर जाय कहियो। ताहरां बींदणीं कह्यौ—'खेतसीह मारियौ हवै तो हूं सती न हवूं। सगरै नूं घीस नैं नांख देवौ।' पाछै आय नैं कहियौ—'जी, संभै नहीं।' ताहरा कहियो—'जी, म्हे एकलै ही सगरै नूं बाळां ?' तो कही—'म्हे असंभाही हो सती करां ?' ताहरां कह्यौ—'आवौ बारै।' ताहरां जांनी ही सिलह पहरै छै, मांटी ही सिलह पहरै छै। बेहुं हथियार बांधै छै. सिलह पैहरीजै छै। ताहरां बींदणी दीठौ, अर मा अर बाप नैं कहियौ—'हे ठाकुरां-रजपूतां, हूं बैर खेतसीह री छूं; अर एकली रै वास्तै घणा जीव मरै छै, तैं हूं सगरै साथ बळोस।' बींदणी बाहिर आय नैं सगरै साथै बळी। (मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ ४७-४८, बात खेतसीह री)

इस उद्धरण में अनिच्छापूर्वक सती होने का प्रसंग; अतः यहाँ इस क्रिया के लिए 'साथै बळी' (साथ जल गई) का प्रयोग किया गया है।

राजपूतों में बहु-विवाह की प्रथा विशेष रूप से देखी जाती है, जिसके उदाहरण बातों में भरे पड़े हैं—

ताहरां अखै निरवांण ऊंठ झेकीयौ। झोकि नै लीडी नुं चाढी, ऊठ नूं लात वाही। आय रै घरै गयौ। जाइ नैं आगली रजपूतांणी नुं तेड़ि नैं कह्यौ, मैं आ रजपूताणी म्हारै माथै सटै आंणी छै। ईयै सूं वाद-विग्रह मत करिज्यौ। 'ताहरां आगली रजपूतांणी बोली, 'जी, हुं कहुं छूं। दोइ चळै ल्यावौ जे थांहरौ पौहच छै तो।' ताहरां अखै एक नवो घर कराइ दीयौ। दोहू छोकरी दीन्ही। आधो माल वहिच दीयौ। एक दिन एकै ठोड़ जीमै, एक दिन एकै ठोड़ जीमै।[१]

इस उद्धरण में एक राजपूत सरदार के दो स्त्रियां हैं। वह दोनों को ही पूरी सुविधा और सम्मान देता है।

सती धर्म नारीजीवन का आदर्श है। बातों में कहीं कहीं उदाहरण इसके विपरीत भी मिलते हैं, जिन में यह धर्म अपने मूल रूप में नहीं है —

१ बात कांबसी जोईयो नै वीझी घरल री (बा. मू. ग.).

१. तरे महंत जोगेसर कह्यो, 'अब भीवा, तूं थारे घरे जा। थारा कुटंब मांणसां भेळो हुइ।' तरे भीवो बोल्यो, 'म्हारा देस मांहे मोटी एक कुरीत छै। कोई ठावो गांमेती वासडियो तथा घर रो धणी रजपूत मरै, मोटियार के कांम आवै तो उण रो वायर गाघरांणो करै। तिण सूं किसूं करूं घरे जायनै ?' तरै जोगीसर कह्यो, 'गाघरांणो क्या कहीजै ?' भीवै कह्यो, 'देवर होय तिण सूं घरवास करै। भोजाई देवर रै घर मांहै पैसे।'[1]

२. ताहरा घरां रा एकठा हुवा, दौड़ीया। जेथ उतारी हुती, तेथ गया। देखे तो ऊंठ री भोक आगै पग छै। ओठी चाढि नै लेगयो। पग लीया। पग चालीया। कोस १ पग चालीया। आगै पग चालै नही। ताहरा फिर अपूठा आया। आई नैं कह्यो, 'बहू नुं कोई धाड़वी ले गयो।'—.......कंवळो बेर ले ने घरे आयो। मा बाप सुखी हुवा। गांव रा रजपूत मिळीया। ऊंठ ही २ ल्याया, बैर ल्याया।[2]

ऊपर दिए गए दो उद्धरणों मे से प्रथम में 'गाघराणो' प्रथा को स्पष्ट चर्चा है। पिछले प्रसंग में एक व्यक्ति की स्त्री दूसरे का हाथ पकड़ कर उसके यहाँ रहती है और फिर वह उसका उद्धार करके अपने घर ले आता है तथा पति-पत्नी प्रेम के साथ रहते है।

इसी प्रकार परित्यक्ता एवं विधवा के पुनर्विवाह के प्रसंग भी राजस्थानी बातों में मिलते हैं—

१. आ वात रावळ मालै रै हजूर हुई, जु खाद रै वेई एकै रजपूत रजपूताणी छोडी। ....रावळ मलीनाथ रो चाकर, सु उवै ठाकुर दरबार मांहै वात सुणी। अर ऊंगवड़ै आदमी कोटेचां आगै मेल्हीयो। वीनती कराई, जु थांहरी बेटी मोनुं द्यो। तद कोटेची दी। सगाई हुई कोटेची नुं ऊंगवड़ै ईंदै आणी। घणो हरख कीयो। कोटेची रै सात बेटा हुया।[3]

इस प्रसंग में एक परित्यक्ता राजपूत महिला को दूसरा राजपूत पत्नी के रूप में ग्रहण करता है और वे बड़े प्रेम के साथ रहते हैं। साथ ही उनकी समाज-मान्यता मिलती है।

२. चीत्रोड़ में राज सोनगिरा करै। युं करतां एक दिन रो समाजोग छै, मालदे री सोहागिण राणी हुती, तियै री बेटी बालरंड हुती, सु जुवांन हुई। सु एक दिन भोजायां बैठ्यां हुत्यां। बाई पिण कनारै बैठी हुती। भोजायां निणंद नुं कह्यो, 'बाई, गहिणां पहिरो। देखां किसा सा दीसै ?' ताहरां बाई गहणा पहिरीया। कह्यो, 'बाई, चूड़ी

---

१. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १२७. २. वात, कांवलो जोईयो नै तीडो खरल री (वा. सू. प.)
३. विखरो बहेलवै गयो रहै (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

पहिरो ।' ताहरां चूड़ो ही पहिरीयो । रामत करतां इतरा थोक कीया । ताहरां वाई आरीसो ले नै जोयो । ताहरां रोवणं लागी । ताहरां भौजायां बोलीयां, 'बाई; गहणा मतां उतारो ।' ताहरां बाइ गहणां उतारीया नहीं । ताहरां भौजायां सासू नुं बात कही । ताहरां सुहागिण री बेटी हुती, तीयं मालदे नुं कह्यो, बाई नुं वर जोवो ।...... ताहरां हमीर परणीयो छै । सोनगिरी राणी थापी । जाहरा सोनगिरी रै बेटो जायो । तेरो नांम खेतो दीयो ।[1]

इस उद्धरण मे विधवा-विवाह का प्रसंग है।

राजस्थानी वार्तो के अनुसार राजपूत समाज मे कन्या के प्रति मोह कम प्रकट हुआ है। कई बातो में कन्या के जन्म लेते ही उसको छोड़ देने तक का प्रसंग देखा जाता है—

१. राठोड खीवो पोकरण राज्य करै । पोकरण बालनाथ जोगी रो आसण छै । अठै बौहगटी हरभू पहिराजोत राज्य करै । कलिकर्ण केहरोत भाटी हरभू साखळै रै परणीयो हूतो । वाई अठै पीहर हीज रहती सांखळी । बाई रै पेट आस्या हुती । कितरे एके दिने बेटी जाई । बड़े नखते जाई । ताहरां जंगल में नाखि आया । अठै हरभू साखळो फळोधी गयो हुतो । आवतां थळ माथै रोवतो टाबर दीठो । ताहरां पूछीयो, 'रे टाबर कठैक रोवै छै ?' ताहरां कहीयो, 'राजि, एक टाबर कहो कै नांखीयो छै, सो रोवै छै ।' आप कहीयो, 'उठाई ल्यावो ।'[2]

२. साचौर नगर रो धणी राजा राइचंद देवड़ो राज करै । तिण रै मूळ नक्षत्र रै पहले पाए पुत्री रो जन्म हूओ । ब्राह्मणां कह्यो, 'पिता नै मारी ।' तिवारे गांम मांहे राजा अउतिया धनवंत री खबर कराई । साचौर मांहे अपुत्रियो धनवंत चांपो कुमार छै । तिण रा चाकर नीवाह कमावता हुंता । चांपा रै नीवाह ऊपरै आधी रात पटोळी सूं लपेटि कन्या राजा मेल्हाई ।[3]

इस उद्धरणों में नवजात कन्या के त्याग का कारण प्रायः उसका बुरे नक्षत्र में जन्मग्रहण करना प्रकट किया गया है। परन्तु यह लोकविश्वास की चीज होने पर भी निश्चय ही एक अत्यन्त करुण प्रसंग है।

राजपूत-समाज का परिचय देते समय 'खवास' प्रथा की चर्चा भी आवश्यक है। यह दासप्रथा का ही दूसरा नाम है। उदाहरण देखिए —

---

१. बात सोनगिरे मालदे री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.).
२. बात राठोड़ नरै सुजावत खीवै पोकरणै री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)
३. रा. प्रे. क., पृष्ठ २६.

१. एकै दिन राजड़िया रो बेटा श्रोजड़ियो वीरमदेजी री खवासी करे छै। तिण आंख भरी चोसरा छूटा।[1]

२. तरै सोनिगरी दासी नै गेस कोधी, 'तें हाथ धोय नै झारी भरी नहीं। जा दूजी बार माटी सूं हाथ धोय ने भर ल्याव। आंधी, तेल श्रग्गो, देखै कोई नहीं।'[2]

३. रात पड़ी ताहरां सोदागर इयै रै घरे आयो। तद ईयें छोकरी नूं सिणगार कही, 'आज तो तूं सोदागर नूं रात रो बिलमायै। पछै पर्छ दीससै।' ताहरां सोदागर माळीयै श्रायो, मांचे श्राय बैठो[3]

इन उद्धरणों मे दास-जीवन की चर्चा है। दासी का जीवन विशेष रूप से कही कही करूणापूर्ण देखा जाता हैं। यहाँ उसका आत्मसम्मान जरा भी नही हैं। इस विषय में ऊपर का तृतीय उद्धरण विचारणीय है। उस में एक दासी को परपुरुष के पास भेजा जाता है।

बातों में कही कही वेश्या की चर्चा भी मिलती है—

श्रागं घर जड़ीयो दीठो। ताहरां उवै दौड़िया, दीठो वेस्या रै घरे छै। श्रर रजपूत श्रायै वेस्या रै घरे जाइ बैठो।[4]

अन्य जातियाँ

राजस्थानी बातो में प्रधानतया हिन्दू समाज के राजपूत-वर्ग का जीवन चित्रित हुआ हैं परन्तु प्रसंगवश अन्य वर्गों की चर्चा भी आती रहती है। इन में ब्राह्मण-वर्ग के प्रति पूज्य भाव प्रकट है। परन्तु बातों मे ब्राह्मण पात्र कही ही प्रकट होता है और यदि वह किसी बात में मिलता है तो वहाँ भी प्रायः उसकी स्थिति गौण ही है। सगाई विवाह आदि के प्रसंग में वह जरूर दिखलाई देता है। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

१. सेरपुरा रो राजा वीरभद्र रो पुरोहित विक्रमादित्य छै। पंडित-ब्राह्मण तरक चर्चा करै छै। इतरै पुरोहित विक्रमादित्य आयो। राजा ऊठ आदर दियो। बाह पकड़ कर कन्है ले बैठा।[5]

२. ताहरा ऊदो कहै, 'सिखरेजी री बेटी थांहरै बैरै नूं दीनी छै। देव उठियां पछै ब्राभण मूकां छां, पधारिज्यो ज्यूं परणावां।'[6]

३. इतरी वात राजा सांभळ नै प्रोहित नूं बोलायो। तद प्रोहित नुं नालेर दे नै टोकै रा घोड़ा दे नै विदा कीयो। ताहरां प्रोहित महल री डोढी विदा करण आयो छै।[7]

शिक्षा ब्राह्मणों द्वारा दी जाती है —

---

१. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ७६-७७ २. वही, पृष्ठ ७३.

३. बात सौदागर री (हस्तप्रति अ. जं पं. बी.) ४. आप री सीख (हस्तप्रति अ. जं. पं. बी.)

५. रा. वा. सं, पृष्ठ २०५. ६. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ६८

७. बात रतनमंजरी री (हस्तप्रति अ. जै. पं. बी.).

१. तठै राजा खडगराळ आपरां लोक नैं कह्यो, जु कुंवर नु कही रे भणणी घालो।' ताहरां एकै गाव महै एक ब्राह्मण पडिता रहै. ते रे आगे उवा इयैं कुंवर री बहु पण भणे। तद कुंवर नुं पण ले जाय अर भणणों घालीयो। कुंवर पण भणे अर आ पण भणे।[1]

२. एक साह तेरैं हेक बेटो, सो बहुत रूप रो निधान। तद साह तो बेटैं नुं कोठी मेल्हीयो चाहे अर वासैं बहू नुं पडिता पासे भणावै।[2]

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों मे शिक्षा का प्रसंग है। इन मे नारी-शिक्षा की चर्चा भी है। अध्यापक का कार्य पडित करता है।

इसी प्रकार चारण-भाटों को भी समाज में आदरणीय स्थिति है। इन को सम्मान के साथ भेंट और दान मिलते हैं —

१ चारण-भाट नैं अटकाव नहीं और कोई हुकम विना जांण पावैं नहीं। ओ भाट पाधरो अनंतराय रैं दरबार गयो नै अनंतराय नैं विरुद दीधो।............ऐ वचन सांभळि राजा पूछियो, 'भाटराजा रो कठै बास ?'[3]

२. इतरा मे राव चूंडै दूहो सुण नैं तुरत ओलख्यो। रावजी ऊभा होय नैं मिलीया। घणो आदर सनमांन दीयो। मास छ मास राख नैं चारण नैं लाखपसाव दीयो। खिरज गाव सासण मैं दीयो। बारटजी सीख कीनो।[4]

ऊपर के प्रथम उद्धरण में भाट के प्रति सम्मान प्रकट किया गया है। दूसरे उद्धरण में चारण को 'लाखपसाव' भेंट मे किया गया है। साथ ही उसे एक गांव भी दान में मिला है। 'लाखपसाव' का दान एक लाख रुपये की कीमत का माना जाता था।

राजस्थानी बातों मे 'खटवरण' या 'खटदरसण' की चर्चा अनेकशः आती है। इन में खटवरण का अभिप्राय ६ प्रकार के ब्राह्मण, चारण, भाट आदि गृहस्थ दानपात्र लोगों से है। खटदरसण ६ तरह के संन्यासी हैं। इन में ब्राह्मण भी सम्मिलित है —

ब्राह्मण सेतंबर बळै, जोगी जंगम जाणि।
दान संन्यासी सोफिया, खट दरसण बाखाणि॥[5]

अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं —

१. पिण जगदेव काला-गहिलां रो दातार छै। रुपिया हजार एक रो दान हमेसा करैं। दातारगुरू नाम खटव्रन कहै।[6]

---

१. बात खडगल पुवार री (हस्तप्रति अ. जैं. ग्रं. बी.) २. ठग राजा री बात (हस्तप्रति अ. स. पु. बी.)
३. रा. वा.सू. पा., पृष्ठ ११३. ४. बात राव चूंडा री (वीरवाण परिशिष्ट)
५. रा. वा. सं., भाग १, पृष्ठ २६. ६ रा. वा. मू. पा., पृष्ठ ३०.

२. जगत में राव चूंडो प्रसिध हुवो। वडो दातार सद्रवसरण रो माधार हुवो।[1]

समाज में वैश्य लोगों की स्थिति सम्पन्नतापूर्ण है। अनेक बातें सेठों के जीवन से सम्बन्धित है।[2] ये व्यापार करते हैं। आगे व्यापार के प्रसंग में इस विषय के उदाहरण दिए जाएंगे।

इनके अतिरिक्त विविध धंधों के अनुसार समाज कई वर्गों अथवा जातियों में बंटा हुआ है। इसके लिए 'पूण' शब्द का प्रयोग होता है, जो अब भी राजस्थानी बोलचाल मे चला आ रहा है। 'पूण' की संख्या ३६ प्रकट की गई है —

तिण गढ गिरनार री तळहटी सांभेरगढ वस रह्यो छै। छत्तीस पूण भली भांति राज करै छै। बाग-बगीचां री हरियाल खुल रही छै।[3]

इस प्रकार ३६ पूण में ब्राह्मण, महाजन, राजपूत, नाई, सुनार, धोबी, खाती, माली, कुंभार, छीपा आदि सभी लोग सम्मिलित हैं, जिनकी चर्चा राजस्थानी में अनेकशः आती है।

मुसलमान

राजस्थानी बातों में हिन्दू मुसलमानों का राजनैतिक संघर्ष अवश्य प्रकट हुआ है परन्तु वहाँ साम्प्रदायिक विरोध दिखलाई नही देता। अनेक बातों में हिन्दू तथा मुसलमानों मे पूर्ण सौहार्द प्रकाशित है। वहाँ ऐसा विदित होता है मानों दोनों धर्मों ने सामाजिक समन्वय स्थापित करके प्रेमपूर्ण वातावरण बना लिया है। पारस्परिक मित्रता एवं बंधुत्व के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. मांगळीयाणीजी देपाळ कनै आया। वीरमदेजी अमलां में चाक हुवा पोढ्या छै। दोलो गहलोत विण आयो न छै। मांगळीयांणीजी देपाळजी नै कह्यो, 'देपाळजी, इसड़ी वेला पड़ै तिण वेला थे पिण मां सु उपगार करज्यो। औ वचन याद राखज्यो। थे परा उठो। वहल जोतरो। थे नीकळो। रावजी सूता छै। दोलो गहलोत आयां थां उपरै तरवारि वाजसी।' तरै देपाळ वहल जोति नै राती-राति नीकळ्यो। ....राठौड़ वीरमदेजी रो सगळो साथ काम आयो। जोयां रो साथ साढी तीन हजार लोक काम आयो। देपाळ जोयां सुं मांगळीयाणीजी उपगार कीयो थो, तिण सुं गांव वसी लूटी गई तरै मांगळीयाणीजी नै सेझवाळै वैसाण मे आदमी ४ साथ दे नै मारवाड़ि नै पहुंचता कीया [4]

२. एक नवाब तीस-हजारी। उण रै महाराज सूं वडो इखळास। महाराज डेरै जावता

---

1. बात राव चूंडा री (वीरवांण परिशिष्ट)
2. बात ठकुरै साह री, बात हंसराज बछराज री आदि द्रष्टव्य है 3. रा. प्रे. फै., पृष्ठ ५०
4. वीरमदे सलखावत री बात (वीरवाण परिशिष्ठ)

जरणा आप आंग्हे आय हाथ झाल ढोलिये बैठावतो.........और नवाब जद महा-
राज रै डेरै में आवै थो तो महाराज भी यूं ही जे करै था। रागरंग,हुवै था। एक बार
दोनूं सरदार बैठा था जरणां नवाब कही, 'भाईजी, जो तुम्हारे में कुछ से कुछ होवै
तो मैं क्या करूं और जे मेरा कुछ का कुछ होवै तो आप क्या करोगे ?.........जद
महाराज कही, वरणसी जिरण दिन दीसी जासी। अबार तो कोई सुगहाली री बातां
होवरण देवो। नवाब साहिब महाराजा नूं कही, 'भाई मैं तो कुछ वद खबर सुरणूंगा
तब फकीर बरण चलता रहूंगा।' तो महाराज कही, भाई, म्हारै सूं फकीरी नहीं
बरण आवै। मैं तो जे कुछ वद खबर सुरणूंगा, उस दिन कोई गनीम होसी तो
उरण सूं कजियो कर काम आऊंना। जे गनीम नहीं होसी तो लस्कर में ही हर
किसी सूं कजियो कर'र काम आऊंना। परण या जिन्दगी नहीं रासूंगा।'.........
एकरण हलवाई री दुकान मांही पदमसिहजी री छत्री जड़ी थी सो निराठ दुरस्त थी।
वरण री दुकान आय छत्री नूं देख, फूलां री मूठी च्यार-पांच चढाय, सिर हिलाय, आसू
नाग पछै जावतो। सो बरस तीन जीवियो, जितरै आ दसा रही। इसी साची आस-
नाही थी, सो सांची निवाही।[1]

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों में से प्रथम में राठौड़ वीरमदे की पत्नी देपाळदे जोईया (मुसलमान) की प्राणरक्षा करती है और बदले में वह उसके साथ उपकार करता है। द्वितीय उद्धरण में एक नवाब अपने वचन का निर्वाह करते हुए महाराज पद्मसिंह की मृत्यु के बाद फकीरी ले लेता है। ये दोनों उद्धरण प्रत्युपकार तथा मित्रभाव के प्रकाशन हैं। जोईया राजपूतों मे मुसलमान बनने के बाद भी उनके नाम (धीरदे, दला आदि) भारतीय परम्परा के अनुसार ही रहे हैं।

इतना ही नही, हिन्दू तथा मुसलमानो में पारस्परिक विवाह-सम्बन्ध के भी बातों में अनेक उदाहरण है —

१ तरै पिउसधी कह्यो, तै मोनै छळी। पिण हूं तुरकरणी छूं नै आंटा भील री मांग छूं।
इरण री जाब कासूं छै ? तरे भीवै कह्यो, 'मैं सरब कबूल्यो। तरै पिउसंधी पिण
भीवाजी नै आरै कीधो। तरै घोड़े चढि घोड़िया टोळ नै साथै हुई। तठै चाकर एक
भींवै माता कनै मेल्यो नै कहायो, 'गोधूळक्या रो साहौ छै। बींदरणी ले आयो छुं।
बरी चूडा री मेंहरणा री तयारी कीज्यौ। चंवरी मंडाज्यो।' आ बात माता सांभळ नै
राजी हुई। घर मांहै सारौ सरजांम थो। तरै बाग मांहै ढोल नगारा बाजा ल्याय
चंवरी बांधी। जिसै भींवै गोठ जीम नै असवार होय पिउसंधी नै राजलोक में मेली।
आप परकास्यो। तरै स्त्री रो रूप बणायो, मेंहदी दीधी, पीठी कीधी, खेहटियो बिना-
यक थो, धाण्गोधूळक्यां रा फेरा लीया, सेहरा बधावा गया।[2]

---

[1] रा. वा. सं. पृष्ठ १६०-१६१, १६३. २. जखड़ा मुखड़ा री वात (रा. वा. मू. पा)

२. तठै मुलतांण में पातसाह पातसाही करै । तेरे एक हुरंम, तिका हिंदवाणी, नांम गंगा । तैसूं पातसाह री गंगा सूं वडो हेत । पातसाह ईयें सूं सुख करै ।.........तद पातसाह पाघ री पलो गळै मांहे घात नें देपाळ रै पगै आय पड़ीयो, कहो, 'हमें बंचा । मोनुं मार मती ।' तद देपाळ कही, 'छोडा नहीं ।' तद पातसाह कह्यो, 'कहीं छोडै ?' तद देपाळ कही, 'थारी बेटी परणावै तौ छोडां ।' तद पातसाह कह्यो, 'मैं लडकी दीवी, तुं छोड़ ।' तद देपाळ फोज न्हड़नी हूंती, तैंनुं मनह करी । तद पातसाह देपाळ नुं घोड़ो सिरपाव नाळेर दे नें कह्यो, 'फलाणे दिन रो साहो छे । थैं एकला आजो ।' ....तठै देपाळ तौ रजपूता समेत कांम आया । तठै पातसाह फोजा ले नें मुलतांण गयो । अर पातसाह री बेटी सती हुई ।[1]

उपर्युक्त उद्धरण में हिन्दू तथा मुसलमानो में पारस्परिक विवाह-सम्बन्धी चर्चा है । इन मे हिन्दू लोग मुसलमानों को बेटी देते है और लेते भी हैं । साथ ही विवाह संस्कार हिन्दू विधि से सम्पन्न किया जाता है ।

कहीं कहीं तो मुसलमान पात्रो को देवदर्शन एवं पूजन तक करते हुए भी देखा जाता है —

१. ताहरां साड साहिजादे रै मुजरै आयो छै । तिको साहिजादे नूं हुजूर आय कह्यो, 'साहिब, अठै सोमईयो महादेव वडो छै । हालो, तो देखा ।' ताहरां प्रभात सुई साहिजादो नें साड सोमईयै रो दरसण करण हालीया ।[2]

२. अहमदाबाद रो पातसाह महमद बेगड़ो । तिण री बेटी गीदोली नाम । तिका हिंदू राह मांहे चालै । गणगोरचां दिनां स गोर मांडीजै गीत गाईजै ।[3]

राजस्थानी वातों में 'जलाल बूबना री बात', 'साहिजादा कुतुबदीन की वात', 'मोरडी मतवाली री वात', 'ससि पुन्ना री वात', और 'लैला मंजनू की बात' आदि मुसलमानी जीवन की बातें हैं । इनका चित्रण पूर्ण सहानुभूति के साथ हुआ है । यह एक ध्यान रखने योग्य विषय है कि राजस्थान में मुसलमानी-कथानकों की ओर भी अभिरुचि नहीं दिखलाईगई है । यह सरस सोमनस्य की सूचक है ।

कुछ विशेष उपलक्षण

राजस्थानी वातो में चित्रित जनजीवन में प्रवास एवं प्रव्रजन की विशेष मात्रा दृष्टिगोचर होती है । इसका एक कारण 'उळग' (या ओळग=परदेश में जाकर सेवा करना) है —

तिण सूं श्रीमाजी साहिब, हुकम करो तो पातिसाहां री उळग करूं ।.........

---

१. देपाल् धंघ री वाते (हस्तप्रति अ. स पु. बी.),

२. वात राव किसन कानहड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. भो.) ३. रा. वा. मू. पा. पृष्ठ ६०

इतरो गुण या कनैं वळै भीवं घणा हठ सूं हुकम करायो। तरै वाहिर आय रजपूतां सूं मसलत कीधी। चाकरी रो वेहराव, डेरा कनात सामान खरची लीधी। असवार सो तीन ३०० सूं चढियो।[1]

प्रवास का एक अन्य कारण दूभिक्ष के समय 'उचाळो' करना भी है। इस मे पशुधन सहित दूर देश में जाकर वहाँ ठहराव किया जाता है —

आ हकीकत जांण घास पांणी री सुणि नै पिगळ राजा उछाळा री तयारी कीवी। ....अवै राजा पिगळ सगळो सराजाम राजलोक, हाथी, घोड़ा, ऊठ, गाय, भैंस जाबक ले'र उछाळो कियो छै।[2]

प्रव्रजन का एक कारण राजकीय-विरोध में की गई 'छौड' भी है। इस क्रिया में एक आश्रयस्थान को छोड कर अन्यत्र जाकर निवास किया जाता है —

ताहरां सीहड़ री बायर रायसी री बायर नु तेड़ि नै वात कही, 'जु बहिन, जाइ नै रायसीजी नूं कहि, 'छोडो। रांणो थासुं भूंडो छै। जे धरती छाडि जास्यो तो ऊबरिस्यो, नहीत मारीजिस्यो। ताहरां ईयै रायसी नुं कह्यो' 'छाडो, मोनूं वहिन कह्यो छै, जे सुवारै अठै रह्या तो मारीजिसौ। गाडा जोतरावो, हालो।' समी सांझ रो गाडे भार घालि वहिलां सेजवाळा जोतरि नै सोवै पड़्यां वहीर हूवो।[3]

बातों में 'गाडों' (बड़ी गाड़ियों) में रहने की चर्चा भी अनेकशः देखी जाती है—

१. ताहरां भरमल रो गाडै वास छै, ओथ जाय नै नीसरियो। गाडै री ढाळ हेठै भरमल सूता छै।[4]
२. छाहड़ गाडाळो रजपूत हुतो। गाया भैंस्यां घण हुतो। ताहरा दीठो, कथै के घणै घासै जाईजै।[5]
३. एक रजपूत गाडाळो रो धणी। सु रजपूत मरण लागो, ताहरा बेटै नुं सीख दीधी।[6]
४. मठै पोमो बुध भाटी राज करै छे। अठै इणां रो कोट थो, किरडेवाहण बुरू विचै इयो राज हंतो। अठै अजैसी उचाळा रो गाडा आंण छोडायां। इणां कनै मालवित घणां छै।[7]

उपर्युक्त उद्धरणों में गाडों में निवास करने का वर्णन है।

विविध उपकरण आदि

सामान्य जीवन में उपकरण आदि का भी अपना महत्व होता है। उपकरण कई

---

१. रा. वा. सं.. पा., पृष्ठ १२४-१२५ २. रा. वा, सं.. पृष्ठ ३४
३. वात कैसे उपाधीयै री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बो.) ४. वात कंवरसी सांखलै नै भरमल री (रा. भा.)
५. वात सांखै फूलाणी री (अप्रकाशित) ६. छोटी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बो.)
७. वात थां रामदेवजी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बो.)

प्रकार के होते हैं और उनकी संख्या भी बहुत बड़ी हो सकती है। यहाँ राजस्थानी बातों में वर्णित कुछ विशेष प्रकार की वस्तुओं की चर्चा की जाती है, जिस से कि उनकी सामान्य जानकारी सामने आ सके।

१. भोजन

बातों में वर्णित कुछ विशेष खाद्य पदार्थों के नाम इस प्रकार हैं —

१. तरै लापसी, बाकुळा, तिलट, दाळिया, सांकुळियां कराई।

२. जद जीमण नै पंचधारी लापसी मोकळी मंगळीक कीधी घणा दाळ-भात बणाया। घणा वेसवारां रांधियां सालणा बणाया।

३. अर चोरां चूरमो खाधो।

४. अर माहे एक लाडू मगद रो तै मांहे एक रतन मेले।

५. पण लापसी री घाट हुई नहीं।

६. जद खितरी नै कुंवरपाळ कागद लिखे दियो थो, सो रोटा दाळ सो कागद काढ नै कुंवरपाळ रै हाथै दीयो।

७. साह आमियो, देखे तो सीरौ तयार हुवो छै, आदमी कन्है कोई नहीं।

८. राज, घणा बाकर मारीजे, घणा घूघर हुवे।

९. श्रीमांण प्यार सूं बोल्यो, आज री खीर भली स्वाद हुई छै।

१०. रजपूतां री राब पी नै कांधो नाहर हुवै तिसड़ो हुय रह्यो।

११. इतरा मांहि चूरमो कटोरा मांहि घातीयो छै।

१२. झाली, चारण नै बाटी करै आवज्यो।

१३. जाहुरी भगति हुई, सु चावळां रै ओसांवण सु घोड़ा ऊंठ पाया।

२. वस्त्र

वस्त्रों का रूप समयानुसार परिवर्तित होता रहता है। यहाँ बातों में वर्णित कुछ विशेष प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख किया जाता है —

१. तिसी हौज बिछायत ऊपरां गाव-तकिया, बगल-तकिया, गींदवा, बादेला, पास्वा, मसंद ऊपरै पड़िया छै।

२. सावटू सोरख पथरणा बिछाया छै। गादी, तकियां, गीलमां सू बिछायत कीधी छै।

३. तद नवाब हुकम दियो—'जावो, तोसाखाने से एक बाफता लावो। सो मंगाय चादर उठै ही ज बैठां सिवाई।

४. सिर ऊपर सूं पाघ उतार मेल्ह दीनी। कन्है दुपट्टो थो तींनूं फाड़ गळे में पाळ फकीरी लीवी।

५. ताहरां ओढण रो पीताम्बर दीन्हो।

६. हथीयार खोलि, सिलह उतारि, वगळी उतारि आगै मेल्ही।

७. पछेवडै सूं कडि काठी लपेटी छै।

८. सो जलाल रै जामा री चाळ ऊपर लागी।

९. डूंगरसीजी ८० वरस रा हुवा, संचण रो नाड़ो ही चाकर बांधे।

१०. आप छिरमा रो मोलावटो मारियो छै।

११. नेत्र ले लोवड़ी सूं ढकि नैं दरवार आई।

१२. सखियां रै ओढणै भीणी जैसलमेर री लोवड़ियां, चूनड़ियां केसरिया चोळ रै रंग फब रही छै।

१३. ताहरां सोढी उठी छै। सु कांचळी उतारी हुती, माथै हुती।

१४. थे अळगेरा ऊभा रहो। हूं कपड़ो-लूगड़ो संवाहुं।

१५. घणा गांगरा माहे घूमती थकी भीणां सालू ओढीया छै। सो सारो ही डील झलक रह्यो छै।

३. अलंकार

अलंकार भी समय के अनुसार बदलते रहते हैं। यहां बातों में वर्णित कुछ गहनों का उल्लेख किया जाता है —

१. दोनां भायां नैं सोनारा कड़ा, किलंगी, सिरपाव, सोनै री साकत, सोने रा हथियार और ही द्रव घणो ही दीन्हों छै।

२. राजा मुहर्त नैं घोड़ो, सिरपाव, दुगदुगी बगसी।

३. सिरपेच सुजांण नायक नैं दियो।

४. मुंदड़ी हाथ मैं थी; सु वैद नैं दीवी।

५. परधान ठाकुर री मुरकीयां मांग कांनै घाती।

६. आइ नैं दासी नैं हथसांकळो दियो।

७. अर कुंवर नैं पण कड़ा, मोती-सांकली, दुगदुगी, कंठी कराय दीनी।

८. केर हार, बाजूबंध, सीसफूल, कांकण, गजरा इतरा गहणा सारा ही गूंथिया।

९. रीझ कीवी तिका किसी — प्रथम सीसफूल, दूजो कांकण, तीजो हार, चोथो नेहड़।

१०. घणा पायलां, झांझरां, बीछियां री रमझोळ पड़ रही छै।

४. वाद्य यन्त्र

आगे बातों में वर्णित कुछ वाद्य यन्त्रों का उल्लेख किया जाता है —

१. घड़ी दोय दिन चढता तौ फतै रा सादियाना बजाय दीन्हा ।

२. परभात पोह पीळी रौ नकारौ हुवौ ।

३. नगारा वाजै छै, नोबतां रा टिकोरा उठरया छै।

४. महाराज, जोया रै ढोल ग्रांवा रौ छै।

५. तरै बरधुदार गढ उपरा करनाळ बजाई।

६. इण भांत सु मालण तंबुरो ले नै गावण नै बैठी ।

७. ताहरां बीजाणंद त्रिडोरियो यंत्र चाढि भर अलापचारी कीवी।

८. बीण सरू कर मुजरा नै चालिया ।

९. तद इहां गावतै रैबाब री तार तोड़ नाखी ।

१० नगारा ढोल सहनाई वाजै छै।

११. तुररी सहनाई सुणी ।

५. हथियार

बातों में युद्ध का वर्णन विशेष रूप से हुआ है। अतः उन में अनेक प्रकार के हथियारों की चर्चा है। यहाँ कुछ हथियारों का उल्लेख किया जाता है —

१. कदैक बारै चढै, तद ५०० घोडची सुतरनाळ रामचंगी लियां चढै ।

२. तरै राजजी रीस कीधी नै कह्यौ—असवार २५ सिलह बगतरिया होय बंदूकां तीर बांधि करी जावौ, लाभै जठै लाकड़ी दे नै आवज्यौ ।

३. जरै वीरमदेजी तिण मोरचै बाघा वानर नै राखियो, सेलां री गंज करायी, कटारियां रा पूंज दिराया । उण होज मोरचै पखरैत सिपाई हाकौ करि आवै, त्यां नूं बाघौ तरवार छुटी वाहै ।

४. उठै सिकार रमतां लालै सुवर नूं बरछी वाही ।

५. सिंह आय हाथळ री ढाल ऊपर दीवी । ढाल रा फूल ज्याहं सोने रा था सो उड गया ।

६. मापरा जतनां नु मांणस पचास जवांन गुरज झलाय नै पाळा हाथी री ज्यारू तरफ राखियां ।

७. राजा हाथी री अंबारी बैठो फोज रै वांसै भालोड़ा वाहै छै ।

८. ताहरां मूछवं रै कड़ीयो चुगदो हुंतो, तैरो घाव कीयो।
९. जिसो दीठो उठावं, तिसई काढि खड्ग नें चोर रै दीधो।
१०. बळे सिळी काढि खंजर सायो।
११. जद तुको ले नें चिलमिलखां रा-घोड़ा रा कपाळ उपर दीधो।
१२. राघोदे माथा बघतो थको सेल री राजा रै घमोड़ो।
१३. हुं जितरै मोकलराणो मोटो हुइ घोड़ै चढं, सावळ भालै इतरै परधान रो काम देस रो चलाज्यूं।
१४. वेढ मांडी, आराबा छूटा।
१५. हाथ में सांग मण एक री लीयां थको प्राण पोहतो।
१६. तिण रै सवा सवा पाव रा भाला, तीन तीन आगळ चोड़ा, विलांत विलांत भर लांबा लिया इसा इसा जवान हाथियां चढ सांम्हा हुवा।
१७. थें पाधरा तोपखाने ऊपर पड़ज्यो।

६. वाहन

वातों में वर्णित कुछ विशिष्ट वाहन इस प्रकार हैं —

१. भरमल रो गाडै वास छं।
२. पछै एक हळवो बैल करवाई।
३. पचास पालखी खासा चकडोल दिया।
४. नील करि सुखपाल रथ १२ सेजवाल १२ इतरा डायजे दीन्हा।
५. तिका महाडोल मांही वैठांण सखी सहेलियां दासियां रै घणा जलूस सूं विदा किया।

ऊपर अनेक प्रकार के उपकरणों का उल्लेख किया गया है। इन की संख्या काफी बड़ी हो सकती है।

देवी-देवता

जन साधारण में अनेक देवी देवताओं के प्रति बड़ी श्रद्धा की भावना रही है। बातों में अनेकशः वे प्रकट होते हैं और अपनी अलौकिक शक्ति एवं प्रभाव का प्रयोग करते

हैं। साथ ही वे लौकिक जीवन में अभिरुचि भी लेते हैं। आगे इस विषय पर सोदाहरण प्रकाश डाला जाता है।

१. शिव-पार्वती

राजस्थानी बातों में शिव-पार्वती की जोड़ी अनेक बार प्रकट होती है। ये कृपा-पूर्वक पात्रों की सहायता करते हैं। इस प्रकार बातों में इस देव-दम्पति का प्रकट होना एक 'अभिप्राय' का रूप धारण किए हुए हैं।

जब मरवण (नायिका) को 'पीवणा सांप' समाप्त कर देता है तो यह जोड़ी प्रकट होकर संकट दूर करती है —

तद पारबतीजी बोलिया, 'महाराज, इसी पीड़ लुगायां री सारां ही नै हुवै छै। मारवणि रै हैत ढोलो लारे बळै छै। इण री दया देख मारवणि नै जिवाड़ो।' सदाशिवजी ढोला नै कहण लागा, 'लुगाई री लारां मती बळो।' तद ढोलोजी बोलिया —

सिव हूंती ढोलो कहै, कूड़ी गल्ल न कथ्थ।
हूणा जीणा एकठा, मरणा मारू सथ्थ॥

महादेवजी बिचारियो, 'ढोलो खरै मने बैठा छै।' ताहरां सिव अम्रत छांटियो, मारवणि जीवती हुई।[१]

२. शक्ति

राजस्थान शक्ति का उपासक है। अतः यहाँ की बातों में दुर्गा का दर्शन अधिक होना स्वाभाविक है —

राजां सुं कह्यो, 'चहुबचो पांणी सुं भराईजै, ज्यूं तमासो दिखालूं।' राजा चहुबचो पांणी सुं भरायो छै। राजा आर बैठो छै। इतरै मैं समुद सोनार मछली रूपास्यां पांणी मांहे नांखीयां। मछलियां तिरणै लाग्यां। इतरै अंगारीयै माताजी समरी। माताजी अंगारीयै नुं हंक दीयो, कह्यो, 'ओ हंक मछ्‌या चुग जासी।'[२]

बातों में अनेक बार शक्ति को नारी रूप में अवतरित भी प्रकट किया गया है। चारणों में तो शक्ति के अनेक अवतार हुए हैं, जिन में करणीजी आदि प्रसिद्ध ही हैं। उदाहरण देखिए —

वीकै डाभी रै बेटी, नाम जीजी। सु शक्ति रूप अवतारी। ज्युं वरस १०-१२ री हुई, ताहरां भणी। पुस्तक कीया। सु जीजी सोभित आई।[३]

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ ८५ २. चच राठोड़ री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. वात जीजो डाभी री (रा. मु. प.)

यहाँ जीजी डाभी को शक्ति का अवतार बतलाया गया है।

३. योगिनी

इसी प्रकार बातों में योगिनी-दर्शन भी होता है —

जगदेव पगे लागि नै कह्यो, 'आप खंभायची राग मांहे सोळो गावो छो. बधावो छो। सो थे कुण छो नै किसी बधाई खुस्याली मांहै गावो छो ?' जरै कह्यो, 'म्हे दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह नै लेण नै आई छां, तिण सूं बधावा गीत गावा छां।'[1]

इस उद्धरण में दिल्ली की योगनियां प्रकट हुई हैं।

४. लक्ष्मी

बातों में कई जगह लक्ष्मी के भी दर्शन होते हैं —

तद वोहरै विचारी, 'जु रजपूतांणो तौ वैरसी रै दोय छै, सु तो पड़दो मांहे बैठो छै अर आ तीजी कोण छै ?' आ विचार नै बोहरै पूछ्यो, कही, 'हे तूं कोण छै ?' ताहरा बोली, कही, 'हुं लक्ष्मीजी छुं।' तद बोहरै कही, 'म्हारै लाख उपर दीयो बळै छै, तै रे तो तूं न रहै अर रजपूत रै टकै री जाहिगा नही, तै रै क्यों ?' ताहरां इयै कही, 'हुं थारी मा छुं अर रजपूत री स्त्री छुं। जु नै आ माया रो भोग करै छै, विलचै छै। अर तूं संचै छै, तै सुं थारी मा छुं।'[2]

इस उद्धरण में लक्ष्मी ने एक महाजन को संचय और भोग का अन्तर प्रकट किया है।

५. अप्सरा

राजस्थानी बातों में अप्सराओं का दर्शन भी अनेक स्थानों पर होता है। इस विषय में कुछ अधिक उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है क्योंकि अप्सराएं कई स्थानों में विशेष कार्य सम्पादित करती हैं।

१. ताहरां जसराज पूछे छै, अपछरा नुं, 'एक मनुष्यणी छै, तिका कवण छै ?' ताहरां अपछरा कहै छै, 'आ सूमरै री बहिन नेहड़कुमारि छै।' तिका नेहड़ अपछरा सुं रूप अधिक। सु अपछरा ऊवे रै रूपरयां आसिक, सु साथे लीयां फिरै। उवां अपछरां नै नेहड़ बहुत प्रीति। सात अपछरायां, आठमी नेहड़ एकठ्या रहै।[3]

२. परधानै, सहेल्यां, वडारण्यां फेरया विण राणी मनै नहीं। राजा रात री हेकलो सोई

१. रा. बा मु. सा., पृष्ठ १२

२. बात रजपूत अर बोहरै री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

३. बात सार्थ फूलाणी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

रहे । ग्रर पटवी री तो ग्रा तरे जु दिन नुं घरे रहै ग्रर रात री इन्द्रलोक में जावै । सो ग्रा तो ग्रपछरा हुंती, सो ईन्द्र रै सराप हुती पटवै रे मृतलोक में ग्राई । पिण या तो राति पड़ी, सुं पीपळ बैस नै ईन्द्रलोक में जावै।[1]

३ छाहड़ पंवार छहोटण राज करै । तेनूं खबर हुई, जु छहोटण सिव री वाड़ी पासे डूंगरी एक छै । तठै जाळ एक छै. सु तठै ग्रपछरा ऊतरै छै सुकळ पक्ष री चवदिम री रात । ग्राखाड़ो मंडै छै । ताहरा छाहड़ पवार सारां लोकां सूं वाद कर जाळ पासे गयो ।[2]

४. एकै दिन एक कुंवर पाछो हुवो, सो ग्रठे ग्रा तो ग्रपछरा ग्रठे रोवण लागी, सोग कीयो । ईग्रां नुं कहण लागी, 'म्हारो मांटी मूवो । का तो मोनुं पिण ग्रो मांटी जीवाई यो, का तो थांहरा पिण मांटी मारो । का तो हूं थांनुं सराप देईस । जे मांटी हुसी तो ग्रापा सातां ही रै हुसी, का तो नही । पछै वीज्यां ही छए जिणां छुरीयां ले नै मांटीया नुं मार नांखीया । माथा सातां ई रा वाढ़ नै एकै खोळ में नांखीया ग्रर पिंड वावड़ी मांहै नाखीया ।[3]

उपर्युक्त उद्धरणों में कई चीजें प्रकट होती हैं । ग्रप्सराएँ मानव के रूप पर मुग्ध होकर उसकी संगति करती हैं । इन्द्र की ग्रप्सरा शापवश मृत्युलोक में जन्म ग्रहण करती है । ग्रप्सरा तथा मनुष्य का विवाह होता है । कहीं कहीं ग्रप्सरा द्वारा क्रूर कर्म भी करवा डाला गया है । वहाँ वह राक्षसी के समान प्रतीत होती है, जैसा कि चतुर्थ उदाहरण से प्रकट है ।

६. गन्धर्व

ग्रप्सरा के साथ ही गंधर्व भी प्रकट है —

जदी ईंदरजी री ग्राग्या थी लीलावती सोळै ही सींणगार कर ने सारी ही सहेल्यां नें साथे ले ग्रर निरत री साज-वाज साथे ले ग्रर गोरखनाथजी री मुजरो करवा चाली । तद लालखांन गंधरव पण ईणी ने वणी-वणाई देख ग्रर यो पंण ग्राप री सारो साज ले नें लीलावती रै साथे हुवो । जदी ए चाल्या सो गोरखनाथजी रै हजूर ग्राया । जठै लालखांन तो श्री गोरखनाथजी री नजर टाळ ग्रर पाछें ग्राय उभो है ग्रर लीलावती नाचै है ।[4]

उपर्युक्त प्रसंग में मुसलमानी प्रभाव से गंधर्व का नाम लालखांन प्रकट हुग्रा है ।

---

१. वीर विक्रमादित्य री वात (हस्तप्रति ग्र. जै. ग्रं. बी.)
२. वात पुंवार छाहड़ री (हस्तप्रति ग्र. सं. पु बी.)
३. वात मालदे पुंवार री (हस्तप्रति ग्र. जै ग्रं. बी.)
४. रा. वा., भाग ४, पृष्ठ ५२

७. नाग

राजस्थानी बातों में देवयोनियों मे नाग भी प्रकट है —

ताहरां ईयै बांभणी नमस्कार करि हाथ जोड़ि साप सुं प्रणपति कीधी, कह्यो, 'हो मोटादेव वासिगराजा, मैं जदि तो सांम्हो जोयो हुतो सो मोनुं थारी नजरि सुं गरभ रह्यो। मोनुं मावीतां घर महां काढी। मैं पुत्र जायो। हिवै खावण नुं नहीं, पैहरण नुं नहीं। हुं कासुं करुं ?' ताहरां सरप बोलीयो, 'तुं चिंता म करि। थारो बेटो राजा हुसी, सारी धरती रो धणी हुसी। अर तुं धरती देखाळुं छुं, तेथ खुणं। जिकुं थारैं चाहीजै, सु नीसरिसी।' सांप बांभणी नुं दिलासा कीधी। हिवैं बांभणी डेरै आई।[1]

इस उदधरण में नाग देवता ने ब्राह्मणी को धन दिया है। राजस्थानी जनता में गोगाजी को नागों के अधिनायक देवता के रूप में मान्यता प्राप्त है।

८. यक्ष

राजस्थानी बातों में व्याप्त यक्ष-तत्व भी विचारणीय है। भारतीय कथा-साहित्य में यक्षों के बहुत अधिक प्रसंग हैं। यह तत्व जनजीवन में भी अद्यावधि समाया हुआ है।

यक्ष क्रूर भी हैं और सौम्य भी। वह आरक्ष-देवता है। उसका निवासस्थान प्रधानतया वृक्ष माना गया है। यक्ष नाम से अनेक बातों में यह देवता उपस्थित है —

इतरा में अलकापुरी सूं विमांण बैठ यक्ष आइया। ऐ पण साम्ही देह घर जगरां सूं निसरिया, सो बिमांण मांय जाय बैठिया। सगळो साथ देखे छै। अचभो-इचरज मानै छै। सब बड़ाई करै छै।[2]

समयानुसार यक्ष का रूप-परिवर्तन होता रहा है। यक्ष का एक नाम 'वीर' भी है। विक्रमादित्य के वीर प्रसिद्ध हैं —

तरां राजा नुं वीरां रो वर हुंतो, तिके वीरां रा नाम आगियो वेताल १, खाफरो चोर २, कवड़ियो जुवारी ३, माणकदे मदवाण ४। तिकां नुं राजा नुं वर हैंतो।[3]

इस बात में चारों ही पात्रों का कार्य 'वीरों' के योग्य ही है। कहीं कहीं मुसलमानी प्रभाव से यह 'वीर' दूसरे नाम से भी प्रकट हुआ है। वहाँ यह नाम 'पीर' है। उदाहरण देखिए —

ताहरां कैर मांहे देवता कोई पीर हुतो, तिको आय नैं जोयै दावड़ी कह्यो 'तो हूं वरणीजीस' तीयै रो मांचो उठायो, उठाय नैं घर रै पछवाड़े ले गयो। ले जाय ने

---

१. बात विक्रमादित्य सालिवाहन री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)   २. रा. बा. सं., पृष्ठ १४६

३. बात विक्रमादित्य री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

छोकरी नुं जवाई, कह्यो 'मोनु कह्यो हुतो 'हुं परणीजोस' हुं आयो छु । तुं म्हारी स्त्री छै ।[1]

यहाँ यक्ष के समान ही पीर को भी भोग-लालसा प्रकट हुई है ।

'पीर' के समान ही जिन्नाद भी बातों में प्रकट होकर अलौकिक कार्य करते हैं —

तब समसेर ऊठै सूं कुच कीयो । जंदो आप री माया समेट लीवी । आंकास मारगे असुर मुलक दरीयाव सुं पार हुवा । कताईक महीनां रै आंतरै आप रै मुलक में आया तब समसेर जंदो नै कह्यो, अब फोज वणाहो । तब जंदो फोज बणाही ।[2]

इस प्रसग मे भी 'पीर' के समान ही जिन्नाद बात-नायक की सहायता करते हैं ।

९. भैरव

कई बातों मे 'भैरव' देवता भी प्राचीन यक्ष के उपलक्षणों के साथ ही प्रकट होता है —

सु ईठां सहर रा बीच बेट, जे उपर एक भैंरवजी रो स्थान । चोर री जिहाज आवै तो घणी बिना पाघी टळै नही, उठै ही ज अटक रहे । तद ईहां री जिहाज ठैर जाय । ताहरां पूजा-अरचा कीवी पण जिहाज चलै नहीं ।[3]

यहाँ एक टापू मे भैरव का 'स्थान' है, जिसको लोग पूजा करते हैं ।

१०. खेतरपाळ

यक्ष को सी स्थिति ही राजस्थानी बातों में 'खेतरपाळ' (क्षेत्रपाल) देवता को भी है —

ताहरां राजा बटाऊ रो रूप करि नें खेतरपाळ रै थांन बैठो । उजेणी रो आदि-ष्टक खेतपाळ थो, तिण रो देहुरो छै । देहुरा मांहै आय नैं बैस रह्यो । तरै खेतपाळजी कठै ही रमण गया था, सु हमें रम खेल नें खेतपाळजी आया छै । तरै कहियो, 'तूं कुण छै ?' ताहरां राजा कहो, 'बटाऊ छूं । नग्र वारो विस्तार छै । सांझ समै कासूं पैसूं ? जाणियो, थारै तकीयै रहुं । सुहारे नगर मांहै जाईस ।[4]

यहाँ खेतपाळ' उज्जैन का आरक्ष-देवता है । तकिये शब्द का प्रयोग मुसलमानी प्रभाव प्रकट करता है । इसी उद्धरण में इसके लिए 'थांन' शब्द प्रयोग हुआ है ।

---

१. महाण नाम रै पीर री वात, मरुवाणी ६/३-४
२. बयात समसेर की बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. हसराज बछराज री वात (हस्तप्रति अ. जं. ग्रं. बी.)
४. पंचदंड री वात (हस्तप्रति खजाची संग्रह. बीकानेर)

१६. भोमिया

राजस्थानी बातों में यक्ष के समान ही भोमिया नामक लोकदेवता की चर्चा है —

सु ईयै तळाव मांहै पाणी टिकै नहीं । तळाव मांहै एक भोमियो रहै । तै री राजा नैं बडो चिंता । ताहरां राजा वडा पंडित हुंता, जोतिषी हुंता सु राजा बोलाया । राजा जोतषीयां नै कही, 'जु देखो, ईयै तळाव मांहै पांणी टिकै नहीं, सु कांसूं विचार छै ?' ताहरां ब्राह्मण कही, 'जु महाराज, तळाव मांहै एक भोमियो रहवै छै । सो महाराज, इयै तळाव नूं कोई एक राज री बेटो भख दीजै तो ईयै तळाव मांहै पांणी टिकै ।'[१]

इस उद्धरण का भोमिया देवता सरोवर में रहता है, वह भेंट पाकर ही प्रसन्न हो सकता है।

लोक-विश्वास

जन-साधारण में बहुसंख्यक विश्वास बद्धमूल देखे जाते हैं। उनके पीछे कोई तर्क नहीं होता परन्तु सुदृढ़ आग्रह रहता है। राजस्थानी जनता में अब भी अनेक विश्वास जमे हुए हैं। यह विषय बड़ा व्यापक है। बातों में भी स्थान पर इस विषय का प्रकाशन हुआ है।

१. भूत-प्रेत

लोककथाओं में भूत-प्रेत आदि अनेकशः चर्चा आती है। राजस्थानी बातों में भी यत्र-तत्र इन से सम्बन्धित प्रसंग देखे जाते हैं। भूतों पर एक सीमा तक मानवीय जीवन का आरोप कर दिया गया है। उनमें भी इसी प्रकार आशा-अभिलाषा रहती है। इसके साथ ही उन में अतिमानव शक्ति मानी जाती है, जिससे वे विशेष काम आसानी से कर लेते हैं। बातों में भूतों का समाज प्रकट है। उदाहरण देखिए —

१. इतरै भींटोलीया भूत बीजा ही आइ बैठा। सिखरोजी बोलीया, जु थांनु कह्यो,

---

१. बात बघलै हंसणी री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

'जु लकड़ी ल्यावो।' लकड़ी आणण लागा। मूळे री बोटी आपि ले ने उणां हो नं हेकेक दे छै। इसी भांति चाकरी साधी।[1]

२. नाडोळाई-गांव तठै मालदे मुहणोत, जात रो चालीसो, तिको राज करै। तठै तळाव तेरो पण नाम नाडोळाई। तै मांहे राकस एक रहै। तिकै राकस रै मुंह आगे हजार भूत रहै। तिकै तळाव रै दोळो फगी कोस तीन्ह च्यार रे फेर चोगर वसु। तठै माणस कोई जाइ सकै नहीं। इयं भांत तळाव मांहे राकस रहै।[2]

उपर्युक्त दोनों उद्धरण हिन्दू-भूतों के राजा से सम्बन्धित हैं। इसी प्रकार मुसलमान-भूतों के बादशाह का ठाठ भी द्रष्टव्य है —

ताहरा पातिसाह रूकी देस अरू थोभण री पूकार सांमळ आपरा चाकरां नूं हुकम कीयो, 'कठैई कोई भूत इण री ओरू ल्यायो हुवै, सो पैदा करो।' तद चाकरा कह्यो, 'पातिसाह सलामत, बीसलनगर वासी अबदल नामें भूत छै, तिको ल्यायो छै।' पातिसाह कह्यो, 'सताब पैदा करो। उस भूत कूं पकड़ि ल्यावो।' डंडिया दोड़ि पकड़ि ल्याया। पातिसाह कह्यो, 'इनकी जोरू पैदा करि।' भूत कहै, मैं न ल्यायो।' तद भूत नै घुरां मारियो। दयुं कहै, हुं आंण देसूं। तद भूत रै साथ डंडिया जाय नै पातिसाह री हजूर बाइर ले आया। पातिसाह वाणियै रै हाथ दीवी।[3]

इस प्रसंग में एक अबदल नामक भूत किसी थोभण नामक बनिये की स्त्री को उठा कर ले जाता है। बनिया भूतों के बादशाह के दरबार का पता लगा कर वहाँ फरियाद करता है। अबदल भूत को पकड़ कर पीटा जाता है। तब वह बनिये की स्त्री ला देता है। इस संदर्भ से भूत-समाज का स्पष्ट पता लगता है। वहाँ भी मनुष्य-समाज के समान ही पूरी व्यवस्था कल्पित कर ली गई है। आदमी मरने के बाद भी हिन्दू अथवा मुसलमान बना ही रहता है। वह जीवित लोगों का भला बुरा भी करता है।

राजस्थानी बातों में इस प्रकार के अनेक उदाहरण है, जहाँ मनुष्य अपनी शक्ति से भूत प्रेतादि को पछाड़ देते हैं। यह क्रिया पात्र की महत्ता प्रदर्शित करने के निमित्त होती है। इस सम्बन्ध में उदाहरण द्रष्टव्य है —

ताहरां प्रेत कहण लागो, 'मांडणसी, थे कहो सु सरब सांच पण युध बिना कीयां जावण देवां नहीं।' ताहरां फेर मांडणसी कहै, 'रे तैं राठोड़ां री लड़ाई दीठी छै नहीं, पालेट मारै छै।' इम कहि नै मांडणसी घोड़ै चढीयो। चढि नै कहीयो, रे असुर, मो

---

१. सिधरो बहैलवै गयो रहै (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

२. बात रादे मोहिलोत री नाडोलाई रै धणी री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.) ३. द. वि., पृष्ठ ५७

सो लड़ीस तो संवाहि बरछो।' इम कहि नै घोड़ो दावीयो, सु घोड़ो पेलै पार जाय नीसरीयो। नै घोड़ै रै टलै सो प्रेत ढहि ने पगां माहै पड़ीयो। सु घर घर धूजण लागो, 'मांडणसीजी, थां तो मोनूं मारीयो। मैं तो जांणीयो, मासु जीतै नही।' ताहरां मांवण-सीजी कहण लागो, 'असुर, म्हां रजपूतां री लड़ाई इसड़ो भात ही ज हूवै छै।'[१]

इस उद्धरण में मांडणसी ने एक प्रेत को युद्ध में पछाड़ दिया है।

२. मंत्र-तंत्र

राजस्थानी बातों में मंत्र-तंत्र अथवा जादू टोने की चर्चा भी अनेकशः आती है। यह लोक-विश्वास का प्रमुख विषय है। इस शक्ति से पात्र विशेष कार्य करने में समर्थ हो जाता है। भोज की रानी भानवती तो जादू की शक्ति के लिए प्रसिद्ध ही है।

बातों में अनेक निम्न वृत्ति के पात्र भी अलौकिक शक्ति प्राप्त किए हुए दिखलाए गए हैं। इस रूप में शिकोतरी-डायन आदि का वर्णन आता है। वे अपनी तान्त्रिक सिद्धि के प्रभाव से चाहे जैसा रूप-परिवर्तन कर सकती हैं। इनको अतिमानव शक्ति प्राप्त रहती है। अतः इनका एक भिन्न ही वर्ग है। ये साधारण मनुष्यों से ऊपर मानी जाती हैं :—

राणगदे ऊतर अळगो हुवो। सोच करण लागो, चढीजै किण ऊपरां ? तरै डोकरी कह्यो, 'बेटा रांणगदे, तैं फिटकारो क्यूं दीयो ? म्हे तो सीकोतरी छां। जरै तैं तग ने मार्‌यो, तरै हूं उठै ही ज थी। इसा घोड़ा फिटकारै गमीजै नही। तरै रांणकदे कह्यो, 'माता, थेह आज दिन ऊगतां पहली जालोर पोहुचो जोईजै।' तरै सीकोतर सांवळी हुई नै कह्यो, 'म्हारी पूठी ऊपरी चढो। तरै रांणगदे पूठि ऊपरां बैठो नै सीकोतर उडी। तिका राति घडी दोय पाछली थकां गढ मांहे मेल्यो। सीकोतर पाछी आई।[२]

तंत्र सिद्धि प्राप्त कर लेने पर भी मानवजीवन का हर्ष-विषाद लगा रहता है। उपर्युक्त प्रसग में एक शिकोतरी ने राणकदेव की सहायता की है।

एक अन्य उदाहरण डायन के विषय में देखिए —

रजपूताणी कही, 'चंद राजा री मा अर पटराणी पण डाकण छै।' तठै रजपूत कही, 'हूं मानां नही। आखियैं दिखाड़ै तो मानां।' तठै रजपूताणी कही, 'आज गिरि परबत रै राजा री बेटी रो विवाह छै। ते बीद कांणो आसी। अर तठै राजा री मां अर राणी फलांणै पीपळ चढ ने उठै जासी।'[३]

इस प्रसंग में राजा की मां और उसकी रानी दोनों ही डायन प्रकट की गई हैं।

---

१. मांडणसी कूंपावत री वात (वरदा ५/२) २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ६३-६४

३. चंद राजा री वात (शोध पत्रिका ७/२-३)

मंत्रविद्या की शक्ति के लिए जैन जती प्रसिद्ध है। जन-साधारण पर इनका बड़ा प्रभाव रहा है। वशीकरण हेतु नेत्रांजन तैयार करना, प्रतिद्वन्दी पर 'मूठ' चलाना आदि कार्यों के सम्बन्ध में इनकी अनेक कहानियां लोक प्रचलित हैं। 'राजा सिद्धराव-जैसिंघ री वात' में इस विषय का विशेष वर्णन है —

अबै जती हेमाचारण तो होम करणो मांड्यो अर जोगण्यां रो आवाहन कीयो। जठै होम करतां थका आधी रात रै समयै जोगण्यां आवी। जद जोगण्यां नैं या आग्या दीधी। सो पातिसाह गढ नीचे आय पड्यो है सो ढोल्या सुधो अठै उपाड़ नैं आंण हेमाचारण जती रै काने मेल्यो। पछै जती हेमाचारण राजा कुंवरपाळ ने जगायो।[1]

इसी बात में जती हेमाचारज (हेमचन्द्राचार्य) और शेख फरीद के मंत्रयुद्ध की चर्चा भी है —

जब कुंवरपाळ सेख फरीद नें सेहर पाटण माहे जायगा दीवी सो सेख फरीद मसीत कराय नें रयो। अबै सेख फरीद हेमाचारज जती उपरै मारवा वासतै आखा नांख्या। अर हेमाचारज पण जांण्यो सो यो मोनें मारवा नै आयो है। तद हेमाचारज पण सेख फरीद उपरै आखा नांख्या। यों करता वरस च्यार हुवा पण सेख फरीद, हेमाचारज रा आखा सों मरै नहीं।[2]

इस प्रसंग में 'आखा' (अभिमंत्रित चावल आदि) के प्रयोग का वर्णन है।

एक उदाहरण जंतर (यंत्र) विषयक भी द्रष्टव्य है —

ताहरां यंत्र लिखित अर हिरण रे सींग मैं यंत्र घालीयो। घालि नै हिरण छोडि दीयो। हिरण आपतो-आपतो नाठो। जातो जातो वरड़ आलेसर रा पहाड़ छै, तठै गयो। हिवै मृग तो नासि गयो। हिवै मेह वरसै नहीं।[3]

सिद्धि के विषय में नाथों का नाम भी प्रसिद्ध है। जनता पर इनका विशेष प्रभाव रहा है। राजस्थानी बातों में गुरु गोरखनाथ तो एक अमर व्यक्ति के रूप में अनेकशः दर्शन देते हैं। उनकी सिद्धि भी अपूर्व दिखलाई गई है। वे पुत्र को पुत्र प्रदान करते हैं, मृतक को जीवित कर सकते हैं और कृपापात्र को अनोखी वस्तुएं देते हैं —

तब श्री गोरखनाथजी री पलक खुली। आगे देखे तो राजा उभो छै। राजा ने एक पग रे ताण उभो दीठो। तब श्री गोरखनाथजी तुसटमान हुय नैं बोल्या, 'राजा, मांग। मैं तनैं तुठो। चाहीजै सोइ मांग ले।' इसो सुण नैं राजा सलाम करी ने बोल्यो, 'माहाराज, प्रसाद करीने सारी वात-दौलत छै। पिण पुतर को नही, तिण सु घणो दुख

---

१. रा. वा., भाग ४, पृष्ठ ३३-३४ २. रा. वा., भाग ४, पृष्ठ ४७

३. लाखा फुलाणी री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

छै। सो आप तुठा छो तो पुतर दिरावो।' इसो सुण ने गोरखनाथजी रै हाथ में गुलाब रा फूलां री छड़ी थी, सो राजा ने दीधी नैं कह्यो, 'जे आंबा री रूंख छै, तिण रैं एक वार छड़ी री दीजे। सो आंबा री केरी १ पड़सी। तिका थारी राणी ने खुवावजे। तिण सु थारे पुतर होसी। तिण को नाम रीसालु दीजे।' इसो कह्यो। तब राजा छड़ी ले चालीयो।[1]

सिद्ध पुरुषों के पास और भी अनेक आश्चर्यमयी वस्तुएं होने की चर्चा मिलती है। उनको सहायता से असाधारण कार्य सम्पन्न हो सकता है —

१. तद जोगी कह्यो, 'ईये कमंडळ माहि पाणी छै। थे पीवो अर घोड़ो तिसायो हुवै तो घोड़े नूं ही पावो। पछै सलखैजी आप ही पीयो अर घोड़े नूं ही पायो। पण कमंडळ खाली न हुवै।[2]

२. तद अतीत झोळी माहा एक आव काढ अर ताल्हणसी रै हाथ दीयो, कही, 'आंब थारी स्त्री नूं खुवाये, थारै पुत्र हुसी। तद ताल्हणसी री स्त्री आंबो खाय नै आंब रा पांन बाहर नाखीया।[3]

उपर्युक्त उद्धरणों में क्रमशः विशेष प्रकार के कमंडल और आम की चर्चा है।

३. शकुन

शकुन प्रमुखतया लोकविश्वास का विषय है। राजस्थानी जनता में यह विश्वास बद्धमूल है, जो यहाँ की बातों में परिलक्षित होना स्वाभाविक है। शकुनों की संख्या बहुत बड़ी है और उन में भले और बुरे अनेक प्रकार के शकुन हैं। कहा जाता है कि किसी समय यहाँ के रजवाड़ों में शकुनवेत्ता नियुक्त रहते थे और उनकी सलाह के अनुसार काम होता था। वे पशु पक्षियों की भाषा के ज्ञाता माने जाते थे, जो उनको घटना की पूर्व-सूचना दे दिया करते थे।

बातों में शकुनवेत्ता को अपने विषय की जानकारी के लिए विशेष सम्मान प्राप्त है। लोग विश्वास करते हैं कि भावी विपत्ति से बचा जा सकता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है —

राजा उघादीप मुलतांण राज करै। तिण रै सालो सवणो परधांन, राज रो बंधण। तिको कोसां १३ माहे मुलतांण रा पुरा वसै। तिका माहे सवण रैं वळ कर चीर नाहर फुरकण पावै नहीं। अठै उघादीप रो वडो कळावोल राज। तिण माहे वडो चैन छै।[4]

---

१. राजा रिसालू री वात (हस्तप्रति अ. ज. ग्रं. बी.) २. वात राज सलखै री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

३. वात साह ताल्हणसी हेमराज री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी)

४. वात सवे सवणो री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

यह प्रसंग 'सर्व सलसूणी' के सम्बन्ध मे है, जो राजस्थानी लोककथाओं में बड़ा प्रसिद्ध है।

कई शकुन अपने आप मे भले अथवा बुरे माने गए हैं। ऐसी मान्यता का सामान्य कारण उनकी सौम्यता अथवा असौम्यता है। दूसरा कारण उनकी शक्तिसम्पन्नता अथवा बलहीनता भी हो सकता है। अधिकतर शकुन यात्रा के समय देखे जाते हैं। उस समय यह ध्यान रखा जाता है कि कौन चीज दाहिनी ओर है तथा कौन बांई तरफ है। दोनों ओर के अलग अलग शकुन होते हैं। इसी प्रकार आगे और पीछे के भी अनेक शकुन माने जाते हैं। सामान्यतया जनसाधारण को इनकी जानकारी रहती है और इनके लिए किसी विशेष शकुनवेत्ता की आवश्यकता नही पड़ती। बातों में कुछ उदाहरण देखिए —

१. बीजै दिन कूच कीयो। जरां वळे सारण हूवा। तिण में फूहो डावी थकी बोली। दहियां पूछि रो दिठाळो हूवो। रूपां मालाळी हुई। नै वळै कोड कीयो। आगे नाहर उवेड़ो हूवो। जरे मन विवणो हूवो। सारां सिरदार सांवण बांद आथा चलाया। तिको कोस दस रे माथै मेलांण कीयो। तीजै दिन चढीया। तरै सांवण हूवा। सांड धडूकीयो। आगे देव सादी। तठा आगे वांहपूर रै डावो राजा साबियो। तारां जैत सांवण बांद घणा राजी थका चढिया।[1]

२. दरवाजै मांहा नीसरीयो, ताहरां मांगणहार आया। तद उहां नूं पूछीयो, कह्यो, 'कठे गया हूंता?' तद हूमां कह्यो, 'साहिब म्हे माल्हाळी जोवण गया हूंता, सु माल्हाळो सखरी हुई, दसो बांध आयां छां, मांगणी जासां।'[2]

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों में अनेक प्रकार के शकुनों की सूची देखी जा सकती है। इसमें एक चीज विशेष है। भले शकुन होने पर उनकी वंदना की जाती है। शकुन के प्रति यह पूज्य-भावना ध्यान देने योग्य है। इस प्रकार शकुन को देवरूप मिल गया है। 'सोन-चीड़ी' (शकुन चटका) को भवानी के रूप में लोकमान्यता प्राप्त है। वह दाहिनी ओर रहनी चाहिये। जब शक्ति किसी के दाहिनी ओर अर्थात् सहायक रहती है तो सफलता मिलेगी ही। शक्तिहीनों को वह नहीं मिल पाती। इसी प्रकार विविध शकुनों को अर्थाया भी जा सकता है।

४. स्वप्न विचार

शकुन से मिलता हुआ सा ही विषय स्वप्न का है। यह भी लोक-विश्वास पर ही आधारित है। स्वप्न भी भला और बुरा दोनों प्रकार का होता है। इन दोनों श्रेणियों में

---

१. रा. वा सु. भा., पृष्ठ १६३
२. बात माल्हाली री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

कई निश्चित पदार्थ हैं। शकुन के समान ही इस का भी 'फल' (अर्थात् अभिप्राय) विचार-णीय होता है। स्वप्नभविष्य का सूचक माना जाता है —

एक दिन रो समाजोग छै। रात रै विखै पोढिया छै। तरै रांणी चावड़ी सुहणो लाधो, 'जु नाहर ३ आया छै। रांणी जाणै छै मांहरो पेट फाड़, आंतरा काढ, नाहर आंतरा ले ले अर पहाड़ै गया छै। अळगा अळगा आंतरा लियां जाय छै। इसो राणी चावड़ी सुहणो लाधो। तद राणी जागी। जाग नै रावजी नूं कह्यो, 'महाराज, म्हैं इसो सुपनो पायो।' कह्यो, 'कासू दीठो ?' कह्यो, जांणू छूं, म्हारो पेट फाड़ नाहर आंतरा परवत ले ले जाय छै। इसो म्हैं सुहणो दीठो। ताहरां रावजी चावड़ी नूं ताजणा २-३ वाह्या। ताहरां चावड़ी बेठी रही, नींद न पड़ी। वेदलै थकां दिन ऊगो। ताहरां राव सीहो बोलियो, 'चावड़ी, तूं मन में अप्रीत मत जांणै। म्हैं तोनूं ताजणा इतरे वासते वाह्या छै, जु तोनूं नींद न पड़ै। नींद पड़ियां सुहणां रो फळ मिटै छै। थारै तीन पुत्र हुसी, सु सीह सारीखा हुसी। घणी धरती लेसी। वडो वधारो हुसी।' इतरी बात सुणै रांणी खुसी हुई।[1]

इस प्रसंग में स्वप्न का भावी फल पात्र को स्पष्ट हो गया है, अतः उसने अपनी पत्नी को दुबारा सोने नहीं दिया। यह लोकमान्यता है। स्वप्न मे भी आगे घटित होने वाली घटना की छाया रहती है और उस में समानता के आधार पर अनुमान काम करता है। अनेक महापुरुषों के जन्म के सम्बन्ध में इसी प्रकार के स्वप्नों की कहानी अनेकशः देखी जाती है।

५. अन्य लोक-विश्वास

इसी प्रकार भविष्य की सूचक कई अन्य घटनाएं भी लोक-विश्वास में समाई हुई हैं उनका 'फल' भी ध्यान देने योग्य है। उदाहरण देखिए —

एक दिन चुंडो टोगड़ा चरावतो खेजड़ी हेठै सूतो छै। इतरा मैं एक कालंदर सरप चुंडा रा माथा उपरि फण करि नै बैठो छै। तिण समै आल्हो चारण जाति रोहड़ीयो खेत देखण नै आवतो थो। आगै देखै तो चुंडो मारग मैं खेजड़ी हेठै सूतो छै। उण री निजरि आयो वासिग राजा। तरै चारण मन मैं विचारियो, बात उल्याड़ी नहीं। इतरा दिनां में इणडा वडा री ठीक न पडी।[2]

इस प्रसंग में सोते हुए बालक चुंडा के सिर पर नाग ने अपना फन फैला रखा है, जो उसके छत्रपति होने का सूचक है। नाग स्वयं शक्ति का रूप है। ऐसी घटना

१. राव सीहैजी री बात (नैणसी की ख्यात, श्रीबदरीप्रसाद साकरिया) भाग २, पृष्ठ २७४-२७५
२. राव चुंडा री बात (वीरवाण परिशिष्ट २)

लोककथाओं में अनेक व्यक्तियों के सम्बन्ध में देखी जाती है। वे आगे चल कर बड़े भाग्य-शाली सिद्ध होते हैं।

एक अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य है —

तठै सिरहांणै इहां रै एक नाग आय मूरठ री वूठो हुंतो, तरै आलो हुई अर पछ हुंती सु मुहू में भाल अर ईयै भांत बैठो रह्यो। इहां री नजर पड़ीयो। इतरै उवै ज भांत दीठो। तद उठै सूं नाग री इहां पग लीयो। कह्यो, 'देखां, कठै सु आयो छै?' पग पगे गया, सु भो साप पुरांणै कोट सू आयो। तद नावं कह्यो, 'जु भाखर कोट उवै हुसी, जठै सर्प कुंडली करि बैठो।' तद इतरो कहि, कोट पुरांणै कोट री जायगा करायो। सहर बसायो। बीकानेर नाम दीयो।[1]

जहाँ नाग कुंडली मार कर बैठता है वह स्थान दुर्ग बनवाने के लिए उत्तम समझा जाता है। ऐसे स्थान पर ही बीकानेर बसाया गया है।

इसी प्रकार अन्य भी कई घटनाएं लोक विश्वास से सम्बन्धित रही है।

व्यापार एवं कृषि

प्रायः राजस्थानी बातें युद्ध-प्रधान है परन्तु उन में व्यापार एवं कृषि की चर्चा भी अनेकशः मिलती है। कई बातें व्यापारी-वर्ग के जीवन पर अच्छा प्रकाश डालती हैं और वे प्रधानतया उन्हीं से सम्बन्धित हैं। ऐसी बातों के द्वारा पुराने जमाने का हृदय सहज ही सामने आ जाता है। इनमें में व्यापार-जगत् के विविध पदों, कार्यों, स्थानों एवं परिस्थितियों का विवरण मिलता है। आगे इस विषय में विस्तार से प्रकाश डाला जाता है।

१. विणजारा

राजस्थानी बातों में बनजारों अथवा सौदागरों की चर्चा बहुत अधिक मिलती है। ये सम्पन्न तथा शक्तिशाली चित्रित किए गए हैं। बनजारे अपना माल बैलों पर ढोते हैं इस विषय में कुछ उदाहरण देखिए —

---

१. बात राव बीकेजी री, बीकानेर बसीयो तै समै री (हस्तप्रति अ, जै. ग्रं. बी.)

(क) एक विणजारो भवो विजणारो, जं रा बळद ३/४ हजार रो बाळद छै। सो आप ने विणजारी वहिल बैठा हालै छै। वहतां वहतां ससरा पास दीठा। पांणी री नाळो दीठो। उपरा पूग ही, तर्योयो छै। ताहरां विणजारो, बोलीयो, 'भाई, बाळद छोडो। पोठ उतारो।' चाकर लोक भार उतारणो लागा। आप वहिल छाड़ि नै रु ंख हेठै छाया जाइ वांहल छोडी।[1]

इस उदरण में धनी बनजारे की चर्चा है, जो बड़ी शान से रहता है।

(ख) मतरै विणजारो नवलखो सेखो। तिकै रै साढी च्यार लाख बळद लदीया चलै, लाख साढी च्यार ही खाली चलै। यो खेप करै।[2]

यह उद्धरण नवलखा नामक बनजारे से सम्बन्धित है, जो धर्म से मुसलमान है।

२. बोहरा

बोहरा रुपए उधार देने का धन्धा करने वाला व्यापारी है। वह सराफ का काम करता है —

तद बोहरै आदर सनमांन बोहत कीयो। वैरसी जाय मांचे बैठो। तद बोहरै पूछीयो, 'कहो राज, किसै काम पधारीया छो?' ताहरां वैरसी कह्यो, 'एक पांच हजार रूपीया म्हारै चाहीजै छै, थे देवो।' तद बोहरै कही, आगे पण म्हारै रूपीया छै।' थांहरै रूपीयो छै। हमें तो क्यों दिया नहीं।' हां-ना तो कही बोहरै, पण आखर रूपीया बोहरै दीया पांच हजार। रूपीयां री थैली दीनी।[3]

३. मोदी

मोदी वह व्यापरी है, जो दैनिक आवश्यकता की चीजें रखता है। राजाओं के निश्चित मोदी होते थे जिनका हिसाब लम्बा चलता था —

गढ़वां नै कपड़ा कराय दीया। वाणीयै नूं कह्यो बोलाय अर, 'गढ़वां रै अमल धांन घृत खांड चाहीजै सु थे देज्यो।'[4]

४. वाणोत

बड़े व्यापारी के यहाँ माल खरीदने और बेचने के लिए नौकरी करने वाले लोगों को वाणोत कहा गया है। मूल रूप में यह शब्द 'वणिक्पुत्र' है। उदाहरण —

तद केसरीयै उहां पूछी हंती, 'थे केरा वांणोत छो?' तद इहां कही हंती, 'म्हे

---

१. बात विणजारै विणजारी री (हस्तप्रति (अ. जैं. ग्रं. बी.)
२. बात सलै समणी री (हस्तप्रति अ. जैं. ग्रं. बी.)
३. बात रजपूत अर बोहरै री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. बात रेसामीयै री (साधना, अंक ७)

सरसे मांहे ठकुरो साह छै। तिण रा वांणोत छां। तद साह रैं मन मांहे आई, जो जासूस मेल्हां। देखां, म्रो साह किसोइक छैं।'[1]

इस उद्धरण मे वाणोत के साथ ही 'साह' की चर्चा भी है। 'साह' शब्द का प्रयोग बड़े व्यापारी अर्थात् सेठ के लिए हुआ है।

५. गुदड़ी

यहाँ बाजरा के लिए गुदड़ी शब्द प्रयोग हुआ है —

इतरै हेक वणजारो हेवत सहर री पाखती आय उतरियो हंतो। सु जं भांत आद गुदड़ी रो सँस वास्ते जावै, त्यों होज दांतण ले अर वणजारै पासैं गयो।[2]

६. कोठी

दूर प्रदेश मे जाकर की गई दूकान को कोठी कहा गया है —

अो कनोज कोठो आयो हुतो। सु इयं नुं वरस १२ हुवा। इये री वेहर कोहण लायो। कहण मेलीया पण अो आवै नहीं।[3]

७. हाट-बिछायत

हाट का अर्थ दूकान से है। अपना माल बेचने के लिए बाहर से आने वाला व्यक्ति वहाँ बिछायत लगा कर माल बेचता है और हाट के मालिक को बिक्री का कुछ अंश देता है, जिसे आढ़त कहा जाता है —

तद साह तौ विणजणि रै वास्ते एक खेप करने गुजरात सुं चालीयो। अर अो रजपूत पिण साथे हुवो चालीयो। सु चालीया चालीया ऐ गुजरात सहर आया। अठै ईहा हाट ले नै भार तौ हाट मांहे नांखीयो, बेचण लागा। ताहरां एक वस्त बेचै छै। ते बीच कोई १ बीछायत व्यापारी एके वणजारे री भांलेज मुसळमाण चालीयो चालीयो गुजरात आयो। तिको ईयं साह री हाट आय बैठो।[4]

८. संग्रह

बेचने के लिए माल भरने का नाम संग्रह है —

केळेकोट; वगे, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुआ। होद नै एकै वरतीयै नुं कह्यो, 'जु धान म्हांहरै घणो। ज्यं करो, ज्यूं धान रा पइसा हवै' ताहरां महाजन मेह

१. वात ठकुरै साह री (हस्तप्रति अ. जैं प्र. बी.) २. वात बिसनी बेखरव री (राजस्थानी भाग २)

३. वात कपोलकुंवर राठोड़ री (हस्तप्रति अ जै प्र. बी)

४. वात राजा भोज राणी सोनारी री (हस्तप्रति अ. जैं. प्र. बी)

बंधायो। ....हिवैं मेह वरसै नहीं। वरस ५-७ हुवा मेह नहीं। लोक बहुत दुखी हुवा।'[1]

इस प्रसंग में व्यापारी लोगों ने अनुचित लाभ के लिए अन्न संग्रह किया है। फल-स्वरूप प्रजा दुखी हो जाती है।

९. खेप

यहाँ खेप शब्द व्यापारिक माल के लिए प्रयुक्त हुआ है —

इतरै साह बेटै नुं कही, 'रे मताह हीरा माणक छै, सु अठै तो बिकै नहीं। तूं पदमसाह रे सहर जाय नै बेच आव। अर उठै सुं पण खेप भर ल्याय।'[2]

१०. कतार

माल से भरे हुए ऊंटों के समूह को कतार कहते हैं। यह परिवहन का प्रमुख साधन रहा है —

अठै एक कतार रेसम सो भरी आय घाटी उतरीया। च्यार पहर रात खड़ीया थाका आय उतरीया। सु सोढां री हैरो बांसै आवै छै। सु उणां नुं हेरै जाय कह्यो, 'कतार हणां लादी।'[3]

११. लेखो

हिसाब के जमा खर्च को लेखा कहा जाता है —

एक साह, तेरै हेक बेटो। सो बहुत रूप रो निधांन। तद साह तो बेटै नुं कोठी मेल्हीयो। ....कितरै हेकै दिने साह रो बेटो घरै आयो। तद बाप नै बेटै लेखो कीयो।[4]

१२. नांवो

जिसे रुपया अथवा माल उधार दिया जाता है उसका नावा लिखा जाता है —

पाटण सहर मांही अजेपाळ रै घरै छै। हाट में बैठा नांवो माडे था तठै दीठा।[5]

१३. जोखम

यहाँ जोखम शब्द बीमा-व्यवसाय के लिए प्रयुक्त हुआ है —

ठकुरो साह सरसे मांहि रहै, सु ईयेरै मताह रो छेह कोई नहीं। अर ईयै रै बीजो

---

१. लाखे फूलाणी री वात, अप्रकाशित २. वात हंसराज बछराज री हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. बी.)
३. वात भाटी बरसै तिलोकसी री (बा. सू. प.) ४. ठग राजा री वात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)
५. रा. वा. सं., पृष्ठ २६८

विएज, कोई जिके समुद्र मांहें साह जिहाज ठेलें, तिका री जोखम घो लेवें। इण भांत रहै। ....ठकुरी साह उवां दिने पांच सव जहाज रो जोखम लीयो हुंतो। सु कोई वाव वाजो, तैं सूं जिहाज कही पसवाड़ें जाय नीसरीया। जद जेरैं जिहाजां हतीयां, जिके ठकुरैं पासे आया। आय कर कही, 'जिहाज तो डूबो, म्हारा पइसा दियो।' तद ठकुरैं आप री मताह से विभो हुंतो, सु सबै लोक रै चुकाय दीयो।[1]

१४. हुंडी

रुपया देने के लिए किसी के ऊपर गए आज्ञापत्र का नाम हुंडी है —

देवसरमा हुण्डी कराय, पल्ले बांध अर उठा सूं वहिर हुवौ छै, सो देवसरमा हालतो हालतो उज्जीण सूं कोस च्यार आय लागियो।[2]

१५. खत

रुपया उधार लेकर जो ग्रहणक-पत्र लिखा जाता है, उसे यहाँ खत कहा गया है—

रांणा सजन रै दरबार मांहि बोहरो संतन बडो थो। माणस भलें हुतो। तिण नूं मोहिल तेड़ नै कह्यो, 'मैं एक ठोड़ लेंणी तेकड़ी छे। तिण सारैं कटक मेलो कीयो छे। पिण खाण नूं नही छे। थे म्हारे माथै खत करो।' तिण ऊपर संतन बोहरे कह्यो, 'पईसा कहिसो सो देईस। थे तयारी करि चढो।[3]

१६. फाड़खती

हिसाब चुका देने के बाद जब खत को फाड़ डाला जाता है तो उसे फाड़खती कहते है —

पछे सबरो लेखो करातो गयो, टका देतो गयो, फारगती लिखायतो गयो।[4]

१७. लिखत

रुपया प्राप्त करके जो लिखित-पत्र दिया जाता है, उसे लिखत कहा गया है —

तद ईयै ब्राह्मण पास लिखत ले वाचीयो, कहीं, 'इयै मांहे लिखीयो छै, जु दोने भेळा हुय आवैं तद मता देवा। सु मताह साहव पासै छै। पण थांरो माथ ले आव, जो मताह तने देवां।[5]

१८. खधो

खधो का अर्थ किसी का देय धन चुकाने के लिए किस्त बांधना है —

---

1. बात ठकुरैं साह री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. रा बा. सं., पृष्ठ १९६
३. बात मोहिला री, अप्रकाशित ४. रा॰ बा. सं., पृष्ठ १६१
५. बात कपोल कुंवर राठौड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

'साहुत करो, परोशो बांधो। पइसा देण रो नापो करो। परदेस डूंगर तूं। ब्यापारीयां रा मामा, ताहरो देस्यां।'[1]

१९. जगात

व्यापारिक माल पर राज्य प्रवेश के समय ली जाने वाली चुंगी को जगात कहा गया है —

खेप सारी ही ले जाय नैं चोहटे नाखी। ए माप घाप रै घरे गया। तद परभातै साहू जगात दे नै खेप री वस्त घरे ले आवतो हुंतो, तद रजपूत दुहाई दिराई।[2]

२०. सिक्के

राजस्थानी बातों में अनेक पुराने सिक्कों का उल्लेख मिलता है —

(क) पेई खोल नैं पांच असरफियां घाली, ऊपर पांच रूपया मेलिया।[3]

(ख) मालण पांच मोहरां ले ने आपरी साळ में उतारो दियो।[4]

(ग) पीरोजी लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारां नुं सुहालासा दिण दिया।[5]

(घ) तरै हुजदारै थाकरै कह्यो, फदिया राज घणा ही मेलिया।[6]

(ङ) मन में आ बात राखी, जे मारी लाख दुगांणी राव रा हुजदार कन्है लेणी छै।[7]

(च) तरै मेर कह्यो, हुं दस टका देस्यूं। यूं करतां मेर पच्चीस टका थामीया।[8]

(छ) रे भाई, राजा री मालण रो घर कठीने छै? ऐ पच्चास दाम तू ले नैं म्हांने घर बताय दै।[9]

(ज) ताहरां ईये पइसो चोपटो मांसूं चलाय दियो, सो देहरै माहो जाय पड़ियो।[10]

(झ) सारी वसतां रो लेखो करि नैं सुजांण नायक नैं नांणो दिरायो।[11]

ऊपर अनेक पुराने सिक्कों के नाम दिए गए हैं। नाणो शब्द रकम के लिए प्रयोग हुआ है।

२१. लूटपाट

व्यापार के लिए सुरक्षा की आवश्यकता है। बातों में व्यापार सुरक्षित नहीं प्रकट होता। कतार आदि पर डाका डालना एक साधारण बात दिखलाई देती है —

---

१. वात सत री बांधी लिखमी (हस्तप्रति अ. जं. ग्रं. बी.)

२. वात राजा भोज रांणी सोनारी तपावस कीयो तै री (हस्तप्रति अ. जं ग्रं. बी.)

३. रा. प्रे. क., पृष्ठ ६८ ४. वही, पृष्ठ ६० ५. ऐ. बा., पृष्ठ ६३ ६. वही, पृष्ठ ६३

७ वही, पृष्ठ ६३ ८. वही, पृष्ठ ७२ ९ रा. प्रे. क., पृष्ठ ५९ १०. रा बा. सं., पृष्ठ २०४

११ वही, पृष्ठ २१७।

तरै चुंडो पाच सात आदमी लै ने जालोर रा मारग में जाय बैठौ। प्रभाते ही पोठीया लीयां व्यापारी आय नीसरीया। चुंडो व्यापारियां नैं पकड़ि ने पोठीया ले आयो। मांह सु सोनो काढि ने खरची कीनी। बाकी रो सोनो गांव रो सीव में धरती में गाडि दीयो।[1]

कृषि

राजस्थानी बातों में कृषि की चर्चा कम है। फिर भी यत्र तत्र इस सम्बन्ध में प्रसंग मिलते हैं —

१. तरै जाटां अरज कीधी के म्हे खेती कर पेट भरां छां। तरै दोनूं भायां हुकम दीधो के थे खेती करो। तरै जाटां रूंख काट काट खेत त्यार कर नैं खेती करण लागा ने खेत कमाय नैं जुवार वाई। जेठ मास में जुवार वाई नैं पोस मास में पाकी नै अरज कीधी। ....देखे तो जुवार किण भांत री वणरी छै। सिरा जिकै झुक रह्या छै केई बांका केई पाधरा लटक रह्या छै।[2]

खेती का धन्धा प्रधानतया जाट लोग करते हैं। यहाँ ज्वार की खेती का वर्णन है।

२ कनारै बाजरी रो सनेपत खेत हुतो, तीयै मांहि जाइ पैंठो। ऊंठ झेकि ने वैसारीयो। आप एक बाजरी रो झाड़ आघो एक वाढि नैं ऊपरा लोई ओढाई। आप माळै कन्है जाइ नैं ऊभो। तितरै अखो आयो, कह्यो, 'करसा, ओठी वहतो दीठो नही ?' ताहरां बोलै नही। कह्यो, 'खेती, क्यूं न बोलै ?' ....ताहरां अखो ऊठ चढीयो खेत आवण लागो। ताहरा बोलीयो राजा री आंण छै, जैं म्हारै खेत मैं पैंठो तो। म्हारो धांन ऊंठ भांजिसी। ऊंठ आगै ही राख आप ऊतरि नैं आवो।[3]

'कृषक के' लिए यहाँ 'करसा' शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रसंग में बाजरे की खेती का वर्णन है। किसान अपने खेत को हानि पहुंचाने वाले व्यक्ति को 'राजा की आंण' का प्रयोग करके रोक देता है, जो सर्वमान्य है।

३. किडो गाव छै। किडो रो पटेल खेत मांहे निदांण करावे छै। बाजरै रो खेत छै। पटेल रै पांच बेटा छै। पांच बेटां री बेरां छै। मजूर चाळीस एक छै। ऊभा निदांण करै छै।[4]

यहाँ खेत की निराई मे मजदूर लगाने की चर्चा है।

४. इतरै झाभरकै री वखत री ठांडी पवन आई। तीं पवन री साथ हरिया जवा

---

१. राव चूंडै री बात (वीरवांण परिशिष्ट) २. बात बहलीमा री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी)
३. बात कांवळी बोईयो ने तीजी खरल री (बा. भू. प.) ४ राजा भीम री बात (आ. भू. प.)

री बोय माई। तद भूंडण ऊठ बैठी हुई और कह्यो, 'हरिया जवां री पुसबु मावै छै। हालो, जो चरां।'[१]

इस उद्धरण में जो की खेती और जंगली सूअरों द्वारा उसको नष्ट किये जाने की चर्चा है।

५. एक ग्रोठी वागड़ रै मुलक घोळवाळो राज करै छै, तठै गयो। सु उवै घास पाणी मोकळा दीठा। तरै जाय नै घोळवाळा नुं कहीयो, 'जाखड़ै ग्रहीर रांम रांम कहीयो छै नै कह्यो छै — मांहरै मुलक में तीन काळ पड़ीया, सु कहो तो थांरै देस ग्रावां नैं मेह हुवां परा जावस्यां।' तरै घोळवाळै कह्यो, 'भला ई पधारो। ग्रो मुलक थांरो हीज छै।' तरै ग्रोठी पाछो हालीयो सु जाय नै जाखड़ा नुं कहो, 'हुं जायगा देख ग्रायो छुं।' सारा समाचार कह्या। तरै जाखड़ो चबदेवाळ कछ नुं ले वागड़ै रै मुलक ग्रायो।[२]

इस प्रसंग में ग्रहीर लोगों द्वारा खेती किए जाने की चर्चा है। साथ ही ग्रकाल की स्थिति का वर्णन भी है। प्रसंग गुजरात से सम्बन्धित है।

पशु-धन

मध्ययुग में राजस्थानी जनजीवन का एक विशेष उपलक्षण पशुधन की ग्रभिवृद्धि भी रहा है। राजस्थानी बातों मे इस विषय मे ग्रनेक प्रसंग हैं। पशुग्रों के लिए वित या धन शब्द का प्रयोग ही इस सम्बन्ध में सारगर्भित है। बातों मे दूसरे राज्य मे जाकर धनहरण करने की चर्चा भी ग्रत्यधिक है। यह हरण उस समय का एक विशेष उपलक्षण है। उदाहरण देखिए —

१. सर्व सांढां, भैंसीयां, गायां, घोड़ीयां सर्व लीयां। वित तो ग्रापरो कर ग्रायो चलीयो, ताहरां थट्टयायत मंत्री लोकां नू कयो, इम कहो 'मूळपसाव ग्रायो', जिम वित छोडै।'[३]

---

१. रा. वा सं.. पृष्ठ १२६   २. नागवती नागजी री बात, ग्रप्रकाशित

३. वात पोरवर छावावत री (हस्तप्रति ग्र. जै. ग्र. सी.)

२. सु अचेत थको जाहरां बोलै, ताहरां कहै, 'राजा रो वित जावण न पावै।'[1]

३. सोमतजी ही घाड़ै चड़ीयां हता अर देवडां ही घाड़ै चढीया हुंता। तिकौ वित सोमतजी हेरायौ हुंतौ, तिकौ ही ज देवड़ां हेरीयां हुंतौ।[2]

४. घाहड़ गाडाळौ रजपूत हुतौ। गायां भैंस्यां घण हुती [3]

ये उद्धरण महाभारत में वर्णित राजा विराट की गायों के कौरवों द्वारा हरण किए जाने का प्रसंग सहज ही स्मरण करवा देते है।

१ हाथी

पशुधन में सर्वप्रथम हाथी की गणना की जा सकती है, जो राजाओं या बड़े आद-मियों की सम्पत्ति रही है। युद्ध में कई जगह इसका प्रयोग देखा जाता है। शोभामय सवारी अथवा शिकार मे भी हाथी काम लिया जाता रहा है। राजस्थानी वातों मे उदा-हरण द्रष्टव्य हैं —

(क) अठै कनराव कँवास नूं कहण लागो, 'कँवास, उवै फोज रो राजा हाथी री अम्बारी बैठो फौज रै वांसै भालोड़ा वाहै छै। भालोड़ आवै, तिकै हाथी घोड़ा रो तिलह फोड़ नीसरै छै। राजा दाकळै छै, सु वे फोजां रा इसड़ा लड़ै छै।[4]

यहाँ हाथी पर चढ कर युद्ध करने का वर्णन है।

(ख) राव कही, 'साबास, भला राजपूत हुआ।' इतरि कहि आप री सवारी रै हाथी नू आगै चलायो। बीजा हाथी राव रा हाथी री बरोबर क्यूं पाछा दबाया। सो धणी भाला हाथ सम्भाळिया छै।[5]

यहाँ हाथी पर बैठ कर शिकार पर जाने का प्रसंग है।

२. गाय-भैंस

पशुधन में गाय-भैंस का विशेष महत्व है। राजस्थानी वातों के अनुसार इस विषय में बड़ी सम्पन्नता दृष्टिगोचर होती है —

(क) तितरै गायां आयां। दुहारचां गायां दुहणैं लाग्यां। मारू पिण गायां दुहण लागो। तितरै ऊंमर रै निजीक दूध दूहि नै हालो।[6]

यह गोदोहन का प्रसंग है।

(ख) तितरै मारग विचै एक गूजरां री वाड़ो आयो। तरै वीरमदेजी मांहै गया। आगै गुजर वडो वप आवर छै। आगै गूजरी गरढी पीढो मार्थ बैठी ऊन करै छै।

---

१. वात जैतमाल पुंवार रो (वा. मू. प.) २. वात जैतमाल सलखावत रो (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. वात लाखै फूलाणी री (वा. मू. प.) ४. वात हाडूल हमीर रो (रा. मू. प.)
५. रा. वा. सं., पृष्ठ १४४ ६. वात मारू सूयारी री (वरदा ६/४)

केयक माटा दही रा भरीया छै। केयक माटा दूध रा भरीया छै। केइक माटा चाछ रा भरीया छै। तठै वीरमदेजी नेड़ा आय नै कह्यौ, 'माता डोकरी, थोड़ी सी तो चाछ पाय।' तरै डोकरी वीरमदेजी नै कह्यौ, 'बेटा, दूध दही तो परमेश्वरजी घणो ही दीयो छै। तोने भावै जिस्यूं हेठो उतरि नै पी। तरै वीरमदेजी घोड़ा सू हेठा उतरीया।[१]

इस प्रसंग में दूध-दही की प्रचुरता का वर्णन है। गोपालन का व्यवसाय गूजर लोग करते हैं —

(ग) इसै में खाडू जाय पोहता। सो भैंसां रड़कती सुणै छै। नजीक गयां भरमल री बोल सुणीयो, जो ऊभी ललकारा करै छै 'फलांणी भैंस दोहो। फलांणी री कटी छोड़ दे। धमकी झोट मेलो।' इम ऊभी बतावै छै।........ दूध रा कळस भरीया मुंहडै आगै पडीया छै। निजर आप री कुंवरसी रे मारग सांम्ही छै। छोकरयां दूध नुं दौड़ती फिरै छै, सो आंण आंण कळसां में घातै छै। वडारण कन्है खड़ी छै।[२]

इस उद्धरण में भैंसों के खाडू (स्थान) में उनको दुहने का वर्णन है, जो दूध की प्रचुरता का परिचायक है।

(घ) पूगळ नगर माहि जैसळ नाम खवास छै। आप रा मन में वुध केळवै छै। घरे गायां छै। तिण माहै धोळी गाय दोय निपट सखरी छै। त्यां नै सगळी गायां रो दूध भेळो करि नै पावै। वां दोन्यू गायां रै केरडा हुवा, तिकै निपट सखरा छै। त्यां नै दूध मनभावता पावै छै। घोड़ा दांयर रासै छै।..........यूं जावता करतां बैलिया घणा आछा हुवा। पछै एक हळवी बैल करवाई, दोनूं धवळ जोतरिया। जैसल आप चढ्यौ। दिन दिन रै विखै एके कोस वधारै छै। यूं करतां महिना बारा हुवा। बौलियां नै घणां समझाविया।[३]

यह प्रसंग तीव्र-गामी बैल तैयार करने की क्रिया से सम्बन्धित है।

उपर्युक्त प्रसंग गाय-भैंसों की अधिकता एवं दूध-दही की प्रचुरता के सूचक हैं। साथ ही यह भी प्रकट होता है कि उस समय पशु-सम्पत्ति को लूटन की क्रिया प्रायः होती ही रहती थी, अतः उसकी सुरक्षा के लिए पूरा ध्यान रखना पड़ता था।

३. घोड़ा

राजस्थानी बातों में घोड़े को अत्यधिक महत्व दिया गया है। बातें अधिकांशतः

---

१. बात वीरमदे समधावत री (शोधप्रबंध परिशिष्ट).

२. बात कुंवरसी सांखलै री बरी (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ३. रा. बा. म., पृष्ठ १२

योद्धाजीवन से सम्बन्धित हैं, जो मध्यकाल की विशेषता है। घोड़ा एक योद्धा की शोभा है और उसके लिए आवश्यक है। एक प्रकार से वह उसके जीवन का अंग है —

'जितरै ये दिहानगी लावौ, दरबार मुजरो करो। राजा राखिसी थांनुं।' कह्यौ, 'जो म्हे तो थांहरी दिहांनगी न ल्यां। पछै राजा कांई जांणां म्हांनु चाकर राखसी क नहीं। पछै तो म्हांहुं घोड़ा वेचीया जावें नहीं।'[1]

इस प्रसंग मे बात का नायक घोड़े को अपने जीवन की एक आवश्यक वस्तु प्रकट करता है, जो यथार्थ है।

अनेक बातें ऐसी हैं जिनका मूलाधार ही कोई विशिष्ट घोड़ा या घोड़ी है, जैसे हाहुल हमीर री वात, मूळवै सांगावत री बात, पाबूजी री बात, सूरे खींवै री वात, रुद्र-महाळै री वात आदि। इन बातों को किसी घोड़े या घोड़ी की विशेषता के कारण गति मिलती है।

बातों में घोड़े का मूल्य बहुत ऊंचा प्रकट किया गया है और तदनुसार ही उनके कइ नाम प्रचलित हुए हैं।—

(क) सु मूळवै चारण बेसवटै नूं राजा धीसलदे रैं मेलीयौ अर कहै, 'जु राजा रैं घोड़ौ कोडीधज छै, सु हूरे आवजो।[2]

(ख) पछै कुंवर राजाथी अरज करी, कहै, 'महाराज, आप मोहे रीज देणी कही थी, सो अणी रीज में राज रा पायगां मे लखीणो घोड़ो है ज्यां पाऊं।[3]

बातों में अनेक घोड़े-घोड़ी अपने नामों से प्रसिद्ध हैं —

(क) दला जोईया रो घोड़ौ असवारी रो, नांम पावटौ। तिको मूहरा मांहि बांधौ छै।[4]

(ख) तरे राठोड़ वीरमदे सळखावत देपाळ जोईया रैं साथे होय कितरेक दूर पहुँचाय आया। तरे वळतां नै वीरमदेजी नै देपाळ जोईयै समाधि बछेरी दी।[5]

(ग) इसी वात सांभळि राणगदे तांमस खाय कह्यौ, 'फीट भींपड़ा, तौ पहिली बात धाई।[6]

(घ) तठै ऐ सात असवार चोरी नैं एक असवार पाबूजी। पाबूजी रैं चढण काळवी।[7]

(ङ) भोज वावळो घोड़ी चढ़ीयौ दीठो। ईयां साथ दीठो, ताहरां जेलू कहै, 'हूं भोज नूं परणीजोस।[8]

---

१. मानिग छाबड़ा री बात (वरदा ७/२). २. बात मूलवै सागावत री (रा. मू. ग.)
३. रा. वा, भाग ४, पृष्ठ ११२. ४. गोगादे वीरमोत री वात (वीरवांण परिशिष्ट २)
५. वही (वीरमदे सलखावत री वात) ६. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ६१
७. वही, पृष्ठ ८११ ८. देवजी बगड़ावतां री बात (रा. वा, सं., भाग १)

(च) दडावट राजथांन तेथ आया। नीलावर घोड़े चढीया आया।[१]

(छ) रायव बोल्यो, 'पीवळी, थारे पगं भार नै म्हारै हाथं भार।[२]

(ज) तियां मांहे २ (घोड़ा) छै। एक रो नाम जय, बीजै रो विजय।[३]

अनेक बातों में 'पांणीपंथ' अथवा 'जळहरे' घोड़े की चर्चा आती है, जिसके संबंध में प्रकट किया जाता है कि वह धरती के समान ही पानी में भी चल सकता है। इसी के पीछे पवनपंथ घोड़े की कल्पना भी है।—

तरे सूरजजी कह्यो, 'अठा सु वाहुड़ता वन रे विषं उद्यान में मेडी घोड़ा दोय तेने वकस्या। तिके आगं चरता सु लाभं, सु लीजें—सुरजपसाव नै करणपसाव, तठा सु लाखाजी रे पवनपंथ असवारी ए हुवा।[४]

विशिष्ट घोड़ों की विचित्र उत्पत्ति का वर्णन भी देखने योग्य है —

काछेला चारण समुंद्र खेप भरण गया हंता। सू इहां रै एक घोड़ी। जद ए समुद्र रै कांठे आय उतरिया। तद रात रो जळघोड़ो नीसर नै घोड़ी नूं लागो। तैरी काळवी घोड़ी नीपनी।[५]

यहाँ एक समुद्री घोड़े के सम्पर्क से 'काळमी' नामक घोड़ी की उत्पत्ति बतलाई गई है।

कई घोड़ों के सम्बन्ध मे तो यहाँ तक प्रसिद्धि रही है कि वे देव-अंश थे —

(क) तरै राणकदेजी रै असवारी रो घोड़ो भीयड़ो देवांसी छै, तिको घणो चलाक छै।[६]

(ख) तरां मां कह्यो, बेटा, इन्द्रपसाव घोड़ो देवनमी छै। तु किणी नै देखाळै नही दौ चुं।[७]

बातों में घोड़ों की मानवोचित आत्मीयता अनेक जगह प्रकट की गई है —

(क) आगै जाय करि मुंहुरै का मुह खोल्या। तब घोड़ा नासा वाई। जब अन्दर पैठे, तब घोड़ां कुं बहलीमा की वास आई। तब घोड़ां को आखि पाणी आया, राख्या रहै नही। जब रायव कपड़ा लेर करि आख लूही।[८]

(ख) सो उठै पीळो रोण लागो नै अठी सूं रायव दोवाण लागो। नै मां सीहणी नूं

---

१. वही, पृष्ठ १५   २. बहलीमा री बात (हस्तप्रति (अ. जै. ग्रं. बी.)
३. वरदा (गाण्यासर) अंक २, पृष्ठ ५५.
४. साखा फुलाणो री बात (श्री मोहनलाल पुरोहित बीकानेर के संग्रह मे) ५, रा. वा. मू. पा., पृष्ठ १८२
६. वही, पृष्ठ ८६   ७. बात विक्रमादीत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
८ बात बहलीमा री (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. बी.)

खबर हुई के सायब मार्‌यो नै पीवळो घोड़ो खबर ले आई, सु रायब नैं पीवळो रोवैं छै।[1]

(ग) तिण नैं मदा जोईया री बहु कह्यो, 'थारा असवार नैं मार्‌यो। लूण री तासीर वहौ तो आ वेला छै। जैसलमेर जाय नैं धीरदे नैं वाहर घालि।' घोड़ां नैं छोडीयो। तिको जैसलमेर रौ मारग लीयो। तिको जैसलमेर रै गोरिवै जाती हींस कीधी। तिका धीरदे कांनां सुणी। तरै तीजो फेरो लेता था। तरै घोड़ै वळै हींस कीनी। तरै धीरदे जोयो हथळेवौ छुडाय नैं चोथो फेरो विण ळीघां चढीयो।[2]

उपर्युक्त प्रसंगों में घोड़े की स्वामिभक्ति प्रकट हुई है।

घोड़ों की देखभाल भी पूरी चेष्टा के साथ किए जाने की चर्चा बातों में कई जगह आती है। वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण होने पर भी द्रष्टव्य है।

तरै साह कह्यो, 'च्यार सूंम उघाड़ो राखूं छूं। पांणी पिण डेरा मांहे पाऊं छूं। धूप खेवीजै छै। हमेसा लूंण उंवारीजै छे। तिणां आगै पोथी हमेसा वंचे छै।[3]

बातों में घोड़ों के सम्मान का वर्णन भी कई जगह है। मृत्यु के बाद विशिष्ट घोड़े का स्मारक तक बनवाया गया है —

तरां पछै भीयडा रो थड़ो करायो। भीयडा रे नांवे गांव वसायो, तिको कूवाजी रो भींथड़ो कहीजै छै।[4]

घोड़ों के वर्ग की चर्चा भी कई जगह देखी जाती है —

(क) सो उठै मोहिलां रो देस बापरावटी कहीजै छै। तठै घोड़ीयां निपट घणी छै। अमोलक हुवै छै। तिकै छूटी मोकळा तालर मांहे चरै छै।[5]

(ख) दिन ऊगै घोड़ी पांच सैं बचेरां सूधी ऊछरी। तिकै ताता करि पासरणी करि नैं घोड़िया भीवैं नै पिउसंधो लीधो नैं पासरणा करि देस नै चलाया।[6]

घोड़ों की खरीद-बिक्री अथवा व्यापार के भी अनेक प्रसंग राजस्थानी बातों में मिलते हैं —

(क) भोळो राजा भी रे अखई मोहतौ घोडां री खरीद नूं कबूले मेलीयो, तिके अखई घोड़ा वडा वडा खरीद कीया। कबूले सो घोड़ा खरीद कर नैं कबूले सौ पाछा घिरीया।[7]

---

१. वही २. बात गोगादे वीरमोत री (वीरवाण, परिशिष्ट)

३. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ११० ४. वही, पृष्ठ ६४

५ वीरमदे सलखावत री वात (वीरवाण, परिशिष्ट) ६. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १३१

७. बात हाहुल हमीर री (बा. मू. प.)

(ख) तठा पछै कितरेक दिनै वीरमदेजी पटा रै पंडै पातिसाही घोड़ां री सोवत आवती थी, तिका वीरमदेजी मारि लीधी । घोड़ा लै नै महेवै आया ।[1]

(ग) ताहरां प्रधान बोलीयो, 'वेढै चारण रै दोइ घोड़ा छै । उवै घोड़ा लीजै तो धरणि मरै ।' ताहरां वेदै चारण रै आदमी मेल्हीया, कहीयो, 'जी, फूलजी घोड़ा मांगै छै । पईसा ल्यो, घोड़ा द्यो ।'[2]

उपर्युक्त उद्धरणों से प्रकट है कि राजस्थान में दूर दूर से घोड़े खरीद होकर अथवा बिकने के लिए आते थे और यह काम बड़ा लाभदायक था । अधिकतर चारण और सौदागर घोड़ों के पालने और बेचने का कार्य करते थे ।

४. ऊंट

ऊंट राजस्थान का विशेष पशु है । बातों में इसकी चर्चा अत्यधिक है । ऊंटों का टोळा (समूह) प्रसिद्ध है । इनकी देखभाल करने वाले रैवारी लोग होते हैं । कई जगह सांडों (ऊंटनियाँ) के वर्ग का प्रसंग आता है —

(क) 'चांदा, सांढ़ां रा वरग घेरा । तद थोरियां जाय नै सांढां सरब ले नै टोळै नूं बांध लियौ । ऐ सांढां ले नै पाबूजी पासै आया ।[3]

(ख) प्रभात रा सांढीयां दावण छूटै छै । दूध रा घड़ा रबारीयां भर लेह ऊपर दीना छै ।[4]

(ग) इसै हीज तंत में कुंवरसी चढीयो सो जाय सांढां रा वरग सरब घेरीयो । रैबारी वीस हाथ आया सो मारिया ।[5]

(घ) एकदा प्रस्तावि राजा प्रिथीराज सिकार नीसरीया । सिकार रमता रमता एक सिवालख में जाइ नीसरीया । ताहरां सांढ्यां दीठ्यां, दाग ओळखीया ।[6]

इन उद्धरणों में ऊट-ऊंटनियों की प्रचुरता का वर्णन है । साथ ही उन पर डाले गये धाड़ों (डाको) की भी चर्चा है ।

विशिष्ट ऊंटों के नाम भी बातों में प्रकट हुए हैं —

(क) असवारी रो ऊंठ थो, नांव घघ थो । सो राघोदास रैबारी रै कन्है थो ।[7]

(ख) समल नैं सथ दोनूं ऊंट ल्यायो । कंवळो सुख सुं तोडी नुं भोगवै छै ।[8]

---

१. वीरमदे सलखावत री वात (वीरवांण, परिशिष्ट) २. लाखै फूलाणी री वात (बा. शू. प.)
३. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १८८ ४. वात कुंवर रणमल री (बा. शू. प.)
५. वात कुंवरसी साखले री वडी (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ६. वात जागलू री (बा. शू. प.)
७. वात कुंवरसी साखलै री वडी (हस्तप्रति अ जै. ग्रं बी.)
८. वात कांवलो जोईयो नै तोडी खरस री (बा. शू. प.)

ऊंट की सवारी और चाल का वर्णन बातों में अनेक जगह आता है —

(क) डेरे जाइ नै ऊठ नु ऊपर खिलावै छै। सु टाबर जाइ जाइ देखै छै। ऊंठ खेलै छै।[1]

(ख) इतरि कहि नै कुंवर एकै वडै ऊंठ चढनै रतनमजरी नै वांसै चढाय नै हालीया। सु ऊठ एसो, जिको रात वांसै सौ कोस जावै।[2]

(ग) तरै जखड़ै उण सांढ नै सारणी मांडी। तिका मास एक मांहै सभाई। तिका कोस पचास जाय नै एकै ढाण पाछी आवै।[3]

ऊंट की मानवीय सहानुभूति भी प्रकट हुई है —

अबै करहो थाको। भूख पण लागी, तिण सूं मुधरो चालण लागो। तद ढोलोजी बोलीया —

> करहा तुझ विसासड़ै, वीसरिया सह काज।
> रखै बीच बासी करै, मारू न मेळै आज॥

ताहरां करहो पण राजी होय कहण लागो —

> सड़ सड़ वाहि म कंबड़ी, रांगां देह म चूर।
> बिहुं दोपां विच पारवी, मोयी केतो दूर॥[4]

५. भेड़-बकरी

मरु-प्रदेश में भेड-बकरियां विशेष रूप से होती हैं। राजस्थान का काफी भाग पहाड़ी भी है। वहां बकरियों की बहुतायत है। राजस्थानी बातों में अनेकशः भेड-बकरियों के झुंड की चर्चा मिलती है। कुछ उदाहरण इस दिशा में द्रष्टव्य हैं —

(क) इतरै थंळां मांहै ढोलाजी मारग भूला। एक एवाळ तठै छाळियां चरावै छै।[5]

(ख) तद म्हां नु भूख लागी सो म्हे अठा सूं चालीया आवां छां। तठै बीच एक वांसा री वाड़ो, तै माहै एवाळ रा बाकरा, तै मां छै।[6]

(ग) ताहरां मूळीयो खवास बाकरै नुं ल्यावण नुं चढीयो। सु खडतां कोसै २ जाय नै आगै केळावै बोरै री छांग मांहा खाजरू १ उपाड़ीयो।[7]

(घ) आगे खीलहरी एवड़ ऊंठाणियो छै। एवड़ छूटा छै चरण नुं। खिलहरी ऊभो छै।[8]

---

१. वात मारू सूंधारी री वरदा (वरदा ६/४) २. वात रत्नमंजरी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
३. रा. वा. सु पा, पृष्ठ १४६ ४. ढोला मारू री वात (अप्रकाशित)
५. रा. वा. सं., पृष्ठ ७६ ६. वात देपाल् धंध री (अ. सं. पु. बी.), अप्रकाशित.
७. वात सातल् जोधावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.) ८. वरदा (गाग्यासर) अंक २, पृष्ठ ५७

इन उद्धरणों में एवाळ और खीलहरी शब्दों का प्रयोग है, जो बकरी-भेड़ चराने वालों के लिए हुआ है। बकरे के लिए छाळिया तथा भेड़ के लिए 'गाडर' शब्द है। खाजरू का प्रयोग भेड़-बकरी दोनों के लिए होता है। एवड़ उनके समूह का वाचक है। छांग शब्द स्थान का सूचक है।

इस प्रकार उत्तर मध्यकाल में राजस्थान में पशु-धन की प्रचुरता प्रकट होती है। इन में सबसे अधिक महत्व घोड़े को मिला है, जो उस युग के जीवन को देखते हुए उचित ही है।

उत्सव मनोविनोद आदि

राजस्थानी बातों में जनता का उमंगपूर्ण जीवन चित्रित हुआ है। उस में उल्लास एवं आनंद व्याप्त है। वहाँ चिन्ता अथवा दीनता का वातावरण नहीं। लोग सुखी दिखलाई देते हैं। जनजीवन में उत्साह है। यह स्थिति बातों में स्थान स्थान पर प्रकट है। उस में मन रमता है। यहाँ जनजीवन के कुछ ऐसे दृश्य उपस्थित किए जाते हैं।

१. गोठ

बातों मे गोठ का प्रसंग अनेकशः मिलता है। यहाँ 'गोठ' का अभिप्राय आनन्द-मौज है। इसी प्रकार 'भुंजाई' है। भुंजाई सम्मिलित भोजन है। उस में भुने हुए मास की विशेषता रहती है। राजपूत-जीवन में भुंजाई को विशेष महत्व प्राप्त है। इस सम्बंध में उदाहरण द्रष्टव्य है —

(क) सावण आयो, तद बहुवां सारां अरज कीवी जो कुँवरजी मांसुं .कृपा कर गोठां मांहरी जीमो। आप तो हमेसां गोठां करो छो। तो वरसा लागो छै, मांहरी गोठ जीमो, रंग करो।[१]

(ख) तरै मलु मेव, मांमघड्डको, सा हीरै-वीरै व्याहू जगा गोठ मिजमानी कीधी नै साहजादा पछै बीजै दिन गोठ कीधो।[२]

१. बात कुंवरसी सांखलै री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
२. बात बहलीमा री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

(ग) अठा सूं औ वहीर हुवौ। चालीयौ चालीयौ कछ गयो। ताहरां आगै सहर सूं १ तळाव कोस २-३ छै। तठै करन गोठ कीवी तो। सारो ही साथ बैठो छै। ताहरां केइक लोक इण नुं साम्हा मिळीया।[1]

(घ) सो एकै दिन देपाळ धाड़ो ले नै आवतो हुतौ। सो हरख री आप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी। अठै मास रांधो, चावळ रांधा अर रोटा हुवै छै। रजपूत आय बैठा छै।[2]

(ङ) सिरदार सर्व भुंजाई आया। आगै पातीयै आय बैठा। आगै घणा जोजरा रोटा, घणौ मांस, घणौ सोहितौ, घणा सूळा, घणौ ऊजळौ रायभोग, भांत भांत रो मांस, मोकळो घृत, घणी सोनड़ी दाळ। अठै मैं सोलंकी भुंजाई जीमाया।[3]

गोठ एक आनन्द का विषय है परन्तु इसके साथ ही, विशेष रूप से राजपूत-समाज मे, अफीम तथा शराब का प्रयोग जुड़ा हुआ है। किसी भी आनन्द अथवा उत्सव के प्रसंग मे तो इनका प्रयोग अनिवार्य सा प्रकट होता है —

(क) इतरा मे खवास आए अरज कीवी, 'जे कसूंभो तैयार छै।' तद सरदार लोगां कही, 'ले आवौ।' सो कळस च्यार भरिया जाजम रै पासखी धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में लाया।[4]

(ख) जांनी-मांनी मिळीया। वडा हरख कीया। आंणि नै जानीवासै सर्ढ में उतारीया। एथ दारू फिरियो। लोक दारू पीण लागा, अमल करण लागा।[5]

कसूंभा पानी मे घोले हुए अफीम से तैयार किया जाता है। यहां शराब के लिए दारू शब्द का प्रयोग हुआ है।

साधारण स्थिति मे भी अफीम का सेवन विशेष रूप से देखा जाता है। कई पात्र तो वातों में आश्चर्यजनक रूप से अफीम खाने वाले प्रकट हुए हैं —

एकै एकै रै मांचै एक राव रो चाकर, सु ईहां नै सूतां नै अमल रो साप कर नै सु सुता ही ज सापाले करै पण आंख खोलै नहो। कदै कोई गढ मांहे धोकळ लड़ाई हुवै तो उठै, नहीं तो सूता रहै।[6]

यहां 'अमल रो साप' की चर्चा आई है। जो अफीम के गाढ़े द्रव का बनाया जाता है।

---

१. वात कर्ण लाखावत, देवल राठोड़, चारण जालणसी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

२. वात देपाल धध री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

३. वात कुंवर रणमल चोंडावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. रा. वा. सं., पृष्ठ २४।

५. वात केसे उपाधीयै री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

६. वात किसन कानहड़ री (हस्तप्रति. अ. जै. ग्रं. बी.)

अफीम और शराब दोनों ही दुर्व्यसन है परन्तु वे तत्कालीन राजपूत-जीवन में विशेष रूप से व्याप्त हैं। कहीं कहीं तो इन से बड़ी ही उपहास्य स्थिति पैदा हो गई है, जैसा कि 'प्रतापमल देवड़े री बात' में चित्रित हुआ है।[1]

२. शिकार

राजस्थानी वातों में अधिकतर राजपूत-जीवन का चित्रण है। राजपूतों के लिए शिकार विशेष मनोविनोद का विषय है। अतः वातों में शिकार का वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। कई वर्णन सिंह वराह आदि भयंकर पशुओं से सम्बन्धित हैं तो दूसरों में हरिण खरगोश जैसे पशुओं की चर्चा भी है। उदाहरण द्रष्टव्य है —

(क) सीह नुं जाई घरीयो। बंदुक री चोट की, सु गोळी टळ गई। सीह गाजि अर जैसे ऊपर आयो। रजपूत वारो दे गया। ताहरां फूल आइ नै सीह रे मुंहड़ै मांहै भालै री मारी। सीह ओईज गयो। सिंह फूल मारियो।[2]

(ग) सु राजा भीम इसो पण लीयो। सीह एक मारि नै अंन खावणो। नित प्रति नाहर मारणो, इसो पण राजा लीयो छै। हिवै राजा नित प्रति चढि नाहर मारि ल्यावै, पछै आई नै भूंजाई बैसै।[3]

(घ) नाहर पण मांडण उपर आयो। आवतो देख नै मांडण पण गुवाळ नु झलाय घोड़ो नै सांमो आयो। सु माडण नै नाहर भेळा हुय गया। गुवाळ देख नै इचरज रहीयो, 'ओ परमेसर, कासौं ?' इतरै आप मांहै बाथै हुवो। बाथां पड़तां नाहर हाथळ वाही, तिका मांडणसी ढाल सौं टाळी। हाथळ जाय धरती टिकी। टिकतां पहलो, वात कहतां वार लागै, इतरै माडण सभाय तरवार नै नाहर रै दीनी, तिको संभण हुवै तिसड़ो मायो पंजो नाहर रा दूर आय पड़ीया।[4]

(च) लोक सिकार रै हाकै गया छै। आप अर भांणो चारण बैठा छै। तिसड़ै वे रीछ जोरावर, बिहु सीहां सारीखो एक एक, इसा रींछ ते आया महा विपरीत। ताहरां भाणै कह्यो, 'रावजी ऐ जावण द्यो, हाकै रा जिनावर क्युं छै नहीं। बीजा छै, जांवण द्यो।' ताहरां कह्यो, 'भाणाजी, हिवै तो आया।' ताहरां आप रीछ बाथे हुवो। मारि कटारी सुं विहुंड नांखीयो। बीजो आय विलगो। ताहरां मारि बीजो ही रीछ कटारी सु उघेड़ नांखीयो।[5]

उपर्युक्त उद्धरणों में सिंह तथा रीछ की शिकार का वर्णन है। इस मे शिकारी की

---

१. राजस्थानी वातां, प्रथम भाग (श्रीनरोत्तमदास स्वामी)
२. वात लाखे फूलाणी री (बा. मू. प.)   ३. वात राजा भीम री (बा. मू. प.)
४. वात माडणसी कूंपावत री (बा. मू. प.)
५. वात राव सूरिजमल री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

शक्ति और उसकी हिम्मत देखने लायक है। राजस्थानी वातों में इस प्रकार के प्रसंग अनेक हैं।

३. संगीत

गोठ और शिकार के साथ ही मनोविनोद की अन्य क्रियाओं में संगीत को विशेष महत्व दिया गया है। यहाँ डूम-ढाढी लोगों का तो पेशा ही गायन है। वातों में इनकी चर्चा बहुत आती है। आनन्द के अवसरों के अतिरिक्त भी सामान्यतया राजदरबारों आदि में गाना-बजाना होता ही रहता है। इस विषय में कुछ उदाहरण दिए जाते हैं —

(क) सू बीजाणंद रागां री आलापचारी करै। ताहरां जंगळ रा म्रग हालि आवै। म्रगां रै गलै मांहे सोनै री माळा घालै। राग जाहरां थमें, ताहरां म्रग वाजि जावै। बीजै दिन आलापचारी करै, ताहरा म्रग आवै। ताहरां सोनै री माळा [illegible] काढि लेवै। इसौ बीजाणंद।[1]

(ख) तरे जाभ में सूं कळावंत गुणी था, भला गावै था, तिणां नूं बुला नै [illegible] राग करो। तरे कळावंत हीडोळ राग कीधो नै हीडोळा [illegible]। [illegible] दीपक कीधो नै तिण सूं दिवा जाग ऊठा। नै राग मलार [illegible] लागो। नै तपस्यां रा नैण खूटा।[2]

(ग) इसौ सुण ढाढियां सिरपाव पहरिया बीण [illegible]। ढाढियां जाय दरवार नै खमा है कहवायो, 'बारै ढाढी [illegible]' [illegible] 'हजूर आवै।' पछै ढाढियां आय नै मुजरा किदो। [illegible] कंवरजी फुरमायो, गावो। ताहरां ढाढियां [illegible] मांहे गाया।[3]

(घ) कुंवरजी रै झरोखै नीचे पोळंपु [illegible] लाखपसाव कियो। पोळंपु हजूर [illegible]

(ङ) साथ लै नै तळाव रा वडां [illegible]।[4]

उपर्युक्त उदाहरणों में [illegible] आदि शब्द [illegible] के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

राजस्थानी वातों में [illegible] है। [illegible] उदाहरण देखिए —

१. रा. वा., भाग [illegible] [illegible]
२. रा. वा. [illegible] [illegible]
३. रा. वा. [illegible]

(क) तरै सांवण री तीज ऊपरां चढ़ियो तिको पाछिले पोहर घड़ी दोय दिन थकां महेवै तीज मिली छः। तीजणिया लूहर गावै छै।[1]

(ख) मार्ग सूंमरै रै घणा वधावा हुवा। रळी रंग हुवा। राते धवळहेरण्यां वधावा गाया।[2]

(ग) पछे उमा सांखुली नै सिणगार करै नै चौरी मांहै पधारिया। हथळेवो जुड़ायो छै। छेहड़ो बांधियो। ब्राह्मण वेद भणैं छै। सुहव मस्त्री मंगळ गावै छै।[3]

(घ) जांगड़िया खंभायची करै छै — 'घरहुरिया तोरण आव हो, केसरीया वना, लूंब रही महाराज वना लूंब रहो।' इण भांत वनड़ा गावै छै।[4]

ऊपर के उद्धरणों में अनेक लोकगीतों की चर्चा है। ये गीत आज भी राजस्थान मे गाये जाते हैं।

संगीत के प्रसंग मे नृत्य एवं नाट्यकला की चर्चा भी बातों में द्रष्टव्य है —

(क) तद राजा कही, 'पखावज आछो वाजे नहीं तै वास्ते नाटक आछो न हुवै। तद इंद्रजी कह्यो, 'तो पखावज तूं बजा।' तद राजा कही, 'हूं बजाईस।' तद राजा तो पखावज बजायो अर आ बोहत नाची। सु बोहत ही नाटक आछो हुवो।[1]

(ख) तठै रात घडी दोय गयां रावळीयां रामत मांडी। तठै राजा दरबार आय बैठो नै लोक सारो ही घाण भेळो हुवो छै। ताहरां राजा भीतर राजलोक नै कहायो, 'जो थे पण रावळीयां री रामत देखो।' तै सूं राजलोक सारो ही महलाइत मैं चिगां नांखाय नै रामत देखण नू आय बैठो छै।[2]

यहां नाटक शब्द का प्रयोग संगीत के लिए और 'रामत' शब्द का प्रयोग अभिनय के लिए हुआ है।

४. अन्य कलाएँ

इसी प्रकार अन्य ललित कलाएं, काव्य, स्थापत्य, प्रतिमा-निर्माण और चित्र आदि की चर्चा भी राजस्थानी बातों मे प्रकट है। इनमें से काव्य कला के सम्बन्ध में पहिले प्रकाश डाला जा चुका है। अन्य कलाओं के सम्बन्ध में उदाहरण देखिए —

स्थापत्य—तद कुंवर गाव रा सिलावटा सब भेळा किया अर सिलावटे नुं कह्यो, 'जो

---

१. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ५८   २. लाखे फूलाणी री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

३. रावो मेवाड़ी री वात (पंवार वंशदर्पण, परिशिष्ट)

४. वात चोहरे बावत कोफाणद री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

५. वात वीर विक्रमादीत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

६. रतनमंजरी री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

कारीगरां, एक देवीजो रो देवळ करणो।' तद सिलावटां कही, 'जो राज कह सो, इसो करसा।'[1]

प्रतिमा-निर्माण—देहरे में पाखाण री पूतळी, छो घणी रुड़ो फूटरी। कान्हड़देजी उण रै रूप दिसी घणो गौर करि जोवण लागा।[2]

चित्र-कला—तद आगै प्रोहित रै हाथ सबी हुंती। सु सबी ले नै कुंवर नै देखाळी। तद कुंवर थकतमांन हुवो। ताहरां कुंवर पूछीयो, जु प्रोहित आ सबी छै कना कही अस्त्री री सबी छै?' ताहरां प्रोहित कही, 'राज आ सबी राजा चित्रसाल री बेटी रतनमंजरी री छै।[3]

ऊपर प्रथम उद्धरण में देव मंदिर के निर्माण का प्रसंग है। दूसरे उद्धरण में असाधारण मूर्ति की चर्चा है। तीसरे उद्धरण में शबीह (व्यक्ति चित्र) के लिए सबी शब्द का प्रयोग हुआ है।

५. खेल-कूद

खेल आदि मनोरंजन का प्रमुख साधन है। राजस्थानी बातों में इस विषय में भी अच्छी चर्चा है। वीरों के लिए युद्ध का खेल भी एक विशेष वस्तु रही है। दो योद्धाओं की पट्टेबाजी का दृश्य देखिए —

हिवै एकै दिन पातिसाहजी पंजू पायक नै वीरमदेजी नै खेलण रो हुकम दीयो। तिको खेलतां खेलतां पजू रै मन में आई, वीरमदे नै मारूं। जठै वीरमदे खेलण नै दरबार री तयारी कीवी।........पातिसाहजी झरोखै बैठा देखै छै। उमराव पाखती देती माहै खड़ा छै। कान्हड़देजी राणकदेजी परमेस्वरी नै समरै छै। तिसै दोनूं खेलतां खेलता वीरमदे इसौ डाव खेल्यो, तिको उछळतो साहमै काळजै पंजू रै काळजै दी। तिको पेट फाड़ि आंत ऊभ फेफरी नीकळ ढेर हुवा, धरती पड़ियो। पातिसाहजी क्युं मसळायो पिण खेल माहै घाव डात मोटीयारां री फुरती, तिण सूं क्यु कह्यो नहीं। तरे वीरमदेजी नै सिरपाव दे डेरा में विदा किया।[4]

इसी प्रकार मुर्गों की लडाई का दृश्य भी प्रकट हुआ है —

दिन एक भीम गोहिलोत बैठो छै नै बेटा भीम रा अरजन हमीर कूकडा लड़ावै छै। कूकड़ा रै पगां रै पाछणा बांधा छै। सो लड़तां लड़तां अरजन रै कूकड़ै रो माथो पाछणै सों उतार नांखीयो। ता हरां हमीर आप रै कूकड़ै नूं कहै, 'मार, देखै कासों? थारो माथो वाढ सावतो उभो।[5]

---

१. चौबोली री वात (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. बी.) २. रा. सू. पा., पृष्ठ ६६
३. वात रतनमजरी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ७८-७६
५. वात अरजन हमीर भीमोत री (साधना, अंक ७)

मनोविनोद के लिए पशु अथवा पक्षियों को पोसने के प्रसंग भी बातों में मिलते हैं —

(क) एक दिन मोहनसिंहजी रे हिरण थो सो छूटो। तीं नूं कोटवाळ पकड़ लियो। तद मोहनसिंहजी मांणस मेल कहायो, 'हिरण म्हांरो थांरै छै, सो दिरावो।'[१]

(ख) जद साह रे बेटा रे एक सुग्रो है, जणी है ले ने कुंवर सहर में फिरतो फिरे ने अणीपती वेपार नहीं वे, कमाए नही खादो जाए।[२]

यहाँ हरिण तथा सुग्गा पोसने की चर्चा है।

घरेलू खेलों में चौपड़ खेलने के प्रसंग अनेकशः देखे जाते हैं। इस खेल मे कभी कभी हार-जीत की बाजी भी लगाई जाती है —

(क) एक समै मीयां बुढण महेचा रे परणीयो छै। तिको उण री नाम बाई लाडु छै। उण सुं मीयां बुढण चोपड़ रमै छै। सो बाई लाडु रै डांण पड़े नही, तरै बाई पासो वावतो कयो, 'पासा, तोने रामदास वेरावत री आण छै, पोबारा पड़ीया।' तरै लाडुबाई री जीत हुई।[३]

(ख) 'बाईजी साहिब, आज तो पाहुणो कहै छं, आज चोपड़ रमण नै आवस्या।' तरै कुमरी बोली, 'दुरस छै। भलां ई पधारो।'[४]

६. त्योंहार

बातों में वर्णित त्योंहारों मे होली, गणगोर तथा तीज का उल्लास विशेष रूप से देखा जाता है। इन अवसरों पर जनता में बड़ी उमंग प्रकट होती है। पूरे वातावरण मे उत्साह भर जाता है। बातों मे से उदाहरण देखिए —

होली — हमें होली रा दिन था, सु गढा में गेहर बाजै छै। ....मोटीयार डंडीया रमै छै, गेहर अवल बाजै छै।[५]

इस उद्धरण में होली के नाच गान तथा उमंग का वर्णन हुआ है।

गणगोर — तठै बीज रो दिन संझ्या रो पूजण, नैं पाणी पीवण नैं गोर काढी। तठै गींदोली चकडोळ वैसि गोर पाछै पांणी पावण चाली। तठै असवार हजार दस जावता में पातसाह दीधा। नगारा, ढोल, सहनाई वाजै छः। लुगायां गीत गावै छै।[६]

१. रा. बा. सं., पृष्ठ १७५　　२. रा. वा., भाग ४, पृष्ठ १०५
३. रामदास वेरावत री आपड़ी री वात (रा. सा. सं., भाग १. पृष्ठ २२)
४. रा. प्रे. क., पृष्ठ ११७-११८　　५. वात नाग नागवती री, अप्रकाशित
६. रा. वा. सु. पा., पृष्ठ ६०

यहाँ गणगोर के जुलूस का वर्णन हुआ है। गणगौर त्यौहार गौरीपूजा के रूप में लगभग १६ दिन तक मनाया जाता है। होली के दूसरे दिन से पूजा प्रारम्भ हो जाती है।

तीज — (क) भूला रा भूला लमभम करता फूलबाग नूं आवै छे। लहरिया गावै हैं। गहरी गहकै है। डेडरा डहकै है। मोरां री सोर, भिली री भिगोर। .... तीजण्यां हींडा मचकावै है, लंक लचकावै है। बीज रो सिळाव, मेह रो मिळाव। मेहां फुहारां बरसै है, तिकै तीजण्यां हीडती थकी इण भांत दरसै है।[1]

(ख) इण भांति हींडा चलावै छै, आब की भाव तोडि ल्यावै छै। यणजुकी गोडी मोडै छै, अपछरां का सा विमाण आमां-सांम्हा दोड़ै छै। तीज गाजे छै, जीसूं तिजण्या लाजै छै। गोडी की साथ पायल को ठमको वाजै छै। साथण्यां साटिक्यां वावै छै, नांव लीरावै छै।[2]

यहाँ तीज के गीतों, झूलों तथा खेलों का वर्णन हुआ है। तीज त्यौहार पार्वती के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। गणगौर की तरह तीज भी राजस्थान में महिलाओं का त्यौहार है।

उपर्युक्त खेलकूद तथा त्यौहार आदि में सर्वत्र ही आनन्दोत्सव की लहर व्याप्त रहती है। इन से साधारण जनता के जीवन की सरसता प्रकट होती है। राजस्थानी वार्तो मे बड़ा ही सरस जीवन चित्रित हुआ है।

---

१. रतना हमीर री वात २. पना वीरमदे की वात, अप्रकाशित

भाषा-शैली

चतुर्थ खण्ड

भाषा-शैली

स्पष्टतः ही राजस्थानी बातों में प्रयुक्त भाषा अपने समय की बोलचाल की भाषा है और इसका कारण भी है। असल में राजस्थान में बात कहने की विशेष प्रवृत्ति है और इस कला में आकर्षण भी कम नहीं। प्रायः ऐसी लोककथाएँ सवार-सजा कर लिखित रूप में प्रस्तुत की गई हैं। बातों की भाषा-शैली के कुछ विशेष उपलक्षण आगे प्रकट किए जाते हैं।

साहित्यिकता

बातों की भाषा में पर्याप्त साहित्यिकता है क्योंकि बातें विशेष रूप से 'बणाव' के साथ लिपिबद्ध की गई हैं। 'बणाव' से अभिप्राय सौष्ठव से है। इस सम्बन्ध में उदाहरण द्रष्टव्य है —

१. मारवणि पदमणि, नैं चंद्रमा सो वदन, मृगलोचणी, हंस की सी गति, कटि सिंघ सरीखी छै। काया सोळमो सोनो, मुख री सौरम किस्तूरी जिसी छै। गात री सौरम चंदण सरीखी छै। नासिका जांणै सुवा री चांच तथा दीपक री सिखा सरीखी छै। पयोधर श्रीफळ जिसा। वांणी कोयल जिसी। दांत जांत जांणै दाड़िम-कुळी। वेणी जांणै नागणी। बांह जांणै चम्पा री डाळ। एडी सुपारी सी नैं पगथळी स्यांन (स्वान) री जीभ सरीखी छै। वळै मारवणि मांहे तौ अनेक गुण छै पण कवेस्वर कहै छै—एकण जीभ करि कितराहेक गुण कह्या जाय।[1]

२. सिरोही री सबजी वरणी नहीं जाय। साखियात इन्दर लोक समान सोभा छै। दूसरी अमरावती ही ज छै। जव गेहूं चणां री क्यारियां मांही सुसवू छाय रही छै।

---

१. रा. बा. सं. पृष्ठ ४४

तिजारो फूल रह्यो छै। गूंदगरो, रामगरो, गुळवाड़ री बाड़ां लाग रही छै। पग पग नाळा नीझरणा बह रह्या छै। घणा ही आंबा महुवां रा मोर झुक रह्या छै। अढारै भार बनस्पती झुक रही छै। भंवरा ऊपर गुंजार कर रहिया छै। सारसां बोल रही छै। भंवुरा झिंगोर करै छै। अनेक भांत रा पसु पंखी कलोळ करै छै।.सो इसी दीसै जांणजे कैळासपुरी कनां अमरावती कनां बरुणपुरी असी सिरोही बिराज रही छै।[1]

प्रथम उद्धरण में नासिका को सुग्गे की चोंच दीपशिखा के समान, बाहु को चम्पा की डाली के समान, एड़ी को सुपारी के समान तथा पदतल को स्वान की जिह्वा के समान बतलाया गया है। इन उपमानों मे नवीनता तथा लौकिक-तत्व है, जो विशेष रूप से ध्यातव्य है।

बोलचाल की भाषा के प्रयोग ने राजस्थानी बातों को सर्वथा बोधगम्य बना दिया है। इन में दुरुहता नहीं है। प्रसादगुण-सम्पन्नता इनकी विशेषता है कहीं भी पांडित्य-प्रदर्शन की चेष्टा नहीं। वहाँ स्वाभाविकता है; कृत्रिमता नहीं है। समयानुसार बातों की भाषा विकसित होती चली है। इस विषय में कालक्रमानुसार दो उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं —

१. इसी धीरप दे नै कह्यो—विराजो, श्री परमेसरजी सहुँ भलां करसी। तरां कुंभोजी बैसे नहीं। तरै वळै कह्यो—बाबा, गादी आवो, बैसो। तरै कुंभोजी कह्यो—सांनाजी बैसण नै तो ठौड़ नहीं नै राजि म्हारी बांह संभावो. चीतोड़ बैसाणो तो बैसूं, नहीं तो धरती भेल्यो आकास नांख्यो। मोनै राजि विना किण ही रो आलंब नहीं। तरै रावजी बोल्या—जमा खातर राखो, श्री परमेसरजी थाहरो एकलिंगजी सोह भला करसी। या कहि, बांह संभाय नै गादी बैसांणिया, रसोई अरोगिया।[2]

२. एक दिन ऊदोजी तळाव ऊदासर ऊपर पधारिया छै। भंवर बछेरी, चंवरढाळ बछेरी और वेरसी जंग चढणे नूं। सो जिसा ही ऐ दोनूं सरदार वैसा ही सवारी रा घोड़ा घोड़ी। सो सारो लोक देखै, तारीफ घणी करै। इतरै इहाँ घोड़ा घोड़ी दौड़ाया सो सारा लोग देखणे नू पाळ ऊपर ऊभा हुआ, तारीफ करणे लागिया। तद ऊदेजो पूछणे लागिया—कुण छै? जद कह्यो—वेरसी जंग घोड़ा दोड़ावै छै। सो जैसा दोनूं सवार छै, वैसा ही घोड़ा घोड़ी छै। इतरै ऊदेजी कह्यो—रजपूत व घोड़ा घणा ही आछा छै पण बाप रो बैर खोखर मे रहियो, तो री सुध नहीं तद किसा बखांण।[3]

---

१. वही, पृष्ठ ११० २. ऐ० बा., पृष्ठ २८
३. रा. बा. स., पृष्ठ २४७,२४८

इन दोनों उद्धरणों में प्रथम अठारहवीं शती के प्रारम्भ का है और दूसरा प्रब लगभग सौ वर्ष पूर्व हस्तप्रति का है। दोनों की भाषा का अन्तर स्पष्ट है। ये उदाहरण भाषा के समयानुसार विकास को प्रकट करते हैं। प्रथम उद्धरण में शब्दान्त में 'ऐ' और 'औ' का प्रयोग विशेष है, जब कि दूसरे में ये प्रायः 'ए' और 'ओ' हैं।

क्षेत्रीय झलक

एक समय में लिखी गई राजस्थानी बातों की भाषा लगभग समान है और उस में क्षेत्रीय-रंगत विशेष नहीं मिलती। परन्तु कहीं कहीं यह प्रकट हुई भी है। इस सम्बन्ध में उदाहरण इस प्रकार है—

संर उजीण सौं कोस च्यालीस एक गांव थो। जणीं मांहे एक रजपूत रहे। सो वडो उमराव अर वडो ग्यानी धरमातमा। उणीं आगे एक बांमण कथा वांचें। यों करतां घणा दिन हुवा। सो रजपूत रें तो च्यार असतरी। अर तीन असतरी रें तो एक एक बेटो नें छोटी बहु रें एक बेटी। पंण धणी सो ठाकुर मया करें सो या सुहागण। दूजी तीनी सो मया थोड़ी। जदी बेटां री माउवां विचार कीधो, सो ईणी नें ठाकुर सुहाग दीधो अर आपां नें वतळावें नहीं, नें बेटा नें पंण बतळावें नहीं। सो ए चोथी असतरी उपरें रीस करें।

यह उद्धरण महाराणा अरिसिंह (मेवाड़) के लिए सं. १८२३ में लिखे गए गुटके की 'गांम रा धणी री बात' में से प्रस्तुत किया गया है। इस में मेवाड़ी बोली का स्पष्ट प्रभाव है। असल में जब किसी क्षेत्र विशेष को लोकथाएं बिना किसी ऊपरी 'बणाव' के अपने सरल रूप में लिपिबद्ध की जाती हैं तो उस क्षेत्र की बोली उन में कुछ झलकती ही है। उपर्युक्त उद्धरण में यही चीज है। श्री भवानीशंकर उपाध्याय द्वारा सम्पादित राजस्थानी वातां (भाग २) में भी ऐसा ही हुआ है। इस संग्रह की भाषा का उदाहरण इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है, जिस में मेवाड़ी की रंगत है —

एक ठिकाणा रो रजपूत हो। वींकै ठुकराणी घणीज कलेशगारी ही। वीं ठुकराणी रा कलेश सूं सरदार रे नाकां दम वेग्यो। मन में विचार कीदो के म्हैं आपणी आतमा नें किकर संतोष व्हेवै, अठै तो या रात दिन कलेश करे। थोड़ाक दन कठेक घूमवा जावां तो मन राजी करां, यो मन में विचार नें वो सरदार वठा सूं निकल ग्यो।[१]

इस उदाहरण में सरल-स्वाभाविक बोलचाल की भाषा प्रयुक्त हुई है। ऐसी भाषा में साहित्यिकता का प्रकाशन मिलेगा। फिर भी इस प्रकार की बातों में जो पुराने दोहे आदि प्रयुक्त होते हैं, उनकी भाषा एक दूसरे ही प्रकार की रहती है। एक ही बात में इस

१. रा. वा., भाग २

प्रकार का भाषा-भेद द्रष्टव्य है। इसी पुस्तक (राजस्थानी वातां भाग २) की बातों में प्रयुक्त कुछ दोहे देखिए। इनकी भाषा में स्पष्ट अन्तर दृष्टिगोचर होता है —

१. कम्मा उग्गरसेन रा, तो जननी बलिहार।
चमर न भल्ले साह रा, तूं भल्लै तरवार ।। पृष्ठ ५

२. खाग भळा खग ऊजळा, हुवे मरदां हल्ल।
मतवाळा पोरस चढे, प्राइयो सेंण प्रमल्ल ।। पृष्ठ १०

३. मात जरो तो एहा जणे, जेहा मांन मरद्द।
समंदर खांडो पखाळियो, काबल पाड़ी हद्द ।। पृष्ठ १०६

इन दोहों की भाषा में साहित्यिकता स्पष्ट रूप से प्रकट है।

खड़ीबोली मिश्रित राजस्थानी

अनेक राजस्थानी बातें मुसलमानों के जीवन से सम्बन्धित हैं। उन में राजस्थानी मिश्रित खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है। वातावरण को स्वाभाविक रूप देने की दृष्टि से ऐसा प्रयास किया गया प्रतीत होता है। उदाहरण देखिए —

१. पांच पैकंबर उरस्यूं उतरे। चतरि के वनवास के विषै तपस्या करते थे। सवा पांच मण भांग, पचास मण दूध का गैब का प्याळा पवर्क (का)। च्यार पैकंबर लेटे लेटे दोपुहरें ऊठें। एक पैकंबर गैब का घोड़ा बणाय के गैब का प्रायुध बणाय सिकार खेलें। दोपुरह होर तब सिकार ले प्रावें। प्राय प्याला पीवें। पांच मिलि कर बैठें, खेलें, रमें।[१]

२. प्रथम भयी देश को पातसाही। भयी पातसा तिसके छोरी नहीं। तब नीठी नीठी कंयेक महल के ताही पेट रह्या। फिर पूरे महीने हुए। पीड़ लागी। तद लड़की सू मूळां में हुई। तद काजी कह्या, 'यह लड़की राखणी नहीं। ए पुरे नक्षत्र हुई है।' तब हजरत ने कह्या, 'इस लड़की कूं मारै तो नहीं, हमारे नीठी नीठी हुई है। जो हमारे ताही पुछते हो तो मोहर गज का कपड़ा लेहु, तिस में लपेट कर काठ के पंजरे मे सुवाय कर दरियाव में बहाय देहुं।' तब लड़की कूं पजरा में सुवाय कर में बहुवाय दीवी।[२]

इस प्रकार खड़ीबोली मिश्रित राजस्थानी की यह एक शैली बन गई है। खड़ीबोली के विकास के अध्ययन में इस प्रकार की राजस्थानी बातें बड़ी उपयोगी हैं। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि सभी राजस्थानी बातों में मुसलमान पात्रों के मुख से इस शैली

---

१. बहलीमा री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
२. सस्सि पन्नु की वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

में भाषा-व्यवहार नहीं हुआ है, जैसा कि कथोपकथन विषयक अध्याय के कुछ उदाहरणों में दिखलाया गया है।

ऊपर बहलोमा री वात का एक उद्धरण दिया गया है। वही कथानक अन्य वात में भी है, जिस में पहिले वाली भाषा-शैली प्रयुक्त नहीं है। इसका कथानक तो मुसलमानी जीवन से सम्बन्धित है ही परन्तु यह शुद्ध राजस्थानी में भी प्रस्तुत किया गया है उसका प्रारम्भिक अंश द्रष्टव्य है —

पिरोजसा पातसा गढ गजनी राज करे छै। सु पातसा विचारयो कै बीजापुर रो गढ लीजै, पातसाही लीजै। पातसाह फोज ले नै बीजापुर रै गढ लागो। मास आठ तांई गढ रोज रोळो हुवो, नै पछै गढ पिरोज पातसा लीधो नै बीजापुर में दाखल हुवा, नै आय तखत पै बैठा, नै छत्र-चंवर ढुळै छै। सभा में सतर खांन बोत्तर उमराव ऊभा छै। तरै पातसाहजी मूंछ हाथ फेर तरवार तोल नै बोलिया, 'आपां सरीखो आज धरती में कोई नहीं।' एक वार, दो वार, तीन वार कह्यो। तरै पठाण मूलो मेव बोल्यो कै आप पातसाह छौ, खुदा नुं औतार छो। यूं क्यूं कहीजै? खुदा रै घर में आलै सूं आलै छै।'[1]

पंजाबी मिश्रित राजस्थानी

वातों में कहीं कहीं पंजाबी मिश्रित राजस्थानी का प्रयोग भी देखा जाता है। 'राजा रिसालु की वात'[2] में बहुत बड़ी संख्या में दोहों का प्रयोग हुआ है और वे प्रायः सभी पंजाबी तर्ज के हैं —

रूपा सूं घोळी करूं, सोना री चकडोळ वे।
रीसालू नाम छोड दे, जोरू हमारी होय वे।।

अंबर तारा डीग पड़े, धरण अपूठी होय वे।
साहवे विसारूं आपणो, तो कळ उथंळ होय वे।।

सुगणी तुज वीर जीवजे, जग में नाम कडाये वे।
राजा भोज री डीकरी, वंस उजाळणहार वे।।

'जलाल गोहणी दी वात'[3] पूरी ही पंजाबी मिश्रित राजस्थानी में है —

तै समांजोग एक दिवस श्री जामजी दीवाण बैठाआ है। दीहं दोपहर हुवोआ है। तारां जरारजी बूबनां जी मोहल नीचे पधारीआ छै। तै समये बूबनां सावद्ध तळियां मोहल नीचे दाखीआ है। सु जरारजी तळियां वेहे नैं बूबना दे मोहल थयाआ है। तै समये बूबना री बाई एक नूं दरबार मोहल रै ऊभी राखीआ है, "जु डे दाई, जामजी आवदां निहारे, म्हांनूं खबर भवै।"

---

१. बहलोमा री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.
३. हस्तप्रति, अ. जै. ग्रं. बी.

तुकान्त गद्य

राजस्थानी बातों की भाषा-शैली पर विचार करते समय उसके तुकान्त-गद्य पर भी सहज ही ध्यान चला जाता है। ऐसा प्रयोग कई बातों में हुआ है। यह एक प्रकार से भाषा को सजाने की चेष्टा है, जो अन्यत्र भी अनेकशः देखी जाती है। इसके द्वारा गद्य में पद्य की झलक सी प्रकट होती है। पीछे के कई उदाहरणों में यह शैली प्रयुक्त हुई है। एक उदाहरण और देखिए —

देवगढ रावत प्रतापसिंह हरीसींघोत राज करै; जिकां किसो हैक —'पातसाहां सूं आडो, कंवारी घड़ा रो लाडो। अंड संग्राम रो नाटसाल, चक्रवर्ती जिसड़ी चाल। आप रो माणीगर, षट-भाषा रो जाणीगर। दातार सूर, जलाहल नूर। वीराधिवीर, सरणाई सधीर। आजानेबाहु, नरां रो नाहु। गज घड़ा मोड़ण, बांका मैवासा तोड़ण। जिण प्रथ्वी रै ऊपरै बडा जुद्ध कीधा, रिणपेत मांहे आय ववदंत हुवा तिका नूं मार लीधा। जिणां रै कनै लाख लाख रा रजपूत रहै, जिके पड़तै आसमांन नूं भुजां सहै। स्याम रा सहायक धरा रा किवाड़, मावता रा मावता अणभावतां जड़ा उपाड़। इण भांत रा तो कनै रजपूत इसड़ो ही आप विडां मजबूत।[१]

सानुप्रासिकता

कही कहीं बातों की भाषा में सानुप्रासिकता की छटा भी प्रकट हुई है परन्तु उस में स्वाभाविकता है, कृत्रिमता नहीं है —

१. तठे पाटण मांहे पातरां रा पांच सै घर छै।[२]

२. दिन ऊगां बागवान साथे भोपति हुलं परधांन नै कहायो, 'परणोज आया छां, पैसारो साम्हेळो लीजो।[३]

३. सोनगरां रो हाथ आछो-आछो, पिण सोढोजी रे हाथ री होड न हुवै।[४]

४. सांईवजी, मैं करोत लेतां भव-भव राजि नै भरतार मांग्यो।[५]

५. तरै डोकरी मांख्यां गळगळी करि नै गळै भूंबो।[६]

६. तारां इसो सांभळ सर्व साथ चमक ऊचगो, जांणियो कांई सगत देवी छै।[७]

७. पाबूजी माया केरी तेसूं वेलै पार जाय ऊभा रह्या।[८]

८. तांहरां हांसू कह्यो, 'ये मांहरै घर आवज्यो, मांवीतां कन्हा मोनूं मांगो।[९]

---

१. रा. सा. सं., भाग २, पृष्ठ १६-१८ २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १६ ३. वही, पृष्ठ ५७ ४. वही, पृष्ठ ७२ ५. वही, पृष्ठ १०२ ६. वही, पृष्ठ १२६ ७. वही, पृष्ठ १६३ ८. वही, पृष्ठ १८८ ९. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ५०

९. ओढो अपूठो आइने कूंगरे बलोच रे घरे आया छै।[1]

१०. आगे एवाळिया आइ नें ऊभा छै।[2]

११. ताहरां दूहो चारण सीलि नें राव चंखडे आगें गयो।[3]

उपर्युक्त उद्धरणों की सानुप्रासिकता अनायास है। वह सायास प्रस्तुत नहीं की गई है। यही कारण है कि इस में श्रुतिमधुरता एवं सहज आकर्षण है।

बातों की भाषा को अनेक स्थलों पर प्रयुक्त उपमान वाक्य बड़ा आकर्षक बना देते हैं —

१. बांह छै, सु जांणें हाथी री सूंड रे आकार छै। माथै ताकी छै। पछेवड़ै सूं कड़ि काठो लपेटी छै। सांबर रे उवाडै सूं कटारी बाधी छै। जांघियो पहिरियो छै। कांधो जांणें नाह सारीखो दीसै छै। भुज मोटा मोटा विराजै छै। इसै रूप आई बैठो जांणें हणवंत कुलाछ मारि आइ बैठो।[4]

२. तिको पांचा मांहे रै बैर पैहरियो। तिण बैर काढण री घणी फिकर रहै। रातें नींद आंख्यां नावे। ढोलिया ऊपर ढाल गोडां मांहे दे ने योगेसर ज्यूं बैठो रहै।[5]

३. इण असवारां पचीसां ही ले ईश्वर रो नाम सबळो गुद माथै पड़ै तिम तूट पड़ीया।[6]

४. ताहरां हाहुल ईहां पांचा ही नूं बाथ माहे घात, जिकै भांत हाळी कड़ब रा पूळा ल्यावै तिकै भांत पांचा ही नू बाथ मांहे घात ल्यायो।[7]

५. ताहरां मांडणसी घोड़ै नूं मार लात नै ऊंट रे बरोबर आयो। सु तरवार काढी। काढ ने ऊंट रै सिर मांहि दीवी, तिको भोण हुवै तिसड़ो माथो दूर जाय पड़ीयो भचाक सैं।[8]

६. दूदो आघे हुवतै झाब फूनां री नांख दीवी। आघे हुवते साड गरदन सो पकड़ नै कटारी मारी सु जांणें तूटै छापर मांहा वळो नीसरै तिम पेलै पार छाती री लागी मगरां मांहे जावती नीसरी।[9]

७. हूं न हुयो ताहरां म्हारो भाई यां ऊपरा यूं पड़िसी ज्यूं इन्द्र रो वज्र पहाड़ ऊपरा पड़ै।[10]

८. तिण समै गोयादेवी छुरी सुं उछाळ मूठ हाथ में झाल राणंगदे नैं वाही, तिको

१. वही, पृष्ठ ५१ २. वही, पृष्ठ ५८ ३. वही, पृष्ठ ६१
४. राजा भीम री बात, बा. मू. प. ५. रा. वा. सु. पा., पृष्ठ ११०
६. भाटी वरसे तिलकसी री बात, बा. मू. प. ७. बात हाहुल हमीर री, बा. मू. प.
८. बात मांडणसी कूंपावत री, बा. मू. प. ९. बात राव किसन कानहड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
१०. बात राव माने देवड़ै री, हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.

जांणे सावळ में तांत वही । गोडां उपरा पड़ी ।[1]

९. कवीस्वर आसीस जयकार पढे । तिण री हुंगामो इसो हुवे, जांणे सावण भादवे री आभो गाजे ।[2]

१०. जांणे सिकरो तूट नै पड़े, जिण भांत लक्कड़ उतरियो । गुफा रे बारणे आय पड़ियो ।[3]

इन उपमानों में स्थानीय रंगत की छटा विशेष रूप से है । अतः इनकी नवीनता ध्यान में रखने योग्य है ।

विशेष आलंकारिकता

कई बार ग्रन्थों में उनके लेखकों ने अपना रचना कौशल प्रदर्शित करने के लिए आलंकारिकता को विशेष रूप से अपनाया है । ये प्रायः बड़े आकार की बातें हैं । इस सम्बन्ध में उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. दीठो घणुं ही पीपळ रो पान तिको कद इण उदर रे समांनि । जिको कोई पेट री मोळे भूल दरसण करसी, तिको पेट ही खाय मरसी । जिसड़ी रसकूंपका जिसड़ी नाभ, आ ओपमा सरीषी इण में टोटो न लाभ । पिण फेर गुलाब रो खुलतो सो फूल, हुवे तो हुवे इण रे समतूल । कवीसर कहे जिका सुण लेणी, पिण कठै त्रिवळो नें कठै त्रिवेणी । आ रोमराजी जोइजे हैं, रोम रोम राजी होईजे हैं । कांई पीळी ने कांई राती, यां छातीयां नें ओपमा दे इसी किण री छाती । कामलता फळी, किनां कनक रा कमलां री कळी ।[4]

२. कुच कांचु अनार दोय, जुग बांह केळ की कांब होय । वे हात कंवळ सी कळी, साख जिण री गात, बावनां चनण ताक । आंगळ्यां मुंगफळ्यां तुल, नांहो जाण गुलाब री फुल । कड़ि जांणी जिसी केहरी लंक, जुग जांघ कदळी खंभ निसंक । पीडियां केळ री गरभ जांण, एडियां सुपारी प्रेनांण । पदम जको झळको पाय, चालतां गजराज जाय ।[5]

चित्रात्मकता

बातों में अनेकशः वर्णन की चित्रात्मकता का दर्शन होता है । ऐसे स्थलों पर वर्णन बड़ा सजीव बन जाता है । इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

---

१. भी वा. परि. २. राजस्थानी बात संग्रह, पृष्ठ १०० ३. रा. प्रै. क., पृष्ठ १०१
४. रतना हमीर री बात (हस्तप्रति, श्री रावत सारस्वत, जयपुर)
५. पना वीरमदे री बात (हस्तप्रति, श्री रावत सारस्वत, जयपुर)

१. तद काळा भैरू छुडायण नैं मिनखलोक आय भाटण रो रूप करि आई। तिका काळी, डीगी, मोटा दांत, दूबळी, घणी डरावणी, माथा रा लटा विखरिया, घणा तेल मांहे चंवतो, धवळा केस माथै निलाड़ सिंदूर थेपड़ियो थको, लोबड़ी काळी, काळो घाघलो, कांचळी तेल मांहे गरकाव थकी, उघाड़ै माथै कीधां, हाथ मांहे त्रिसूल झालियां आई।[1]

२. त्यां मांह सूं सात सात सै टाळका रजपूत ऊभा लीधा। त्यां नै करसावाळा झगा पहिराया, गोडां ताईंपाण काळी दोवटी री दुपटी पोतां पहिराई, माथै मैला पोतिया बंधाया। एक आप पाघ बांधी। हाथ माहे ढाल तरवार लै बडेरा चौधरी होय बीजां रै हाथ मांहे मोटी डांगां दीधी।[2]

३. सी नै दरसण ही ज दी। ताहरां जोगेसर छोटै आसण बैसांण थोड़ी सी चीरी दीधी, कासमीरी मुद्रा घाली, नाद सूंप्यो, माथै टोपी पहिराई, सेली गळा माहे घाली।[3]

४. तठै बड़ो सरोवर भरयो छै, हिलोड़ा लेवै छै। तठै घणा सारस मोर चीकोर बतका आड बुगला झिल रह्या छै। पंखी सारा ही कीलोळ कर रह्या छै। सैर रा लोक सगळाई सीनांन-संपाड़ा करै छै। विणहारियां झूलरै-झूलरै आवै छै। पिणहारियां किणहेक भांत री छै? जिकै महारूपवंत, मृगनयनी, सिंहलंकी हथणियां ज्यूं हालती, मैंगळ ज्यूं माल्हती, घणा भोगी-भमरा रा मन मोहती थकी, घणा पायलां जांझरां री बीछियां री रमझोळ पड़ रही छै। सो सारो ही डोळ झळक रह्यो छै। मांहे घूमती थकी झीणा सालू ओढीया छै। सो सारी ही डोळ झळक रह्यो छै। मांहे घूमती थकी झीणा सालू ओढीया छै किणहेक सखियां रै ओढणा झीणी जैसलमेर री लोवड़ियां, चूनड़ियां केसरिया चोळ, रै रंग फब रही छै। तांबा-पीतळ रा घड़ा पांणी सूं भरिया छै।[4]

अनेक स्थलों पर इस वर्णन-पद्धति में केवल सूची मात्र ही प्रकट होती है :—

१. हासल पैदास बिनां लवाजमा कुंकर हुवै? जदि राजा कड़ा, मोती कंठसरी, दुगदुगी, जनेऊ, हथ-सांकळां, सिरपंच, कड़ीयां री तरवार, ढाल, कटारो, खंजर, तरगस, बांण सर्व बगसीया।[5]

२. आदमी कह्यो—गढ सझियो, उठै तो वेढ री त्यारी छै। बारै बरस तांई धांन, घृत, तेल, गुळ, खांड, अमल, भांग, तिजारो, किरांणो, कपड़ो, मूंदणो, दारू, सीसो, लोह रो सामान कीयो छै।[6]

---

१. रा. वा. मू. पा., पृष्ठ ४० २. वही, पृष्ठ ११६ ३. वही, पृष्ठ १२७-१२८
४. रा. प्रे. क., पृष्ठ १६१ ५. रा. बा. मू. प., पृष्ठ ८ ६. वही, पृष्ठ ६०

३. तरै राजा देख नै हैरान हुवो। नाहर, सूर, सांभर, पाताळ-छोंकळा, काळिहार, खरगोश, चीता, बघेरा, सीह इतरां जिनावरां रो कांन ढेर हुवो।[1]

४. तठै फूलमती कहै, 'बीकाजी साहब, सुरगंधा कुमरी रै नांवै नवो बाग छै। घणां आंबा, नीबु, करमदा, खिजूर, रायण, बीजोरा, केळा, बिदाम, पिसता वळै पिण घणी जात रा रूंख छै। फेर साटो, चंबेली, मालती, करणी, गुलाब, केवड़ो, केतकी रा वळै घणी जात रा फूल छै। तिण बाग में मोटा महल छै।[2]

५. महाराजा श्री करणसिंहजी रै च्यार कुंवर हुवा। बडा कुंवर महाराजा अनूपसिंह जी रामपुरा रै रुखमांदजी रा दोहिता। दूजा कुंवर केसरीसिंह जी खण्डेला रै राजा द्वारकादास जी रा दोहिता। तीजा कुंवर पदमसिंहजी बूंदी रा हाडां रा दोहिता। चौथा कुंवर मोहनसिंहजी श्रीनगर रा पंवार बखतसिंह जी रा भाणेज सलसलोत रा दोहिता। पाचवां खवासवाळ बनमाळीदास हुवो, सो पण बड़ो बालय हुवो।[3]

उपर्युक्त उद्धरणों में अनेक प्रकार की सूचियां दी गई है। यह पुराने समय की एक परिपाटी है। बातों में जहां तहां उसीका अनुकरण हुआ है।

राजस्थानी साहित्य मे वर्णन को अत्यधिक महत्व दिया गया है और अनेक ग्रन्थों में वर्णन की आश्चर्यजनक छटा प्रकट हुई है। पृथ्वीचन्द्रचरित्र (वाग्विलास), राजान राउत रो वात वणाव, खीचो गगेव नींबावत रो दोपहरो, मुत्कलानुप्रास (वाग्विलास), कुतूहलम्, सभाशृंगार तथा दो अन्य अनामक ग्रन्थों का पता लगाया जा चुका है, जिन मे वर्णन को प्रधानता दी गई है।[4] इन में वर्णन की दृष्टि से कोई भी विषय छोड़ा नहीं गया है और प्रायः सभी प्रसंग आ गए हैं। साथ ही वर्णन बड़ा ही रोचक एवं चित्रात्मक भी है। 'बात-बणाव' तो नाम ही ऐसा है कि यह किसी भी बात को वर्णन के द्वारा सजाने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस प्रकार प्रकट होता है कि राजस्थान मे बातों की केवल रचना ही नही हुई परन्तु साथ ही उनके शिल्प-विधान की ओर भी पूरा ध्यान दिया गया है। इस सम्बन्ध में श्री अगरचंद नाहटा का वक्तव्य बड़ा ही महत्वपूर्ण है —

कथाओं को लिखने और कहानी की कला का राजस्थान में इतना अधिक विकास हुआ कि उसके लिए अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे गए। उदाहरणार्थ कथाप्रसंग में कैसे कैसे सुन्दर वर्णन जोड़ कर कथा को रोचक, आकर्षक और ज्ञानवर्धक बनाया जाय, इसके लिए

---

१. वही, पृष्ठ १४३-१४४ २. रा. प्र. क., पृष्ठ ८९
३. रा. बा. स., पृष्ठ १६७-१६८
४. रा. भा., वर्ष ३, अंक ३-४ में श्रीअगरचद नाहटा का लेख

अनेक प्रकार के 'वर्णन' ग्रन्थ तैयार हुए। वर्णन संग्रहों के नाम सभाशृंगार, वाग्विलास, वर्णनसार, सभाकौतूहल आदि रखे गए।[1]

इस सम्बन्ध में उदाहरणस्वरूप एक प्रसंग द्रष्टव्य है —

दक्षिण दिसा मलयाचल पहाड़ रो पवन वाजिगो छै। सीत मंद सुगंध गति पवन मतवाळा मेंगळ ज्यां परिमल झोला खावतो वहै छै। अठार भार वनसपती मकरंद फूलादि रा रस मांणतो थको वहै छै। अंब मोरी जै छै। कूंपळां फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। वासावली फूटि रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटीयो छै। वसंत आयो छै। भमर मधुकर झंकार करी रहीया छै। मधुरी वाणी रा सुर करि कोकिला बोलि रही छै। बाग बागीचां दरखत गुलकारी झिलि फूल रही छै।[2]

इस उद्धरण में वसंत का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। इस प्रकार के अन्य विषयों के वर्णन भी बहुत अधिक हैं।

गति

बातों की शैली में उनकी गति भी ध्यान देने योग्य है। बालोपयोगी अनेक बातें अत्यन्त तीव्र गति से आगे बढ़ती हैं। उनकी गति मंद नहीं होती और शीघ्रता के साथ फलप्राप्ति कर के समाप्त हो जाती हैं। एक उदाहरण देखिए —

साहूकार दोइ एकै सहर मांहे रहै। दोऊ द्रव्यवंत, मोटा आदमी, वडां सूं सगायां। साहूकारै आपस मे वडो मेळ छै। यूं करतां कितरे एकै दिनै एक साहूकार रै तोटो आयो। सवळी भीड़ पड़ी। ताहरां घर रा बैठा लोक बोलीया, 'थांहरो मित्र छै। थे जावो। की आडो आवै। मित्र सो जो विपत में आडो आवै।' ताहरां साहूकार मित्र साह रै घरै गयो। साह साम्ही आय मिलीया, वातां कीयां। ताहरां पूछीयो, 'साहजी, क्यूं पधारीया ता फुरमावो ?' ताहरां साहूकार विणज री हकीकत कीधी —'माल परदेसै छै। लोक तकादो करै छै। क्यूं थे म्हांहरै काम आवो।'[3]

यही गति बालोपयोगी बातों के अतिरिक्त भी अन्य कई बातों में अनेकशः देखी जाती है —

ताहरां नाळेर झालीया। परधांन नै सीप दीधी। लगन जोय नै जांन चढी। तरां सोढी कहीयो, 'सांमेळो मोढां रो दपांणज्यो। हथळेवो सोढी रो दपाणजो। पिण सोनि-गरां रे घरै जीमजो मती। तारां रावजी कह्यो, 'भलां।' जान चढी। आगे वधाई दीधी। वरै सामेळो कीधो। सोनिगरां सूं रांम रांम हुवो। तिसै रावजी अठी-उठी देखनै बोलीया,

---

१. मधुमती, वर्ष २, अंक ४, पृष्ठ ६६

२. रा. सा सं., प्रथम भाग, पृष्ठ ३४ (राजान राउत रो वात-वणाव)

३. छोटी बात (अ. जै. ग्रं. बी.)

'सांमेळो नीपट सपरो विण क्यूंहीक सांमेळो सोढां रो सकस ।' वीरमदे जांणीयो । जांणै तो मन जांणै ।[1]

अब बात की मंद गति का उदाहरण द्रष्टव्य है। इस में कथानक एकदम ठहरा हुआ सा प्रतीत होता है —

जितरै सांवण को महीनो श्रायो, काजळी तीज श्राई । सू तीजां देखण मरद लुगायां पोसाख कियां जाय छै। हींडा बांध रह्या छै। तळाव भरयो छै। एकण पाळ तो भंवर श्रापका साथ सूं ऊभी छै नै सामली पाळ गुलाबां श्रापकी सायणियां कनै ऊभी छै नै दोनूं कांनी चंपा का रूंखां हींडा बांधिया छै। सु वारी वारी हीडै छै। जितरैक उतरादी घटा उठी। सु स्यांम घटा बण रही छै। गेहरो गाज रह्यो छै। बीजळीयां सलाव कर रही छै। सु कामलियां नांखती घटा ऊंची चढी नै दिन पिण घड़ीक रह गयो। वै घटा भारी घणी चढी, जिण सूं हाथ नै हाथ न सूझै छै नै बीजळीयां रा चमतकार सूं निजर श्रावै छै। सूं श्रठी सूं तो भंवर हीडै छै नै उठी सूं गुलाबां हीडै छै।[2]

बात की मंद गति में वर्णन का कुछ विस्तार रहता है। अनेक बातों में यह विस्तार विशेष रूप से स्थान स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। कई जगह वर्णन के साथ अलकार प्रयोग ने बात की गति को और भी मंद कर दिया है।

मानवीकरण

राजस्थानी बातों में अनेकशः पशु-पक्षियों आदि के मानवीकरण का विधान ग्रहण किया गया है। यह विधि कथासाहित्य में पुराने समय से चली आ रही है। इस से कथा में एक विशेष प्रकार की रोचकता आती है। बालोपयोगी कहानियों में जहाँ पशु-पक्षी एवं पेड़ पौधे तक पात्र रूप में प्रकट होते हैं, वहाँ उनका मानवीकरण कर दिया गया है। अन्य कहानियों में भी यह शैली अपनाई जाकर उन में नवीन ही वातावरण उत्पन्न कर देती है। कई बातों में इस शैली के सुन्दर उदाहरण हैं। एक प्रसंग देखिए —

मूंगीपटण सहर। गंगा रै उपकंठ बांमणारथां दावड़श्रां रमतयां हुतयां। एकै ठोड़ देखै तो सरप एक सेखड़ खड़ो हूवो छै, डोलै छै। ताहरां छोकरया देखि अर नाठ्यां। एक छोकरी कुंवारी ऊभी ही ज रही, साप नुं देखण लागी, भली भांत सांप जोयो। सांप री छोकरी सुं दृष्ठि पड़ी। छोकरी हो परही गई। कितरै हेकै दिने छोकरी रो पेट वधीयो, टाबर फुरकण लागो।[3]

प्रस्तुत प्रसंग का सर्प नाग जाति के व्यक्ति का स्थानीय माना जा सकता है।

---

१. रा. सा. सं., भाग २, पृष्ठ ७४-७५ २. गुलाबां भंवर की बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

३. विक्रमादित्य सालिवाहन री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

भारतीय कथासाहित्य में इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। मानवीकरण में पात्र का चित्रण उसकी स्थिति एवं रूप के अनुसार ही होता है। अतः सर्प और मानवी के सम्बन्ध मे 'दृष्टिगर्भ' अभिप्राय का प्रयोग हुआ है, अन्यथा इसकी आवश्यकता ही न थी।

इसी प्रकार मानवीकरण का एक अन्य उदाहरण देखिए —

अर सूर्य तांई पण पोहच नही। अर हुं तो चाकरी समुद्र री करीस। तद भो तो चालीयो चालीयो कितरै हेकै दिने समुद्र उपर आयो। तद रजपूत विचारी, जु हमें तो अठै वैठा कासुं करां ? तद भो तो उठै घोड़ो वाहिर राख नैं आप समुद्र मांहे पोहतो सो कूदीयो। तद सांइ री ऐसी इग्या हुई, जु भो आगै आवै तो कासूं ? आगे मारग छै। तद मारग मारग चालीयो आयो। देखै तो कासूं ? वडो सहर छै। सो सबै महलाइत सोनैं री छै। तद भो चलाइ नैं दरबार आयो। तद दरबारी भीतर जाय नैं समुद्रजी नुं गुदरावी, 'जु महाराजा, भोर मृतलोक सुं एक मांनवी आयो छै। सु दरबार वैठो छै।' तद समुद्रजी कही, 'तेड़ावो।' तद रजपूत नूं दरबारी भीतर ले जाय नैं समुद्र रैं पार्य घातीयो। तद समुद्रजी पूछी, कही, 'रे रजपूत, तूं अठै क्यो आयो छै ?' तद रजपूत आपरो बात हूं ती, सो माड नैं सर्व कही। तद रजपूत नुं समुद्रजी चाकर राखीयो।[1]

स्पष्ट ही इस प्रसंग के 'समुद्रजी' एक महाराजा के रूप में हैं। उनका सारा ठाठ एक बड़े राज्य के अनुसार है। बात में मध्यकालीन वातावरण उतर आया है। अन्यथा यह तो सुप्रसिद्ध 'ढपोरशंख' वाली कथा है। उसमें ब्राह्मण है, जो बात में बदल कर राजपूत बन गया है और नौकरी की खोज मे निकला है। बोलचाल में बहुत बड़े घराने को समुद्र कहा भी जाता है।

प्रतीक-विधान

बातों में प्रतीकात्मक शैली भी ग्रहण की गई है। राजस्थानी की 'डाढाळो सूर' विषयक बात अत्यन्त प्रसिद्ध है। उसका प्रमुख पात्र एक शूकर है। स्पष्ट ही वह एक शूरवीर का प्रतीक है। पूरी बात मे शूकर-जीवन की सीमाओं को ध्यान मे रखते हुए उसका चरित्रचित्रण हुआ है। देखने में वह एक शूकर प्रकट है परन्तु उसका अभिप्राय एक स्वाभिमानी एवं आत्मत्यागी विकट योद्धा से है। उसका पूरा परिवार ही तदनुरूप चित्रित हुआ है। राजस्थान में इस प्रकार के योद्धा न जाने कितने हुए हैं। 'शाको' करके समाप्त होने वाले नर वीरों का जीवन ऐसा ही होता है। बात का शूकर मर जाता है परन्तु अपनी आन को नही छोड़ता —

तद भूंडण कही, 'आप नुं काम आयां पाछै जें म्हारो पाछो करै तो कीसूं करां ?' तो दाढाळो कही, 'मैं राव नूं इसा हाथ दिखाया नहीं जो थारो पाछो करै। मैं धणी

1. ठग राजा री बात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

ज्यान दीवी छूं। श्रौर कदाचित पाछो करैं, वडै चोल्हर रै माथै तिणी मेल्ह जायजै। फेर फौज पड़ै तो बीजै रै माथै तिणी मेल्ह जायजै। फेर भी जे ग्राय लागै तो चोथै रै माथै तिणी मेल्ह जायजै। श्रौर पाछै भी जे लालच पड़'र पाछो हो करै तो पांचवै रै माथै तिणी मेल्ह तूं श्ररबद री थेह जाय लीजे।'[1]

वर्णनात्मक-अभिप्राय

वर्णनात्मक अभिप्राय के स्पष्टीकरण हेतु निम्न वक्तव्य ध्यान में रखने योग्य है —

'साहित्य के क्षेत्र में अनुकरण तथा अत्यधिक प्रयोग के कारण प्रत्येक देश के साहित्य में कुछ साहित्य सम्बन्धी रूढियां बन जाती हैं और उनका यांत्रिक ढंग से साहित्य में प्रयोग होने लगता है। इन सभी रूढियों को विद्वानों ने साहित्यक-अभिप्राय (लिटरेरी मोटिव्स) के नाम से अभिहित किया है।.........यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कला में अभिप्राय कोई काल्पनिक अथवा वास्तविक वस्तु होती है, जिसका यों ही अलंकृति मात्र के लिए प्रयोग किया जाता है।.........काव्य में अभिप्राय मुख्य रूप से उस परम्परागत विचार (आइडिया) को कहते हैं, जो अलौकिक और अशास्त्रीय होते हुए भी उपयोगिता और अनुकरण के कारण कवियों द्वारा ग्रहीत होता है और बाद में चल कर रूढि बन जाता है। इसके साथ ही साथ एक दूसरे प्रकार के 'अभिप्राय' भी प्रत्येक देश के साहित्य में प्रचलित हो जाते हैं, इन्हें विद्वानों ने वर्णनात्मक अभिप्राय (डिस्क्रिप्टिव मोटिव्स) कहा है। इनका भी मुख्य कारण अनुकरण ही होता है। भारतीय साहित्य में इस प्रकार के अभिप्रायों की प्रचुरता है। संस्कृत के कवि-शिक्षा सम्बन्धी ग्रन्थों में इनकी एक लम्बी सूची दे दी गई है और उनके आधार पर बाद का बहुत अधिक साहित्य भी निर्मित हुआ है।[2]

राजस्थानी बातों में प्रयुक्त वर्णनात्मक अभिप्रायों के कुछ चुने हुए नमूने देखिए —

१. वीर का व्यक्तित्व

(क) सो बड़ा सूर, धीर वीर राजपूत, चौसठ आखड़ी निबाहणहार, खाग त्याग पूरा, काछ-वाच निस्कळंक, सरणाई साधार, परभोम-पंचायण, पार की छटी जागै, इण भांत रा दातार जूंझार।[3]

(ख) साखि राठौड़, नीबो सिवालोत, लाखां रो लोडाउ, बडो झोकाऊ, सैणां रो सेहुरो, दुसमण रो साल, जातां-मरतां रो साथी, लाखां रो लहरी।[4]

(ग) राव रणमल नागोर सो छुडीया थका आडवळै रै कांठै रह्यो, जिको ऊडणो हींदू,

---

१. रा. बा. सं. पृष्ठ १४३ २. पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढियां (ब्रजविलास श्रीवास्तव) पृष्ठ २०
३. रा. बा. सं., पृष्ठ २३५ ४. रा. बा मु. पा., पृष्ठ ७१

बावनो चनण, कस्तूरीयो मृग, आलीणी महिरांण। प्रभाते भोज करे, आथण भूल जावै। आथण भोज करै, प्रभात भूल जावै।[१]

उपर्युक्त उद्धरणों में वीर के व्यक्तित्व का गजब का चित्रण हुआ है, जो बातों में अनेकशः देखा जाता है।

२. युद्ध

(क) इण भांत तरवारीयां रा बाड टूटै छै। रीठ वाज रहीयो छै। रावत नै कुंवर आय मुहमेळा हुवा छै। अठै कुंवर अखे नूं बरछी बाही, तिका छाती मांहे गयी पागड़े तणै हुय नै, तिका सिलह दगली तोड़ बगतर तोड़ पेलै पार जाय नीसरी। सु कुंवर बरछी काढी। सु बरछी सवो लागो घोड़े रे मुहड़े आगै आय पड़ीयो।[२]

(ख) वीरो आगै आवतो हुंतै। तिण उपर सातल टूट पड़ियो। तरगस महां तीर काढ नै वीरै री छाती मांहे दीनो। सिलह पो छाती मांह पैलै पार जाय नीसरीयो। वीरो मारीयो नै फौज भागी।[३]

(ग) इतरो सुणीयो। ताहरां मींढाखांन घोड़ नूं ताजणो वाह्यो अर घोड़ो चालीयो। नारांइणदास पिण घोड़ नुं ताजणो वाह्यो अर घोड़ो चालीयो। पिण बीच घटै नही। वैवे ऐराकी, बीच मिटै नहीं। नारांइणदास जांणै जु बरछी सुं मारू'। कोस २ गयो। ताहरां नारांइणदास राखि घोड़ा ऊभो लगामी री डोर तरगस री कूंट सुं बांधि नै उलाळसी बरछी वाही, सु मीरां री तवो फाड़ि, गात फोड़ि अर आगा बरछी घोड़ा रो कांधो फोड़ि अर पगां बीच जाइ नीसरी।[४]

उपर्युक्त उद्धरण दो वीरों के पारस्परिक युद्ध से सम्बन्धित हैं। राजस्थान के मध्यकालीन जीवन को देखते हुए इस प्रकार के 'अभिप्राय' का बातों में अनेकशः प्रयोग स्वाभाविक ही है।

३. विलास-लीला

(क) राजा महीनै मिलसी। कालिह राजा बाहिर हुतो, आज माहि पधारियो। महीनै राजा बाहिर आवै छै। वळे नवो बीमाह करि महल मांहे पधारै छै। सु वळै महीनै बाहिर आविसी। कामेतियां ओपत-खपत सुणि। नवो बीमाह करि अर महल मांहे पधारै। सू यसी भांति नर नामै कोई पंखी ही जावण पावै नही। इसो तालबखानो मंडै छै, घोऊंकार पड़ि रहे छै।[५]

---

१. बात कुंवर रणमल चाडावत री, बा. मू. प. २. वही
३. वात सातल जोधावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
४. बात नारांइणदास मींढाखांन री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.) ५. रा. बा., भाग १, पृष्ठ ८१.

(ख) सिंध देस नेठैकोट लाखो जाड़ेचो राज्य करै। लाखो नवै चांद री नवे चांद बीमाह करै। लाखे रै छाहड़दे पमार परधांन, जसराज डावरोत मासहाई भाई। एक दिन जसराज कहै, 'लाखाजी, मांहीनै रो मांहीनें नवो बीमाह करो, सो मानूं विचार कहो।' ताहरां लाखोजी कहै, 'भाईजी, हूं रूप धापां नहीं।'[1]

(ग) राठौड़ मच कलूर राज्य करै। लहुड़ो भाई चच, सु देस सर्व चच सारै। न्याव तपावत सर्व चच सारै। सु चच चंद्रमा ऊगै नवो, तद बीमाह करै। सु कितरा ही वीमाह कीया। महीने लग ऊवें सुं काम, पछै दीस ही न पूछै। मचरी रांणी दीठी, 'जु द्रव्य तो सारो ही चच खेरू' करै। राजा बोलै नहीं। रजपूत.ण्यां बैठ्यां परणीजे। उवां रा मच बोवें। कही कैत रहै, ईयां यु समझाईजे सो भला छै।[2]

(घ) पुहपावती नगरी हिवारू पोहकरणा कहीजे। ये नगरी मांहे राजा परूरवा राज्य करै, वडी राजधानी। राजा ईयैं विध राज करै—मास एक ईदर मोहल मांहे रहै। मास एक पूरा हुवै, ताहरां बाहिर आवै। नवै बीमाह करै। कामेतीयां रो खरच नांवो सुणै।[3]

(ड़) बागवान री पुकार दरबार पहुंची, सो दिन तीन पहला वडो राव बीसलदे जनाने दाखल हुवो। घोड़ां रो रातब दांणो, महीनदारां रो महीनो, मोदीखांनै री जिनस और ही सारा लोगां रो सरंजाम-सरतंत कर घोड़ा नूं खुद रै खेत भोळाय हाथियां नूं गुळवाड़ री वाड़ भोळाय आप गेरमहलां रहियो। देस रो काम सारो मुतसदियां नूं देय आप जनांने मांहो एस करै। अमला में सदोरो रहै। ऊगै आंधा री खबर नहीं।[4]

उपर्युक्त उद्धरणों में राजाओं की विचित्र विलास लीला का प्रसंग आया है। उत्तरकाल में अनेक राजस्थानी राजाओं का व्यक्तिगत जीवन इस रूप में भी रहा है, जो वातों में एक 'अभिप्राय' के रूप में चल पड़ा है।

साहित्यिक अभिप्राय

साहित्यिक अभिप्राय की परिभाषा ऊपर दी जा चुकी है। वातों में प्रयुक्त ऐसे अभिप्रायों की संख्या बड़ी है। यहां इस प्रकार के दो अभिप्रायों के कुछ उद्धरण दिये जाते हैं —

---

१. वात लाखै फूलाणी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
२. वात चच राठोड़ री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. वात मानिग छाबड़ा री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. रा. वा. सं., पृष्ठ ११२

१. एकलंक माथे उदक

(क) आप पण भटयाणी अठे पण कीयो। पण कर सूता, कह्यो, 'एकलंका माथै उदक, अन्न खावण।' दिन तो सारो ही पोढियां रह्या। रात्रि आधी गई।[1]

(ख) चलू करि पाणी नै कहीयो, 'जे उवै घोड़ा आणां तो एथ आइ नै जीमां, नहीं तो एकलंक माथै उदक, आवण।' दोनुं चितोड नुं चालीया।[2]

(ग) तठै रणमलजी नेम घातीयो— 'एकलंक माथै उदक, ईंदां नै काढ्यां बिना गयो धान न खावूं।' इम कहि सर्व साथ एकठो कीयो ही नहीं, आप रा ही ज घोड़ा पचास.........चलाया।[3]

(घ) ताहरां कह्यो, 'राज, सूडा काम आया।' इम सुण नै जैंतमाल सोंस खाधो, '(ए) कलंक रै माथे उदक। सूडां कांम आया, मोनुं आपै जावण।'[4]

(ङ) अतरै वासै खेह उडी। कह्यो, 'राव वाहर पोहंती।' ताहरां राव रणमल बोलीयो, 'एकलंक माथै उदक।'[5]

(च) कयो, 'धीरा, धीरा, मूळपसाव आयो।' आवतो सुण नै खोखर पागड़ो छोडीयो। 'मूळपसाव आवै तो एकलक माथै उदक, मूळपसाव कनै आगै खिसण।'[6]

उपर्युक्त उद्धरणों में प्रयुक्त 'एकलंक माथै उदक' का अर्थ है 'शिव के शीश पर जल'। किसी कार्य अथवा वस्तु का त्याग करने के प्रसंग में इसका प्रयोग होता है। यह शपथ-वचन है। शिव को भेंट किया हुआ निर्माल्य ग्रहण नहीं किया जाता। यह लोक-परम्परा है। उसी के अनुसार बातों में इस अभिप्राय का प्रयोग चल पड़ा है। यह दृढ़ प्रतिज्ञा का सूचक है।

२. सात-वीस

(क) ताहरां दूहो चारण सीखि नै राव चवडै आगै गयो। उवै जाइ नै सात-वीस भैंस्यां लियां।[7]

(ख) तिको सात-वीसो साईन्यां डावड़ी बरस १५-१६ मांहे थी, तिकै पकड़ि नै पाछो ही ज बूहो।[8]

(ग) तद कुंवर साथै सात वीस सावंत छै नै मुहतो मनखुसाल साथै छै।[9]

(घ) अठै रावतजी कागद वाच नै सीसळां रै सात-वीस गांव मांहे तेड़ो मेलीयो।[10]

---

१. देपालदे सोढै री वात, (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. चौबोली, पृष्ठ २७-२८
३. वात राव रणमल री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ४. वात जैंतमाल सलखावत री, बा. सू. प.
५. वही ६. वात खोखर छाडावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) ७. रा. वा., भाग १, पृष्ठ ६१.
८. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ५८ ९ वात रतन मजरी री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
१०. राजा नरसिंघ री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

(ङ) उटे वडी लड़ाई हुई। पाबूजी काम आया, सात-वीस थोरीया.सो।[1]

(च) हामासर पाहुवा री वेसणो, सात वीस गावां सूं।[2]

(छ) सोहड़ां सात बीसांह, करणी एकण कर चीयो।
पायौ पूगळ काह, साथ री दध मेंहासध।।[3]

यहाँ 'सात-वीस' का प्रयोग १४० (७ × २०) की संख्या के लिए हुआ है। राजस्थान में बीस के हिसाब से गिनती करने की प्रथा अब भी गांवों मे प्रचलित है। सात की संख्या शुभ मानी जाती है। अतः इस अभिप्राय का बातों मे प्रचलन हुआ है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

सूक्तियां

कहीं कहीं बातों में सूक्तियों का प्रयोग भी हुआ है। कुछ गद्यात्मक सूक्तियों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. संसार मांहै बेटा समान कांई वस्त नहीं।[4]

२. दुसमण नेड़ा राखीयां, तिकां घको राखौ।[5]

३. धणी री पांणी ईटजे, तठै आप री लोही रेडजे।[6]

४. सत री बांधी लिखमी छै।[7]

५. माया री तौ विचार इम छै, आवती नूं वरस लागे पण जावै तद एकै दिन जावै छै।[8]

इस प्रकार की सूक्तियां अनेक मिलती हैं। इनमें लोकानुभव समाया हुआ है। ये उपदेशात्मक वाक्य हैं। इनके द्वारा बातों की शैली में नया ही रंग भरा हुआ दिखलाई देता है।

बातों में पद्य का स्वरूप

राजस्थानी बातों को भाषा-शैली पर विचार करते हुए उसके गद्य-विधान पर

---

१. वात फर्मे धोरधार री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.) २. वात पाहुवा री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)
३. वात, सेखे नें भातो आयो (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.) ४. रा. वा. सू. प., पृष्ठ १
५. वात राजा नरसिंघ री, अप्रकाशित ६. भाटी वरसे तिलोकसी री वात, बा. मू. प.
७. छोटी वात (अ. सं. पु. बी.) ८. वात ठकुरे साह री (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)

विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता है। इस विषय में शब्द-प्रयोग एवं वाक्य-रचना की विशेषताएं सामने आती हैं। साथ ही मुहावरा तथा कहावत का प्रयोग भी इसका अंग है। सबसे ऊपर भाषा की अभिव्यञ्जनाशक्ति है, जो अर्थ की मार्मिकता, विशदता और गम्भीरता का प्रकाशन करती है। इस अध्याय में इन सभी चीजों पर विचार किया जाता है।

शब्द-प्रयोग

राजस्थानी बातों में बोलचाल की भाषा प्रयुक्त हुई है और सरलता उसका अपना गुण है। उसे ऊपरी चेष्टा द्वारा जटिल नहीं बनाया गया परन्तु सजाया अवश्य गया है। उसमें ठेठ राजस्थानी का ठाठ देखते ही बनता है। वहाँ ऐसे शब्द प्रचुरता के साथ प्रयुक्त किए गए हैं, जो राजस्थानी जनजीवन के विशेष रूप से परिचायक हैं। इस दिशा में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं।—

१. नित्य गोठां (प्रतिभोज) गुघरियां बागां साहना सार्थ करै छै।[1]
२. रावळां (अंतःपुर की महिलाएं) कहै छै, भलां करो जो मारु १ तो रहो।[2]
३. आप भी हो ज रूप करि भैंसां रै खाडू (भैंस रखने का स्थान) साथे जाइ पैठो।[3]
४. म्है सरबै मांहे ठकुरो साह छै, तिण रा वांणोत (मुनीम गुमाश्ते आदि) हां।[4]
५. मुहता, मैं रतनमंजरी थांहरै खोळै (गोद) घाती छै।[5]
६. वधाई वहिची, दसुठण (पुत्रजन्म के उपलक्ष्य में प्रीतिभोज) हुवौ।[6]
७. तो उण री बायर गाघराणी (पति के मरने या छोड़ देने पर दूसरा सम्बन्ध) करै।[7]

राजस्थानी बातों में इस प्रकार के भी अनेक शब्द हैं, जिनका विशेष अर्थ में प्रयोग हुआ है। उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. तीमै राजा रै बेटै नै परधान रै बेटै में बडो संतोख (प्रेम) छै।[8]
२. चारण वेहसूर जात रो बीठू, तिको अठै देवायत रै गाम रहै, गांव सांसण (दान) रो।[9]
३. वळै रीझ (प्रसन्नता की भेंट) दे सीख दीधी।[10]

---

१. वरदा भाग २ (गाग्यासर), अचल री बात   २ वही, मोमल री बात
३. राजा भीम री बात, वरदा ७/३   ४. ठकुरै साह री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
५. रतनमंजरी की बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.). ६. मारू सूपारी री बात, वरदा ७/१
७. रा. बा. सू. पा., पृष्ठ १२७   ८. राजा रै कुंवर री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
९. चारण वेहसूर सोनड़ी री बात (हस्तप्रति अ. जैं. ग्रं. बी.)   १०. रा. बा. सू. पा., पृष्ठ ३०

४. तिण सूं राज पधारिया, बडौ अवसाण (कार्य-सम्पन्नता) पुगौ ।[१]

५. चांपै भाट सूं वीनती कीधी—एक 'कन्या पूतळी करि पाळी छै। थे कबिता (कवि) छो, घणो जायगा वेसौ छो।[२]

६. अजंसी रै केसौ प्रोहित मानीजै, बडी मया (कृपा) राखै। मोटौ आदमी, दरबार में घणौ कारण (सम्मान)।[३]

७. थां उपरै मालजी नै जगमाल चूक (गुप्त षड्यन्त्र) तेवड्यौ छै।[४]

८. तद गोगादेजी कह्यौ—'मांहरो कोई केड़ायत (वंशज) होय, तिको पांचे-पचासे दिन वैर लै।[५]

९. तिको राजा राज तो आंख्यां संजम (अंधा) छै पिण हीया रा नेत्र खुल्या छै।[६]

१०. रावळा छोरू छां, म्हारौ उपर (सहायता) घणौ घणौ कीजै।[७]

११. जितरै उळगाणी (प्रवासी की पत्नी) जागी।[८]

१२. पाछिली राति थकां राजलोक (राजकीय महिलाएं) कुंड नाहण गयौ।[९]

१३. ताहरां चोध कहै—'रजपूत छां, सु रजपूत किसौ जिण नुं एक ही बात री आखड़ी (किसी काम को न करने की प्रतिज्ञा) नहीं।[१०]

बातों की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों को बचाया नहीं गया है परन्तु उनका प्रयोग करके भाषा को विशेष ललित एवं साथ ही साहित्यिक बनाने की चेष्टा हुई है। इस सम्बन्ध में उदाहरण द्रष्टव्य है—

१. तरै अचळदासजी कहियौ, 'उमां किसड़ी है?' तरै भीमा कहियौ, 'असमांन ऊनरी इन्द्र री अपछरा, सरोवर रौ हंस, सरद रौ कमळ, वसंत की मंजरी, भाद्रवा की बादळी, वादळा की बीज, मेह को ममोळो, बावनौचदण, सोळमौ सोनां, रायकेळ को ग्रभ, लक्ष्मी को अवतार, प्रभात को सूर, पूनिम को चांद, सरद को क्रिया, सनेह की लहर, गुण को प्रवाह, रूप को निधान, गुणवंत की लूस, जोवन को पेखणौ, इसी उमां सांखुली छै। तिका जिण रावजी घणा पुन्य किया हुसी अर परमेश्वर भजियौ हुसी, तिको पावसी।[११]

२. एकदा प्रस्तावै आबू विषै विदग्धमण इसै नामै सूवौ रहै महाचतुर, ग्याता;

---

१. वही, पृष्ठ १७०. २. रा. प्रे. क., पृष्ठ १३०.
३. केसे उपाध्याये री बात (हस्तप्रति अ. जे. ग्रं. वी.) ४. वीरमदे सलखावत री बात, वीरवाण परिशिष्ट
५. गोगादे वीरमोत री बात, वीरवाण परिशिष्ट. ६. रा. वा. सू. पा., पृ० ५.
७. राजा नरसिंघ री बात (हस्तप्रति अ. जे. ग्रं. वी.) ८. रा. भाग १, पृ. ५६.
९. राणै रतनसिंह सूरिजमल री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
१०. राव किसन कानड़ री बात (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. वी.) ११. अ. खी. व., परिशिष्ट

सर्वशास्त्र प्रवीण। शास्त्र जोवतां सांभळतां वैराग ऊपनो, जो अस्त्री संसार बंधन नो कारण छै। इसो जाण स्त्री रो त्याग कीनो। अरु अचळेस्वर रै विषै मदनमंजरी नाम सारका रहै सर्व विद्या री ग्याता, चौसठ कळा जांण। अनेक शास्त्र पढ़तां मन में वितर्क ऊपनो। पुरूष रो त्याग कीनो।[1]

राजस्थानी वातों में अरबी-फारसी के भी वे शब्द ग्रहण किए गए हैं, जो जन-साधारण में प्रचलित हो चुके हैं। इसका एक कारण राजस्थान के रजवाड़ों एवं दिल्ली के मुगल-शासन का सम्पर्क भी है। इस प्रकार के शब्द प्रायः राजस्थानी मे ध्वन्यात्मक-परिवर्तन के साथ आए हैं। उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. राजा जगदेव रो बडो कारण कीयो। घणो आदर दे नै वास राखीयो। घणो रिजक (मूल अरबी रिजक) दीयो। जगदेव दरबार (मूल फारसी दरबार) जावै, सु राजा रो मुजरो (मूल अरबी मुजरा) करै—दोनुं वखत (मूल अरबी वक्त)। ताहरां प्रभाति रै मुजरै राजा रै जावै; ताहरां राजा नुं बेदल (मूल फारसी बे+दिल) देखै पण पूछै नही।[2]

२. हिवै लागै राण्यां जाण्यो मरदाने (मूल फारसी मर्द) छै, मुंहता उमराव (मूल अरबी उमरा) जाणै जनाने (मूल फारसी जनाना) छै। इम दिन तीन हुआ। चौथै दिन ऊगै पूछियो, 'मांमोजी दरबार पधारियां नै दिन तीन हुवा छै सु कठै छै?' तरै किण ही कह्यो, 'जनानै गैरमैहलां (मूल अरबी ग़ैर+महल) में छै। तद नाजर (मूल अरबी नाजिर) मेलि खबर मंगाई। दिन चौथो छै मांहे पधारियां नै, इसो नाजर आय नै कह्यो। जरै खवास (मूल अरबी खवास) नै कह्यो, 'महाराजा कठै?' तद खवास कह्यो, 'महाराज नै साह घोड़ा फेरण नै विगर (मूल अरबी वग़ैर) हथियारां सिधाया छै।[3]

राजस्थानी कवि के समान ही यहाँ का बात-लेखक भी शब्द-प्रयोग के लिए सर्वथा स्वतन्त्र प्रतीत होता है। यह राजस्थानी भाषा की एक अपनी विशेषता है कि यहाँ एक ही शब्द अनेक रूपों में प्रयुक्त मिलता है और उसके सम्बन्ध मे व्याकरण का कोई बन्धन स्वीकार नहीं किया गया है। इस प्रकार शब्दों के रूपवैविध्य का एक कारण स्थानभेद के अनुसार उच्चारण की भिन्नता भी माना जा सकता है। उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. मास एक पुरा हुवै, ताहरां वहिर आवै, नवं वीमाह करै।[4]

२. सु लखपती री वहू मर गई अर लखपती बीजो वीवाह कीयो।[5]

---

१. द वि. पृष्ठ १-२ २. पंवारवंश दर्पण, परिशिष्ट २, (जगदेव पंवार की बात)
३. रा. बा. सू. पा., पृष्ठ ११२-११३ ४. नानिग छाबड़ा री बात, बस्ता ७/२
५. हंसराज बछराज री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी)

३. राजा कहै, 'म्हारो विमाह कोई करणो छै नही ।'[1]

४. ताहरां राजा रै विवाह री साजत हुई ।[2]

५. ठकुरै वीजो व्याय कर परणीजीयो ।[3]

६. फेर जोख छै तो वोहा बीजो जायगा म्राछी देख करो ।[4]

७. ब्याह हुवो, गोठ जीम्या ।[5]

यहाँ एक ही शब्द 'विवाह' के विभिन्न सात रूप दिखलाए गए हैं। इसी प्रकार अन्य शब्दों का भी राजस्थानी बातों में अनेक रूपों में प्रयोग हुआ है।

बातों में अनेकशः वाक्यों में शब्दों की 'दुसरावरण' (पुनरावृत्ति) देखी जाती हैं। इसका कारण विषय का क्रमिक-विकास, प्रभाववृद्धि अथवा विशदता-प्रकाशन रहता है। उदाहरण —

१. उतरि नै सिरहाणेहुँ कूंच्यां लीयां। लै नै ताळा उखेळीया। उखेळि नै घोड़ी आगै गयो। दे लगाम नै खोसि माची नै घोड़ी बाहिर काढी। काढि नै अपूठा किवाड़ जड़ीया नहीं घोड़ी असवार हुइ नै बजाया। घोड़ी लै नै देखतां आगै वहीर हुवो।[6]

२. एक दिन रो समाजोग छै। मेलो काछी खान जाति चढि नै खड़ियो। एकल-असवार चढि नै खड़ियो।[7]

३. तरै सिघराव कह्यो, 'थे उघाड़ै माथै ऊपरि वड़ किण नै देखि नै खेंच्यो नै जीमणै हाथ सूं जगदेव नै प्रह्लाव दीधो, तिको वड़ किए नै देखि नै खेंच्यो।[8]

४. हाथी नूं जखमायल कर परलै पासै निसरियो। हाथी रै पूठै सवार खड़ा था, तिकां नूं तूंड सूं नाखतो थको, घायल करतो थको परलै पासै पार हुवो।[9]

५. देखि अर सिकार नुं चलता हूवा। खातिण खातिण रै मारिग गई।[10]

अनेक राजस्थानी बातों में पुराने समय के शब्दान्त 'ए' और 'श्रो' भी चले आते हैं —

'इतरै मांही डाढाळो नजर ऊंची नूं करी, फौज नजर मांकर काढी। सो इतरा हाथियां पूठै राव रो हाथी नजर में कियो, ठावो कियो। फेर उठा सूं उठावणी कीनी। सो सारा 'आयो आयों' करै छै। इतरै तो आंण भेळिया सो लोग सारो छोट छींट हुई

---

१. चौबोली, पृ० ४. २. वही, पृ० २२. ३. ठकुरै साहरी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
४. कुंवरसी सांखलै री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)- ५. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ७६.
६. चौबोली, पृ० ३१-३२. ८. रा. वा., भाग, १, पृष्ठ ५८. ७. रा. वा. सू. पा. पृष्ठ ४१
९. रा. वा. सं., पृष्ठ १४२. १०. बात राणै खेतेरी (हस्तप्रति अ. जै. पु. बी.)

गयो । हाथियां आय वागो, सो ऊपरां सूं तीरां रो मारको होवण लागियो । सो कितरा ही तीर ढील में गरक हुआ छै । सो इतरी मार खावतो हाथी लोप पाधरो राव रै हाथी कन्है आयो । सो राव रा हाथी रै पाछलै पग इसो खग लगायो सो हाड जाय रड़कियो ।[1]

बातों में स्त्रीवाचक शब्दों का प्रयोग भी कई जगह बहुवचन में विशेष रूप में हुआ है। ऐसा प्रयोग स्थान भेद का सूचक है —

१. बामणयांरयां दावड़यां रमत्यां हुत्यां । एकै ठोड़ देखै तो सरप एक सेखड़ खड़ो हुवो छै, डोलै छै । ताहरां छोकरयां देखि अर नाठ्यां ।[2]

२. तीयें गामरयां छोकरयां एकठ्यां होय नै छांणा वीणण गयां । उथ जंगल में जाय नै एक कैर रै रूंख तळै बैठ्यां छोकरयां रामत लाग्यां ।[3]

३. सु रबारी जुवान । सिणतरा री डोळ कीवी छै । उठै भीड़ सो काठी कसी छै । लांबीयां कावां हाथ छै । काठीयां गातरीयां मारीया छै । तिकै इसड़ीयां लीयां हुंतीयां, तिकै वेलावो जोधपुर ले जाय उभीयां कीयां । परभाते रावजी सांढीयां दीठीयां । ताहरां कहण लागा—'सांढीयां किणीरीयां रे ?'[4]

राजस्थानी बातों में ऐसे वाक्य बड़ी संख्या में देखे जाते हैं, जिनका प्रारम्भ ताहरां, तरै, तरां, तद, त्यों, जद, सो, पछै आदि अव्यय शब्दों से होता है। ये शब्द बातों के लिखे जाने के साथ ही उनके कहे जाने की ओर भी स्पष्ट संकेत करते हैं। उदाहरण इस प्रकार है —

१. ताहरां गायां राणै रे आदमीए रातै कोट में रोकीयां । ताहरां देवधरम राजा चढीया । ताहरां लड़ाई हुई । राणै रा लोक मारीया । गायां छुडाया । राणो भागो । ताहरां आप तो भागो पाछे न जावै । ताहरां मुंणै नुं कह्यो, 'मुंणा ईयै नुं पकड़ि ल्याव ।' ताहरां मोणो राणै नुं पकड़ि ल्यावो । राणै नुं मारीयो । आप पाछा आया ।[5]

२. तद जगदेव राति चौकस रहे । तद एक दिन जगदेव राजा रै बाग में जाइ बैठो । चहवड़ै रै ऊपर घोड़ा रा पग च्यार ऊभा दीठा । इसड़ा पैर घोड़ै अवर रा नहीं । तद माळी नै तेड़ि पूछीयो—'रे, अठै कोई घोड़ो ही आवै ?' तद माळी कह्यो—'मनै ईयै बात री खबरि पड़ै नहीं ।' तद राति जगदेव उठै ही ज रह्यो ।[6]

३. जठै गांम थी कोस एक उरै पको तळाव थो । जठै खितरी बोल्यो, कयो, 'ठाकुरां, अठै रोटी-पाणी करै जाजै तो पछै गांम माहे गया आछा है । जद कुंवरपाल कयो, 'अवल

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ १४१-१४२ २. वात विक्रमादित्य सालिवाहण री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. मंडाण गामरै पीर री वात (हस्तप्रति अ. सं. पु. बी.)
४. वात सातल जोधावत री (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
५. रा. सा. स. भाग २, पृष्ठ १४ ६. पं. वं. द., परिशिष्ट २, पृष्ठ ४१

वात है, रोटी करो।' जद खितरी तळाव उपरै वैठै नें साजबाज मेल्यो अर रसोई सारू पांणी भरे ले आयो।[1]

४. तरै छोकरी झारी भर नैं ले आई। तिसै बाई पूसळी भर नैं देखै तो पांणी मांहे तेल होज तेल दीसैं। तरै कह्यो, 'हाथ धोय नैं झारी भरी न जाय ?' तरै छोकरी कहीयो, 'बाईजी साहब, कोइक सीरदार सांपड़ै छै। तिण रा तरवाळा आखा तळाव में दीसै छै।' तरै सोनिंगरी कहीयो, 'कठा रो सिरदार छै ? कांई नांव छै ? तूं पूछ नैं आव।'. तरै छोकरी आय नैं पूछीयो। तरै ढोली बोलीयो।[2]

५. रात रै समीयै सींघल आप रै ठिकाणैं पधारीया। त्यों सुपियारदे पिण कपड़ा पेहर अर महल में सींधलजी कन्है गई। त्यों कपड़ां री सुगंध आई। त्यों सिंघल कह्यो, 'आ सुवासनी काहिण री आवै ?' त्यों सुपियारदे बोली, 'राज, मोनूं खबर नहीं।[3]

६. राजा खडगळ खांडणपुर राज करै। तेरै बेटो, तेरो नांम सुजांणकुंवर। सु घो रूप मांटै तो सुन्दर पण रंग सांवळो। तठै ईयै री सगाई कही सहर हुई तिको वडो भोमीयो। तठै राजा खडगबळ आपरां लोकां नें कही, 'जु कुंवर नुं कही रै मणणी घातो।'[4]

७. सो नवाव वादशाह सूं कूक लिखी। इहां रा वकील पण गया। सो मालूम करी। तद जवाव-सवाल सुण नवाव सूं रीस फरमाई और महाराज नूं दीवाण जुल्फकारखां रै तैनात किया। सो जुल्फकारखां बडै मुरतब सूं मुलाहीजे रै साथ महाराज नूं कन्है राखिया। सलाह पूछतो जिण माफक काम करतो। सो महाराज तो इसा हुवा।[5]

८. पछै जितरै जोगी आयो। पछै पदमकळा किंवाड़ जड़ लीयो। पछै जोगी किंवाड़ खड़कायो। पछै कह्यो, 'जु आंखीयो पाटी बांध नै वीणा बाहिर वजाई तो किंवाड़ खोलूं।' पछै जोगी आंखीयां बांध वीणा वजाई। तवै नुं काढ दीयो। पछै जोगी पाटी खोलीयो।[6]

समस्त-पद

बातों में ठेठ राजस्थानी शब्दों का बाहुल्य है, जो अनेक उदाहरणों से स्पष्ट ही है। परन्तु इसके साथ ही वहां समस्त-पदों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। यह प्रवृत्ति भी लोक-व्यवहार के अनुसार राजस्थानी बातों में स्पष्ट हुई है। यहां राजस्थानी बातों में से इस प्रकार के कुछ चुने हुए समस्त-पद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं—

१. तिण रै बेटो एक नाम वीरमती [illegible] ([illegible]) छै।[7]

---

१. रा. वा., भाग ४, पृ० १२. २. [illegible]
३. सुपियारदे री वात ([illegible]) ४. [illegible]
५. रा. वा. स., पृष्ठ १३०. ६. [illegible]
७. रा. व. मू. पा., पृष्ठ ५.

२. चाकर पंचहथियार (पांच हथियार) साथे लीधा।[1]

३. वीटणो उघाड़ें तो माटी-मारचो (पुरुषत्व से हीन) निजर पड़ियो।[2]

४. दातारगुरु (दानियों में श्रेष्ठ) नाम षद्दर्शन (दान लेने वाली ६ जातियां) कहे।[3]

५. सामधर्म (स्वामी के प्रति कर्तव्य) देखि नै सगळा बगसिया।[4]

६. मनुहारे-मनुहारां (अनेक मनुहारों के साथ) जीमिया।[5]

७. धारातीरथ (तलवार की धार, जो तीर्थरूप है) री मौत पाई।[6]

८. अवैधारो बेटी परणाय कन्यावळ (कन्या के विवाह का पुण्य) लै तो बैकूंठ पावै।[7]

९. तेजसी तुंवर आछो देस-रजपूत (श्रेष्ठ राजपूत) थो।[8]

१०. हजरां लेखें गोरां नैणां-सरणे (आंखों के आगे) रही है।[9]

११. थे कहो तो कुटंबजात्रा (परिवार से मिलने के लिए घर जाना) करि आऊं।[10]

ऐसे प्रयोगों में कहावती वाक्यांशों (फ्रेज) की निराली छटा देखी जाती है। ऊपर 'धारातीरथ री मौत' इस सम्बन्ध में एक उत्तम उदाहरण है। यहाँ तलवार की धार को तीर्थ-गंगा के रूप में ग्रहण करके उसके द्वारा जीवनलीला समाप्त किए जाने को पुण्यमयी मृत्यु का उपलक्षण प्रकट किया गया है। इस प्रयोग में मृत्यु को मांगलिकता प्रदान की गई है; जो शूरवीरों का परमध्येय है।

संस्कृत में गद्य का एक भेद चूर्णक है,[11] जिसमें छोटे छोटे समास होते हैं। बातों में कई जगह चूर्णक की छटा दर्शनीय है —

१. राठौड़ सूरो खींवो, कांधळजी रा बेटा, मोहिलां रा दोहिता। सो बडा सूर, वीर-धीर रजपूत, चोसठ-आखड़ी-निवाहणहार, खाग-त्याग-पूरा, काछ-वाच-निस्कळंक, सरणाई-साधार, परभोम-पंचायण, पार की छटी जागे। इण भांत रा दातार-जूंझार।[12]

२. पातसाहां सूं आडो। कंवारी-घड़ा रो लाडो। अड़-संग्राम रो नाटसाल। चक्रवर्ती जिसड़ी चाल। आथरो मांणीगर। खटभाषा रो जांणीगर। दातार-सूर। जळाहळ-नूर। वीराधिवीर। सरणाई-सधीर। आजानेबाह। नारां रो नाह। गज-घड़ा-पोहण। वांका-मेवासा-तोड़ण। जिण पृथ्वी रै ऊपरै बडा बडा जुद्ध कीधा।[13]

कहना न होगा कि उपर्युक्त प्रयोगों ने भाषा की साहित्यिकता में अतिशय वृद्धि की है।

---

१. वही, पृ. २८. २. वही, पृ. २५. ३. वही, पृ. ३०. ४. वही, पृ. ३६. ५. वही, पृ. ५२.
६. वही, पृ. ५३. ७. वही, पृ. ५१. ८. वही, पृ. ५३ ९. रा. वा. सू. पा., पृ. ६०
१०. वही, पृ. १२८. ११. वृत्तं चाल्पसमासकम् (साहित्य दर्पण, ६।३३२)
१२. रा. वा. सं., पृष्ठ २३५ १३. रा. वा. सं., भाग २, पृ १७

मुहावरा

बातों की भाषा में मुहावरों का प्रयोग विशेष रूप से देखा जाता है। फलस्वरूप भाषा में लाक्षणिकता आ गई है और अर्थ का विस्तार हुआ है। मुहावरेदार भाषा का प्रभाव भी गहरा होता है। साथ ही ध्यान रखना चाहिए कि बातों में प्रयुक्त मुहावरे राजस्थानी भाषा के अपने हैं और वे यहां के जनजीवन तथा वातावरण से उद्भूत हैं। मुहावरों के कुछ प्रयोग द्रष्टव्य हैं —

१. आ बात सुण पगां री झाळ माथै गई (सम्पूर्ण शरीर में क्रोध व्याप्त हो गया)।[१]

२. आगलो आस्त्री सूं वाड़ि कांटो मति देज्यो (किसी प्रकार का सम्बन्ध न रहे)।[२]

३. राजपूत बोल्यो, 'महारावजी रो लूण ऊजळो करस्यां (उऋण होंगे)।[३]

४. तरै कंवारजी राम कह्यो (जीवन लीला समाप्त की) जंमो टोकै वैठ्यो।[४]

५. घर वैठां हो बाटी खातां बूजो आवै (अरुचि होती है)।[५]

६. ठांडा पाणी सूं जाण-मतै ह्वै (पूर्ण रूप से समाप्त होना हो), तिको आघो वध नै आवज्यो।[६]

७. सो थे उठीनै सूरचन्द रा झाड़ां खेह लगावण (बुरी तरह अपमानित करने के लिए) नै जावो छो, तो हूं थारो धरम री पीपळी (पुण्य प्राप्त करने की साधन) छूं।[७]

८. म्हारो बाप पेट में मावै नहीं (असह्य है)। म्हारै माथे पाघड़ी छै (इज्जत बनी हुई है)।[८]

९. इतरै फौज देखतां पठाणी रै तो पगां घरटीयां बांधी (चलने में असमर्थ हुए) अर राणी आपरी फौज दाकली।[९]

१०. आप रै सहर मांहै रहै, तिण री चोरी कराई रो कायदो नहीं। वाड़ काकड़ी नूं खावै (रक्षक का भक्षक बनना) तिका बात हो ज हुमी।[१०]

११. खीवसीह रै घर में कयूं देण नूं हुतो नहीं, सु ब्राह्मण नुं दीयो कयूं नहीं। ऊंदरा घर में थिड़ो करै छै (घोर दरिद्रता है)।[११]

उपर्युक्त मुहावरों पर ध्यान देने से विदित होता है कि इन में अर्थ की लाक्षणिकता विशेष रूप से समाई हुई है और ये जनजीवन का चित्र प्रकट करते हैं।

---

१. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ २ २. वही, पृष्ठ ८३ ३. वही, पृष्ठ ९४
४. वही, पृष्ठ १२२ ५. वही, पृष्ठ १२४ ६. वही, पृष्ठ १३४ ७. वही पृष्ठ १६४
८. पीठवै चारण री वात, वरदा ७/३ ९. राजा नरसिंघ री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. वी.)
१०. खापरै चोर री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
११. खेतसी सीसोदीयो रावत रतनसिंह रो बेटो चोड़ावत हैं री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

कहावत

मुहावरों के समान ही राजस्थानी बातों में कहावतों का प्रयोग भी अनेकशः देखा जाता है। कई बार तो किसी विशिष्ट कहावत का उद्गम भी बात में मिल जाता है। साथ ही बात में इस तत्व का प्रकाशन तक कर दिया जाता है, जो स्वयं शोध-प्रवृत्ति का सूचक है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. तद डावो विनायक (गधो) बोलियो छो, तिण नै पकड़ मंगायो अर डांभ दीन्हो। तिण दिन रो ओखाणो (कहावत) छै —'ऊंट खुड़ावै'र गधा डांभीजै।'[१]

[आधुनिक रूप—ऊट खोड़ो होवै अर गधेड़ै के डांभ देवै।]

२. तरै लाखेजी कह्यो, 'आ हीरला वचन हुवो—वडेरा नै गुणती में घात नै सार्थ लीयो।[२]

[आधुनिक रूप—बूढे-बडेरै नै बोरी में घाल कर सागै लेणो ई चोखो।]

३. अंधारवन सूं बाहिर आया, तरै सुरज री किरण सूं कांबां भळहळाट करण लागी। कांबां सोनै री हुई। तठा सूं तलाक वचन छै—लाखेजी वाळी कांबां कहीजै,छै।[३]

[आधुनिक रूप—लाखेजी वाळी कांबां बहगी।]

४. उवै मरद री पाघ ल्यावै तो देवड़ा सारीखो मरद धरती मांहै कोई नहीं। तो आद रो ओखाणो छै—पडा वडी को डहरू वाजै।[४]

[आधुनिक रूप—बडाबडी का डेरू बाजै।]

५. सु देवड़ो पैजार कने आय ने कहण लागो, 'थारी पैंजारां मैं सो उपड़ै नही।' तिको ओखाणो तद रो छै।[५]

[आधुनिक रूप—जूती भी कोनी उठा सकै, मुहावरा]

इनके अतिरिक्त कहावतों का प्रयोग-द्रष्टव्य है —

१. तरां जैतसी मन मांहै सोच कीधो, 'जे म्हांनै तो चारण, भाट, बांमण, सवासणी रो दाण रो पण छै—पिण वेळ्यां देख नै विणजै, सो वाणियो नहीं गिवार।[६]

२. कड़लोला कीया नै कह्यो छै—जीम्या जद ही जाणिये, दुक हेक चाखो तांणियै।[७]

३. ताहरां कह्यो—जी, बोलीजै हळै, सु लीजै सळै।[८]

४. ताहरां असो कहै, 'ठाकुरै म्हारो घोड़ो निबळो छै तो म्हारै घोड़ै री थांनूं नार कोई

१. रा. वा., पृष्ठ ७० २. माधा फूलाणी री बात (हस्तप्रति, श्री मोहनलाल पुरोहित, बीकानेर)
३. माधा फूलाणी री बात (हस्तप्रति, श्री मोहनलाल पुरोहित, बीकानेर)
४. डहरू री बात (हस्तप्रति अ. जैं. ग्रं. बी.) ५. वही ६. रा. वा. मू. पा., पृष्ठ ११७
७. वही, पृष्ठ ११८ ८. लाखेजी रै विवाह री बात (हस्तप्रति अ. जैं. ग्रं. बी.)

नहीं पर म्हारी पण थांनूं मार कोई नहीं। आद रो ओखाणो छै ठाकुरें, काटे काटे धाड़, माटो माटो धाड़।'[1]

५. वाणियो तो बुध रो बळ करे। ताहरां राजा नूं कहीयो पछई, 'राज, घोड़ो असलो छै पण घोड़व नावे तै वास्ते ठगावां छां।'[2]

६. मांडणसी कहण लागो, 'रे प्रभुर, मैं तो तैं भरत नें वैरी कीयो। आगलो ओखाणो छै—अमल खवाड़ीयो पाणी पायो, बापड़ीयो मरतो हुंतो तोको वळै म्हारो दुसमण हुवो।[3]

७. ताहरां हरणी कहे छै—'आद रो ओखाणो छै' नाहरो अर हरणी किसो साथ।[4]

८. तारां सोढो बोली, 'हुवा साठो नें बुध नाठो। ईसा गढपतीयां रा नाळेर पाछा मेलो मती।'[5]

९. अेक जणां नें तो अठै ही रखावो, सो आदू ओखाण छै—येक घर को तो जांन ही नहीं जावे छे।[6]

१०. आगली रजपूतांणी पेवड़ राठौड़ तिकै वरजीयो। ताहरां मूळपसाव आपरी रजपूतणी नूं कह्यो, 'धोत री गाळ भैंस नूं सुहावै नहीं।'[7]

११. मोनूं गाढ पड़सी तो थांनूं अबिर हींदू तुरक पणा ही छै। बंदो बिहू दावें, आद रो ओखांणो छै।[8]

१२. जेरे घोड़ां नूं घी दीजे छै, सु लीद मांहे नीसरै छै—सु घोड़ै घी सु किराड़ै मारी।[9]

ऊपर कहावतें काले टाईप मे करदी गई हैं और वे वर्तमान समय में भी साधारण परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं। कहावत के प्रयोग से विषय को प्रमाण पुष्ट बनाने की चेष्टा की गई है।

वाक्य रचना

राजस्थानी वातों में प्रयुक्त वाक्यों की रचना भी विचार करने योग्य है। उसमें कुछ अपनी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। सामान्यतया बात के प्रारम्भ में कुछ विशेष प्रकार के वाक्य मिलते हैं। उनमें किसी व्यक्ति अथवा स्थान विशेष की चर्चा

---

१. कुंवर रणमलजी री वात, बा. मू. प. २. हाहुल हमीर री वात, बा. मू. प.
३. मांडणसी कूंपावत री वात, बा. मू. प. ४. नाहरी हरणी धरमेकै री वात (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. बी.)
५. रा. सा. सं., भाग २, पृष्ठ ७४
६. कैवाट सरवया अनतराय सांखला री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं बी.)
७. वात खीवर छाडावत री (हस्तप्रति अ. जै ग्रं. बी.)
८. बीरे देवड़े री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी) ९. बीगड़ बीजोगण री वात, बा. मू. प.

करके फिर विशेषण-पद प्रयुक्त किए गए हैं। इनमें कहीं क्रियापद लुप्त रहता है और कहीं कर्त्ता। इस दिशा में उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

१. सवंहीयो वीरमदे, सवंहीयां रे देस मांहे रहै। भोमियो थको रहै। योध राज करै। वडो मरदानो। वडो मारको। गाम मारै खोसै। यूं करतां घणां दिन हुवा। तठै पातसाह तांई खबर गई। सु विरमदे इसड़ो मारको छै।[1]

२. वेदो चारण वेकरै गाम रहै, कछ देस माहे। वेदै रै वड़ो द्रव्य। सयणी वेटी। महासक्ति योगमाया। तिका सिकार रमै। नाहर मारै। मृग मारै। वीजाणद सांढाइच चारण। भांढड़ी गाम मांहे रहै। देस कछ मांहे रहै।[2]

३. प्रथम प्रचलदास खीचो गढ गागुरन को धणी। गढ गागुरन राज्य करै छै। तिण रै राणी लालां मेवाड़ी। दस सहस मेवाड़ रो धणी रांणो मोकळसी तिणरी बेटी। निदाढियो पुरख। राज सगळो ही लालां रै हाथ।[3]

४. उजेणी नगरी, राजा भोज राज्य करै। नव वारी नगरी। चौरासी चौहटा, छतीस पौळी। च्यार वरण रहै। छतीस पवन जाति लोक बसै। कोड़ीधज व्यापारी रहै। षटदरसणी रहै। तिण नगरी रै विसै राजा भोज राज्य करै।[4]

उपर्युक्त सभी उद्धरणों में वाक्य-रचना विशेष प्रकार की है। इन वाक्यों में एक गति है परन्तु साथ ही जगह-जगह शब्दलोप हुआ है। फिर भी रोचकता में कोई कमी नहीं आई है। हस्तलिखित बातों में विराम चिन्ह प्रायः नहीं मिलते। पूर्ण-विराम का निर्देश अवश्य वाक्यांत में रहता है। बातों का सम्पादन करते समय इस प्रकार के चिन्ह यथास्थान लगाने पड़ते हैं।

बातों के वाक्यों में भूतकालिक क्रिया 'कह्यो' (अथवा कह्यौ, कहि्यो) का प्रयोग अधिक मिलता है। जब पारस्परिक वार्तालाप होता है तो कई जगह इसके पूर्व कर्त्ता का प्रयोग दिखलाई नहीं देता और उसके बिना ही काम चला लिया जाता है। उदाहरण द्रष्टव्य है :—

१. लाखेजी कह्यो, 'रे वीरण, क्युं करि आयो ?'
कह्यो, 'जो, थारो सूतहार छै, तीयै री वहिल बैठो आयो।'
कह्यो, 'रे, वहिल कासूं जूता छै ?'
कह्यो, 'जो, रोझ जूता हुता, सु आया।'

---

१. सवंहीयै वीरमदे रै वेटै धनपाल री वात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
२. रा. बा., भाग १. पृष्ठ १-२ ३. अ. बी. व., परिशिष्ट
४. चोबोली, पृष्ठ १

, ताहरां बीरण परणीज नै उतरियो। ताहरां लाखो कहै, 'बीरणजी, एक वस्त मांगां।'

कह्यो, 'जी, जिका म्हारै वस्त हुसी, तिका थांमूं नहीं राखूं। पर ऐ रोम्भ छै, सु थारै सूथार रा छै। म्हारा नही छै।'

कह्यो, 'जी, रोम्भ हो ज मागन ?'

तो कह्यो, 'सूथार नुं गुनह करि नै रोम लीजै।' कह्यो, 'भलां।'[1]

२. प्रधान पूछै छै 'ठाकुरां रो नांम कासूं ?'

कह्यो, 'जी, नाम तो नानिग, जाति छावडो, वास गोहिलवाड़।'

प्रधान कहै छै, 'नानंग, मेहे थां मूं राजी हुवा छां। थां नूं चाकर राखस्यां। पिण म्हारै राजा री या वात छै। जितरै थे दिहानगी खावो, दरबार मुजरो करो। राजा राखिसी थां नूं।'

कह्यो, 'जी, म्है तो थांहरी दिहानगी न ल्यां। पछै राजा कांई जाणे म्हानुं चाकर राखसी क नहीं। पछै तो म्हां हूं घोड़ा वेचोया जावै नहीं। भलो, माथ एक लग म्है दरबार मुजरा करिस्या। म्है कठै ही जावां नही।

कह्यो, 'जी, थे खास्यो कठा ?'

कह्यो, 'जी, म्है बाहिर नीसरीया छां। खावा नुं कमाईस्यां नहीं तो म्है कांई करिस्यां।'

कह्यो, 'जी, कठा कमाईस्यो ?'

कह्यो, 'हुइ प्रसवाड़ च्यार पहर जठै ही उभा पोहरो देस्यां, तिको खावा नूं देसी।'

कह्यो, 'जी, भलो, डेरो करो।'[2]

उपर्युक्त दोनों प्रसंगों में 'कह्यो' क्रिया के पूर्व कर्त्ता का प्रयोग प्रायः नहीं है और यह स्थिति वार्तालाप में अन्त तक रहती है।

राजस्थानी बातों में प्रायः साधारण वाक्यों का प्रयोग मिलता है। परन्तु विषय के अनुसार वाक्य कभी छोटा होता है और कभी बड़ा हुआ रहता है। बालोपयोगी बातों में अधिकतर छोटे वाक्य ही प्रयुक्त देखे जाते हैं। अन्य बातों में भी वाक्य-रचना जटिल नहीं होती। सरल वाक्यों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

१. एक गांव छै। तीयै मांहे सूतधार १ वसै। सो एक दिन सूतधार लकड़ी वाढण गयो हुतो। जंगल मांहे रू'ख चढीयो लकड़ी काटै हुतो। एक सींह आयो। गदह चरतो हुतो। वरसाळे रो चीनो गदह मातो ऊभो चरतो हुतो। सीह आई नें हाथळ वाही। गदह

---

१. मारू सूथारी री बात, वरदा ७/१

२. नानिग छाबड़ा की बात, वरदा ७/२

नूं हाथळ न लागो। गदह पट्टी वाही। सीह रा दांत खिरि गया। गदह पट्टी वाहिनै नांसि गयो।'[1]

२. प्रोहित चालीयो, सो जांगलू आयो। खींवसीजी सूं मिलीयो। कागद दीयो परठ सारी उठै री कही और कह्यो, 'जो हुलाणो तो कुंवरजो पधारीयां करसे। हुवै ही नहीं करै।' तद खींवसीजी कह्यो, 'आ वात तूं कुंवर नूं मतां कहै। इव कहै—जो मास च्यार नुं आदमी मेलज्यो, हलाम देस्यां।' इतरै कुंवरसी बाहर पधारीया। प्रोहित जाय आसरीवाद दीवी। कुंवर पूछीयो, 'हुलाणो ल्याया ?' तद प्रोहित कह्यो, 'अरज करीस।' तद प्रोहित नुं ले एकांत जाय बैठा। बातां सरब पूछी।[2]

इन उद्धरणों में सरल वाक्यों का प्रयोग है। परन्तु जहां विषय गम्भीर होता है या वर्णन-विस्तार रहता है, वहाँ संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य भी मिलते हैं। इस सम्बन्ध में उदाहरण देखिए :—

रांणी दहड़ आज रा घाट देखो, नरसंघरी फतै हुई है। राजा घरे नहीं अर थे लड़ो छो, सु थांनुं काई-किसड़ी हुई तो नरसघ री धरती जासी। ए पंच लोक गोड़ां रा छै, तिका री अरज सुणों अर हरै म्हाड़ीयो छै—आज पठांण लोक बाहर घणो छै, ज्यांन पण पठाण नूं घणो आयो छै। आपणो लोक साबतो छै। राज री हकीकत हुई सू तो सही पण लोक आजु तांई साबूत छै, जो नरसंघजी की बाजी साबूत रहिसी। थे साबतां लोकां नूं ले नीसरसो तो वळै पठांण नुं वेगो धको देसां। विवंत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवंत देख लड़ै, तिका धरती रहै। आखता हुय नै कावू बिना लड़ मरै, तिकां री धरती जाहि। ताहरां रांणी कहीयो, 'वीरा, सवारै प्रहर ४ म्हारा हाथ देखो, किसड़ीक ए छां।[3]

इस उद्धरण में गम्भीर विषय है, अतः इसमें सयुक्त एवं मिश्रित वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

अभिव्यक्ति

राजस्थानी बातों की अभिव्यक्ति बड़ी मार्मिक है। उन में प्रयुक्त गद्य की अभि-व्यञ्जना-शक्ति तीव्र है। थोड़े से शब्दों मे तथा सरल वाक्यों में वहां बड़ी गहरी बात प्रकाशित की गई है। इस प्रकार के प्रसंगों से बातें भरपूर हैं, जो सहज ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। उदाहरण देखिए :—

१. सो आप सारा सवारां सागै सिवदड़ै गांव आया। कोटड़ी जाय रामराम कियो। कह्यो, 'स्याबास, मोटा सगां, भली किरपा करता। हूं तो थांहरै आसगै आयो थो, तीं सूं

---

१. छोटी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. कुंवरसी सांखले री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)
३. राजा नरसिंघ री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

इतरी अरज लिखी थी। सो भली पीठ राखी। इब थांहरै घरणै छै। म्हारी आयेरी राखो।' सो निराठ नरमी दीवी। तद कुम्हार रै डेरी दिरायो।[1]

इस प्रसंग में एक साथ ही नम्रता और गम्भीर उपालम्भ का संगम है।

२. तरै राजा सूंडो आप रा वेटा नैं छोडाय माताजी रै थांनक जाए नै सार्थं हूवो। आगे राजा रै हजूर ले गया, मालुम कीवो। तरै राजा कह्यो, 'तयारी करो।' इसो राजे सुणीयो। तरै कह्यो, 'राजाजी,' हूं सूंडो रजपूत छूं। सेखा सूजावत रै वास वसूं छूं नैं म्हारा धणी सूं आमनो कर दांणी-पांणी अठै लायो छै नै थे विना खून-तकसीर बिना मोनैं मारो छो। पिण ठाकुरै, म्हारो धणी छै, तिको वैर लीयां बिना रहैलो नहीं। पछै थांरी खातर मैं आवै स्युं करो। अबार तो जोर नहीं पिण पगपीटो तो सेखोजी करसी।' तरै राजा कह्यो, 'सेखो सूजावत पहुंचे, तिण दिन वेगो मोनैं मारिज्यो।'[2]

इस प्रसंग में मृत्यु के सम्मुख दृढ़ता है और दबी हुई हालत में होने पर भी शत्रु के सामने आत्मगौरव का अपूर्व प्रकाशन है।

३. रजपूताणी———दूदै रे सांम्ही सिणगार कर आई। ताहरां दूदी कहै, 'रजपूतांणी नू कहो, लाज करो। वडा घरां रा छोरू छो, वडै घर आया छो। ताहरां रजपूतांणी कहै छै, 'लाज तो दूदोजी लसकर मांहै गुमाड़ आया। तै वेळा लाज आई।' रजपूतांणी इम कहै छै, 'लाज चौथ री वैर करसी, जिका नाळेर उछालती जाहि छै सती हूवण नूं। म्है कासूं करां ?' इतरै कहै दूदोजी तो मुंह नीचो कर नैं उभा रह्या अर रजपूतांणी नैं लोकां कहिनै घर मांहे पाछी घाती।[3]

इस प्रसंग में कायर पति के प्रति वीर रजपूतानी की व्यंगपूर्ण फटकार है। साथ ही उसकी असीम आत्मग्लानि भी प्रकट हुई है।

उपर्युक्त सभी चीजों पर ध्यान देने से प्रकट होता है कि राजस्थानी वातों में गद्य का अत्यन्त पुष्ट एवं विकसित रूप प्रयुक्त हुआ है। उसकी अपनी सीमाएं जरूर हैं परन्तु इतना होने पर वह सदैव सराहना की वस्तु ही माना जाएगा।

वातों में पद्य का प्रयोग

राजस्थानी वातों में पद्य प्रयोग की छटा निराली है। इस विशेषता के द्वारा गद्य और पद्य का संगम प्रकट होता है और कई वातें 'चम्पू काव्य' सी विदित होती हैं।

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ ११४ २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ ११६

३. वात राव किशन कान्हड़ री (हस्तप्रति अ, बै. ए, बी.)

नूं हाथळ न लागो। गदह पट्टी वाही। सींह रा दांत खिरि गया। गदह पट्टी वाहिनें नासि गयो।[1]

२. प्रोहित चालीयो, सो जांगलू आयो। खींवसीजी सूं मिलीयो। कागद दीयो परठ सारी उठै री कही भोर कह्यो, 'जो हलांणो तो कुंवरजी पधारीयां करसें। हवें ही नहीं करें।' तद खींवसीजी कह्यो, 'आ बात तूं कुंवर नूं मतां कहे। इव कहे—जो मास च्यार नुं आदमी मेलज्यो, हलाम देस्यां।' इतरै कुंवरसी बाहर पधारीया। प्रोहित जाय आसरीवाद दीवी। कुंवर पूछीयो, 'हलाणो ल्याया ?' तद प्रोहित कही, 'अरज करीस।' तद प्रोहित नुं ले एकांत जाय बैठा। बातां सरब पूछी।[2]

इन उदाहरणों में सरल वाक्यों का प्रयोग है। परन्तु जहां विषय गम्भीर होता है या वर्णन-विस्तार रहता है, वहां संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य भी मिलते हैं। इस सम्बन्ध में उदाहरण देखिए :—

रांणी दहड़ आज रा घाट देखो, नरसंघरी फतै हुई है। राजा घरे नहीं भर थे लड़ो छो, सु थांनुं काई-किसड़ी हुई तो नरसघ री धरती जासी। ए पंच लोक गोड़ां रा छै, तिका री अरज सुणों भर हरै कहाड़ीयो छै—आज पठांण लोक बाहर घणो छै, ज्यांन पण पठाण नूं घणो आयो छै। आपणो लोक सावतो छै। राज री हकीकत हुई सू तो सही पण लोक आजु तांई सावूत छै, जो नरसंघजी की बाजी सावूत रहिसी। थे सावतां लोकां नूं ले नीसरसो तो वळै पठांण नुं वेगो धको देसां। विवंत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवंत देख लड़े, तिका धरती रहे। आखता हुय नै काबू बिना लड़ मरै, तिकां री धरती जाहि। ताहरां रांणी कहीयो, 'वीरा, सवारै प्रहर ४ म्हारा हाथ देखो, किसड़ीक ए छां।[3]

इस उद्धरण में गम्भीर विषय है, अतः इसमें संयुक्त एवं मिश्रित वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

अभिव्यक्ति

राजस्थानी बातों की अभिव्यक्ति बड़ी मार्मिक है। उन में प्रयुक्त गद्य की अभि-व्यञ्जना-शक्ति तीव्र है। थोड़े से शब्दों मे तथा सरल वाक्यों में वहां बड़ी गहरी बात प्रकाशित की गई है। इस प्रकार के प्रसंगों से बातें भरपूर हैं, जो सहज ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। उदाहरण देखिए :—

१. सो आप सारा सवारां सागै सिवदड़ै गांव आया। कोटड़ी जाय रामराम कियो। कही, 'स्याबास, मोटा सगा, भली किरपा करता। हूं तो थांहरै आसंगे आयो थो, ती सूं

---

१. छोटी बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.) २. कुंवरसी सांखले री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

३. राजा नरसिंघ री बात (हस्तप्रति अ. जै. ग्रं. बी.)

इतरी अरज लिखी थी । सो भली पीठ राखो । इब थांहरै घरणै छै । म्हारी आयेरी राखो ।' सो निराठ नरमी दीवी । तद कुम्हार रै डेरो दिरायो ।[1]

इस प्रसंग में एक साथ ही नम्रता और गम्भीर उपालम्भ का संगम है ।

२. तरै राजा सूंडो आप रा बेटा नै छोडाय माताजी रै थांनक जाए नै साथै हुवो । आगे राजा रै हजूर ले गया, मालुम कीवो । तरै राजा कह्यो, 'तयारी करो ।' इसो राजे सुणीयो । तरै कह्यो, 'राजाजी,' हूं सूंडो रजपूत छू । सेखा सूजावत रै वास वसूं छू नै म्हारा धणी सूं अामनी कर दांणो-पांणी अठै लायो छै नै थे बिना खून-तकसीर बिना मोनै मारो छो । पिण ठाकुरै, म्हारो धणी छै, तिको वैर लीयां बिना रहैलो नहीं । पछै थांरी खातर मैं आवै त्युं करो । अबार तो जोर नहीं पिण पगपीटो तो सेखोजी करसी ।' तरै राजा कह्यो, 'सेखो सूजावत पहुंचे, तिण दिन वेगो मोनै मारिज्यो ।'[2]

इस प्रसंग में मृत्यु के सम्मुख दृढ़ता है और दबी हुई हालत में होने पर भी शत्रु के सामने आत्मगौरव का अपूर्व प्रकाशन है ।

३. रजपूताणी———दूदै रे सांम्हो सिणगार कर आई । ताहरां दूदो कहै, ,रजपूतांणी नू कहो, लाज करो । वडा घरां रा छोरू छो, वडै घर आया छो । ताहरां रजपूतांणी कहे छै, 'लाज तो दूदोजी लसकर मांहे गुमाड़ आया । तै वेळा लाज आई ।' रजपूतांणी इम कहै छै, 'लाज चौथ री वैर करसी, जिका नाळेर उछालती जाहि छै सती हूवण नूं । म्है कासूं करां ?' इतरै कहै दूदोजी तो मूंह नीचो कर नै उभा रह्या अर रजपूतांणी नै लोकां कहिनै घर मांहे पाछी घाली ।[3]

इस प्रसंग में कायर पति के प्रति वीर रजपूतानी की व्यंगपूर्ण फटकार है । साथ ही उसकी असीम आत्मग्लानि भी प्रकट हुई है ।

उपर्युक्त सभी चीजों पर ध्यान देने से प्रकट होता है कि राजस्थानी वातों में गद्य का अत्यन्त पुष्ट एवं विकसित रूप प्रयुक्त हुआ है । उसकी अपनी सीमाएं जरूर हैं परन्तु इतना होने पर वह सदैव सराहना की वस्तु ही माना जाएगा ।

वातों में पद्य का प्रयोग

राजस्थानी वातों में पद्य प्रयोग की छटा निराली है । इस विशेषता के द्वारा गद्य और पद्य का संगम प्रकट होता है और कई वातें 'चम्पू काव्य' सी विदित होती हैं ।

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ १२४ २. रा. वा. सू. पा., पृष्ठ १२१

३. वात राव किशन कान्हड़ री (हस्तप्रति अ. सं. पं. बी.)

राजस्थानी बातों में पद्य प्रयोग का परिमाण भी विभिन्न है। कई बातें पद्यों से आपूर्ण मिलती हैं तो कई में उनकी संख्या छोटी सी मिलती है। साथ ही कई बातें ऐसी भी हैं, जिनमें पद्य-प्रयोग किया ही नहीं गया है।

पद्य-प्रयोग की यह परम्परा प्राचीन है, जैसा कि संस्कृत आदि में अनेक कथा-ग्रन्थों से स्पष्ट है। परन्तु राजस्थानी बातों के पद्य-प्रयोग की विधि में कुछ अपनी विशेषता भी है। यहां काफी पुराने समय से पद्यात्मक कथाएं लोक-प्रचलित भी रही हैं। इन कथाओं के पद्य-रूप में प्रायः दोहा अथवा सोरठा छंद मिलता है। परन्तु ये दोहे मिल कर एक पूर्ण एवं संलग्न कथा नहीं बनाते और उसके विशिष्ट प्रसंग उपस्थित कर देते हैं। यही परम्परा गुजरात में भी है। जूनी गुजराती अथवा प्राचीन राजस्थानी में इसका एक उदाहरण 'मुंज-मुणाळवई' विषयक दोहे हैं।[१] समयानुसार ऐसे दोहों में रूपान्तर तथा संख्यावृद्धि भी होती रही है। इसका उदाहरण 'ढोला मारू रा दूहा' है।[२] कई विद्वानों ने ऐसे दोहों का कथाक्रम मिलाने के लिये अपनी तरफ से चौपाई का प्रयोग किया है, जैसा कि मुनि कुशललाभ की 'ढोला मारू री चउपई' में द्रष्टव्य है।[३] इसी दिशा में दूसरा उदाहरण मुनि कीर्त्तिवर्द्धन (केशव) विरचित 'सदयवत्स सावलिंगा चउपई' है।[४] इन ग्रन्थों में पुराने लोक-प्रचलित दोहों को कवियों ने स्वनिर्मित चौपाई छंदों द्वारा जोड़ कर कथा निर्वाह करने की चेष्टा की है।

अनेक राजस्थानी बातों में भी इसी विधि को ग्रहण किया गया है। बातों में पद्य के साथ पद्य का प्रयोग न किया जाकर वहां गद्य का प्रयोग हुआ है और पूरी बात बन गई है। बड़ी बातों में ढोला मारू की बात ही लीजिए। यह ६८ पृष्ठों में प्रकाशित है।[५] इसमें प्रयुक्त कुल दोहों की संख्या लगभग चार सौ तक है। इसी तरह जलाल बूबना की बातें लीजिए। वह २२ पृष्ठों में प्रकाशित है और उसके दोहों की संख्या लगभग सौ से भी कुछ ऊपर है।[६] 'चंद्रमेलागर की बात' १२ पृष्ठों में है। जब कि इस में प्रयुक्त दोहों की संख्या लगभग सौ है।[७] यह बात तो दोहों से छाई हुई सी लगती है और कहीं कहीं गद्य-प्रयोग दिखलाई देता है। छोटी बातों में 'जसमा ओडणी री वात'[८] तथा 'बींझरै अहीर री वात'[९] में गद्य की अपेक्षा पद्य (दोहे अथवा सोरठे) कहीं अधिक है ऐसी स्थिति में यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि इन बातों को लिखते समय इन से सम्बन्धित लोक प्रचलित दोहों-सोरठों को गद्य के साथ जोड़ दिया गया है। अनेक दोहों में पात्रों के नामों के साथ उनके वचन भी प्रकट हैं, जो अपने आप में पद्य-कथा का सा रूप प्रकट करते हैं।

---

१. पुरानी हिन्दी (चंद्रधर गुलेरी) ना. प्र. सभा, काशी २. ढो मा. दूहा (ना. प्र. सभा, काशी)
३. वही ४. सदयवत्स वीर प्रबंध (सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर ५. रा. बा. सं.
६. वही ७. वरदा, भाग ५ अंक १ ८. रा. वा., भाग १ ९. वही

उदाहरणार्थ 'जसमा प्रोडणी री बात' का निम्न अंश द्रष्टव्य है :—

राव कहे जसमल सुणो, महलां देखण प्राव।
महलां दीठा बीहिजे, म्हां सिरकणां रो साव ॥ १८ ॥
राव कहे जसमल सुणों, राण्यां देखण प्राव।
राण्यां मन राजी नहीं, प्रोडणियां सूं भाव ॥ १९ ॥

इस प्रकार पद्य-प्रयोग का निर्देश अनेक वातों के नाम के साथ भी देखा जा सकता है :—

१. इति श्री ढोला मारू री वारता दूहा-बंध संपूरण।[1]

२. अथ ढोला मारू का दूहा बात लिख्यते।
इति श्री ढोला मारवणी री वारता दूहा चंद्रायण संपूरण।[2]

३. इति श्री ढोला मारवणी री चौपाई बात सम्पूर्ण।[3]

४. अथ बीझा सोरठ री बात दूहाबंध लिख्यते।
इति श्री बीझा सोरठ री बात दूहा सम्पूर्ण।[4]

५. इति श्री फूलजी फूलमती री वारता दूहा चंद्रयणा संपूरण।[5]

राजस्थानी बातों में पद्य-प्रयोग का यह एक पक्ष है। कहीं कहीं इसे दूसरे रूप में गद्य-प्रयोग ही कहना अधिक उपयुक्त है। परन्तु सभी बातों में ऐसा नहीं हुआ है। बातो की संख्या बड़ी है और उन में से अधिकांश मे गद्य-पक्ष ही प्रधान है और पद्य-पक्ष गौण है। फिर भी बात लिखने वालों की पद्य-प्रयोग की ओर विशेष प्रवृत्ति रही है, इसमें सदेह नहीं। यदि किसी मौखिक बात में पद्य हैं तो लिखते समय उनको छोड़ा नहीं गया है। इसके साथ ही बात को सजाने के लिए प्रसंगानुसार पद्यों का प्रयोग करने की चेष्टा भी रही है।

बातों में पद्य-प्रयोग के विविध प्रकार हैं। जैसे—श्लोक, गाथा, बीज सकेत, नीत्यात्मक पद्य, पद्यात्मक पहेली, कहावती पद्य आदि। स्थान-स्थान पर पहले इस प्रकार के उदाहरण दिये जा चुके है अतः उनकी पुनरावृति यहां करना आवश्यक नहीं है।

---

१. रा. वा. सं., पृष्ठ ६२ २. अप्रकाशित बात ३. ढो. मा. दू., पृष्ठ ३६६
४. बीझा सोरठ की बात (अप्रकाशित) ५. रा. प्रे. क.

उपसंहार

राजस्थानी बातों की अपनी कुछ सीमाएं होती हैं परन्तु उनके अध्ययन का महत्व बहुविध है। उनका साहित्यिक महत्व तो स्पष्ट ही है। इसके साथ ही उन में तीव्र जीवन धारा है, जिसका रस समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जीवन का प्राणवान तत्व संस्कृति है। अतः सांस्कृतिक दृष्टि से भी बातों का महत्व कम नहीं है। इसके अतिरिक्त बातों पर इतिहास छाया हुआ है। इस दिशा में विवेचन करने से उनमें अनेक सार-सूचनाओं का मिलना स्वाभाविक है। राजस्थानी बातों का महत्व इन चारो ही रूपों में प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

अद्यावधि प्राप्त सूचनाओं के अनुसार राजस्थानी बातों का प्रारम्भ विक्रम की सतरहवीं शती से प्रकट होता है परन्तु इनके लिखे जाने की प्रक्रिया ने अठाहरवीं शती से विस्तार प्राप्त किया है और वे किसी रूप में आज तक लिखी जाती रही हैं। राजस्थान की लगभग इन चार शताब्दियों की इस साहित्य-सामग्री का महत्व साधारण नहीं है। बातें केवल संख्या में ही प्रभूत नहीं हैं परन्तु उनमें साहित्य के प्राणवान तत्व भी अवस्थित हैं। सबसे पहली चीज तो यह है कि बातों के रूप मे बहुत अधिक मौखिक सामग्री लिपिबद्ध होकर सुरक्षित रह गई है। यदि ये बातें केवल श्रुति-परम्परा पर ही अब तक टिकी रहती तो निश्चय ही उनका बहुत बड़ा अंश लुप्त हो चुका होता और फिर कभी उनका पुनः प्रकाशन सम्भव ही नहीं रहता।

इस साहित्य-सामग्री में कथावस्तु के साथ ही प्रचुर पद्य-प्रयोग भी है। इन पद्यों का अपना स्वतन्त्र महत्व है। इनमें बहुत बड़ी संख्या में सरस सुभाषित हैं, जो दैनिक जीवन-व्यवहार में अनेक रूपों में उपयोगी हैं। ऐसे अनेक पद्य तो कहावतों के समान जनसाधारण में प्रचलित हैं। बातों के माध्यम से उनका सहज ही संग्रह हो गया है। इसी प्रकार सूक्तियों के अतिरिक्त वर्णनात्मक पद्य भी बातों में अत्यधिक हैं, जो अत्यन्त सरस, स्वाभाविक एवं चित्रात्मक हैं। कई बातों का तो अधिकांश भाग ही पद्यात्मक हैं, जो अपने आप में लगभग काव्यरूप है।

बातों का गद्य परिमार्जित तथा पुष्ट है। उसकी अभिव्यञ्जना बड़ी मार्मिक है। साथ ही वह प्रसादगुण-सम्पन्न है। डिंगल कविता में यत्र तत्र जो दुर्बोधता प्रकट होती है,

वह बातों में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती क्योंकि उनमें अपने समय की बोलचाल की भाषा प्रयुक्त हुई है। जिस प्रकार बातें कही जाती थी, उसी प्रकार वे लिख दी गई। अतः उनमें लोक-व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का बृहद् संग्रह सहज ही हो गया। यदि बातों की शब्दावली का कोश रूप में संकलन कर दिया जाय तो वह भाषा की शक्ति और समृद्धि में असाधारण वृद्धि करने वाला सिद्ध होगा। इस शब्द-समूह का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन तो और भी अधिक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक शब्द का अपना इतिहास होता है। समयानुसार शब्द रूप-परिवर्तन करके विकसित होता है। इस प्रक्रिया का विश्लेषण बड़ा उपयोगी है। राजस्थानी बातों में ऐसे शब्दों की काफी बड़ी संख्या मिलेगी जो अपने भीतर गहरा रहस्य छिपाए हुए हैं। उस रहस्य का उद्‌घाटन करना ज्ञानवृद्धि का एक उत्तम विषय है।

बातों की लेखन-शैली सर्वथा स्वतन्त्र तथा साथ ही समर्थ है। कई बातें ऐसी भी देखी जाती हैं, जो विशेष रूप में लिखी गई हैं और सम्भवतः उनका मौखिक रूप उस प्रकार का न रहा हो। बातों की शैली में एक प्रवाह है। बोलने की क्रिया में जो प्रवाह होता है, वह बातों के लिखित रूप मे भी उतर आया है। बात को पढ़ते समय पाठक उसके प्रवाह में अनायास बहता चलता है और अपने आप को स्वयं गतिशील अनुभव करता है। साथ ही बातों में आश्चर्यजनक नाटकीयता है। वहां पात्र अपने शब्दों द्वारा स्वाभाविक रूप में आत्मप्रकाशन करके पाठक का चित्त आकर्षित कर लेते हैं। बातों के छोटे-छोटे वाक्यों में किया गया चित्रात्मक वर्णन केवल यथार्थ एवं स्वाभाविक ही नहीं, वह अत्यन्त प्रभावोत्पादक भी है। ऐसी स्थिति में प्राचीन राजस्थानी गद्यशैली का यह विकसित रूप सराहनीय होने के साथ ही आश्चर्यजनक भी है।

राजस्थानी बातों में तीव्र रसधारा है, जो पाठक के रोम रोम को आप्लावित कर देती है। वीर एवं शृंगार ये दोनों प्रमुख रस बातों में व्याप्त है। इनमें भी प्रधानता वीररस की है, जो राजस्थान की जीवनधारा को देखते हुए सर्वथा स्वाभाविक है। इसकी वहां सरिता उमड़ चली है। इसके साथ ही अनेक बातों में प्रेमरस का परिपाक भी बड़ा मार्मिक है। वहां प्रकृति की गोद में पलने वाले निश्छल एवं सरल प्रेम का ऐसा उज्जवल रूप द्रष्टव्य है, जो अन्यत्र कम ही मिलता है।

साहित्य मानव को समझने का उत्तम साधन है और विशेष रूप से कथात्मक सामग्री इस दिशा में अधिक सहायक है। इसके द्वारा मानव-मन की विविध स्थितियों का सहज ज्ञान हो जाता है। राजस्थानी बातों में मानव चरित्र का आदर्श चित्रण ही नहीं हुआ, वहां उसके यथार्थ का प्रकाशन भी है। अनेक परिस्थितियों में पड़कर मनुष्य कैसा प्रभाव ग्रहण करता है और किस रूप में वह परिवर्तित होता है, यह तत्व भी बातों मे अनेकशः चित्रित हुआ है। बातों का मनोवैज्ञानिक पक्ष सबल नहीं है, जो कथासाहित्य

मे वर्तमान युग की विशेषता है परन्तु उनमें प्रकाशित मानव-मन की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन कम महत्वपूर्ण नहीं है। वहां भले और बुरे दोनों ही प्रकार के पात्र हैं, जो पाठक के सम्मुख अपना हृदय खोल देते हैं। वातों में एक अलग ही मानव-लोक है, जिसके निवासियों की संख्या बहुत बड़ी है। इस लोक की प्रजा अनेक रूपों तथा विविध परिस्थितियों में तो है ही, साथ ही उसमें आश्चर्यजनक स्वभाव-भिन्नता भी है। जब चलचित्रों के समान उनकी कल्पित मुखाकृतियां नेत्रों के सम्मुख गुजरने लगती हैं तो दर्शक उनको देखता ही रह जाता है। जीजो डाभी, तीडो खरल, लाखा फूलांणी, मूळवा सांगावत, हाहुल हमीर, लूणसाह, मांडणसी कूंपावत, पीठवा चारण आदि आदि पात्र उनमें पूर्णतया पहिचाने जाते हैं और हृदय पर वे अपनी अमिट छाप छोड़ देते हैं।

बातो की वस्तु और चरित्र में विशेष आकर्षण है। वे अधिकांशतः मौलिक हैं। अतः वे साहित्य-प्रसार हेतु बड़े उपयोगी हैं। उन पर आधारित काव्य, नाटक, उपन्यास आदि नवीन रचनाएं अत्यन्त सुन्दर रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं। ऐसी प्रेरणा अनेक आधुनिक लेखकों को हुई भी है और उन्होने राजस्थानी कथानकों पर अपनी कृतियां तैयार करके सुख माना है। परन्तु बात-साहित्य की विशालता को देखते हुए ऐसी रचनाओं की संख्या स्वल्प ही प्रतीत होती है। इसका कारण बातों का हस्तप्रतियां से निकल कर प्रकाश मे न आ सकना है। जब राजस्थानी बातें अच्छी संख्या में सर्वसाधारण के सामने आ जायेंगी तो निश्चय ही वे साहित्यकारों के लिए प्रबल प्रेरणा का स्रोत सिद्ध होंगी।

बातों का ऐतिहासिक महत्व भी ध्यातव्य है। ऐसी बातों की बड़ी संख्या है, जो ख्याततुल्य हैं और वे इतिहास के रूप में ही प्रस्तुत की गई हैं। उनमें कथारस कम है। ख्यात में भी 'बात' शब्द को अध्याय के रूप में ग्रहण किया गया है। ऐसी बातों में स्थान स्थान पर सरस कथानक जोड़ दिए गए हैं, भले ही उनमें वैज्ञानिक इतिहास न हो। इसके अतिरिक्त जिन व्यक्तियों की ख्यात में केवल साधारण चर्चा मात्र आती है, स्वतन्त्र बात में उनका पूरा विवरण देखने को मिल जाता है। इस रूप में बात को ख्यात की अनुपूर्ति का रूप मिलता है। निश्चय ही ऐसी बातों में प्रकट की गई समग्र घटनाओं को ऐतिहासिक रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता और इनके सभी पात्र ऐतिहासिक वातावरण में प्रस्तुत किए जाने पर भी ऐतिहासिक नहीं हो सकते, फिर भी वहां इतिहास की सामग्री का अवस्थित होना स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस सामग्री की अन्य साधनों से छानबीन किए जाने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया से निश्चय ही अनेक तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं। बातों में लाखा फूलाणी, लूणसाह, रणमल, मांडणसी, पीठवा आदि पात्रों की जीवनकथा एक विशेष सांचे में ढल कर सामने आती है परन्तु इसमें न्यूनाधिक ऐतिहासिकता अवश्य ही अवस्थित है।

इतिहास में विशिष्ट व्यक्ति को महत्वपूर्ण स्थान मिलने पर भी उनके जीवन की छोटी छोटी घटनाओं को ग्रहण नहीं किया जाता। बातों में इस प्रकार की अनेक घटनाएं देखी जाती हैं, जो ऐतिहासिक पात्र के व्यक्तिगत जीवन से विशेष सम्बन्धित हैं। इसी प्रकार वहां ऐसे बहुत अधिक व्यक्तियों के कुल-संकेत सहित नाम भी द्रष्टव्य हैं, जो विस्तृत इतिहास संकलन में सहायक हो सकते हैं। कोई एक युद्ध हुआ और उसमें किन-किन विशिष्ट व्यक्तियों ने अपनी जीवन-लीला समाप्त की, इसका ब्योरा बातों में मिल सकता है। इतना ही नहीं, इनमें से कई व्यक्तियों की चर्चा अन्य स्थानों पर भी देखी जा सकती है। इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक अज्ञात व्यक्तियों की जीवन-कथा प्रकाशित हो सकती है।

इतिहास केवल समाज के विशिष्ट व्यक्तियों एवं राजाओं के क्रिया-कलाप तक ही सीमित नहीं है, उसमे जनजीवन की गतिविधि का अध्ययन भी अपेक्षित है। इस दृष्टि से राजस्थानी बातों का असाधारण महत्व है। उनमें राजस्थान का उत्तर मध्यकालीन जनजीवन चित्रवत् प्रकट है और समाज के प्रायः सभी तत्वों का वहां विस्तार से प्रकाशन हुआ है। इस प्रकार बातों में विशिष्ट व्यक्तियों के साथ ही अपने समय के समाज का इतिहास है। इस सामग्री से तत्कालीन प्रशासन, जातिभेद, धार्मिक-मान्यताएँ, कृषि-व्यापार, कला-साधना तथा उत्सव-विनोद आदि सभी विषयों की सुन्दर जानकारी सहज ही प्राप्त हो सकती है। इन सब तत्वों का अध्ययन इतिहास संकलन के कार्य में परमोपयोगी है। राजस्थानी बातों का इस दृष्टि से विवेचन किया जाना सम्भवतः उनके अत्यधिक महत्व का एक विशिष्ट पक्ष है।

बातों में उत्तर मध्यकालीन राजस्थानी जनजीवन का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। यहां जीवन की दृढ़ता के साथ ही उसकी दुर्बलता भी प्रकाशित है। समाज में उस समय कई ऐसे तत्व रहे हैं, जो जीवन को शक्ति-सम्पन्न करते हैं परन्तु कई तत्व उसे गिराने वाले भी हैं। पारस्परिक युद्ध की अधिकता ने समाज की बड़ी हानि की है। इसी प्रकार कई व्यसन भी तत्कालीन जीवन के अंगभूत देखे जाते हैं, जैसे अफीम का सेवन आदि। वहां जाति-गौरव एवं कुलाभिमान संगठन तथा त्याग के लिए प्रेरणा देते हैं तो कई बार वे व्यंग का रूप धारण करके विघटन की लीला भी प्रस्तुत करते हैं, जिसमें शक्तिक्षय होता है। बातों में नारी-सम्मान की भावना बड़ी ऊंची है, जो अत्यन्त श्लाघ्य है। परन्तु इसके साथ ही वहां कहीं कहीं पुत्रीमोह कम प्रकट हुआ है, जो समाज को अन्तोगत्वा दुर्बल बना देता है। इस प्रकार राजस्थानी बातों में चित्रित सामाजिक जीवन के सभी पक्षों का अध्ययन करके उनके लाभदायक तत्वों का ग्रहण एवं हानिप्रद तत्वों का त्याग वर्तमान समाज के लिए शक्ति संचय का साधन सिद्ध हो सकता है।

बातों में वर्णित नारी-समस्या विशेष ध्यान देने योग्य है। वहां सती का [illegible] तो सर्वत्र है ही, परन्तु विभिन्न परिस्थितियों में रही हुई नारी के जीवन का [illegible]

विचारणीय है। बातों में विधवा-विवाह तक देखा जाता है और इस सम्बन्ध से उत्पन्न सन्तति को असम्मान नहीं मिलता। वहाँ परित्यक्ता नारी के साथ दूसरे व्यक्ति का विवाह हो जाता है। अपने पति से अपमान पाकर नारी दूसरे व्यक्ति को स्वेच्छा से पति रूप में ग्रहण कर लेती है। नारी का अपहरण होने के बाद यदि उसका पति उसे पुनः प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर पाता है तो उसके साथ वह ससम्मान एवं सप्रेम दाम्पत्य जीवन व्यतीत करता है। भले ही बातों में इस प्रकार के उदाहरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध न होते हों परन्तु जितने भी वे प्राप्त हैं, उनकी रचना में साहित्यिक मान्यता मिली हुई है और लोगों ने उसे यथार्थ माना है। यह मान्यता सामाजिक स्वीकृति की सूचक है।

बातों में साम्प्रदायिक सद्भावना अद्भुत है। वहाँ साम्प्रदायिक भिन्नता होकर भी विचित्र एकता है। राजनीति ने साम्प्रदायिकता को दबा रखा है। वहाँ व्यक्तिगत मान्यताएँ साम्प्रदायिक कलह को जन्म देने का कारण नहीं बनती। एक सम्प्रदाय के शासन की सेवा में दूसरे सम्प्रदाय के सेवक अनेकशः देखे जाते हैं, जो अपने स्वामी के भक्त हैं और साम्प्रदायिक-विभिन्नता को ध्यान में लाकर कर्तव्यच्युत नहीं होते। यही स्थिति व्यक्तिगत मित्रता के क्षेत्र में भी है। पारस्परिक खान-पान का तो प्रश्न ही नहीं, अनेक स्थानों पर आपस में ऐसे विवाह-सम्बन्ध तक देखे जाते हैं, जिनसे उत्पन्न सन्तान को सामाजिक मान्यता मिली है। असल में राजस्थानी बातों में अलग ही एक वीरलोक बसा हुआ है। वहाँ सभी सम्प्रदायों के वीरों ने मिलकर एक नई दुनियाँ रच रखी है, जिसमें वे सर्वथा समान भाव से निवास करते हैं। परिस्थितिवश वे युद्ध भी करते हैं परन्तु उनके युद्ध का मूलभूत कारण किसी प्रकार की साम्प्रदायिक संकीर्णता न होकर उनकी अपनी आन अथवा विस्तार-लालसा हो सकती है। इसी प्रकार इस वीरलोक में पारस्परिक मित्रता का मूल साम्प्रदायिक-भिन्नता होने पर भी कृतज्ञता अथवा सहज-सम्पर्क है और इस मित्रता को बनाए रखने के लिए चाहे जैसा त्याग करने के लिए भी व्यक्ति सर्वदा तैयार रहता है।

साहित्य में व्याप्त सांस्कृतिक तत्वों का महत्व सर्वोपरि है। ये तत्व ही समाज को बनाए रखते हैं और इन्हीं से इतिहास का निर्माण होता है। राजस्थानी साहित्य और उसकी प्रेरणा से विनिर्मित यहाँ के इतिहास के गौरव का कारण उनमें व्याप्त सांस्कृतिक तत्व ही है। इन्हीं की प्रेरणा से व्यक्ति ने अपने जीवन की सार्थकता की समस्या का समाधान किया है। सभ्यता किसी समाज के बाह्य जीवन की उन्नति की सूचक है। संस्कृति उसके आन्तरिक अभ्युदय की परिचायक है। संस्कृति सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है परन्तु उसके कुछ उपलक्षण समय तथा स्थान से प्रभावित होकर अपनी स्वतन्त्र विशेषता प्रकट करते हैं। इसी कारण भारतीय-संस्कृति एवं राजस्थानी-संस्कृति आदि प्रयोग सामने आते हैं।

संस्कृति आत्मा को बल देती है। राजस्थानी बातों में यह तत्व विशेष रूप से प्रकट हुआ है। वहाँ चरित्र चित्रण में कई ऐसी विशेषताएँ देखी जाती हैं, जिनके प्रति

पात्रों का आग्रह है और इसी दृढ़ता का प्रकाशन सम्बन्धित बात का ध्येय है। यहाँ जीवन का मोह नहीं है, आत्मसम्मान जीवन का उद्देश्य है। वैर-शोधन तो बातों में परमधर्म है। एतदर्थ आत्मबलिदान के लिए हर समय व्यक्ति कमर बांधे तैयार बैठा दिखलाई देता है। युद्ध की स्थिति अनेकशः सामने आती है परन्तु लोग उससे बचने की चेष्टा नहीं करते, वे स्वयं को उसकी आग में झोंक कर ही सन्तोपलाभ करते हैं। बातों में वचन-बद्धता पर भी बड़ा बल दिया गया है। इसी प्रकार स्वामिभक्ति को एक श्लाघ्य गुण माना गया है जो समय का सहज प्रभाव है। वहाँ स्वामी से बढ़कर सगा अपने स्वयं के परिवार का व्यक्ति भी नहीं। साथ ही बातों में श्रद्धा का वातावरण है। यह श्रद्धा देवी-देवताओं के प्रति ही नहीं, संत पुरुषों के प्रति भी है। वहाँ 'दरसण' (संन्यासी वेश) का सम्मान है। दानी बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति लालायित दिखलाई देता है। बातों में त्याग की महिमा है, संचय की नहीं।

पात्रों द्वारा विशेष नियमों का धारण किया जाना राजस्थानी बातों का एक प्रमुख तत्व है। इसके लिए वहां 'आखड़ी' शब्द है, जिसका अभिप्राय प्रतिज्ञा है। तदनुसार किसी विशेष काम को न करने का प्रण किया जाता है। प्रत्येक प्रतिज्ञा को एक अलग आखड़ी माना गया है। इस प्रकार इनकी संख्या बड़ी हो सकती है, जैसे 'सरणै आयां काढ देण री आखड़ी', 'ढोल बाजीयां ऊभा रेण री आखड़ी', 'खटवरण री माल लेबा री आखड़ी' आदि। इसी प्रकार पात्रों द्वारा विशिष्ट विरुद का धारण किया जाना भी बातों का एक महत्वपूर्ण विषय है। विरुद भी कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे परनारी-सहोदर, सरणाई-सोहड़, चहूसुगाह, निवह्यां-धापण आदि। पात्र जीवन देकर भी अपने विरुद को बनाए रखते हैं। असल में 'आखड़ी' एवं 'विरुद' आदि चारित्रिक विशेषताओं के प्रकाशमान उपलक्षण हैं, जो बातों में विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।

राजस्थानी बातों में आदर्श पात्रों का चित्रण बड़ी संख्या में हुआ है और उनको यहाँ की जनता ने ऐतिहासिक भी माना है। ऐसी स्थिति में वे अनुकरणीय चरित्र के रूप में सामने आते हैं। बातों में 'सूरां पूरां अर सतवादियां' की महिमा प्रकट हुई है। वहाँ 'झूंझार वीरों' तथा 'सतियों' की जीवनगाथा है, जिन्होंने 'जौहर' जैसे व्रत का अनुष्ठान किया है। जिस प्रकार इन वीर व्रतियों के स्मारकों से राजस्थान की धरती छाई हुई है, उसी प्रकार उनकी गुणकीर्तनमयी बातों का प्रवाह भी यहाँ उमड़ता रहा है। इस प्रवाह में रसमग्न होकर न जाने कितने वीर 'झूंझार' हुए होंगे और न जाने कितनी महिलाएँ सती हुई होंगी। राजस्थानी बातों का प्रधान स्वर आत्मसम्मान की भावना है। कर्तव्य-पालन हेतु बलिदान होने के लिए सर्वदा सन्नद्ध रहना इनका सांस्कृतिक सन्देश है।

संकेत-सूची

१. अ. सं. पु. बी.	अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर
२. अ. जै. ग्रं. बी.	अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर
३. अ. खी. व.	अचळदास खीची री वचनिका
४. ऐ. बा.	ऐतिहासिक बातां (सं. नारायणसिंह भाटी)
५. ढो. मा. दू.	ढोला मारू रा दूहा
६. द. वि.	दम्पति विनोद
७. पं. वं. द. परि.	पंवारवंश दर्पण, परिशिष्ट
८. बा. झू. प.	बातां री झूमखो, पहलो
९. म. वा.	मरुवाणी
१०. मु. नै. ख्या.	मुहता नैणसी री ख्यात
११. रा. प्रे. क.	राजस्थानी प्रेम कथाएँ
१२. रा. बा. सं.	राजस्थानी बात संग्रह (सं. नारायणसिंह भाटी)
१३. रा. बा. सू. पा.	राजस्थानी बातां (सूर्यकरण पारीक)
१४. रा. वा.	राजस्थानी बातां—साहित्य-संस्थान, उदयपुर
१५. रा. सा. सं.	राजस्थानी साहित्य संग्रह
१६. रा. भा.	राजस्थान भारती
१७. वी. परि.	वीरवांण, परिशिष्ट